तजरीद सहीह बुख़ारी शरीफ़

मुरत्तिब

इमामुल मुहद्दिसीन हुज्जतुल इस्लाम
हज़रत अ़ल्लामा शैख़ मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह०

अनुवादक

कौसर यज़दानी नद्वी एम.ए.

तजरीद

सहीह बुख़ारी शरीफ़

मुरत्तिब

इमामुल मुहद्दिसीन हुज्जतुल इस्लाम

हज़रत अल्लामा शेख़ मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह

अनुवादक

कौसर यज़दानी नदवी एम० ए०

नाज़ पब्लिशिंग हाउस

पहाड़ी भोजला, दिल्ली-११०००६

प्रकाशक :
नाज़ पब्लिशिंग हाउस,
पहाड़ी भोजला, दिल्ली-६

संग्रह :
हज़रत अल्लामा शेख़ मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रह०

अनुवादक :
कौसर यज़दानी नदवी एम० ए०

पहली बार : जून १९७८
मूल्य : Rs. 50/-

कम्पोज़र्स :
नेशनल कम्पोज़िंग एजेंसी,
१०९७, गंज मीर ख़ाँ, नयी दिल्ली-२
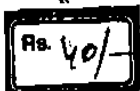
प्रिंटर्स :

विषय-सूची

क्या ?	कहाँ ?
बाब १—वह्य के बयान में १७-२३	
वह्य का बयान	१७
वह्य की शुरूआत	१७
वह्य उतरते वक़्त की हालत	१९
अबू सुफ़ियान, हिरक़्ल के दरबार में	२०
बाब २—ईमान के बयान में २४-३४	
इस्लाम के अर्कान	२४
सच्चा मुसलमान कौन है ?	२५
राई के बराबर ईमान का बदला	२६
हया ईमान का हिस्सा	२७
दोज़ख़ में औरतों की ज़्यादती	२८
मुनाफ़िक़ की पहचान	२९
इबादत ताक़त से ज़्यादा नहीं	३०
जनाज़े में शिर्कत का सवाब	३१
इस्लाम की ठोस तालीम	३२
आख़िरत में निजात कैसे होगी	३३
हर मुसलमान की भलाई चाहना	३४
बाब ३—इल्म के बयान में ३४-४९	
क़ियामत कब होगी ?	३४
अधूरे वुज़ू का बयान	३५

क्या ?	कहाँ ?
मुसलमान की मिसाल	३५
हुज़ूर सल्ल० के नामे की तौहीन का असर	३६
मुसलमान का ख़ून हराम है	३७
क़ियामत की निशानियां	३८
फ़ित्नों का इलाज	३६
क़ब्र में क्या सवाल होगा ?	३६
दूध शरीक बहन-भाई का निकाह	४०
आप सल्ल० का अपनी बीवियों से अलगाव	४०
नमाज़ हल्की पढ़ो	४१
हुज़ूर सल्ल० से बात करने का अन्दाज़	४२
हुज़ूर सल्ल० पर तोहमत लगाने की सज़ा	४३
अल्लाह का कलाम काफ़ी है	४४
हुज़ूर की पेशीनगोई	४५
हदीस याद रखने वाले की फ़ज़ीलत	४५
मूसा अलै० के ज़माने का बड़ा आलिम	४६
रूह क्या चीज़ है ?	४८
जन्नत का हक़दार कौन है ?	४६

बाब ४—वुज़ू के बयान में ५०-६४

वुज़ू किस तरह अधूरा रह जाता है ?	५०
वुज़ू का मस्नून तरीक़ा	५१
पर्दे की आयत का नाज़िल होना	५२
वुज़ू और नमाज़ के दर्मियान गुनाह माफ़	५३
इस्तिंजे और वुज़ू का हुक्म	५४
नमाज़ का इन्तिज़ार सवाब का काम है	५५
वुज़ू कैसे किया जाए ?	५६
हुज़ूर सल्ल० कितने पानी से वुज़ू करते थे ?	५७
मोज़ों पर मसह	५८
चुग़लख़ोर और बे-पर्दा पेशाब करने वाले पर अज़ाब	५६

क्या ? | कहाँ ?

दूध पीते बच्चों के पेशाब का हुक्म ५९
नमाज़ की हालत में हुज़ूर सल्ल० पर ऊंट का बोझ ६१
हुज़ूर सल्ल० की मिस्वाक का तरीक़ा ६२

बाब ५—ग़ुस्ल के बयान में ६३-६५

नापाकी के ग़ुस्ल का तरीक़ा ६३
ग़ुस्ल का मस्नून तरीक़ा ६४
ख़ुश्बू एहराम की हालत में न लगायी जाए ६५
बनी इस्राईल का हज़रत मूसा पर इल्ज़ाम ६५

बाब ६—तयम्मुम के बयान में ६६-६९

तयम्मुम की आयत का नाज़िल होना ६६
तयम्मुम का तरीक़ा ६७
तयम्मुम की बरकत ६८

बाब ७—नमाज़ के बयान में ७०-९२

मेराज की रात का बयान ७०
सफ़र में क़स्र की नमाज़ ७२
एक कपड़े में नमाज़ का तरीक़ा ७३
हज़रत सफ़ीया रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० का निकाह ७४
मस्जिदे नबवी में औरतों की नमाज़ ७५
हुज़ूरे अनवर सल्ल० का मेंबर ७६
क़िब्ले की तरफ़ रुख करना ७७
हज के अर्कान ७८
सवारी में नमाज़ ७८
क़िब्ले के रुख पर थूकने से रोक ७९
मुसलमान पर दोज़ख की आग हराम ८०
क़ियामत में सब से बुरी मख़्लूक़ ८१

क्या ? | कहां ?

यहूदियों, ईसाइयों पर लानत की वजह ८२
बदगुमानी से बचो ८३
रास्ते में हथियार लेकर चलने के आदाब ८४
मस्जिदे नबवी में शैतान ८५
मौत के मर्ज़ में नबी सल्ल० का खुत्बा ८६
रात की नमाज़ के लिए हुज़ूर सल्ल० का हुक्म ८७
रास्ते में नमाज़ पढ़ना ८८
डंडा, सुतरे की शक्ल में ९०
स्तून के पास नमाज़ पढ़ना ९१
बच्चों पर हुज़ूर सल्ल० की शफ़क़त ९२

बाब ८—नमाज़ के वक़्त के बयान में ९३-१०२

जिब्रील अलै० के साथ हुज़ूर सल्ल० की नमाज़ ९३
नापाक औरत का बोसा ९४
ठंडे वक़्त में नमाज़ का हुक्म ९५
इशा से पहले सोना और बाद में बातें करना बुरा है ९६
फ़रिश्ते इकट्ठे कब होते हैं ९७
नमाज़ों के वक़्त ९८
इशा की नमाज़ में देर ९९
दो ठंडी नमाज़ों की फ़ज़ीलत १००
मेहमानों की बरकत १०१

बाब ९—अज़ान के बयान में १०३-१२९

अज़ान की तर्कीब १०३
अज़ान की आवाज़ से जिहाद रुक जाता है १०४
सेहरी खाने का वक़्त १०५
बे-नमाज़ी की सज़ा १०६
नमाज़ का मज़ा १०७
अबूबक्र रज़ि० की नायबी १०८

क्या ? कहाँ ?

नमाज़ में आसानी १०६
रसूल सल्ल० घर में क्या करते थे ? ११०
मौत के मर्ज़ में हुज़ूर सल्ल० का ग़ुस्ल १११
इमाम से पहले सज्दे से सर न उठाओ ११२
नमाज़ में छोटी सूरतों का हुक्म ११३
नमाज़ को छोटी करो ११४
तोहमत की सज़ा ११६
मग़रिब में सूरः मुर्सलात ११७
शैतानों पर शिहाबे साक़िब ११८
नबी अक्रम किस तरह नमाज़ पढ़ते थे ? ११९
रसूल की पैरवी का हुक्म १२०
क़ियामत के दिन क्या होगा ! १२१
जिस्म के हिस्सों का सज्दा १२३
हुज़ूर सल्ल० की नमाज़ १२४
अल्लाह के नबी को सलाम १२५
नमाज़ में हुज़ूर सल्ल० की पैरवी १२६
फ़र्ज़ नमाज़ के बाद की दुआ १२७
लहसुन-प्याज़ पर रोक १२८
औरतों को मस्जिद में आने की इजाज़त। १२९

बाब १०—जुमा के बयान में १२९-१३५

उम्मते मुस्लिमा की फ़ज़ीलत १२९
जुमा के ग़ुस्ल की फ़ज़ीलत १३०
मिस्वाक की अहमियत १३१
सफ़ाई का हुक्म १३२
स्तून का रोना १३३
हुज़ूर सल्ल० की मक़्बूलियत १३४
जुमा की नमाज़ का वक़्त १३५

क्या ? कहाँ ?

बाब ११—ख़ौफ़ की नमाज़ के बयान में १३६

ख़ौफ़ की नमाज़ कैसे पढ़ी जाए ? १३६

बाब १२—ईदों के बयान में १३७-१३९

अंसारी लड़कियों का राग १३७
दोनों ईदों में पहले करने का काम १३८
ईद की नमाज़ों के रास्ते १३९

बाब १३—वित्र के बयान में १४०-१४१

रात की नमाज़ की दो रक्अतें १४०
रुकूअ से पहले क़ुनूत की दुआ १४१

बाब १४—बारिश की दुआ का बयान १४१-१४४

बारिश की दुआ की नमाज़ १४१
हुज़ूर सल्ल० ने बद-दुआ की १४२
बारिश की दुआ १४३
ग़ैब का इल्म ख़ुदा के पास १४४

बाब १५—सूरज ग्रहन के बयान में १४४-१४६

सूरज ग्रहन की हक़ीक़त १४४
सूरज ग्रहन की नमाज़ १४५
दोज़ख़ में औरतों की ज़्यादती १४६

बाब १६—तिलावत के सज्दों के बयान में १४७

तिलावत के सज्दे को छोड़ने का जवाज़ १४७

बाब १७—मुसाफ़िर की नमाज़ के बयान में १४८-१५०

क़स्र की नमाज़ १४८

क्या ? | कहाँ ?

महरम बग़ैर औरत को हज के सफ़र की मनाही १४६

बाब १८—तहज्जुद की नमाज़ के बयान में १५०-१५६

तहज्जुद के वक़्त की दुआ १५०
ख़्वाब का असर १५१
हज़रत दाऊद की नमाज़ और रोज़े १५२
रात को हुज़ूर सल्ल० कितनी नमाज़ पढ़ते थे १५३
बख़्शिश की दुआ १५४
इस्तिख़ारे की दुआ १५५
हुज़ूर की महबूब सुन्नतें १५६

बाब १९—मक्का और मदीना की मस्जिद में नमाज़ १५६-१५८

तीन मस्जिदों के लिए कजावा ज़रूरी है १५६
हुज़ूर का चाश्त की नमाज़ पढ़ना १५७
हुज़ूर सल्ल० के मिंबर व मकान के दर्मियान जन्नत १५८

बाब २०—सह्व के बयान में १५९

हुज़ूर सल्ल० सोकर दो सज्दे अदा किए १५९

बाब २१—जनाज़े के बयान में १६०-१७८

बच्चा बहिश्त में जाएगा १६०
नजाशी की ग़ायबाना नमाज़ १६१
हुज़ूर सल्ल० की मुनाफ़िक़ों पर शफ़क़त १६२
हुज़ूर सल्ल० की चादर का कफ़न १६३
सब्र की हक़ीक़त १६४
मय्यत पर रोने का बयान १६५
हुज़ूर सल्ल० की दुआ का असर १६७
बे-अख़्तियार रोने की इजाज़त १६८
मय्यत के कफ़न-दफ़न में जल्दी १६९

क्या ? **कहां ?**

क़ब्र में मुन्किर-नकीर की आमद	१७०
उहुद के शहीदों की फ़ज़ीलत	१७१
तक़्दीर का लिखा हुआ	१७३
क़ब्र में तौहीद व रिसालत की गवाही	१७४
क़ब्र का फ़ित्ना	१७५
हुज़ूर सल्ल० का ख़ौफ़नाक ख़्वाब	१७६
मुर्दों को बुरा न कहो	१७८

बाब २२—ज़कात के फ़र्ज़ होने के बयान में १७८-१९४

ज़कात के अदा करने का हुक्म	१७८
जन्नत में जाने का अमल	१७९
ख़ैरात की बरकत	१८०
ख़ैरात का हुक्म	१८१
हज़रत सौदा का शर्फ़ व इम्तियाज़	१८२
ख़ैरात का सवाब	१८३
कंजूस और सख़ी की मिसाल	१८५
ज़कात का प्रोग्राम	१८६
पसंदीदा माल की ख़ैरात	१८७
सवारी और गुलाम पर ज़कात नहीं	१८८
बेहतर चीज़ ख़ैरात करो	१९०
गोश्त क़ियामत में ग़ायब	१९१
हवा के तूफ़ान से हिफ़ाज़त	१९२
सद्क़ा करने वालों के लिए रसूलुल्लाह की दुआ	१९३
सद्क़ा की वसूली का हिसाब	१९४

बाब २३—सद्क़ा-ए-फ़ित्र के बयान में १९५

सद्क़ा-ए-फ़ित्र की मिक़्दार	१९५

क्या ? | कहां ?

बाब २४—हज की बयान में १९५-२१२

बेटी बदले का हज कर सकती है १९५
जुलहुलैफ़ा में ऊंटनी पर बैठना १९६
हज के साथ उम्रे की नीयत १९७
हज व क़ुर्बानी के अर्कान १९८
हुज़ूर सल्ल० का हज का सफ़र १९९
हज के अर्कान २००
उमरे का एहराम २०१
हज के रास्ते २०२
काबे की ईंट से ईंट बजेगी २०३
हुज़ूर सल्ल० की पैरवी २०४
हज का पहला अमल वुज़ू २०५
मक्के में दाख़िले का पहला अमल २०६
एक आयत की तफ़्सीर २०७
ऊंट की तलाश २०८
अर्कानि हज के वक़्त २०९
हुज़ूर सल्ल० की पैरवी २११
चार नमाज़ें मिला कर पढ़ना २१२

बाब २५—उमरा के बयान में २१३-२१६

उमरा और हज्जे मक़्बूल का बदला २१३
हज के साथ उमरा २१४
सफ़र से रात को घर वापस न आओ २१५
बे-ज़रूरत सफ़र में न रहो २१६

बाब २६—शिकार करने के बयान में २१६-२१९

हरम में जानवरों के मारने पर रोक २१७
छिपकली बुरा जानवर है २१८

क्या ?	कहां ?
मां की तरफ़ से बदले का हज	२१६
हुज़ूर सल्ल० की चार बातें	२१६

बाब २७—मदीना के फ़ज़ाइल के बयान में २२०-२२३

हरमे मदीना के हुदूद	२२०
मदीने में सुकूनत	२२२
मक्का और मदीने से दज्जाल की हिफ़ाज़त	२२३

बाब २८—रोज़े के बयान में २२४-२३३

रोज़ा गुनाहों की ढाल है	२२४
रोज़े का बदला ख़ुदा	२२५
रमज़ान की रात में बीवी हलाल है	२२६
एक आयत की तफ़्सीर	२२७
इफ़्तार का वक़्त	२२८
आशूरे का रोज़ा	२२६
हर हक़दार का हक़ अदा करो	२३०
हुज़ूर सल्ल० के रोज़े ताक़त से ज़्यादा	२३१
हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हदिया	२३२
अरफ़े का रोज़ा	२३३

बाब २९—तरावीह की नमाज़ के बयान में २३४-२३५

आधी रात के बाद नमाज़	२३४
शबेक़द्र की बेदारी	२३५

बाब ३०—एतिकाफ़ के बयान में २३५-२३६

हुज़ूर सल्ल० का लगातार एतिकाफ़	२३५
एतिकाफ़ की मुद्दत	२३६

क्या ?	कहां ?

बाब ३१—खरीद व फ़रोख्त के बयान में २३६-२५१

पर्दे का हुक्म	२३७
बग़ैर इजाज़त अन्दर न जाओ	२३८
तिजारत में बरकत	२३६
क़र्ज़ अदा करने की काफ़िराना शर्त	२४०
पछनों का मुआवज़ा	२४२
इमाम हसन से मुहब्बत का हुक्म	२४३
हुज़ूर सल्ल० का मोजज़ा	२४४
सोने का मोल सोने से सूद है	२४५
लौंडी को ज़िना की सज़ा	२४६
सोना चांदी के बदले बेचो	२४७
पेड़ में लगी खजूर	२४८
कंजूस शौहर के माल का हुक्म	२४६
यहूद पर खुदा की मार	२५१

बाब ३२—सलम के बयान में २५२

बैअ सलम	२५२

बाब ३३—शुफ़आ के बयान में २५२-२५३

हक़ शुफ़आ	२५२
पड़ोस को हदया	२५३

बाब ३४—इजारा के बयान में २५३-२५६

हुकूमत तलबों की महरूमी।	२५३
यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमान की मिसाल	२५४
अमलियात की फ़ीस ना जायज़ है	२५६

बाब ३५—हवाला के बयान में २५७

क़र्ज़ की अदाएगी में देर ज़ुल्म	२५७

क्या ? कहां ?

बाब ३६—किफ़ालत के बयान में २५८

क़ुरैश व अंसार में भाईचारा २५८

बाब ३७—वकील बनाने के बयान में २५९-२६१

वकील का हुक़ २५९
आयतल कुर्सी का अमल २६०
शराबी को सज़ा २६१

बाब ३८—खेती के बयान में २६२-२६४

खेती का सदक़ा २६२
खैबर की आमदनी २६३
ज़मीन को किराए पर देने से रोका गया २६४

बाब ३९—पीने के बयान में २६५-२६९

हुज़ूर सल्ल० का बचा हुआ पानी २६५
तीन शख्सों को दर्दनाक अज़ाब २६६
शराब पीने का असर २६७
बैअ की शर्तें २६९

बाब ४०—क़र्ज़ के बयान में २७०-२७२

क़र्ज़ देने का सवाब २७०
हुज़ूर सल्ल० हर मुसलमान के वली २७१
मां की नाफ़रमानी न करो २७२

बाब ४१—ज़ुल्मों के बयान में २७३-२७६

जन्नत-दोज़ख का दर्मियानी पुल २७३

बाब ४२—खाने की शिर्कत के बयान में २७६-२७८

इस्लामी बराबरी २७७

बाब ४३—रेहन व हिबा के बयान में २७९-२८५

सब से बेहतर अमल २८०
बनी तमीम से मुहब्बत करो २८१

क्या? | कहां?

बाब ४४—गवाही के बयान में २८६-२९२

इफ़्क के वाक़िए की हक़ीक़त २८७

बाब ४५—सुलह के बयान में २९३-२९४

हुज़ूर की सुलहपसन्दी २९१

बाब ४६—शर्तों के बयान में २९५-३०४

सुलह हुदैबिया का वाक़िआ २९७

बाब ४७—वसीयत के बयान में ३०५-३०७

वफ़ात के वक़्त हुज़ूर सल्ल० की वसीयत ३०५

बाब ४८—जिहाद के बयान में ३०८-३४१

इस्लाम के मुबल्लिग़ों की शहादत ३०९

बाब ४९—पैदाइश की इब्तिदा के बयान में ३४२-३५२

बन्दों की सरकशी ३४३

बाब ५०—नबियों की पैदाइश के बयान में ३५३-३७१

ख़ुदा को किसी का शरीक न बनाओ ३५४

बाब ५१—क़ुरैश की तारीफ़ के बयान में ३७२-३७४

मुनाफ़िक़ सब से शरीर है ३७२

बाब ५२—नबी सल्ल० की नुबूवत और मेराज के बयान में ३७४-३८०

मेराज की रात ३७५

बाब ५३—हुज़ूर सल्ल० की बीमारी और वफ़ात ३८१-४०९

हुज़ूर सल्ल० का जन्नत में मक़ाम ३८१

बाब ५४—निकाह के बयान में ४१०-४१९

हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत ४१०

बाब ५५—तलाक़ के हुक्म के बयान में ४२०-४२४

तलाक़ का तरीक़ा ४२१

क्या ? **कहां ?**

बाब ५६—खाने-पीने के बयान में ४२५-४२६

हुज़ूर सल्ल० की मेहमानदारी ४२५

बाब ५७—अक़ीदे और क़ुर्बानी का बयान ४३०-४३५

अक़ीदे का हुक्म ४३०

बाब ५८—मरीज़ों के बयान में ४३६-४४२

हर बीमारी की दुआ है ४३६

बाब ५९—पहनने के कपड़े के बयान में ४४३-४४५

गुनाहकार मुसलमान भी जन्नत में जाएगा ४४३

बाब ६०—अदब के बयान में ४४६-४५१

मां-बाप के साथ अच्छे बर्ताव का हुक्म ४४६

बाब ६१—ख़्वाब की ताबीर के बयान में ४५२-४५६

ख़्वाब नुबूवत का छठा हिस्सा है ४५२

बाब ६२—हुक्मों के बयान में ४५७-४५९

अमीर की इताअत का हुक्म ४५७

बाब ६३—दुआओं के बयान में ४६०-४६४

सय्यिदुल अस्तग़फ़ार ४६०

बाब ६४—नर्म दिल बनाने वाली हदीसों का ज़िक्र ४६५-४७०

ज़िंदगी में मौत का सामान करो ४६५

बाब ६५—इजाज़त लेने के बयान में ४७१-४७९

छोटे-बड़े को सलाम करो ४७१

बाब ६६—हौज़ के बयान में ४८०-४८३

जन्नत में हुज़ूर सल्ल० का हौज़ ४८०

बाब ६७—क़ुरआन-हदीस पर अमल करने के बयान में ४८४-४८८

रसूल की इताअत जन्नत का बीमा है ४८४

बाब १

वह्य के बयान में

१. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि आंहज़रत सल्ल० को मैंने फ़र्माते हुए सुना कि आमाल का दार-व-मदार सिर्फ़ नीयतों पर है। हर शख़्स के लिए उसकी नीयत का बदला है, तो जिस शख़्स की हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से निकाह करने की ग़रज़ से होगी, उसकी हिजरत अपने ही मक़्सद की वजह से होगी। (ख़ुदा और रसूल की ख़ुशनूदी के लिए न होगी।)

२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि (एक बार) हारिस बिन हिशाम ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके पास वह्य किस तरह आती है ? आपने फ़र्माया कि कभी तो घंटी की गूंज की तरह आती है और यह बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ देने वाली होती है, कुछ देर के बाद यह तक्लीफ़ दूर हो जाती है और अल्लाह तआला का फ़र्मान मुझे याद हो जाता है। कभी फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में आता है और मुझ से बातें करता है और मुझे उसकी बातें याद हो जाती हैं। हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैंने सख़्त सर्दी के वक़्त वह्य आते देखी है, (सख़्त सर्दी के बावजूद) मुबारक पेशानी पसीने से तर हो जाती थी।

३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर पर वह्य की शुरूआत सच्चे ख़्वाबों से हुई। जो ख़्वाब आप देखते वह सुबह की रोशनी की तरह उसी जैसा, पूरा होता है। इस के बाद हुज़ूर तन्हाई पसन्द करने लगे। ग़ारे-हिरा में यकसूई और तन्हाई अख़्तियार की। तहन्नुस में मशग़ूल हो गये। (यानी कुछ रात इबादत में लगे रहते और इस बीच मकान पर न जाते।) तहन्नुस की मुद्दत का खाना अपने साथ ले जाते थे। जब खाना ख़त्म हो जाता था तो फिर हज़रत ख़दीजा के पास तशरीफ़ लाकर दोबारा

उतने ही दिनों का खाना ले जाते थे, यहां तक कि आप ग़ारे-हिरा में ही ठहरे हुए थे कि वह्य नाज़िल हुई। फ़रिश्ते ने आकर कहा, पढ़िए। आपने फ़र्माया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। रसूलुल्लाह सल्ल० फ़र्माते हैं कि फ़रिश्ते ने (यह सुन कर) मुझे दबोचा, जिस से मुझे बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ हुई, फिर छोड़ कर कहा, पढ़िए। मैंने कहा, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, उसने दोबारा पकड़ कर फिर दबोचा और मुझे बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ हुई, फिर छोड़ कर कहा, पढ़िए। मैंने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने दोबारा पकड़ कर दबोचा और मुझे बहुत तक्लीफ़ हुई फिर छोड़ कर कहा, पढ़िए, मैंने कह दिया, मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने तीसरी बार पकड़ कर दबाया और कहा अपने उस परवरदिगार के नाम से पढ़िए जो (पूरी दुनिया का) पैदा करने वाला है, जिसने इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया, पढ़िए और आपका परवरदिगार ऐसा बड़ा करीम है, जिसने क़लम से तालीम दी। उसके बाद हुज़ूर सल्ल० हज़रत ख़दीजा रज़ि० के पास तशरीफ़ लाये, आप का दिल धड़क रहा था, फ़ौरन आपने फ़र्माया, मुझे चादर उढ़ाओ, मुझे चादर उढ़ाओ, लोगों ने आप को चादर उढ़ायी। जब आप की घबराहट जाती रही, तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० से तमाम वाक़िआ बयान फ़र्माया और कहा कि मुझे अपनी जान का ख़तरा है। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला आप को रुसवा न करेगा, क्योंकि आप रिश्तों को जोड़ते हैं, लोगों के लिए तक्लीफ़ उठाते हैं, ग़रीबों और मज़दूरों को खिलाते-पिलाते हैं। मेहमान की मेहमानदारी करते हैं और मुसीबतों और परेशानियों को दूर करने के लिए (लोगों की) मदद करते हैं। इस के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ि० आप को अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ुल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा के पास ले गयीं। वरक़ा जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गये थे, इबरानी ख़त लिखना जानते थे और जितना अल्लाह चाहता था उतनी इंजील लिख लिया करते थे, मगर बूढ़े आदमी थे और अंधे हो गये थे। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने (जाकर) कहा, ऐ चचेरे भाई! अपने भतीजे की बात तो सुनो, वरक़ा ने आप से पूछा, भतीजे! क्या बात है? आपने जो कुछ देखा था, बयान फ़र्मा दिया। वरक़ा ने कहा, यही वह नामूस (जिब्रील फ़रिश्ता) है, जो मूसा अलै० पर नाज़िल हुआ था। काश! मैं इन नुबूवत के दिनों में जवान होता, काश! मैं उस ज़माने में ज़िंदा होता, जब आप की क़ौम आप को निकालेगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि वह मुझे निकालेंगे? वरक़ा ने अर्ज़ किया, जी

हों। (अब तक) जो तुम्हारी तरह दीन व किताब वग़ैरह लेकर आए, सब के साथ दुश्मनी की गई, अगर मैं आप की नुबूवत के ज़माने में मौजूद हुआ तो आप की बहुत ज़्यादा मदद करूंगा। उस के बाद वरक़ा (ज़्यादा) ज़िंदा न रहे, (बल्कि) उन का इंतिक़ाल हो गया और वह्य कुछ दिनों के लिए रुक गयी।

४. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० से (एक बार) कुछ हदीस बयान फ़रमा रहे थे। बातचीत के दौरान फ़रमाया—मैं (रास्ते में) जा रहा था, अचानक आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, मैंने जो मुंह ऊपर उठाया तो वही फ़रिश्ता जो ग़ारे-हिरा में मेरे पास आया था, एक कुर्सी पर बैठा था। कुर्सी आसमान व ज़मीन के बीच में थी, मुझ पर उस का रौब छा गया और मैंने कहा, मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो, उस वक़्त अल्लाह तआला ने (यह आयत) नाज़िल फ़रमायी— या अय्युहल मुद्दस्सिरुक़ुम फ़ अन्ज़िर व रब्ब क फ़कब्बिर व सिया-ब क फ़त-हिहर वर-रुज्-ज़ फ़हजुर० उस के बाद वह्य ज़्यादा से ज़्यादा और बार-बार आने लगी।

५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से आयत 'ला तुहर्रिक बि ही लिसा-न-क लि तअ्ज-ल बिही' के बारे में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० वह्य के नाज़िल होने की तक्लीफ़ बर्दाश्त करते थे और आप के लबों के हिलाने से यह (वह्य के नाज़िल होने की हालत) ज़ाहिर होती थी। (इस के बाद इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा कि जिस तरह रसूले करीम सल्ल० होंठ हिलया करते थे वैसे ही हिला कर दिखाऊं) इस पर अल्लाह तआला ने आयत—'ला तुहर्रिक बि ही लिसा-न-क' नाज़िल फ़र्मायी। आयत का मतलब यह है कि आप अपनी ज़ुबान को इस लिए हरकत न दीजिए कि आप क़ुरआन को जल्दी-जल्दी याद कर लें, क़ुरआन का जमा करना और उस को पढ़वा देना तो हमारे ज़िम्मे है, (मतलब यह है कि आप के सीने में क़ुरआन को जमा रखना और आप को क़ुरआन दोबारा पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है) हम जब क़ुरआन को पढ़ चुकें तो आप उस की पैरवी कीजिए (यानी आप उस को कान लगा कर सुनते रहें,) हम पर उस का वाज़ेह करना ज़रूरी है कि आप उस को पढ़ लें। (इब्ने अब्बास रज़ि०) कहते हैं कि) इस के बाद जब जिब्रील अलै० आंहज़रत की ख़िदमत में आते तो उन के क़ौल को कान लगा कर सुनते थे और जिब्रील अलै० (की वापसी

के बाद हुज़ूर) सल्ल० वैसे ही पढ़ दिया करते थे, जिस तरह जिब्रील अलै० पढ़ कर जाते थे।

६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि आंहज़रत सल्ल० सब लोगों से ज़्यादा सखी थे और सब से ज़्यादा आप की सखावत रमज़ान के महीने में होती थी, जब कि जिब्रील अलै० मुलाक़ात के लिए आते थे और मुलाक़ात रमज़ान की हर रात में होती थी। जिब्रील अलै० क़ुरआन शरीफ़ को आप के सामने दुहराते थे। ख़ुदा की क़सम ! ख़ैर व बरकत के मामले में हुज़ूर चलती हवा से भी ज़्यादा सखी थे।

७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अबूसुफ़ियान ने मुझ से बयान किया कि हिरक़्ल (रूम के बादशाह) ने एक क़ुरैशी जमाअत के बारे में जो शाम में तिजारत करती थी, अबू सुफ़ियान के पास पैग़ाम भेजा, उस ज़माने में रसूलुल्लाह सल्ल० और अबू सुफ़ियान और क़ुरैश के काफ़िरों के बीच मुद्दत तै हो गई थी। सब लोग (तलब करने पर) हिरक़्ल के पास गये। हिरक़्ल उस वक़्त एलिया में था, सब को अन्दर बुलाया, उस के आस-पास रूम के बड़े-बड़े सरदार मौजूद थे, दरबारे-ख़ास में सबको बुला कर तर्जुमान (दो भाषिया) के ज़रिए हिरक़्ल ने पूछा कि तुम लोगों में उन का यानी (रसूलुल्लाह सल्ल० का) कौन क़रीबी रिश्तेदार है, अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं, हिरक़्ल ने हुक्म दिया कि उसको (अबू सुफ़ियान को) मेरे पास ले आओ और उस के साथियों को उस की पीठ के पीछे खड़ा कर दो और उन से कह दो कि मैं उस (अबू सुफ़ियान) से उन (रसूलुल्लाह सल्ल०) के बारे में कुछ सवाल करता हूं, अगर यह ग़लत बयान करे तो तुम उस को झुठला देना। अबू सुफ़ियान का कहना है कि अगर उस वक़्त मुझे ग़लत बयानी के इल्ज़ाम का डर न होता तो मैं ख़ुदा की क़सम ! आप के बारे में झूठ बोलता।

हिरक़्ल ने सब से पहले पूछा कि तुम लोगों में उन का नसब कैसा है ? अबू सुफ़ियान ने कहा कि उन का नसब अच्छा है। हिरक़्ल ने कहा, क्या तुम में से किसी ने यह (इस्लाम की) बात उन से पहले भी कभी कही है ? अबू सुफ़ियान ने कहा नहीं। हिरक़्ल बोला कि उन के पुरखों में कोई बादशाह भी हुआ है ? जवाब मिला नहीं। हिरक़्ल ने कहा, क्या बड़े लोग उन की पैरवी करते हैं या कमज़ोर लोग ? जवाब मिला कि कमज़ोर लोग। हिरक़्ल ने कहा, उन की पैरवी करने वाले ज़्यादा होते जाते हैं या

कम ? जवाब मिला ज़्यादा। हिरक़्ल ने कहा, उन के मज़हब में दाख़िल होने के बाद कोई शख़्स नाराज़ होकर मुर्तद (इस्लाम से निकल जाना) भी हो जाता है, जवाब मिला नहीं। हिरक़्ल ने पूछा, क्या नुबूवत का दावा करने से पहले तुमने उन को झूठा समझा है, जवाब मिला नहीं। हिरक़्ल ने कहा, क्या वह धोखा देते हैं ? जवाब मिला नहीं। अबू सुफ़ियान का कहना है कि मैंने उस के बाद कहा कि हमारे और उन के बीच अब एक तै की हुई मुद्दत मुक़र्रर है, पता नहीं, वह इस मुद्दत में क्या करें, इस के सिवा और कोई बात ऐसी नहीं हुई कि जिस में शक की कोई बात मिला सकता। हिरक़्ल ने कहा, क्या तुमने उन से कभी मुक़ाबला भी किया है ? जवाब मिला, जी हां। हिरक़्ल बोला, फिर उस का नतीजा क्या रहा ? जवाब मिला, कभी वह बाज़ी ले जाते हैं, कभी हम। हिरक़्ल ने कहा, वह तुम को क्या हुक्म देते हैं ? जवाब मिला, वह हम से कहते हैं, ख़ुदा की इबादत करो, किसी को उस के साथ शरीक न बनाओ और उन चीज़ों की पूजा करना छोड़ दो जिन को तुम्हारे बाप-दादा पूजते थे। वह हम को नमाज़ का, सच्चाई का, पाकदामनी का और रिश्तों के जोड़ने का हुक्म देते हैं।

हरक़्ल ने तर्जुमान से कहा, इन से कह दो कि मैंने तुम से उन का नसब पूछा तो तुमने कहा, वह हम में नसब वाले हैं, (बेशक) रसूल अपनी क़ौम में शरीफ़ होते हैं। मैंने पूछा था कि क्या इस से पहले किसी और ने भी नुबूवत का दावा किया था, तुमने जवाब दिया नहीं, इस लिए मैं कहता हूं कि अगर इस से पहले किसी और ने यह दावा किया होता तो मैं कह सकता कि इस शख़्स ने उस की बात को दोहराया है।

मैंने तुम से पूछा था कि उन के पुरखों में से कोई बादशाह हुआ है, तुमने जवाब दिया नहीं, इस लिए मैं कहता हूं कि अगर उन के पुरखों में से कोई बादशाह हुआ होता तो मैं ख़्याल करता कि यह बाप के मुल्क की तलब रखते हैं। मैंने पूछा था कि इस दावे से पहले क्या तुम उनपर झूठा होने की कोई तोहमत लगाते थे, तुमने कहा नहीं, इस लिए मैं अच्छी तरह समझता हूं कि जो शख़्स लोगों से झूठ नहीं बोलता वह ख़ुदा पर झूठी तोहमत कैसे लगा सकता है। मैंने तुम से पूछा था कि क्या बड़े लोग उन की पैरवी करते हैं या कमज़ोर लोग, तुमने कहा कमज़ोर लोग, रसूलों की पैरवी करने वाले भी ऐसे ही लोग होते हैं। मैंने तुम से पूछा था कि उनकी पैरवी

करने वाले तरक़्क़ी पर हैं या कमी पर, तुमने बताया तरक़्क़ी पर, ईमान इसी तरह बढ़ता जाएगा यहां तक कि पूरा हो जाएगा। मैंने तुम से मालूम किया था कि क्या उन के मज़हब में दाख़िल होने के बाद नाराज़ होकर कोई उन के दीन से फिर भी जाता है या नहीं, तुमने जवाब दिया नहीं, तो वाक़ई ईमान ऐसी ही चीज़ है, ईमानी ख़ुशी जिस के दिल में जम जाती है फिर नहीं निकलती, मैंने तुम से सवाल किया था कि क्या वह किसी को धोखा देते हैं, तुमने कहा नहीं, तो वाक़ई में सच्चे रसूल ऐसे ही होते हैं किसी को धोखा नहीं देते। मैंने तुम से पूछा था कि वह तुम को किस बात को करने के लिए हुक्म देते हैं तुमने बताया वह हम को हुक्म देते हैं कि एक अल्लाह की इबादत करो, किसी को उसका शरीक न बनाओ, बुतों की पूजा करने से वह मना करते हैं। नमाज़, सच्चाई, पाकदामनी का हुक्म देते हैं तो अगर जो कुछ तुम कहते हो वह सच है तो वह जल्द ही मेरे इन दोनों क़दमों की जगह के भी मालिक हो जाएंगे। मैं यक़ीनी तौर पर जानता था कि एक शख़्स पैदा होगा लेकिन मेरा यह ख़्याल न था कि वह तुम में से होगा। काश मुझे यह मालूम हो जाता कि मैं उन तक पहुंच सकता हूं तो बे-तकल्लुफ़ उन से नियाज़ हासिल करता और अगर मैं उनकी ख़िद्मत में होता तो उन के पांव धोता। इसके बाद हिरक़्ल ने हुज़ूर सल्ल० का वह ख़त मांगा जो वह्या के हाथ बसरा के बादशाह (मदीना और दमिश्क़ के बीच एक शहर है जिस को अब हूरान कहते हैं) के नाम भेजा गया था उस ख़त को लेकर पढ़ा। बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्रहीम। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ से जो ख़ुदा का रसूल है हिरक़्ल रूम के बादशाह के नाम। जो शख़्स हिदायत की पैरवी करे उस पर सलामती हो। हम्द के बाद वाज़ेह हो कि मैं तुमको इस्लाम की दावत देता हूं, मुसलमान हो जाओगे तो सलामत रहोगे और अल्लाह तुम को (दोहरा) बदला अता फ़रमाएगा। सरकशी करोगे तो तुम्हारी रियाया का वबाल तुम पर होगा। ऐ किताब वालो! एक बात की तरफ़ जो हम में और तुम में दोनों में है, आ जाओ वह यह कि ख़ुदा के सिवा हम किसी की परस्तिश (भक्ति) न करें, उस के साथ किसी को शरीक न करें और हम में से कोई ख़ुदा के अलावा किसी को परवरदिगार न बनाए। अब भी इस पयाम के बाद अगर वह सरकशी करें तो तुम कह दो कि गवाह रहो हम मुसलमान हैं। रिवायत बयान करने वाला कहता है कि अबू सुफ़ियान ने बयान किया जब हिरक़्ल को जो कुछ कहना था वह कह चुका और ख़त पढ़ चुका तो उसके बाद

बहुत चीख-पुकार हुई, आवाजें बुलंद होने लगीं और हम को निकाल दिया गया। मैंने अपने साथियों से कहा कि अब तो इब्ने कब्शा (हुज़ूर सल्ल० की कुन्नियत है जो कुफ़्फ़ार इस्तेमाल करते थे, अबू कब्शा आप के दादा की कुन्नियत थी) की शान बढ़ गई। इस से तो बनी असग़र (रूमियों) का बादशाह भी डरता है (अबू सुफ़ियान का क़ौल है) कि उसके बाद मैं हमेशा यक़ीन करता रहा कि आप जरूर ग़ालिब आएंगे। यहां तक कि ख़ुदा ने मुझे इस्लाम में दाख़िल किया। इब्ने नातूर जो एलिया का अमीर, हिरक़्ल का वज़ीर और शामी ईसाइयों का पादरी था, उस का कहना है कि हिरक़्ल जब से एलिया में आया है बद-बातिन हो गया है। हिरक़्ल के कुछ हुकूमत के मुशीरों ने हिरक़्ल से यह भी कह दिया था हमको तुम्हारी शक्ल भी देखनी नागवार है। इब्ने नातूर कहता है कि हिरक़्ल नजूमी था। जब लोगों ने उस से पूछा तो कहने लगा कि मैंने आज रात जो सितारों को ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि मलिकुल ख़त्तान (ख़तना वालों के बादशाह) का ज़ुहूर हो गया है, दरबार के लोगों ने जवाब दिया कि ख़तना तो यहूदी कराते हैं, उन के अलावा और कोई ख़तना नहीं कराता, लेकिन आप को उन का कुछ ख़्याल करना चाहिए, अपनी सभी अमलदारी के बड़े-बड़े शहरों में हुक्म भिजवा दीजिए कि जहां-जहां यहूदी हों, क़त्ल कर दिए जाएं। ये लोग इसी बातचीत में लगे हुए थे कि ग़स्सान के बादशाह का एलची हिरक़्ल के पास आया और आकर रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़ुहूर की ख़बर दी। हिरक़्ल ने सब हालात पूछने के बाद हुक्म दिया कि जाओ मालूम तो करो, उन का ख़त्ना किया हुआ है या नहीं, लोगों ने पता लगाया तो मालूम हुआ कि ख़त्ना कराये हुए हैं, फिर हिरक़्ल ने आम अरबों के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि वे भी ख़त्ना कराते हैं। हिरक़्ल कहने लगा कि यही इस क़ौम के बादशाह हैं। इस के बाद हिरक़्ल ने रूमिया के हाकिम को (आप के बारे में) लिखा और ख़ुद हम्स रवाना हो गया। रूमिया का हाकिम भी नुजूम में हिरक़्ल के बराबर ही था, हम्स पहुंचने से पहले रूमिया के हाकिम का जवाब आ गया, जिस से मालूम होता था कि वह भी हिरक़्ल के ही ख़्याल का है और उस की भी यही राय है कि आप नबी हैं और आप का ज़ुहूर हो गया है। उस के बाद हिरक़्ल ने रूम के सभी बड़े-बड़े लोगों को हम्स के शाही महल में बुलाया और दरवाज़े के रास्ते बन्द कर के मुंह खिड़की से

निकाल कर कहने लगा, ऐ रूम के गिरोह ! क्या तुम को भलाई के रास्ते की ख़्वाहिश है ? क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी सल्तनत क़ायम रहे ? अगर है तो उस शख़्स (रसूलुल्लाह सल्ल०) की बैअत कर लो, लोग यह सुन कर जानवरों की तरह दरवाज़ों की तरफ़ भागने लगे लेकिन दरवाज़े बन्द थे। हिरक़्ल ने जब लोगों की यह हालत देखी तो उन के ईमान से मायूस होकर कहने लगा कि इन को मेरे पास वापस लाओ (जब लोग वापस आ गये) तो कहने लगा कि मैंने असल में तुम्हारा मज़हब पर जमे रहने को आज़माया था, तो मुझे मालूम हो गया। लोगों ने (यह सुन कर) सज्दा किया और हिरक़्ल से ख़ुश हो गए। हिरक़्ल की यह आख़िरी हालत थी

बाब २

ईमान के बयान में

८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है, (१) इस बात की गवाही देनी कि अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, (२) नमाज़ को ठीक-ठीक पढ़ना, (३) ज़कात देना, (४) हज करना, (५) रमज़ान के रोज़े रखना।

९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया ईमान की कुछ ऊपर साठ शाखें हैं। हया भी ईमान की एक शाख़ है।

१०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया कि पक्का मुसलमान वह है जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसल-

मान सलामत रहें और मुहाजिर वह है जो ख़ुदा की मना की हुई चीज़ों को छोड़ दे।

११. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन-सा इस्लाम (यानी मुसलमान) अच्छा है, फ़र्माया जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसलमान हिफ़ाज़त से रह सकें।

१२. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन सा इस्लाम अच्छा है, फ़र्माया बेहतरीन इस्लाम यह है कि तुम जान-पहचान और अजनबी लोगों को खाना खिलाओ और सलाम करो।

१३. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उस की नज़र में उस के वालिदैन और औलाद से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। हज़रत अनस रज़ि० से भी यही हदीस रिवायत की गयी है, लेकिन आख़िर में 'वन्नासि अजमईन' का लफ़्ज़ ज़्यादा है यानी उस के वालिदैन, औलाद और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।

१४. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जिस शख़्स में तीन बातें मौजूद होंगी उस को ईमान की मिठास मिलेगी। ख़ुदा व रसूल सल्ल० उस को दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हों। जिस किसी से दोस्ती हो सिर्फ़ ख़ुदा के लिए हो, कुफ़्र की तरफ़ लौट जाने को ऐसा बुरा जाने, जैसा कि आग में गिराए जाने को बुरा जानता है।

१५. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अन्सार से मुहब्बत करना ईमान की पहचान है और अन्सार से दुश्मनी रखना मुनाफ़िक़ होने की निशानी है।

१६. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर सल्ल० के आस-पास सहाबा रज़ि० की एक जमाअत बैठी हुई थी हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुझ से इन शर्तों पर बैअत करो कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न बनाओगे। चोरी और ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे (किसी पर) अपनी तरफ़ से खुली हुई तोहमत न रखोगे, और नेक काम से नाफ़रमानी न करोगे, जो शख़्स इन बातों को पूरा

करेगा, उस का अज्र खुदा पर है और जो शख्स इन चीजों में से किसी चीज को करेगा और दुनिया में उस को सज़ा दे दी जाएगी तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगी, और अगर किसी ने ज़िक्र किये गये काम किये और अल्लाह तआला ने उस के राज़ को छिपा लिया तो वह खुदा के हवाले है, चाहे माफ़ फ़रमाये या अज़ाब दे (रावी का बयान है) हमने इस पर हुज़ूर की बैअत की।

१७. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह वक़्त क़रीब है जब कि आदमी अपनी बकरियां पहाड़ की चोटियों पर और बारिश की जगहों पर लिए फिरेगा ताकि अपने दीन को फ़ित्नों से बचाए रख सके।

१८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूरे अक्रम सल्ल० जब लोगों को हुक्म देते तो सिर्फ़ इतना जितना उनकी ताक़त में हो, लोग कहते ऐ अल्लाह के रसूल ! हम आप की तरह तो हैं नहीं (क्यों कि आप को ज्यादा आमाल की ज़रूरत नहीं, हम को तो ज्यादा आमाल की ज़रूरत है) आप के सब अगले-पिछले गुनाह अल्लाह तआला ने माफ़ फ़र्मा दिये हैं। हुज़ूर सल्ल० इस पर गुस्सा होते, यहां तक कि गुस्से का असर आपके चेहरे पर ज़ाहिर होने लगता। फिर फ़र्माते, मैं तुम से ज्यादा खुदा से डरने वाला और तुम से बढ़ कर खुदा को जानने वाला हूं।

१९. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जन्नती जन्नत में और दोज़खी दोज़ख में दाखिल हो जाएंगे। इसके बाद अल्लाह तआला फ़र्माएगा, जिस के दिल में राई के बराबर भी ईमान है उस को दोज़ख से निकाल लो। ये लोग जब (अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़) दोज़ख से निकाले जाएंगे, उस वक़्त उन के बदन स्याह होंगे। इस के बाद उन को नहरे हयात में डाला जाएगा, जिस से वह इस तरह उगेंगे जिस तरह सैलाब के किनारे दाना उगता है। देखो सैलाब के किनारे ज़र्द दाना बीच-बीच में तर व ताज़ा उगता है।

२०. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मैं सो रहा था (ख्वाब में), मैंने देखा कि लोग मेरे सामने पेश किए जा रहे हैं जो कुरते पहने हुए हैं, कुछ लोगों के कुरते सीनों तक और कुछ के उस से भी कम हैं। जब हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० को पेश किया गया तो उन का कुरता (इतना लंबा था) कि वह उस को खींचते

हुए चलते थे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० ने इस का क्या अंजाम बताया। फ़रमाया, दीनदारी।

२१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर एक अंसारी शख़्स की तरफ़ से गुज़रे। वह अपने भाई को हया के बारे में नसीहत कर रहा था। हुज़ूर ने फ़र्माया, इस ज़िक्र को छोड़ो, हया तो ईमान का हिस्सा है।

२२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से मुक़ाबला करूं, ताकि वह इस बात के क़ायल हो जाएं कि ख़ुदा के सिवा और कोई इबादत के क़ाबिल नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के रसूल हैं। नमाज़ ठीक-ठीक पढ़ें, और ज़कात दें। अगर वे ऐसा कर लेंगे, तो मुझ से इस्लाम के हक़ के सिवा अपनी जानों और मालों को महफ़ूज़ कर लेंगे और फिर उन का हिसाब अल्लाह तआला पर है।

२३. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि कौन-सा अमल सबसे ज़्यादा अच्छा है। फ़रमाया, अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाना। यह पूछा गया कि इस के बाद (कौन सा अफ़ज़ल अमल है।) फ़र्माया, ख़ुदा की राह में जिहाद करना। अर्ज़ किया गया, फिर (कौन सा अमल बेहतर है), फ़र्माया मक़बूल हज।

२४. हज़रत साद बिन वक़्क़ास रज़ि० से रिवायत है कि मैं बैठा हुआ था। उस वक़्त हुज़ूर ने एक जमाअत को कुछ भेंट किया और एक शख़्स को छोड़ दिया। यह शख़्स मुझे सब से ज़्यादा पसन्द था। मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! फ़्लां शख़्स को हुज़ूर ने क्यों छोड़ दिया, मुझे तो ख़ुदा की क़सम वह मोमिन मालूम होता है। फ़र्माया (मोमिन) न कहो बल्कि मुसलमान कहो, (क्यों कि) ईमान दिल से ताल्लुक़ रखता है, ख़ुदा के अलावा, इसे कोई नहीं जानता, हां, इस्लाम को लोग जान सकते हैं। मैं ख़ामोश हो गया, लेकिन फिर थोड़ी देर बाद मुझ से न रहा गया, तो मैंने वही बात दोबारा अर्ज़ की। हुज़ूर ने उसे क्यों छोड़ दिया, ख़ुदा की क़सम ! मैं तो उस को मोमिन जानता हूं। फ़र्माया (मोमिन) न कहो, बल्कि मुसलमान कहो। मैं ख़ामोश हो गया बल्कि मुझसे न रहा गया, तो फिर कुछ देर बाद वही बात फिर अर्ज़ की और हुज़ूर ने वही जवाब दिया। इसके बाद फिर फ़र्माया, साद ! मैं कभी ऐसे

लोगों को भी देता हूं कि उन से ज्यादा मुझे दूसरे लोग महबूब होते हैं, मैं डरता हूं कि कहीं खुदा उन को दोज़ख में न डाल दे, (यानी कुछ न मिलने की वजह से यह इस्लाम से फिर जाएं और दोज़ख में डाल दिया जाए।)

२५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने फ़र्माया कि मुझे दोज़ख दिखायी गई, उस में ज्यादा तायदाद औरतों की थी, जो नाफ़र्मानी करती थीं। अर्ज़ किया गया कि क्या खुदा की नाफ़र्मानी करती थीं। फ़र्माया, शौहर की नाफ़र्मानी करती थीं और एहसान का इंकार करती थीं (उन का क़ायदा है) कि अगर तुम उम्र भर उन के साथ एहसान करो और एक बात तुम से उन को नागवार गुज़रे तो कहने लगती हैं कि मैंने तुम से कभी नेक सुलूक नहीं देखा।

२६. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) एक शख्स से मेरी गाली-गलौज हुई, मैंने उस को मां की गाली दी। इस पर हुज़ूर ने फ़र्माया, अबूज़र! क्या तुमने उस को मां की गाली दी है। तुम में जाहिलियत की (बू) है, तुम्हारी खिद्मत करने वाले तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह तआला ने उन को तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया है, इस लिए जिस शख्स का भाई उस के क़ब्ज़े में हो, उस को चाहिए कि जो खुद खाए उस को भी खिलाए, जो खुद पहने उस को भी पहनाए और ऐसे काम के लिए उस को तक्लीफ़ न दो, जो उस के बस का न हो अगर उस से ऐसा काम कहो भी, तो उस में उस की मदद करो।

२७. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, जब दो मुसलमान तलवारें लेकर आपस में भिड़ जाएं, तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों दोज़खी हैं। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क़ातिल तो खता करने वाला है लेकिन मक़्तूल ने क्या खता की है। फ़रमाया वह अपने मुक़ाबले के (मुसलमान) के क़त्ल करने की हिर्स करता था।

२८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि जब आयत 'अल्लज़ी न आमनू व लम यल्बसू ईमानहुम बि ज़ुल्मिन' नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ि० ने पूछा, क्या हम में से तो किसी ने ज़ुल्म नहीं किया? उस वक़्त अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़र्माया कि शिर्क यक़ीनन बड़ा ज़ुल्म है।

२९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का कहना है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुनाफ़िक़ की तीन पहचानें हैं। जब वह वायदा करे, तो उस को

पूरा न करे, बात करे तो झूठ बोले (उस के पास) अमानत रखी जाए तो खियानत करे।

३०. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० कहते हैं कि हुजूर ने फ़र्माया जिस शख्स में ये चार बातें हों, वह पक्का मुनाफ़िक़ है और जिसमें एक बात हो उस में निफ़ाक़ की एक आदत है, यहां तक कि उस को छोड़ दे, (१) जब (उस के पास) अमानत रखी जाए तो खियानत करे, (२) जब बात करे तो झूठ बोले, (३) जब वायदा करे तो उस के खिलाफ़ करे, (४) जब झगड़ा हो तो गालियां बकने लगे।

३१. हजरत अबू हुरैरह रजि० कहते हैं कि हुजूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख्स शबे-क़द्र में ईमान के साथ सवाब की ख्वाहिश के लिए क़ियाम करे तो उस के अगले गुनाह बख्श दिए जाते हैं।

३२. हजरत अबूहुरैरह रजि० से रिवायत है कि हुजूर ने फ़र्माया, जो शख्स खुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकले, अल्लाह पर ईमान और रसूलों पर तस्दीक़ के सिवा और किसी चीज ने उस को (घर से बाहर) न निकाला हो, तो खुदा ने उस के लिए तै फ़र्मा दिया है, या तो सवाब का अज्र और ग़नीमत देकर उस को असल दिरहम वापस करूंगा या उस को जन्नत में दाखिल करूंगा। अगर मुझ को अपनी उम्मत पर बोझ डालने का डर न होता तो मैं (मुजाहिदीन के) किसी लश्कर से पीछे न रहता और इसको पसन्द करता कि अल्लाह की राह में मारा जाऊं, फिर जिंदा किया जाऊं, फिर मारा जाऊं, फिर जिंदा किया जाऊं, फिर मारा जाऊं।

३३. हजरत अबूहुरैरह रजि० से रिवायत है हुजूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख्स रमजान में ईमान के साथ सवाब की ख्वाहिश के लिए क़ियाम करता है, उस के पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

३४. हजरत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं, हुजूर ने फ़र्माया, दीन यक़ीनन आसान है, जो शख्स दीन में ज्यादती अख्तियार करता है, दीन उस पर ग़ालिब आ जाता है (दीन में मुश्किल और सख्ती अख्तियार करने वाला आसान और दुश्वार दोनों से महरूम रह जाता है।) इस लिए तुम बीच की चाल चलो और उस के पास-पास रहो। खुशखबरी हासिल करो और सुबह-शाम और तड़के के वक़्तों में खुदा की मदद तलब करो।

३५. हजरत बरा बिन आजिब रजि० से रिवायत है कि हुजूर

सल्ल० जब पहली बार मदीना तशरीफ़ लाये तो अन्सार के यहां अपनी ननिहाल में ठहरे और सोलह-सत्रह माह बैतुलमक़्दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ी, (मगर) आप को यह बात पसंद थी कि आप का क़िब्ला बैतुल्लाह हो, सब से पहले आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ में एक जमाअत आप के साथ शरीक थी, जमाअत में शरीक लोगों में से नमाज़ के बाद एक शख़्स (मस्जिद से) निकला और एक मस्जिद की तरफ़ से गुज़रा, तो वहां लोग रुकूअ में थे और बैतुलमक़्दिस की तरफ़ रुख था। यह शख़्स कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम! मैंने (अभी) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्का की तरफ़ नमाज़ पढ़ी है, (यह सुन कर) लोग उसी हालत में काबा की तरफ़ घूम गए। जब आप बैतुलमक़्दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे तो यह यहूदी और दूसरे किताब वालों को पसन्द न था, लेकिन जब बैतुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो गए, तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया।

३६. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि जब बंदा मुसलमान हो जाता है और उस का इस्लाम सही होता है तो अल्लाह तआला उस को हर पिछली बुराइयों का कफ़्फ़ारा कर देता है और इस जब्र व नुक़्सान के बाद उस की हर नेकी का बदला दस गुने से सात सौ गुने तक होता है और बुराई का बदला बुराइ जितना होता है, मगर यह कि अल्लाह तआला इस से दरगुज़र फ़र्माए।

३७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर (एक बार) मेरे यहां तशरीफ़ लाए, मेरे पास एक औरत मौजूद थी, हुज़ूर ने फ़र्माया, यह कौन है? मैंने अर्ज़ किया फ़लां औरत है, जिस की नमाज़ की ज़्यादती का चर्चा हो रहा है। फ़र्माया, ठहरो, अपने ऊपर उतना ही बोझ उठाओ, जितना तुम्हारी ताक़त में हो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम! जब तक तुम ख़ुद अपने को तक्लीफ़ में न डालो, ख़ुदा तुम को तक्लीफ़ में नहीं डालता। हज़रत उम्मुल मोमिनीन फ़र्माती हैं कि हुज़ूर को वही दीनी बात पसन्द थी, जिस की इंसान हमेशा पाबन्दी कर सके।

३८. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जो शख़्स ला इला ह इल्लल्लाह को मानता हो और उस के दिल में जौ बराबर नेकी हो, वह दोज़ख से निकाल लिया जाएगा और जो शख़्स ला इला ह इल्लल्लाह कहे और उस के दिल में गेहूं इतनी नेकी हो उस को भी

दोज़ख़ से निकाल लिया जाएगा।

३९. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि एक यहूदी ने मुझ से कहा कि ऐ, अमीरुल मोमिनीन ! तुम्हारी किताब में एक आयत है, जिस की तुम तिलावत करते हो, अगर वह हम पर (यहूद) नाज़िल होती तो हम उस दिन को ईद बना लेते। मैंने कहा कि कौन सी आयत है वह कहने लगा अल यौ म अक्मल्तु लकुम दीनकुम (आख़िर तक) मैंने कहा हम भी उस दिन और उस जगह को जानते हैं, जब कि हुज़ूर पर यह आयत नाज़िल हुई थी। आप जुमा के दिन (उस वक़्त) अर्फ़ा के मक़ाम में खड़े हुए थे।

४०. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर की ख़िद्मत में एक नज्जारी हाज़िर हुआ, उस के बाल बिखरे हुए थे हम को उस की आवाज़ की भनभनाहट तो सुनाई देती थी, मगर समझ में कुछ नहीं आता था, जब वह पास आया तो (मालूम हुआ) कि इस्लाम के बारे में पूछ रहा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, एक दिन-रात में पांच नमाज़ें हैं, उसने अर्ज़ किया, क्या मुझ पर इन के अलावा कोई और (नमाज़) भी है ? आपने फ़र्माया, नहीं, लेकिन तुम अगर नफ़्लें पढ़ो (तो ख़ैर), फिर आपने फ़र्माया और रमज़ान के रोज़े भी हैं ? उसने अर्ज़ किया, क्या मुझ पर उन के सिवा और (रोज़े) भी हैं ? आपने जवाब दिया नहीं, मगर यह कि तुम नफ़्ली रोज़े रखो (तो ख़ैर !) रिवायत करने वाले का बयान है कि उस के बाद वह शख़्स पीठ फेर कर यह कहता हुआ चला गया कि ख़ुदा की क़सम ! न उस पर ज़्यादती करूंगा, न कमी ,(यह सुन कर) हुज़ूर ने फ़र्माया, अगर उसने सच कहा है तो उस को कामियाबी हासिल हो गयी ।

४१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर ने फ़र्माया, जो शख़्स ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद से किसी मुसलमान के जनाज़े के साथ जाए और नमाज़ व दफ़न से फ़ारिग़ होने तक उस के साथ रहे, तो वह दो क़ीरात सवाब लेकर लौटेगा, हर क़ीरात उहद के पहाड़ के बराबर होगा और जो शख़्स नमाज़ पढ़ कर दफ़न से पहले लौट आएगा, वह एक क़ीरात लेकर वापस आएगा।

४२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, मुसलमानों को गाली देना फ़िस्क़ है और उस को क़त्ल करना

कुफ़ है।

४३. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शबे-क़द्र की ख़बर देने के लिए (मकान से) निकले। दो मुसलमान बाहर झगड़ा कर रहे थे, आपने फ़र्माया, मैं तुम को शबे-क़द्र की ख़बर देने निकला था, लेकिन फ़्लां-फ़्लां आपस में झगड़ा कर रहे थे, लिहाज़ा वह उठायी गई और उम्मीद है कि वह तुम्हारे लिए बेहतर होगी, उस को सत्ताइसवीं, पचीसवीं, उनतीसवीं तारीख़ों में तलाश करो।

४४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन लोगों के सामने आए। एक शख़्स ने आकर पूछा कि ईमान क्या चीज़ है? आपने फ़र्माया, ईमान यह है कि तुम ख़ुदा पर, उस के फ़रिश्तों पर और (क़ियामत में) उस के मिलने पर और उस के रसूलों पर दिल से यक़ीन रखो और मर कर ज़िंदा होने को सच जानो, उसने अर्ज़ किया, इस्लाम क्या चीज़ है? फ़र्माया, इस्लाम यह है कि तुम ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न बनाओ; उसी की इबादत करो, नमाज़ ठीक-ठीक पढ़ो। ज़कात का फ़र्ज़ अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। उसने अर्ज किया, ख़ूबी क्या है? फ़र्माया ख़ूबी यह है कि तुम अल्लाह की इस तरह इबादत करो गोया ख़ुदा को देख रहे हो। अगर यह मर्तबा हासिल न हो तो इतना (तो हो) कि ख़ुदा तुम को देख रहा है, उसने अर्ज़ किया क़ियामत कब होगी? फ़र्माया, जिस से पूछ रहे हो वह पूछने वाले से ज़्यादा क़ियामत के बारे में नहीं जानता, हां, मैं तुम को इस की निशानी की जानकारी देता हूं। जब बांदी अपने मालिक को जनेगी, जब ऊंटों के चरवाहे ऊंची-ऊंची इमारतें बनाएंगे (उस वक़्त क़ियामत क़रीब होगी) (क़ियामत का इल्म) उन चीज़ों में से एक है जिन को अल्लाह तआला के अलावा और कोई नहीं जानता। फिर आपने यह तिलावत की 'इन्नल्ला ह इन्दहु इल्मुस्सा अत' (आख़िर तक) इस के बाद वह शख़्स चला गया। आपने फ़र्माया उस को वापस बुलाओ, लेकिन लोगों को वह न मिला, आपने फ़र्माया, यह जिब्रील थे, जो लोगों को दीन की तालीम देने आए थे।

४५. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, हलाल भी खुला हुआ है और हराम भी खुला हुआ है और इन दोनों के बीच शुब्हे की चीज़ें हैं, जिसे अक्सर लोग नहीं

जानते, जो शुब्हात से बचता रहा उसने दीन व आबरू को बचा लिया और जो शुब्हात में पड़ गया, वह उस जानवर की तरह है जो (चरागाह) बाड़े के आस-पास चरता है। बहुत मुम्किन है कि इस बाड़े में गिर जाए। तुम को मालूम होना चाहिए कि हर बादशाह के कानून (हुक्म) का एक बाड़ा होता है। और ख़ुदा का बाड़ा मना की हुई चीज़ें हैं। यह भी याद रखो कि जिस्म में एक टुकड़ा है कि अगर वह दुरुस्त है तो सब बदन ठीक है अगर वह बिगड़ गया तो सब बदन बिगड़ जाता है, तो सुनो वह टुकड़ा दिल है।

४६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जब हुज़ूर की ख़िद्मत में अब्दुल क़ैस का वफ़्द आया, तो आपने फ़र्माया ख़ुश आमदीद ! तुम्हारे लिए ! न तुम रुसवा हो न शर्मिंदा। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ, अल्लाह के रसूल ! हमारे और हुज़ूर के बीच मुज़र ख़ानदान के कुफ़्फ़ार जाहिल हैं इस लिए हम इस माह (हराम) के सिवा और तो हाज़िर हो नहीं सकते, आप हम को ऐसी ठीक बात बता दीजिए कि हम अपने और लोगों को इस की ख़बर दे दें और सब जन्नत में दाख़िल हो सकें (यानी आख़िरत में हमारी निजात हो जाए।) उस के बाद उन्होंने शराब के बारे में पूछा। हुज़ूर ने इन चार चीज़ों के करने का हुक्म दिया और इन चार चीज़ों से मना फ़र्माया, उन को एक अल्लाह पर ईमान लाने का, नमाज़ ठीक-ठीक पढ़ने का, ज़कात अदा करने का, रमज़ान के रोज़े रखने का, और माले ग़नीमत में से पांचवा हिस्सा देने का हुक्म दिया और फ़र्माया तुम जानते हो कि ईमान का क्या मतलब है ? उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल अच्छी तरह जानते हैं, आपने फ़र्माया कि ईमान इस बात की गवाही देने का नाम है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं उस का कोई शरीक नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं। जिन चार चीज़ों से मना फ़र्माया वह यह हैं—ख़त्म (रोग़नी सब्ज़ घड़े में) बबा (कद्दू की तोंबी में) तावीर (खोदी हुई लकड़ी में) और मुज़फ़्फ़त (राल के पालिश किए हुए घड़े) में पानी या नबीज़ (खजूर को पानी में भिगो देने से जो शरबत बनता है) डाल कर पीने से मना फ़र्माया फिर फ़र्माया इन को याद कर लो और अपने लोगों को उस की जानकारी दो।

४७. हज़रत अबू मसऊद रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया

अगर आदमी अपने घर वालों (बीवी-बच्चों) पर नेक नीयती और सवाब की उम्मीद से खर्च करे, तो यह उस के लिए सद्क़ा है।

४८. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के हाथ पर नमाज़ पढ़ने, ज़कात अदा करने और हर मुसलमान की भलाई करने की बैअत की।

४६. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, मैं हुज़ूर को इस्लाम पर बैअत करता हूं। आपने हर मुसलमान की भलाई की भी शर्त लगायी और मैंने उन शर्तों पर बैअत कर ली।

बाब २

इल्म के बयान में

५०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मज्लिस में लोगों के सामने हदीस बयान फ़र्मा रहे थे कि एक देहाती आपकी ख़िद्मत में हाज़िर हो कर अर्ज़ करने लगा, क़ियामत कब होगी? (मगर आप) बराबर हदीस बयान करते रहे। कुछ लोगों ने ख़्याल किया कि हुज़ूर सल्ल० ने सुन तो लिया, मगर आप को नागवार हुआ (इस लिए जवाब नहीं दिया)। कुछ का ख़्याल था कि हुज़ूर ने सुना ही नहीं। ख़ैर जब आप बात ख़त्म कर चुके तो फ़र्माया कि क़ियामत के बारे में पूछने वाला कहां है? देहाती ने अर्ज़ किया, मैं हाज़िर हूं, आपने फ़र्माया जब अमानत ख़त्म होने लगे तो क़ियामत का इन्तिज़ार रखो, देहाती ने अर्ज़ किया, अमानत का ख़त्म होना कैसा? फ़र्माया जब दीन का काम ऐसे लोगों के सुपुर्द हो, जो उस के अह्ल न हों, तो क़ियामत का इन्तिज़ार करो।

५१. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक सफ़र में अल्लाह के रसूल सल्ल० हम से पीछे रह गए। थोड़ी देर के बाद आप हम लोगों तक पहुंच गए। नमाज़ का वक़्त चूंकि क़रीब आ गया था, इस लिए हम लोग वुज़ू कर रहे थे (जल्दी की वजह से) हम पांव को चुपड़ने लगे। आपने बुलंद आवाज़ से दो बार इर्शाद फ़र्माया कि एड़ियों के लिए दोज़ख का तबक़ा वेल है। यानी एड़ियां अगर खुश्क रह जाएं तो दोज़ख में जलाई जाएंगी।

५२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर ने फ़र्माया पेड़ों में एक ऐसा पेड़ है जिस के पत्ते नहीं गिरते हैं और यही मिसाल मुसलमानों की है, बताओ वह कौन-सा पेड़ है? (यह सुन कर) लोग जंगल के पेड़ों के बारे में सोचने लगे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मेरे दिल में आया था कि यह खजूर का दरख्त है (कहते हुए) मुझे शर्म आयी। आखिर लोगों ने कहा कि हुज़ूर ही बतला दें, आपने फ़र्माया खजूर का पेड़ है।

५३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हम लोग आप के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे, एक शख्स ऊंट पर आया, ऊंट को मस्जिद में बिठा कर किसी चीज़ से बांध दिया और फिर कहने लगा, तुम में से मुहम्मद (सल्ल०) कौन हैं? हुज़ूर उस वक़्त तकिया लगाए हुए बैठे थे। हमने बताया कि यह शख्स जो सफ़ेद तकिया लगाए हुए हैं (मुहम्मद हैं)। वह कहने लगा, ऐ इब्ने अब्दुल मुत्तलिब! हुज़ूर ने फ़र्माया—'जी' मैं सुन रहा हूं, उसने कहा कि मैं आप से कुछ पूछूंगा और पूछने में सख्ती से काम लूंगा, आप मेरी तरफ़ से दिल में कुछ ख्याल न करना. आपने फ़र्माया नहीं, जो कुछ पूछना हो पूछो, वह कहने लगा, आप को आप के परवरदिगार और पहले लोगों के परवरदिगार की क़सम! मुझे बताइए कि क्या अल्लाह तआला ने आप को सभी लोगों के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा है? आपने अल्लाह तआला को गवाह बना कर फ़र्माया, 'हां' फिर उसने कहा, मैं आप को खुदा की क़सम देता हूं कि क्या अल्लाह ने आप को दिन-रात में पांच नमाज़ों का हुक्म दिया है? आपने खुदा को गवाह कर के फ़र्माया, 'हां।' फिर उसने कहा कि आप को खुदा की क़सम! क्या आप को खुदा ने हुक्म दिया है कि सद्क़ा मालदारों से वसूल कर के ग़रीबों में बांट दें, आपने खुदा को गवाह कर के फ़र्माया, 'हां।' उस वक़्त वह शख्स

कहने लगा कि आप जो कुछ लेकर आए हैं, मैं सब पर ईमान ले आया, मैं अपनी क़ौम का क़ासिद हूं और मेरा नाम जमाम बिन सअलबा है जो, बनी साद बिन बक्र के भाई हैं।

५४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने बह्-रैन के सरदार के नाम एक शख्स के हाथ खत भेजा। बहरैन के हाकिम ने वह खत किसरा को भेज दिया। जब किसरा ने उस को पढ़ा तो (गुस्से में आकर) टुकड़े-टुकड़े कर दिया। हुज़ूर सल्ल० को जब यह मालूम हुआ तो उस के लिए बद-दुआ की कि उस के भी टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं। चुनांचे किसरा को उस के बेटे ने क़त्ल कर दिया।

५५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने एक खत लिखा या लिखने का इरादा फ़र्माया। आप से अर्ज़ किया गया कि वह लोग बिना मुहर के खत को नहीं पढ़ते हैं, इस लिए आपने चांदी की अंगूठी बनवाई, मुझे उस की सफ़ेदी आप के मुबारक हाथ में अब तक मालूम हो रही है।

५६. हज़रत अबू वाक़िद लैसी रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर (एक बार) मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे और लोग भी आप के साथ थे कि यका-यक तीन शख्स आए, दो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ आए और एक चला गया, फिर वे दोनों आप के सामने खड़े हुए एक तो हलक़ के अन्दर गुंजाइश देख कर बैठ गया और दूसरा लोगों के पीछे बैठ गया, बाक़ी तीसरा पीठ मोड़ कर चला ही गया था, उस के बाद आप जब फ़ारिग़ हुए तो फ़र्माया क्या मैं इन तीनों शख्सों की हालत की तुम को जानकारी दूं (तो सुनो) एक तो अल्लाह तआला की तरफ़ पनाहगीर हुआ, तो खुदा ने भी उस को पनाह दी, दूसरे ने शर्म की, खुदा ने भी उस से शर्म की और तीसरे ने पीठ मोड़ ली, खुदा ने भी पीठ मोड़ ली।

५७. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर ऊंट पर तशरीफ़ रखते थे, एक आदमी उस की नकेल या बाग पकड़े हुए था, आपने फ़र्माया आज क्या दिन है। हम इस ख्याल से खामोश रहे कि शायद आप इस के नाम के अलावा कोई और नाम बताएं। आपने फ़र्माया कि क्या आज क़ुर्बानी का दिन नहीं है? हमने अर्ज़ किया जी हां, फिर आपने फ़र्माया कौन-सा महीना है? हम इस ख्याल से खामोश रहे कि (शायद) आप दूसरा नाम बताएंगे। आपने फ़र्माया क्या ज़िलहिज्जा नहीं है? हमने अर्ज़ किया जी हां, इस पर हुज़ूर ने फ़र्माया, तुम्हारा खून, माल-

और आबरू तुम्हारे आपस में इस तरह हराम हैं जिस तरह इस दिन, इस महीने और इस शहर में हराम है (यह पयाम) जरूरी है जो मौजूद हैं वह उन को पहुंचा दें जो मौजूद नहीं है, क्योंकि मुम्किन है कि जिस शख्स को पयाम पहुंचाया जाए वह मौजूद रहने वालों से ज्यादा याद रखने वाला है।

५८. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर हम को किसी-किसी दिन वाज़ (नसीहत) फ़र्माया करते थे क्योंकि आप हम पर तक्लीफ़ डालने को बुरा समझते थे।

५९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया आसानी पैदा करो, दुश्वारी पैदा न करो, खुशखबरियां दो और नफ़रत न लाओ।

६०. हज़रत मुआविया रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि अल्लाह तआला जिस शख्स की बेहतरी चाहता है उस को दीन की समझ अता फ़र्माता है। मैं सिर्फ़ तक्सीम करने वाला हूं। बाक़ी खुदा देता है। मुहम्मद सल्ल० की यह उम्मत हमेशा अल्लाह तआला के हुक्म पर क़ायम रहेगी, इन की मुखालफ़त करने वाले लोग इन को नुक्सान न पहुंचा सकेंगे। यहां तक कि खुदा का हुक्म (यानी क़ियामत का दिन) आ जाएगा।

६१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर थे, एक खजूर का पेड़ लाया गया और हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, दरख्तों में एक दरख्त ऐसा है। इस के बाद इब्ने उमर रज़ि० ने पिछली पूरी हदीस बयान की और यहां यह ज्यादा बढ़ाया कि चूंकि मैं मज्मे में छोटा था इस लिए खामोश रहा।

६२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं हुज़ूर ने फ़र्माया कि अगर हसद जायज़ होता तो दो शख्सों पर होता एक वह शख्स जिस को अल्लाह तआला ने माल दिया हो और अल्लाह तआला ने उस के माल को हक़ की राह में खर्च करने पर मुसल्लत किया हो, दूसरा वह शख्स जिस को अल्लाह तआला ने हिक्मत अता की हो और वह उस के मुताबिक़ फ़ैसला करता हो और तालीम देता हो।

६३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे सीने से लिपटा कर इर्शाद फ़र्माया, इलाही इस को क़ुरआन का इल्म अता फ़र्मा—यानी 'अल्लाहुम-म अल्लिमहुल किताब।'

६४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं खच्चरी पर सवार होकर (आप की खिदमत) में आया मैं उस वक़्त जवान होने के क़रीब था। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मिना के मक़ाम में बग़ैर दीवार की आड़ के नमाज़ पढ़ रहे थे मैंने एक सफ़ के सामने होकर खच्चरी को छोड़ दिया और ख़ुद सफ़ में दाख़िल हो गया मगर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझ पर नागवारी नहीं ज़ाहिर फ़र्माई।

६५. हज़रत महमूद बिन रबीअ रज़ि० कहते हैं कि मुझे याद है जब मैं पांच साल का था तो हुज़ूर सल्ल० ने डोल से (पानी लेकर) मेरे चेहरे पर कुल्ली डाली थी।

६६. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने फ़र्माया कि जिस इल्म व हिदायत के साथ मैं भेजा गया हूं उस की मिसाल ज़्यादा बारिश होने की तरह है जो ज़मीन पर पड़ती है जो ज़मीन साफ़ व उम्दा होती है वह पानी को क़ुबूल कर लेती है और सूखी व नम घास उगाती है, जो ज़मीन सख़्त होती है वह पानी को रोक लेती है और ख़ुदा उस से लोगों को फ़ायदा पहुंचाता है, वे पीते हैं, दरख़्तों वग़ैरह को सींचते हैं, खेती करते हैं और जो ज़मीन बन्जर और चटिअल होती है वह न पानी को रोकती है, न घास उगाती है। यह मिसाल उस शख़्स की है जो दीन का फ़क़ीर है। जो कुछ मैं लेकर आया हूं उस से ख़ुदा उस को नफ़ा पहुंचाता है और ख़ुद भी सीखता है, और दूसरों को भी सिखाता है बाक़ी जिसने उस को हासिल करने के लिए सर न उठाया वह ख़ुदा की उस हिदायत को क़ुबूल नहीं करता, जिस को मैं लेकर भेजा गया हूं।

६७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इल्म का उठ जाना जिहालत का क़ायम हो जाना, शराब का पिया जाना, ज़िना का खुल्लम खुल्ला होना क़ियामत की निशानियों में से है।

६८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैं तुम को एक हदीस सुनाता हूं मेरे बाद तुम को वह कोई नहीं सुनाएगा, मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना है कि क़ियामत की निशानियों में से है—इल्म की कमी, जिहालत और ज़िना का ज़ाहिर होना, औरतों का ज़्यादा होना और मर्दों की कमी यहां तक कि एक मर्द पचास औरतों का सरपरस्त होगा।

६९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि (एक दिन) मैं सो रहा था, मेरे पास दूध का प्याला लाया

गया, मैंने इतना पिया कि मुझे इस की तरी अपने नाखुनों से निकलती हुई अब तक मालूम हो रही है फिर बचा हुआ दूध उमर रज़ि० को दे दिया लोगों ने अर्ज़ किया फिर हुज़ूर सल्ल० ने इसकी क्या ताबीर दी? फ़र्माया 'इल्म।'

७०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि विदाई हज में हुज़ूर मिना के मक़ाम में लोगों को (तालीम देने के लिए) ठहरे रहे। लोग आपसे कुछ मस्अलों के बारे में पूछ रहे थे। (चुनांचे) एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि मैंने ला-इल्मी में ज़िब्ह से पहले सर मुंड़वा लिया। आपने फ़र्माया कोई हर्ज नहीं (अब ज़िब्ह कर लो) अब रमी करो (रिवायत करने वाले का बयान है) कि उस के बाद हुज़ूर से जिस काम के बारे में पूछा गया, चाहे उसे पहले कर लिया गया हो या बाद में, आपने यही फ़र्माया, अब कर लो कोई नुक़सान नहीं।

७१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया कि इल्म क़ब्ज़ कर लिया जाएगा, जिहालत खुल्लम खुल्ला हो जाएगी और फ़ित्ने ज़्यादा हो जाएंगे। अर्ज़ किया गया ऐ अल्लाह के रसूल! फ़ित्ने कैसे, हुज़ूर ने अपने मुबारक हाथ से इशारा कर के बताया, जिस का मत-लब क़िताल (लड़ाई) था।

७२. हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि० कहती हैं, मैं हज़रत आइशा रज़ि० के पास गयी, आप नमाज़ पढ़ रही थीं, मैंने कहा, लोगों को क्या हो गया है (कि इतना घबरा रहे हैं?) हज़रत आइशा रज़ि० ने आसमान की तरफ़ इशारा किया। मैंने देखा कि नमाज़ (कुसूफ़) पढ़ने के लिए खड़े हैं, फिर हज़रत आइशा ने फ़र्माया सुब्हानल्लाह! मैंने कहा यह तो (अज़ाब की पहचान है) उन्होंने सर से इशारा कर दिया, यानी हां। मैं भी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ी हुई, मगर मुझे ग़श आ गया, (इस वजह से) मैं अपने सर पर पानी डालने लगी। उस के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ुदा की हम्द व सना की और फ़र्माया, जो चीज़ मैंने पहले नहीं देखी थी वह इस मक़ाम में देख ली, यहां तक कि जन्नत व दोज़ख़ भी (देख ली) मुझे वह्य हुई है कि क़ब्रों में तुम्हारा इम्तिहान मसीह व दज्जाल के इम्तिहान की तरह लिया जाएगा और पूछा जाएगा कि इस शख़्स के बारे में क्या जानते हो? ईमानदार या यक़ीन रखने वाला आदमी जवाब देगा, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० हैं, हमारे पास खुली-खुली निशानियां

और हिदायतें लेकर आए थे। हमने आप को क़ुबूल किया और आप की पैरवी की थी। (यह मुहम्मद सल्ल० हैं यह लफ़्ज़ तीन बार कहेगा) उस वक़्त उस शख़्स से कहा जाएगा आराम व चैन से सोते रहो। बाक़ी मुनाफ़िक़ और शक करने वाला कहेगा, मुझे कोई जानकारी नहीं। लोगों को जो कहते हुए सुना था, मैंने भी वही कह दिया था।

७३. हज़रत उक़्बा बिन हारिस रज़ि० कहते हैं कि मैंने अबू अह्हाब को बेटी से निकाह किया, उस के बाद मुझ से एक औरत आकर कहने लगी कि मैंने तुम को और इस लड़की को दूध पिलाया है जिसके साथ तुमने निकाह किया है। मैंने जवाब दे दिया मुझे नहीं मालूम कि तुमने मुझे दूध पिलाया था और न (इस से पहले) तुमने मुझे इस की इत्तला दी, इस के बाद मैं सवार होकर मदीना तय्यबा में हुज़ूर की खिद्मत में हाज़िर हुआ और आप से (मस्अला) पूछा। फ़र्माया किस तरह (निकाह बाक़ी रह सकता है,) हालांकि तुम से कह दिया गया (कि तुम उस के दूध शरीक भाई हो।) मैंने उस को अलग कर दिया और उस लड़की ने एक और शख़्स से निकाह कर लिया।

७४. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैं और मेरा एक पड़ोसी जो उमय्या बिन ज़ैद क़बीले का था और मदीने के पास का रहने वाला था, बारी-बारी हुज़ूर की खिद्मत में हाज़िर होते थे। एक दिन वह जाता था और एक दिन मैं जाता था। जिस दिन मैं हाज़िर होता था उस दिन की वह्य की खबर लाता था (और उस से कह देता था) और जब वह जाता तो वह भी ऐसा ही करता था, एक दिन मेरा अंसारी दोस्त अपने बारी के दिन आया और ज़ोर-ज़ोर से मेरे दरवाज़े को पीटने लगा और कहने लगा, क्या उमर रज़ि० हैं, मैं घबरा कर निकला तो वह बोला, बड़ा हादिसा हो गया। वह यह कि मैं हफ़्सा रज़ि० (हज़रत उमर रज़ि० की बेटी) के पास गया था तो वह रो रही थीं। मैंने उन से पूछा कि क्या तुम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलाक़ दे दी? उन्होंने कहा मुझे मालूम नहीं। (हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं) यह सुन कर मैं हुज़ूर की खिद्मत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि क्या आपने औरतों को तलाक़ दे दी? आपने फ़र्माया नहीं, मैंने कहा अल्लाहु अक्बर। (चूंकि कुछ दिन के लिए हुज़ूर औरतों से अलग हो गए थे इस लिए अंसार ने समझा कि आपने तलाक़ दे दी, क्योंकि जाहिलियत के ज़माने में कुछ

दिन के लिए औरत से ताल्लुक़ खत्म कर लेने से तलाक़ हो जाती थी।

७५. हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) एक शख्स ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! चूंकि फ़लां इमाम नमाज़ को लम्बी कर देता है, इस लिए मैं जमाअत से नमाज़ में नहीं शरीक होता (क्योंकि मैं कमज़ोर हूं।) रिवायत करने वाले का बयान है कि मैंने आज के अन्दर उस दिन से ज्यादा कभी आप को गुस्से में नहीं देखा, आपने फ़र्माया ! तुम यक़ीनन नफ़रत पैदा करते हो, जो शख्स लोगों को नमाज़ पढ़ाए, उस को चाहिए कि नमाज़ हल्की करे, क्योंकि उस में बीमार, बूढ़े, और ज़रूरतमंद सभी होते हैं।

७६. हज़रत ज़ैद बिन खालिद जुहनी रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने पड़ी हुई चीज़ के बारे में हुज़ूर से पूछा। आपने फ़र्माया, उसके बंधन या बरतन को पहचान लो और फिर एक साल तक उस की शोहरत दो, उस के बाद इस को काम में लाओ। (इस बीच में) अगर उस का मालिक आ जाए तो दे दो। उसने पूछा कि क्या गुमशुदा ऊंट ? (यह सुन कर) आप गुस्सा हुए, यहां तक कि आप का चेहरा लाल हो गया। फिर फ़र्माया तुम से क्या मतलब है, उस का मशकेज़ा और जूतियां उस के साथ हैं, पानी पर उतरेगा और पेड़ों के पत्ते खाएगा। इस लिए उस को छोड़ दो, उसने अर्ज़ किया और गुमशुदा बकरियां (क्या की जाएं ?) आपने, फ़र्माया, वह तुम्हारे लिए हैं, या तुम्हारे भाई के लिए या भेड़िए के लिए।

७७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० कोई बात कहते थे तो तीन बार दुहराते थे, ताकि समझ ली जाये, (कहीं) मज्मे में जाते थे तो तीन बार सलाम करते थे।

७८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तीन शख्सों के लिए दोहरा इनाम है, एक तो वह किताबी शख्स, जो अपने नबी पर ईमान ले आया और फिर मुहम्मद (सल्ल०) पर भी ईमान लाया। दूसरा वह गुलाम, जिसने खुदा का भी हक़ अदा किया और अपने मालिकों का भी। (तीसरे) वह शख्स जिस के पास कोई बांदी हो और उसने उस को खूब अदब सिखाया हो, तालीम दी हो, फिर आज़ाद कर के उस से निकाह कर लिया हो, तो उसके लिए भी दोहरा इनाम है।

ुल। ७६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्ल० (ईद के दिन सफ़ों के बीच से) निकले और आपने ख्याल किया कि औरतें आप का वाज़ नहीं सुन सकीं, इस लिए आप ने उन को नसीहत की और सदक़ा देने का हुक्म दिया, (हुक्म के मुताबिक़) कोई औरत तो (कान की) बाली डालने लगी और कोई अंगूठी और हज़रत बिलाल रज़ि० दामन में लेते जाते थे।

८०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! कौन शख्स क़ियामत के दिन और लोगों के मुक़ाबले में आप की शफ़ाअत से ज्यादा कामियाब होगा ? फ़र्माया, 'अबूहुरैरह', मेरा ख्याल था कि इस बात को तुम से पहले कोई न पूछेगा, क्योंकि मैं देखता हूं कि तुम्हें हदीस हासिल करने का बड़ा लालच है। मेरी शफ़ाअत में और लोगों के मुक़ाबले में वह शख्स ज्यादा कामियाब होगा जिसने सच्चे दिल से या जान से ला इला ह इल्लल्लाह कहा।

८१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल को फ़र्माते हुए सुना कि खुदा इल्म को उस तरह तो न क़ब्ज़ करेगा (जिस तरह बन्दों के दिलों से निकाल लेता है) बल्कि उलेमा को उठा लेगा। और जब कोई आलिम बाक़ी न रहेगा तो लोग जाहिलों को सरदार बना लेंगे और उन से (मस्अले) पूछे जाएंगे। वह बिना जाने-बूझे फ़त्वे देंगे, खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।

८२. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) औरतों ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मर्द तो हुज़ूर की खिद्मत में हमारे मुक़ाबले में ज्यादा आते हैं, हमारे लिए भी कोई दिन मुक़र्रर फ़र्मा दीजिए। आपने उन से मुलाक़ात करने के लिए एक दिन तै फ़र्मा दिया और (उस दिन) आपने उन को नसीहत फ़र्मा[illegible], अहकाम बताए। उन सारी बातों में से, जो आपने तालीम फ़र्मायीं, एक यह भी थी कि अगर तुम में से कोई औरत पहले से तीन बच्चे भेज दे, तो उस के लिए वे बच्चे दोज़ख से आड़ बन जाएंगे। एक औरत ने अर्ज़ किया, अगर दो हों (जब भी यही हुक्म है)? हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत है कि शर्त यह है कि वे बच्चे बालिग़ न हुए हों।

८३. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर ने फ़र्माया कि

जिस से हिसाब लिया गया वह अज़ाब में मुब्तला हुआ। आइशा रज़ि० ने कहा, क्या अल्लाह तआला ने नहीं फ़र्माया कि जल्द ही उस से आसान हिसाब लिया जाएगा (फिर किस तरह ?) आपने फ़र्माया कि इस से मुराद आमाल का पेश करना है लेकिन जिस के हिसाब में नुक्ता चीनी की गई, वह हलाक हो जाएगा।

८४. हज़रत अबू शुरैह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने ऐसी बात फ़र्मायी, जिस को मेरे कानों ने सुना, मेरे दिल ने याद किया, और मेरी आंखों ने देखा—मक्का की फ़त्ह के दिन जब हुज़ूर ने बोलना शुरू किया तो अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद इर्शाद फ़र्माया कि मक्का को ख़ुदा ने हुरमत वाला बनाया है, लेकिन लोगों ने इसे हुरमत वाला नहीं समझा, इस लिए जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत पर ईमान रखता हो, उसको चाहिए कि वहां न ख़ून बहाए, न वहां के पेड़ काटे और अगर कोई शख़्स अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से जंग करने से (इस के) जायज़ होने पर दलील लाए, तो उस से कह दो कि ख़ुदा ने अपने रसूल को इजाज़त दी थी, तुम को इजाज़त नहीं दी और मेरे लिए भी एक दिन में सिर्फ़ एक साअत के लिए इजाज़त थी, अब इस की हुरमत वैसी ही है जैसे पहले थी और चाहिए कि हर मौजूद, ग़ैर मौजूद शख़्स को (यह हुक्म) पहुंचा दे।

८५. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर की मन्शा के ख़िलाफ़ बातें पूछी गयीं। (हुज़ूर ख़ामोश रहे) जब ज़्यादा पूछा गया तो आप ग़ुस्सा हुए और फ़र्माया, अब जो चाहो मुझ से पूछो। एक शख़्स ने पूछा कि मेरा बाप कौन है ? आपने फ़र्माया तेरा बाप हुज़ाफ़ा है फिर दूसरा आदमी खड़ा हुआ और बोला मेरा बाप कौन है ? आपने फ़र्माया, तेरा बाप सालिम शबीह का ग़ुलाम है। हज़रत उमर ने जब आप के चेहरे पर ग़ुस्सा देखा तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम ख़ुदा से तौबा करते हैं।

८६. हज़रत अली रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि मुझ पर झूठ न बोलो। जो शख़्स मुझ पर झूठ बोले, उस को अपना ठिकाना दोज़ख़ में कर लेना चाहिए।

८७. हज़रत सलमा बिन अकवअ् रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि जिसने मेरी तरफ़ से वह बात कही, जो मैंने नहीं कही

तो उस को अपना ठिकाना दोज़ख में कर लेना चाहिए।

८८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रख लो, मेरी कुन्नियत पर कुन्नियत न रखो, जिसने मुझे ख्वाब में देखा, उसने मुझे देखा, क्योंकि शैतान मेरी जैसी सूरत वाला नहीं बन सकता। जो शख्स मुझ पर झूठ बांधे उस को अपना ठिकाना दोज़ख में बना लेना चाहिए।

८९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया कि ख़ुदा ने हाथी वालों को मक्का से रोके रखा और उन पर अपने रसूल को मुसल्लत फ़र्माया। ऐ ईमानदारो! आगाह हो जाओ कि मक्का मुझसे पहले न किसी के वास्ते हलाल हुआ और न हो सकता है। सुनो, मक्का मेरे लिए सिर्फ़ एक दिन में एक साअत के लिए हलाल हुआ मगर याद रखो कि वह अब हराम है, न वहां के कांटे काटे जाएं, न वहां के दरख्त न वहां की गिरी हुई चीज़ इश्तहार देने वाले के सिवा कोई और, उठाए, अगर किसी का कोई अज़ीज़ मारा जाय तो उस को दो बातों का अख्तियार है या दियत (खून बहा) दिलाई जाय या बदला। इस के बाद एक यमनी शख्स आकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे यह लिख दीजिए। आपने फ़र्माया, फ़्लां के बाप! सवाल करने वाले को यह लिख कर दे दो, इस पर एक कुरैशी आदमी बोला (हुज़ूर) अज़खर व मरछिया गन्द को इस से अलग रखते क्योंकि हम लोग इस को अपने घरों और क़ब्रों में इस्तेमाल करते हैं। आपने फ़र्माया, हां। (अज़खर को इससे छूट है।)

९०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्द तेज़ हुआ तो आपने फ़र्माया, मेरे पास काग़ज़ लाओ ताकि मैं तुम को ऐसी तहरीर लिख दूं जिस के बाद तुम गुमराह न हो, हज़रत उमर रज़ि० बोले हुज़ूर पर दर्द की ज़्यादती है और हमारे पास ख़ुदा की किताब है जो हमारे लिए काफ़ी है इस पर लोगों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया और ख़ूब शोर मचा, आपने (यह देख कर) फ़र्माया मेरे पास से चले जाओ, मेरे पास झगड़ा न करो।

९१. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि एक रात हुज़ूर जागे और फ़र्माया सुब्हानल्लाह आज रात कितना अज़ाब व रहमत का नज़ूल है हुजरे वालियों को जगा दो क्योंकि दुनिया में अच्छे-अच्छे लिबास पहनने

वालियां आखिरत में नंगी होंगी।

९२. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० कहते हैं कि अपनी आखिरी उम्र में हुजूर ने हम को इशा की नमाज़ पढ़ायी, जब सलाम फेर चुके तो फ़र्माया भला देखो तो इस रात से एक सौ बरस बाद धरती पर रहने वालों में से कोई बाक़ी न रहेगा।

९३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक रात मैं अपनी ख़ाला मैमूना बिन्त हारिस (नबी सल्ल० की बीवी) के घर रहा। हुजूर उस रात उन ही के पास थे। जब आप इशा की नमाज़ पढ़ चुके तो मकान में आकर चार रक्अतें पढ़ीं फिर सो गए। फिर उठ कर फ़र्माया लड़का सो गया (या इसी तरह का कोई लफ़्ज़ फ़र्माया) इस के बाद (नमाज़ के लिए) खड़े हुए, मैं भी वुज़ू करके आपके बाएं तरफ़ खड़ा हो गया। आपने मुझ को दाएं तरफ़ कर लिया फिर पांच रक्अतें पढ़ीं, फिर दो पढ़ीं और फिर इस के बाद सो गए, यहां तक कि मैंने आप के ख़र्राटे की आवाज़ सुनी (सोने के बाद फिर सुबह को) आप नमाज़ के लिए मस्जिद में तश-रीफ़ ले गए।

९४. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि लोगों का कहना है अबूहुरैरह रज़ि० हदीसें बहुत बयान करते हैं, अगर ख़ुदा की किताब में दो आयतें न होतीं तो मैं एक हदीस भी बयान न करता इस के बाद आपने यह आयत तिलावत की, इन्नल लज़ी न यक तुमू न मा अन्ज़लना मिनल बय्यिनाति वल्हुदा (आखिर तक) (फिर कहने लगे) हमारे मुहाजिर भाई बाज़ारों में तालियां बजाने में लगे हुए थे और अंसारी भाई अपने कारोबार में लगे थे, अबूहुरैरह रज़ि० ही रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को चिमटा रहता था, क्योंकि वह पेट भरे यानी (ख़ुदा पर पूरा भरोसा करने वाला) था, उस जगह मौजूद रहता था जहां वह लोग मौजूद न होते थे और उस चीज़ को याद रखता था जिस को वह याद न रखते थे।

९५. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुजूर से दो बातें (लेकर) याद रखे एक को तो मैं (लोगों के सामने) कह चुका और रही दूसरी तो अगर मैं उस को बयान कर दूं तो यह हलक़ काट दिया जाए (यानी मार्फ़त की बातें।)

९६. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया,

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं आप से बहुत हदीसें सुनता और पहुंचाता हूं, फ़र्माया अपनी चादर फैलाओ मैंने फैला दी आपने लप भर इस में रखा फिर फ़र्माया इस को बन्द कर लो मैंने बन्द कर लिया उस के बाद कुछ न भूला।

६७. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि० विदाई हज में हुज़ूर ने मुझ से फ़र्माया लोगों को खामोश कर दो। फिर फ़र्माया मेरे बाद कुफ़्फ़ार न बन जाओ कि एक दूसरे की गरदनें मारने लगो।

६८. हज़रत उबई बिन काब रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने फ़र्माया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम खुत्बा पढ़ने खड़े हुए (खुत्बा के बीच में) उन से पूछा गया कि लोगों में सब से बड़ा आलिम कौन है हज़रत मूसा (अलै-हिस्सलाम) ने कहा मैं सब से बड़ा आलिम हूं अल्लाह तआला ने इस वजह से उन पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया क्योंकि उन्होंने इल्म की निस्बत खुदा की तरफ़ न की इस के बाद उन के पास अल्लाह ने वह्य भेजी कि मेरे बंदों में मज म उल बहरैन (दो दरियाओं का संगम) में एक बंदा तुम से बड़ा आलिम है मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि इलाही मैं उस से किस तरह मिल सकता हूं हुक्म हुआ ज़ंबील में मछली रख लो जहां मछली (रास्ते में) गुम हो जाए वह उसी जगह होगा। हज़रत मूसा अलैहिस्स-लाम (हुक्म के मुताबिक़) चल दिये और अपने खादिम यूशे बिन नून को साथ में ले लिया। एक मछली ज़ंबील में डाल ली जब (चलते-चलते) एक बड़े पत्थर के पास पहुंचे तो (वहां ठहर कर) उस को सिरहाने रख कर दोनों सो गए मगर मछली ज़ंबील से गायब हो चुकी थी और नदी में रास्ता बना कर चल दी थी। यह बात मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन के खादिम के लिए बड़ी अजीब थी (मगर मूसा अलै० को इस की जान-कारी न हुई) खैर दोनों दिन भर और रात के बाक़ी बचे हिस्से में चलते रहे जब सुबह हुई मूसा अलै० ने अपने खादिम से कहा नाश्ता लाओ क्योंकि हम सफ़र करने से थक गए हैं (अब ज़रा खा-पीकर ताज़ादम हो जाएं) हालांकि मूसा अलै० ने उस वक़्त तक कोई तक्लीफ़ नहीं उठायी थी जब तक मुक़र्ररा जगह से गुज़र न गए। बहरहाल उन के खादिम (यूशे) ने कहा सुनिए हम जब बड़े पत्थर के पास ठहरे थे तो मछली तो मैं वहां भूल गया, हज़रत मूसा अलै० ने कहा उसी जगह की तो हम खोज में थे इस लिए क़दमों के निशान पर पीछे लौटो, चुनांचे जब बड़े पत्थर

पर पहुंचे तो एक शख्स कपड़ा ओढ़े मिला (बैठा है) जब हज़रत मूसा अलै० ने सलाम किया, हज़रत खिज़् ने कहा आप के मुल्क में सलाम का रिवाज क्या है, हज़रत मूसा अलै० ने कहा मैं मूसा हूं, हज़रत खिज़् बोले क्या बनी इस्राइल के मूसा, उन्होंने कहा जी हां, फिर मूसा अलै० कहने लगे क्या मैं आप के साथ चल सकता हूं, लेकिन शर्त यह है कि आप मुझे वह हिदायत व हक़ सिखाएं जो आप को सिखाया गया है, हज़रत खिज़् ने कहा तुम मेरे साथ रह कर सब्र न कर सकोगे क्योंकि जो इल्म मुझ को खुदा ने दिया है वह आप को नहीं दिया और जो इल्म आप को दिया है उसे मैं नहीं जानता, हज़रत मूसा ने कहा कि इन्शा अल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे। मैं आप के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करूंगा खैर दोनों समुद्र के किनारे-किनारे चल दिए, कोई किश्ती उन के पास न थी एक किश्ती उधर से गुज़री तो किश्ती वालों से उन्होंने सवार कर लेने को कहा हज़रत खिज़् अलै० पहचान लिए गए और बिला किराए दोनों को सवार कर लिया गया (इत्तफ़ाक़ से) एक चिड़िया आई और किश्ती के किनारे पर बैठ गई और चोंच दो चोंच समुद्र से पानी लिया (यह देख कर) हज़रत खिज़् अलै० बोले, मूसा मेरे और आप के इल्म से खुदा के इल्म में कोई भी कमी नहीं होती (मेरा और आप का इल्म खुदा के इल्म के मुकाबले में) सिर्फ़ इतना है जितना इस चिड़िया की चोंच में पानी है। इस के बाद हज़रत खिज़् ने किश्ती के तख्तों में से एक तख्ता निकाल दिया, हज़रत मूसा अलै० कहने लगे कि इन लोगों ने तो हम को बिला किराया इस पर सवार कर लिया और आपने किश्ती वालों को डुबोने के लिए कश्ती ही को तोड़ दिया। हज़रत खिज़् अलै० ने कहा, (देखो) क्या मैंने तुम से कह नहीं दिया था कि मेरे साथ आप को सब्र न होगा, मूसा अलै० ने कहा (मैं भूल गया,) आप मेरी भूल की पकड़ न कीजिए और अपने साथ ले जाने में मुझ पर दुश्वारियां न डालिए यह हज़रत मूसा अलै० से पहली बार भूल हुई थी। खैर फिर दोनों चलते रहे, इत्तिफ़ाक़ से एक लड़का और लड़कों के साथ खेल रहा था हज़रत खिज़् ने उस का सर पकड़ा और मरोड़ कर तोड़ डाला, हज़रत मूसा अलै० कहने लगे कि आपने एक मासूम जान को बे-गुनाह क़त्ल किया, हज़रत खिज़् बोले (देखो) मैंने नहीं कहा था कि आप मेरे साथ नहीं रह सकेंगे खैर फिर दोनों चल दिए, एक गांव में पहुंचे, गांव वालों से खाना मांगा, मगर उन्होंने (न दिया)

मेहमानदारी से इंकार किया, मूसा व खिज़्र अलै० ने देखा कि एक दीवार टूटने के क़रीब है, हज़रत खिज़्र अलै० ने हाथ के इशारे से उसे सीधा कर दिया, मूसा अलै० (यह देख कर) बोले कि (यह मुम्किन था) अगर आप दीवार सीधा ही करने का मुआवज़ा चाहते तो ले लेते । हज़रत खिज़्र ने कहा (अब बस) यही मेरे और आप के अलग होने की वजह है (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़र्माते हैं कि खुदा मूसा (अलै०) पर अपनी रहमत फ़र्माए काश वह कुछ और सब्र करते कि हम को उन दोनों के वाक़िआत मालूम होते ।

९९. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर होकर अर्ज किया ऐ, अल्लाह के रसूल ! अल्लाह की राह में लड़ना किसे कहते हैं, क्योंकि हम में से कुछ लोग तो गुस्से की वजह से लड़ते हैं और कुछ तास्सुब के लिए । आपने फ़र्माया जो शख्स अल्लाह का कलिमा बुलंद करने के लिए लड़े वह खुदा के लिए लड़ी गई लड़ाई है ।

१००. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल के साथ मदीना के खंडहरों में घूम रहा था, आप के पास खजूर की लकड़ी थी जिस को आप टेकते जाते थे (इत्तिफ़ाक़ से) आप यहूद के एक गिरोह की तरफ़ से गुज़रे । यहूदी आपस में कहने लगे कि उन से रूह के बारे में पूछो । एक बोला नहीं, मत पूछो कहीं ऐसा जवाब न दे दें कि तुम को बुरा मालूम हो । दूसरा बोला हम तो उन से ज़रूर पूछेंगे, इस के बाद एक आदमी खड़ा होकर कहने लगा अबुल क़ासिम ! रूह क्या चीज़ है? आप खामोश हो गए मैंने ख्याल किया कि आप के पास वह्य आ रही है चुनांचे मैं खड़ा रहा जब वह्य से फ़ारिग़ हो चुके तो फ़र्माया यस अलू न क अनिर्रूह, क़ुलिर्रूहु मिन अम्रि रब्बी वमा ऊती तुम मिनल इल्मि इल्ला क़लीला (ऐ पैगंबर आप से लोग रूह के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए रूह मेरे रब का हुक्म है और तुम्हें इस की जानकारी बहुत ही कम दी गई है ।)

१०१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह के साथी हज़रत मुआज़ (ऊंट) के कजावे पर सवार थे । हुज़ूर ने उन से फ़र्माया, मुआज़ ! उन्होंने जवाब दिया हाज़िर हूं ऐ अल्लाह के रसूल । फिर आपने फ़र्माया मुआज़ ! उन्होंने कहा हाज़िर हूं मौजूद हूं ! फिर आपने तीसरी बार

यही फ़र्माया और मुआज़ ने यही जवाब दिया, उस के बाद हुज़ूर ने फ़र्माया जो शख्स सच्चे दिल से ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहेगा उस पर अल्लाह तआला दोज़ख हराम कर देगा। मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल० !) मैं लोगों को इसकी इत्तला न दे दूं कि वह भी खुश हो जाएं, फ़र्माया वह इत्मीनान से बैठे रहेंगे। हज़रत मुआज़ रज़ि० ने मौत के वक्त गुनाह के खौफ से यह वाक़िआ बयान किया।

१०२. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि उम्मे सुलैम रज़ि० हुज़ूर की खिद्मत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया ऐ, अल्लाह के रसूल (सल्ल० !) खुदा हक़ बात से नहीं शर्माता, अगर औरत को एहतलाम हो जाए तो क्या गुस्ल ज़रूरी है ? आपने फ़र्माया, जब औरत पानी देख ले (गुस्ल लाज़िम है।) मैंने (यह सुन कर) अपना चेहरा छिपा लिया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल० !) क्या औरत को भी एहतलाम होता है ? फ़र्माया, हां तेरा दायां हाथ खाक आलूद हो (अगर एहतलाम न होता) तो उस का बच्चा उस की तरह किस तरह होता।

१०३. हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं कि मुझे बहुत मज़ी होती थी, इस लिए मैंने मिक़दाद रज़ि० को हुक्म दिया कि वह रसूलुल्लाह से इस के बारे में पूछें, चुनांचे उन्होंने पूछा आपने फ़र्माया, मज़ी में वुज़ू लाज़िम है।

१०४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने मस्जिद में खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम को कहां से एहराम बांधने का हुक्म है ? आपने फ़र्माया—जब मदीना के लोग (हज करने, जाएं) तो ज़ुल हुलैफ़ा के मक़ाम से एहराम बांधें और शाम के लोग [illegible] से और नज्द के लोगों का मक़ाम क़र्न है। इब्ने उमर रज़ि० [illegible] ों का यह गुमान है कि हुज़ूर ने फ़र्माया और यमन के लोग यलमलेम [illegible], मगर मैं रसूलुल्लाह के कलाम से यह नहीं समझा।

१०५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने हुज़ूर से दर्याफ़्त किया, एहराम बांधने वाला क्या पहने ? आपने फ़र्माया कुरता, अमामा, पाजामा और पतलून, कोट न पहना जाए और वरस (एक यमनी पीली घास) व ज़ाफ़रान में रंगा हुआ कपड़ा भी न पहने अगर उस को जूतियां न मिलें तो मोज़े पहन ले, मगर इन को काट ले ताकि टख्नों से नीचे हो जाए।

बाब ४

वुज़ू के बयान में

१०६. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जब तक बे-वुज़ू वुज़ू न कर ले उस वक़्त तक उसकी नमाज़ मक़्बूल नहीं क़बीला हज़र मौत के एक शख़्स ने हज़रत अबूहुरैरह से पूछा, वुज़ू किन चीज़ों से टूटता है ? आपने जवाब दिया, पाद, चाहे आवाज़ से हो या बिना आवाज़ हो।

१०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि मेरी उम्मत क़ियामत के दिन बुलाई जाएगी। वुज़ू की वजह से वह रोशन पेशानी और पंज कलियां होंगी, तुम में से जो शख़्स पेशानी की रोशनी बढ़ा सकता है वह बढ़ाए।

१०८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर से उस शख़्स की हालत बयान की जिस को यह ख़्याल हो जाता है कि नमाज़ में कुछ हवा वग़ैरह (ख़ारिज होती हुई) पाता हूं। आपने फ़र्माया, वह नमाज़ न लौटाए, जब तक आवाज़ न सुन ले या बदबू न महसूस करे।

१०९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) रसू-लुल्लाह सल्ल० सो गए[1] और आप की सांस की आवाज़ आने लगी, फिर आपने नमाज़ पढ़ ली। रिवायत करने वाले का यह भी कहना है कि हुज़ूर सल्ल० लेट गए और सांस की आवाज़ आने लगी, फिर आपने उठ कर नमाज़ पढ़ ली।

---

१. दूसरी हदीस में आता है कि आप की आंखें सोती हैं और दिल बेदार रहता है।

११०. हजरत उसामा बिन जैद रजि० कहते हैं कि हुजूर अरफ़ा के मक़ाम से चले। जब शअब के मक़ाम पर पहुंचे तो उतर कर पेशाब किया फिर हल्का सा वुज़ू किया, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल० !) नमाज (कहां पढ़ेंगे ?) फ़र्माया नमाज आगे चल कर, फिर आप सवार हो गए। जब मुज़्दलफ़ा में पहुंचे, तो उतर कर पूरा वुज़ू किया, नमाज के लिए तक्बीर कही गई, आपने मरिब की नमाज पढ़ी, उस के बाद हर शख़्स ने अपने-अपने ऊंट अपनी-अपनी जगह पर बिठाये और इशा के तक्बीर कही गयी। आपने उस को भी अदा किया और मरिब और इशा के बीच कोई और नमाज नहीं पढ़ी।

१११. हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) मैंने वुज़ू इस तरह किया कि मुंह न धोया और चुल्लू में पानी लेकर कुल्ली की और नाक में पानी डाला, फिर दूसरी बार चुल्लू में पानी लेकर दूसरा हाथ मिला कर मुंह धोया, इस के बाद एक चुल्लू पानी लेकर दायां हाथ धोया फिर चुल्लू में पानी लेकर बांया हाथ धोया, इसके बाद सर का मसह् किया, फिर चुल्लू में पानी लेकर दाएं पांव पर छिड़का और उस को धोया, आखिर में चुल्लू में पानी लेकर बांया पांव धोया, मैंने अल्लाह के रसूल को इसी तरह वुज़ू करते हुए देखा है।

११२. हजरत अनस रजि० कहते हैं कि हुजूर जब पाखाने जाते तो फ़र्माते, 'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि क मिनल खुबिस वल खबाइस।

११३. हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि हुजूर बैतुल-खला में दाखिल हुए। मैंने आप के लिए वुज़ू का पानी रख दिया। आपने फ़र्माया किसने रखा है? आप से बता दिया गया। इस पर आपने फ़र्माया, [illegible] को दीन का फ़क़ीह् बना।

[illegible]. हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि हुजूर ने फ़र्माया, जब तुम पाखाने में जाओ तो क़िब्ले की तरफ़ न मुंह करो, न पीछे, बल्कि पूरब या पच्छिम की तरफ़ मुंह करो—(मदीना मक्का से उत्तर की तरफ़ है।)

११५. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि लोग कहा करते हैं जब ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठो तो न क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर के बैठो, न बैतुल मिक्दस की तरफ़, एक रोज़ मैं अपनी कोठरी की छत पर चढ़ा तो मैंने हुजूर को बैतुल मक्दिस की तरफ़ रुख किए हुए

जरूरत पूरी करने के लिए (क़जाए हाजत) के लिए बैठे हुए देखा।

११६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर की बीवियां जब पेशाब, पाख़ाने को जाती थीं तो जंगल में रात को जाती थीं और वह जंगल साफ़ और बड़ा होता था। इस पर हज़रत उमर रज़ि० कहा करते थे कि ऐ अल्लाह के रसूल ! अपनी बीवियों का पर्दा कराइए, मगर आप नहीं कराते थे। एक रात हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ (नबी सल्ल० की बीवी) जरूरत पूरी करने के लिए निकलीं, उन का क़द लम्बा था। उमर रज़ि० ने जो देखा तो पुकार कर कहा, देखो सौदा ! हमने तुम को पहचान लिया, इस कहने का मक़्सद यह था कि हज़रत उमर रज़ि० को पर्दे का हुक्म नाज़िल होने की बहुत ज्यादा ख़्वाहिश थी, उस वक़्त पर्दे की आयत नाज़िल हुई।

११७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब कज़ा-ए-हाजत को जाते तो मैं और एक दूसरा लड़का पानी का बरतन लेकर आते थे, क्योंकि आप पानी से इस्तिंजा करते थे। एक रिवायत में है कि हम (मिट्टी तोड़ने की बेसाखी) लेकर आते थे।

११८. हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं हुज़ूर ने फ़र्माया कि जब तुम में से कोई शख़्स (कुछ) पिए, तो (उस में) फूंक न मारे, अगर पाख़ाना जाए तो पेशाबगाह को दाएं हाथ से न छुए और न दाहिने हाथ से साफ़ करे।

११९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर क़ज़ाए हाजत को निकले, मैं पीछे हो लिया। मगर आपने फ़र्माया, मेरे लिए पत्थर तलाश कर लाओ, इस्तिंजा करूंगा, मगर हड्डी और गोबर न लाना, मैं आप के पास एक कपड़े के कोने में बहुत से पत्थर ले आया और आप के बराबर रख दिया और आप की तरफ़ से मुंह फेर लिया और जब आप फ़ारिग़ हो चुके तो उन को बाद में इस्तेमाल किया।

१२०. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर पाख़ाने को तशरीफ़ ले गए और मुझे हुक्म दिया कि तीन पत्थर लाओ। मुझ को दो पत्थर तो मिल गए और तीसरा तलाश किया तो न मिला, (इसके बदले में) मैंने गोबर लिया और लेकर ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। आपने दोनों पत्थरों को तो ले लिया, और गोबर को फेंक दिया और फ़र्माया, यह पलीद है।

१२१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल०

ने वुज़ू एक-एक बार किया (यानी हर उज़्व को एक-एक बार धोया।)

१२२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने दो-दो बार वुज़ू किया (यानी हर उज़्व दो-दो बार धोया।)

१२३. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने (पानी) का एक बरतन मंगाया और अपने दोनों हाथों पर तीन बार (पानी) डाल कर धोया, फिर दायां हाथ बरतन में डाल कर कुल्ली की और नाक में पानी डाल कर नाक को साफ़ किया, इसके बाद तीन बार मुंह को और तीन बार कुहनियों समेत हाथों को धोया, फिर सर पर मसह किया और तीन बार दोनों टख़्नों तक धोया, इस के बाद कहा हुज़ूर ने फ़र्माया है कि जो शख़्स मेरे वुज़ू की तरह वुज़ू करे, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़े, जिस में कुछ ख़्याल दिल में न पकाए, उस के पिछले गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।

१२४. एक दूसरी रिवायत में आया है कि हज़रत उस्मान ने फ़र्माया, क्या मैं तुम से ऐसी हदीस बयान करूं कि अल्लाह की किताब की अगर एक आयत 'इन्नल लज़ी न यक्तुमू न मा अन्ज़लना' (आख़िर तक) न होती तो मैं बयान करता। मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स ठीक-ठीक वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ता है, उस के वुज़ू और नमाज़ के दर्मियान के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं, यहां तक कि वह इस नमाज़ को अदा कर चुके।

१२५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जो शख़्स वुज़ू करे, उस को नाक साफ़ करना चाहिए और जो इस्तिंजा करे वह ताक़ कर ले (तीन बार या पांच बार।)

१२६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० का कहना है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जब तुम में से कोई वुज़ू करे तो नाक में पानी ज़रूर डाले और उस को साफ़ करे और जब पत्थर वग़ैरह से इस्तिंजा करे तो ताक़ करे और जब नींद से जागे तो बरतन में हाथ डालने के पहले धो ले, क्योंकि उस को यह जानकारी नहीं कि रात को हाथ कहां-कहां रहा।

१२७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से पूछा गया कि आप (हज के मौक़े पर) सिर्फ़ दोनों रुक्ने यमानी (यानी रुक्ने असवद और रुक्ने यमानी) छूते और बिना बालों का जूता पहनते हैं और पीला रंग इस्तेमाल

करते हैं और लोग तो चांद देख कर एहराम बांध लेते हैं मगर आप मक्का में होते हैं तो आठवीं तारीख़ से पहले एहराम नहीं बांधते ? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने जवाब दिया कि रुक्नों के बारे में तो यह है कि मैंने अल्लाह के रसूल को देखा कि आप सिर्फ़ इन्हीं दोनों रुक्नों को छूते थे। बाक़ी जूतियों के बारे में यह है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को बिला बालों की जूतियां पहने हुए देखा, जिन में आप वुज़ू किया करते थे। इस लिए मैं भी इन ही को पहनने को पसन्द करता हूं, रही पीले रंग की बात, तो मैंने हुज़ूर को पीला रंग रंगते हुए देखा है, इस लिए मैं भी इस रंग को पसन्द करता हूं। एहराम के बारे में यह है कि जब तक हुज़ूर सल्ल० की सवारी आप को न उठा लेती थी (यानी सवार न हो जाते थे) उस वक़्त तक मैंने आप को एहराम बांधते नहीं देखा।

१२८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० को जूता पहनने, कंघा करने, तहारत हासिल करने और सभी (अच्छे) कामों को दाएं तरफ़ से शुरू करना पसन्द था।

१२९. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) अस्र की नमाज़ का वक़्त आ चुका था, लोगों ने वुज़ू के लिए पानी खोजा, लेकिन न मिला, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास (पानी का) एक बरतन लाया गया, आपने अपना हाथ उस पर रख लिया और लोगों को वुज़ू करने का हुक्म दिया। मैंने देखा कि आप की उंगलियों के नीचे से पानी निकल रहा था, यहां तक कि सबने वुज़ू किया।

१३०. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपना सर मुंड़वाया तो अबू तल्हा रज़ि० पहले शख़्स हैं जिन्होंने आप के मुबारक बाल लिए।

१३१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अगर कुत्ता किसी के बर्तन में (मुंह डाल कर) पी ले तो उस को सात बार धोना चाहिए।

१३२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह के वक़्त में मस्जिद में कुत्ते आ जाते थे और लोग इस की वजह से पानी नहीं छिड़कते थे।

१३३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि जब तक बन्दा मस्जिद में रह कर नमाज़ का इन्तिज़ार करता है नमाज़

में ही रहता है, शर्त यह है कि बे-वुज़ू न हो जाए।

१३४. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से पूछा कि अगर जिमाअ करे और मनी न निकले (तो क्या हुक्म है ?) आपने फ़र्माया जिस तरह नमाज़ के लिए वुज़ू करता है वैसे ही वुज़ू करे और पेशाबगाह को धो ले, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह से यही सुना है। (रावी का बयान है) फिर मैंने हज़रत अली, रज़ि० से, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से, हज़रत तल्हा रज़ि० से और हज़रत उबई बिन कअ्ब से यही बात पूछी तो उन्होंने हुक्म दिया।

१३५. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर ने एक अन्सारी को बुलवाया। वह आया तो उस के सर से पानी टपक रहा था, (फ़ौरन ग़ुस्ल कर के आ रहा था,) आपने फ़र्माया शायद हमने तुम पर जल्दी की। उसने कहा जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने फ़र्माया जब (किसी वजह) से तुम पर जल्दी की जाए या इन्ज़ाल न हो तो तुम पर वुज़ू ज़रूरी है।

१३६. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि० कहते हैं, एक सफ़र में हुज़ूर के) साथ था, हुज़ूर क़ज़ा-ए-हाजत को तशरीफ़ ले गए और मैंने आप पर पानी डालना शुरू किया। हुज़ूर ने वुज़ू किया, चेहरा और दोनों हाथ धोए, सर का मसह किया और दोनों मोज़ों पर भी मसह किया।

१३७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक रात मैं हज़रत मैमूना रज़ि० (नबी सल्ल० की बीवी) के पास रहा। (मैमूना रज़ि०) इब्ने अब्बास रज़ि० की ख़ाला थीं। मैं बिछौने की अर्ज़ में सो गया और हुज़ूर और आपकी घर वाली उसके तूल में सोए, आधी रात के वक़्त या कुछ बाद या किसी क़दर पहले आप सोने से जागे और बैठ कर आंखें मलीं, फिर सूर: आले इम्रान की आख़िरी दस आयतें तिलावत कीं। इस के बाद खड़े होकर उस मश्कीज़े से जो (वहां) लटका हुआ था, ख़ूब अच्छी तरह वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो गए। मैं भी खड़ा हो गया और जैसे आप करते थे, मैं भी करता था। इस के बाद मैं चल कर आप के बराबर जाकर खड़ा हो गया, आपने अपना दायां हाथ मेरे सर पर रखा और मेरा दायां कान पकड़ कर मलने लगे। फिर दो रक्अतें अदा कर के दो और पढ़ीं, फिर दो और पढ़ीं, फिर दो और पढ़ीं, फिर दो और पढ़ीं, फिर दो और पढ़ीं, फिर वित्र पढ़ा। (नमाज़ से फ़ारिग़ होकर) इस के

बाद आप लेट गए, यहां तक कि आप के पास मुअज्ज़िन आया, तो आपने उठ कर दो छोटी रक्अतें पढ़ीं और निकल कर सुबह की नमाज़ पढ़ी। यह हदीस पहले गुज़र चुकी है मगर हर एक में एक दूसरे से अलग मज़्मून है, इस लिए दर्ज कर दिया।

१३८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि मुझ से एक शख़्स ने कहा, क्या तुम मुझे दिखा सकते हो कि रसूलुल्लाह सल्ल० किस तरह वुज़ू करते थे ? मैंने कहा हां, (यह कह कर) मैंने पानी मंगाया और अपने हाथ पर डाला और उस को दोबारा धोया, फिर कुल्ली की और नाक में तीन बार पानी डाला, इस के बाद तीन बार मुंह धोया और दो बार कुहनियों तक दोनों हाथ धोए, फिर सर का मसह इस तरह किया कि सर के अगले हिस्से से दोनों हाथों के पीछे ले लिया और गुद्दी तक ख़त्म कर के दोबारा उसी जगह तक वापस लाया, जहां से शुरू किया था, इसके बाद दोनों पांव धोए।

१३९. हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि दोपहर के वक़्त हुज़ूर हमारे पास तशरीफ़ लाए, पानी का बरतन लाया गया, आपने वुज़ू किया, लोग आप के बचे हुए पानी को अपने बदन पर मलने लगे, फिर आपने ज़ुहर की दो और अस्र की दो रक्अतें पढ़ीं, उस वक़्त आपके सामने (सुतरे के लिए) लाठी गड़ी हुई थी।

१४०. हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) मेरी ख़ाला मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में ले गयीं और अर्ज़ किया कि मेरे भांजे के पैरों में दर्द है, आपने सर पर हाथ फेरा और मेरे लिए बरकत की दुआ की, फिर आपने वुज़ू किया, मैंने आप का बचा हुआ पानी पिया और पीछे खड़ा हो गया, मैंने आप के दोनों मोढ़ों के दर्मियान मुहरे नुबूवत देखी, जो पर्दे की घुंडी की तरह थी।

१४१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का बयान है कि रसूलुल्लाह के ज़माने में मर्द, औरतें इकट्ठे वुज़ू किया करते थे।

१४२. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) मैं बीमार था, मुझे होश न था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मेरी इयादत के लिए तशरीफ़ लाए हैं। आपने वुज़ू किया और वुज़ू का बचा हुआ पानी मेरे ऊपर डाल दिया, तो मुझे होश आ गया, मैंने अर्ज़ किया ऐ, अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मीरास किसके लिए है, न मेरे बेटा है न बाप, तो उस

वक़्त फ़राइज़ (मीरास) की आयत नाज़िल हुई ।

१४३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) नमाज़ तैयार हुई । जो मस्जिद के क़रीब थे, वह खड़े हो गए और कुछ लोग बाक़ी रह गए । (उस वक़्त) आपके पास एक पत्थर का बरतन लाया गया, जिस में पानी था । चूंकि वह छोटा था इस लिए आप हाथ फैला कर न दाखिल कर सके (उसी बर्तन से सबने वुज़ू कर लिया ।) अनस रज़ि० से पूछा गया कि आप लोग कितने थे ? तो फ़रमाया, अस्सी से कुछ ज़्यादा ।

१४४. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने एक प्याला मंगाया । प्याले में पानी था, उसने अपने दोनों हाथ और मुंह उस में धो लिये, और कुल्ली भी उसी में की ।

१४५. आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को गरानी बढ़ गई और दर्द सख्त हो गया तो आपने बीबियों से इजाज़त मांगी कि बीमारी के ज़माने में मेरे घर में रहें, इजाज़त दे दी गई । आप अब्बास रज़ि० और एक शख्स के बीच में (सहारे से खड़े होकर) निकले । आप के क़दम (कमज़ोरी की वजह) से घिसटते जाते थे, हुज़ूर जब मेरे घर तशरीफ़ ले आये तो फ़र्माया कि मुझ पर सात मश्कीज़े पानी बहाओ, जिन के बन्द भी न खोले गए हों (यानी बिल्कुल भरे हुए हों,) ताकि मुझे कुछ कमी मालूम हो और मैं लोगों को वसीयत कर सकूं । चुनांचे आप को हज़रत हफ़्सा के तश्त में बिठाया गया और हम आप पर (भरे हुए) मश्कीज़े डालने लगे, यहां तक कि हुज़ूर ने हमारी तरफ़ इशारा कर के फ़र्माया, तुम डाल चुकीं. फिर हुज़ूर बाहर तशरीफ़ ले गए ।

१४६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पानी का एक बर्तन मंगाया । चुनांचे एक बड़ा प्याला लाया गया, प्याले में कुछ पानी मौजूद था । आपने उस में अपनी उंगलियां डाल दीं, मैं देख रहा था, पानी आप की उंगलियों से निकल रहा था । उस से वुज़ू करने वालों को जो मैंने गिनती किया तो सत्तर-अस्सी आदमी थे ।

१४७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० एक साअ से पांच मुद तक पानी ग़ुस्ल में खर्च करते थे और एक मुद से वुज़ू करते थे ।

१४८. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का कहना है कि हुज़ूर सल्ल० ने मोज़ों पर मसह किया है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि०

ने जब हज़रत उमर रज़ि० से यह बात पूछी तो फ़र्माया हां, ठीक है। जब साद रज़ि० तुमसे कोई बात बयान कर दें तो और किसी से न पूछा करो।

१४६. हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुमरी रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को मोज़ों पर मसह करते हुए देखा है।

१५०. हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुमरी रज़ि० ही का बयान है कि हुज़ूर सल्ल० को मैंने देखा कि आप अमामा और मोज़ों पर मसह करते थे।

१५१. हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० कहते हैं कि मैं एक सफ़र में हुज़ूर के साथ था। आप के मोज़े उतारने के लिए जो मैं झुका तो आपने फ़र्माया, उन को रहने दो, मैंने पाकी पर पहने हैं, फिर आपने उन पर मसह किया।

१५२. हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़ुमरी रज़ि० का बयान है कि मैंने देखा हुज़ूर बकरी का शाना काट रहे थे कि आप को नमाज़ के लिए बुलाया गया, आपने छुरी फेंक दी और बिला (नया) वुज़ू किए नमाज़ पढ़ ली।

१५३. हज़रत सुवेद बिन नोमान रज़ि० कहते हैं कि मैं ख़ैबर के साल हुज़ूर के साथ निकला। जब हम सहबा के मक़ाम में (जो ख़ैबर से नीचे है) पहुंचे तो आपने अस्र की नमाज़ पढ़ी और खाना मंगाया, लेकिन सत्तू के अलावा आप को किसी ने कुछ न दिया। आपने हुक्म दिया, पानी में सत्तू घोले गए, आपने ख़ुद भी खाया और हमने भी खाया, फिर कुल्ली कर के आप मग़रिब की नमाज़ को खड़े हुए और हमने भी बिला (नया) वुज़ू किए हुये नमाज़ पढ़ी।

१५४. हज़रत मैमूना रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर ने मेरे पास (बकरी के) शाने का गोश्त खाकर बिला (नया) वुज़ू किए नमाज़ पढ़ी।

१५५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने दूध पीकर कुल्ली की और फ़र्माया इस में चिकनाहट है।

१५६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, तुम में से अगर किसी को नमाज़ पढ़ने में ऊंघ आ जाए तो सो जाना चाहिए ताकि नींद (की हालत) जाती रहे, क्योंकि अगर नमाज़ की हालत में ऊंघता रहेगा, तो मालूम नहीं मग़्फ़िरत तलब करने के बजाए अपने आप को गालियां देने लगे।

१५७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने इर्शाद फ़र्माया जब

तुम में से किसी को ऊंघ आ जाए, तो सो जाए ताकि उस को मालूम हो कि नमाज़ में क्या पढ़ रहा हूं।

१५८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर हर नमाज़ के लिए (ताज़ा) वुज़ू करते थे, और हम लोगों के लिए जब तक हदस न हो एक ही वुज़ू काफ़ी होता था।

१५९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर मदीना या मक्का के किसी बाग़ की तरफ़ से गुज़रे। वहां दो शख़्सों की आवाज़ सुनी, जिन को क़ब्र में अज़ाब दिया जा रहा था, आपने फ़र्माया, (यहां) दो आदमियों को अज़ाब हो रहा है मगर किसी बड़ी बात पर नहीं। अर्ज़ किया गया फिर क्यों? फ़र्माया एक शख़्स तो पेशाब के वक़्त पर्दा नहीं करता था और दूसरा चुग़लख़ोरी किया करता था, (इस वजह से उन पर अज़ाब हो रहा है।) फिर आपने सब्ज़ शाख़ मंगाई, दो टुकड़े कर के एक-एक टुकड़ा हर एक की क़ब्र पर रख दिया। अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हुज़ूर ने ऐसा क्यों किया, फ़र्माया जब तक लकड़ियां सूख न जाएं तब तक शायद उन पर अज़ाब की कमी रहे।

१६०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब हुज़ूर क़ज़ाए हाजत को तशरीफ़ ले जाते थे तो मैं आप के लिए पानी लेकर जाता था। आप उस से इस्तिंजा करते थे।

१६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) एक देहाती मस्जिद में खड़ा होकर पेशाब करने लगा, लोगों ने उस को पकड़ लिया। हुज़ूर ने फ़र्माया, इस को छोड़ दो, और पेशाब पर पानी का एक डोल बहा दो, तुम आसानी करने वाले (बना कर) भेजे गए हो, न कि मुश्किल पैदा करने वाले।

१६२. हज़रत उम्मे क़ैस बिन्त मुह्सिन रज़ि० कहती हैं कि मैं अपने छोटे बच्चे को लेकर हुज़ूर की ख़िद्मत में हाज़िर हुई। बच्चा अभी खाना नहीं खाता था, हुज़ूर ने उस को अपनी गोद में बिठाया, उसने पेशाब कर दिया, आपने पानी मंगा कर कपड़ों पर छिड़क लिया और धोया नहीं।

१६३. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर सल्ल० का लोगों के कूड़ा जमा होने की जगह (कूड़ी) पर गुज़र हुआ, आपने (वहां) खड़े होकर पेशाब किया, फिर पानी मांगा। मैं पानी लेकर हाज़िर हुआ, आपने वुज़ू किया।

१६४. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से दूसरी रिवायत में यह भी है कि मैं आप के पास से हट गया, आपने मुझे इशारा किया, तो मैं हाज़िर हुआ और आपकी एड़ियों के पास खड़ा हो गया। यहां तक कि आप फ़ारिग़ हो गए।

१६५. अस्मा रज़ि० कहती हैं कि एक औरत आप की ख़िद्मत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि अगर किसी औरत को कपड़ों में हैज़ हो जाए तो बताइए वह क्या करे, आपने फ़र्माया, मल कर खुरच डाले, फिर पानी से छींटा देकर निचोड़े और इन ही कपड़ों में नमाज़ पढ़े।

१६६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि फ़ातिमा बिन्त अबू हुबैश रज़ि० हुज़ूर की ख़िद्मत में हाज़िर हुयीं और फ़र्माया, मुझे इस्तिहाज़ा का मर्ज़ है, पाक ही नहीं होती हूं, क्या नमाज़ को छोड़ दूं, फ़र्माया नहीं यह (एक रग का ख़ून है) हैज़ नहीं है। जब तुम को हैज़ हो तो नमाज़ छोड़ दो, जब जाता रहे तो ख़ून धोकर नमाज़ पढ़ो और हर नमाज़ के लिए वुज़ू करो, यहां तक कि दूसरा वक़्त आ जाए।

१६७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं हुज़ूर के कपड़ों पर से (माइह) जनाबत धोया करती थी, और पानी का निशान आपके कपड़े पर होता तो आप नमाज़ को तशरीफ़ ले जाते थे।

१६८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि उकल (एक जगह) या उरैना के कुछ आदमी आए और मदीना में उन को पेट की बीमारी हो गयी, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन को ऊंटनियों में जाने और उन का पेशाब-दूध पीने का हुक्म दिया, चुनांचे वह गए और जब तन्दुरुस्त हो गए तो हुज़ूर के चरवाहे को क़त्ल कर के ऊंटनियों को हांक कर ले गए। जब सुबह को यह ख़बर आप को हुई तो आपने उन के पीछे आदमी दौड़ाए। सूरज चढ़ते ही वह लोग (गिरफ़्तार कर के) लाये गए, आपने हुक्म दिया कि इन के हाथ-पांव काट दिए जाएं और सीसा पिघला कर इन की आंखों में डाला जाए और हुर्र के मक़ाम पर इन को फेंक दिया जाए। वह लोग (प्यास की शिद्दत से) पानी मांगते थे, लेकिन उन को नहीं दिया जाता था।

१६९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मस्जिद के बनने से पहले हुज़ूर बकरियों के बांधने की जगह में नमाज़ पढ़ते थे।

१७०. हज़रत मैमूना रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर से उस घी के बारे

में पूछा गया, जिस में कोई चूहा गिर जाए। आपने फ़र्माया उस के आस-पास के घी को फेंक दो और बाक़ी घी खा लो।

१७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, मुसलमान राहे-ख़ुदा में जो ज़ख़्म खाता है वह क़ियामत के दिन उस शक्ल पर होगा जिस सूरत से लगने के वक़्त था उस से ख़ून बहता होगा और मुश्क की ख़ुश्बू उस से आती होगी।

१७२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर ने फ़र्माया कि ऐसा न हो कि तुम में से कोई शख़्स ठहरे हुए और न जारी होने वाले पानी में पेशाब करे और उस में ग़ुस्ल भी करे।

१७३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) अल्लाह के रसूल ख़ाना-ए-काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे, अबू जह्ल और उस के साथी बैठे हुए थे। उन में से एक शख़्स बोला कि फ़्लां क़बीले के ऊंटों का ओझ कौन लाकर सज्दे की हालत में उन की पीठ पर रख सकता है? (यह सुन कर) एक बदबख़्त उठा और ओझ लाकर इन्तिज़ार करता रहा, जब आप सज्दे में गए तो आप के दोनों मोंढों के बीच, पीठ पर उस को रख दिया। मैं देख रहा था और कुछ नहीं कर सकता था। काश ! मुझ में (रोकने की) ताक़त होती, फिर कुफ़्फ़ार आपस में हंसने लगे और (मज़ाक़ करने के तौर पर) एक दूसरे पर ओझ डालने की निस्बत बातें करते रहे और हुज़ूर सल्ल० सज्दे में पड़े थे, सर नहीं उठा सकते थे, इतने में हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लायीं और आप की पीठ से उस को गिराया, आपने सर उठाया और फ़र्माया ख़ुदावन्दा ! क़ुरैश को पकड़ कर। तीन बार यही फ़र्माया, उन को (कुफ़्फ़ार) को यह बात बुरी लगी, क्योंकि उन को इस बात की जानकारी थी ही कि इस शहर में दुआ मक़बूल होती है, फिर आपने नाम लेकर फ़र्माया, इलाही ! अबूजह्ल को, उत्बा बिन रबीआ को, शैबा बिन रबीआ को, वलीद बिन उत्बा को, उमय्या बिन ख़ल्फ़ को, और उक़्बा बिन अबी मुईत को पकड़, सातवें शख़्स का नाम रावी भूल गया। रावी कहता है कि उस ख़ुदा की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, जिन लोगों को हुज़ूर ने शुमार किया था, वह सब हलाक हो गए और बद्र के कुएं में फेंक दिए गये।

१७४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने अपने कपड़े में थूका है।

१७५. हज़रत सह्ल बिन साद साइदी रज़ि० कहते हैं कि मुझ से लोगों ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्ल० के ज़ख्म को क्या दवा की गयी। मैंने कहा कि मुझ से ज़्यादा जानने वाला इस बात का कोई नहीं रहा। हज़रत अली अपनी मशक लाते थे, जिसमें पानी भरा हुआ होता था, और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० चेहरा मुबारक से ख़ून धोती जाती थीं और एक चटाई को जला कर आप के ज़ख्म को उस से भरा गया।

१७६. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते है कि मैं हुज़ूर की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ, मैंने देखा कि आप अपने हाथ से मिस्वाक करते जाते थे और उअ-उअ करते थे। मिस्वाक आप के दहने मुबारक में थी, (ऐसा मालूम होता था) कि आप इस्तिफ़राग़ (कै) फ़र्माएंगे। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल जब रात को उठते तो मुंह में मिस्वाक करते थे।

१७७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) हुज़ूर ने फ़र्माया, मैं जानता हूं कि मैं मिस्वाक कर रहा था, इतने में दो आदमी आए जिन में एक शख्स बड़ा था। मैंने छोटे को मिस्वाक दी तो मुझ से कहा गया कि बड़े को दीजिए, मैंने बड़े को दी।

१७८. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जब तुम ख्वाबगाह में जाओ तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू करो, फिर दाएं करवट से लेट कर पढ़ो—अल्ला हुम-म अस् लम्तु वज्ही इलै-क वल् जअ्तु ज़हरी इलै-क रग़बतन व रह्बतन इलै-क ला मल ज अ वला मन्ज अ मिन-क इल्ला इलै-क अल्लाहुम-म आमन्तु बि किताबि कल्लज़ी अन्ज़ल-त व नबीयि कल्लज़ी अर सल-त० (हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया) अगर तुम उसी रात को मर जाओगे तो इस्लाम पर मरोगे और इन को सोते वक़्त आख़िरी कलाम बनाना। (यानी इस दुआ के पढ़ने के बाद कलाम न करना) रिवायत करने वाला कहता है कि मैंने इस को आप के सामने दोहराया—'आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल-त' के बाद 'व रसूलि-क' पढ़ा। आपने फ़र्माया 'व नबीयिकल्लज़ी अर सल् त' कहो।

बाब ५

ग़ुस्ल के बयान में

१७९. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० जब जनाबत (ना-पाकी) का ग़ुस्ल करते तो पहले हाथ धोते, फिर वुज़ू करते, जिस तरह नमाज़ के लिए वुज़ू करते हैं, फिर उंगलियां पानी में डाल कर बालों की जड़ों में ख़लाल करते, इस के बाद तीन लप पानी बहा कर सारे बदन पर पानी डालते।

१८०. हज़रत मैमूना रज़ि० अल्लाह के रसूल की बीवी से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू किया, लेकिन पांव न धोए, पेशाबगाह को धोया जहां नजासत लगी थी, उस को धोया फिर अपने ऊपर पानी बहा लिया, आख़िर में हट कर पांव धोए। हुज़ूर सल्ल० का यह जनाबत ग़ुस्ल का था।

१८१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं और अल्लाह के रसूल सल्ल० एक बर्तन में एक प्याला से (पानी लेकर) ग़ुस्ल किया करते थे, इस प्याला को 'फ़र्क़' कहते हैं।

१८२. हज़रत आइशा रज़ि० से रसूलुल्लाह सल्ल० के ग़ुस्ल के बारे में पूछा गया, तो आपने एक बरतन मंगाया, जिस की मिक़्दार लगभग एक साअ (पौने तीन सेर थी,) फिर ख़ुद ग़ुस्ल किया और अपने सर पर पानी डाला। सवाल करने वाले और हज़रत आइशा के बीच उस वक़्त पर्दे का आड़ था।

१८३. हज़रत जाबिर रज़ि० से ग़ुस्ल के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया, तुम को एक साअ पानी काफ़ी है। साइल कहने लगा कि मेरे लिए सिर्फ़ एक साअ पानी कैसे काफ़ी हो सकता है। हज़रत जाबिर रज़ि० ने फ़रमाया, उस के लिए तो एक साअ पानी काफ़ी हो जाता था, जो तुम से

ज्यादा बालों वाला और तुम से ज्यादा बेहतर था (तुम्हें क्यों काफ़ी न होगा ?) फिर हज़रत जाबिर ने सब को एक कपड़े में नमाज़ पढ़ाई।

१८४. हज़रत ज़ुबैर बिन मतइम रज़ि० कहते हैं हुज़ूर ने फ़रमाया, मैं तो अपने सर पर तीन बार पानी बहाता हूं और हुज़ूर ने अपने हाथों से बताया (कि किस तरह बहाता हूं।)

१८५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब गुस्ले जनाबत करते, तो कोई बरतन जैसे हलाब (लगभग) सवा तीन सेर पानी आ जाने के लायक़ बर्तन मंगाते, पहले दोनों हाथ धोते, फिर सर के दाएं तरफ़ से शुरू करते, फिर बाएं तरफ़ (धोते) और दोनों हाथों से लेकर बीच सर पर (पानी) डालते।

१८६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० को खुश्बू लगा दिया करती थी, फिर आप अपनी बीवियों में घूमने चले जाते थे और सुबह होती तो आप एहराम की हालत में होते (और खुश्बू की चीज छुड़ा देते थे।)

१८७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० रात दिन के एक ही घंटे में सभी बीवियों का चक्कर लगा लेते थे और आप की बीवियां ग्यारह थीं। रिवायत में है कि नौ थीं, हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया कि क्या हुज़ूर सल्ल० को इतनी औरतों की ताक़त थी, तो आपने जवाब दिया कि हम आपस में तज़्किरा करते थे कि हुज़ूर को तीस आदमियों की ताक़त दी गई है।

१८८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एहराम की हालत में जो हुज़ूर की मांग में खुश्बू की चमक (निशान) होती थी, वह मेरी नज़र में अब तक है।

१८९. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि जब हुज़ूर जनाबत का गुस्ल करते थे, तो दोनों हाथ धोते, नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू करते, फिर गुस्ल करते, इस के बाद बालों में ख़लाल करते, फिर जब हुज़ूर को ख्याल होता कि तमाम जिल्द पर तरी पहुंच जाए तो तीन बार पानी बहाते, आख़िर में बाक़ी बदन को धोते थे।

१९०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) जमाअत तैयार हो गयी, खड़े-खड़े हमारी सफ़ें दुरुस्त हो गयीं, हुज़ूर सल्ल० तश-रीफ़ लाए, मुसल्ले पर जा खड़े हुए, उस वक़्त आप को याद हुआ कि

नापाक हूं, तो हम से फ़रमाया, अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, ख़ुद लौट कर ग़ुस्ल किया और फिर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त आप के बालों से पानी टपक रहा था, तक्बीर कही गई और हमने आप के साथ नमाज़ अदा की।

१६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बनी इस्राईल नंगे होकर ग़ुस्ल किया करते थे और एक दूसरे को देखते जाते थे, मगर मूसा अलै० तन्हा ग़ुस्ल-करते थे। इस वजह से बनी इस्राईल कहने लगे कि मूसा अलै० के फ़ोते बड़े हैं। यही वजह है कि हमारे साथ नहीं नहाते, इत्तिफ़ाक़ से एक बार हज़रत मूसा अलै० ग़ुस्ल करने लगे, पत्थर पर कपड़े (उतार कर) रखे, पत्थर कपड़े लेकर भागा, हज़रत मूसा अलै० उस के पीछे यह कहते हुए दौड़े कि मेरे कपड़े वापस कर मेरे कपड़े, जब बनी इस्राईल ने मूसा अलै० को देख लिया तो कहने लगे ख़ुदा की क़सम! मूसा अलै० में तो ख़राबी नहीं है, मूसा अलै० ने अपने कपड़े ले लिए और पत्थर को पीटने लगे। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, ख़ुदा की क़सम! मारने से पत्थर में छः-सात निशान पड़ गए थे।

१६२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि हज़रत अय्यूब (एक बार) नंगे होकर ग़ुस्ल कर रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से सोने की टिड्डियां गिरीं, अय्यूब रज़ि० लपों से कपड़ों में भरने लगे। उस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से निदा आई, ओ अय्यूब! क्या हमने तुम को इन चीज़ों से, जो तुम्हारी नज़रों के सामने हैं, ग़नी नहीं कर दिया है? हज़रत अय्यूब रज़ि० ने अर्ज़ किया जी हां, क़सम है तेरी इज़्ज़त की! लेकिन तेरी बरकत से मुझे सेरी नहीं है।

१६३. हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबू तालिब रज़ि० कहती हैं कि मैं मक्का के फ़त्ह के साल हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई, आप को मैंने ग़ुस्ल करते हुए पाया, फ़ातिमा रज़ि० आप की आड़ किए हुये थीं, आपने फ़रमाया, कौन है? आपने अर्ज़ किया—मैं उम्मे हानी हूं।

१६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर मुझ को मदीने के एक रास्ते में मिले, मुझे ग़ुस्ल की ज़रूरत थी, इस लिए मैं आप से हट कर चला गया और ग़ुस्ल कर के हाज़िर हुआ, हुज़ूर ने फ़रमाया अबूहुरैरह (रज़ि०)! तुम कहां थे? मैंने अर्ज़ किया, मैं नापाक था, इस लिए हुज़ूर के पास बैठने को मकरूह ख़्याल किया, आपने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! ईमानदार आदमी नापाक नहीं होता।

१६५. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि हमने हुज़ूर से पूछा कि क्या हम में से कोई नापाकी की हालत में सो सकता है, आपने फ़र्माया, हां, जब वुज़ू करे तो नापाकी की हालत में सो रहे।

१६६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जब मर्द औरत के चार आज़ा के दर्मियान बैठे और औरत को मशक़्क़त में डाले, तो गुस्ल वाजिब हो जाता है।

बाब ६

तयम्मुम के बयान में

१६७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ एक सफ़र में गये। जब बीदार या ज़ातुल जैश के मक़ाम पर पहुंचे तो मेरा हार टूट कर निकल गया, रसूलुल्लाह सल्ल० उस को तलाश करने के लिए ठहर गये और दूसरे आदमियों को भी अपने साथ ठहरा लिया, मगर पानी (की जगह) पर न ठहरे थे। लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० से आकर कहने लगे कि देखो तो हज़रत आइशा रज़ि० ने क्या किया! रसूलुल्लाह सल्ल० को भी रोका और दूसरे आदमियों को भी, न पानी पर ठहराव हुआ है और न साथ में पानी है? हज़रत अबूबक्र रज़ि० (यह सुन कर मेरे पास) आए, अल्लाह के रसूल सल्ल० मेरी रान पर सर रख कर सो गये थे और आकर कहा, तूने रसूले ख़ुदा और सारे लोगों को रोक दिया, इसके बावजूद कि न यहां पानी है और न (पानी) साथ में है। हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुझ पर नाराज़ हुए और जो कुछ ख़ुदा की मर्ज़ी थी वह कहा और मेरे गुदगुदी करने लगे, मगर चूंकि रसूलुल्लाह सल्ल० का सर मेरी रान पर था, इस लिए मैं न हिल सकती थी, फिर रसूलुल्लाह सल्ल० सुबह होते ही उठे, मगर पानी न था, उस वक़्त 'फ़तयम्ममू' आयत नाज़िल हुई, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि०

बोले, ऐ आले अबूबक्र ! तुम्हारी यह पहली ही बरकत नहीं है (इस से पहले तुम्हारी वजह से और भी बरकतें हो चुकी हैं।) हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जिस ऊंट पर मैं सवार थी, जब हमने उस को उठाया तो उस के नीचे हार मिला।

१६८. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुझे पांच चीज़ें ऐसी दी गई हैं जो मुझ से पहले किसी को अता नहीं की गयीं, एक माह की मुसाफ़त तक मेरे रौब से मेरी मदद की गयी है (यानी एक माह की मुसाफ़त तक मेरा रौब लोगों के दिलों पर है।) तमाम ज़मीन मेरे लिए मस्जिद और पाकी का ज़रिया बना दी गई है, इस लिए मेरी उम्मत में से जिस शख्स को किसी जगह नमाज़ का वक्त आ जाए तो वह नमाज़ पढ़ ले, मेरे लिए ग़नीमत के माल हलाल किए गये हैं, मुझ से पहले किसी के लिए हलाल नहीं किए गये, मुझ को शफ़ाअत का हक़ इनायत किया गया, मुझ से पहले हर नबी ख़ास तौर पर अपनी क़ौम के लिए भेजा जाता था और मैं सारी दुनिया के लिए नबी बनाया गया हूं।

१६९. हज़रत अबू जुहैम बिन हारिस अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर चाहे जुमल के तरफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में एक शख्स मिला और आप को सलाम किया, लेकिन आपने उस के सलाम का जवाब न दिया, और दीवार की तरफ़ जाकर अपने चेहरे और दोनों हाथों का मसह किया, इस के बाद सलाम का जवाब दिया।

२००. अम्मार बिन यासिर रज़ि० कहते हैं कि मुझसे (एक बार) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहा, क्या तुम को याद नहीं कि हम और तुम एक सफ़र में थे, तुमने (पानी न मिलने की वजह से) नमाज़ न पढ़ी और हमने ज़मीन में लोट लगा कर नमाज़ पढ़ ली थी और अल्लाह के रसूल सल्ल० से इस का ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि तुम को (सिर्फ़) इतना काफ़ी था। फिर आपने दोनों हाथ ज़मीन पर मारे, उन को फूंका और चेहरे और दोनों हाथों पर फेर लिया।

२०१. हज़रत इम्रान बिन हुसैन ख़ुज़ाई रज़ि० कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ एक सफ़र में थे और रात को चले थे, जब पिछली रात हुई तो ख़ूब गहरी नींद सो गये और मुसाफ़िर के लिए इस से ज़्यादा ख़ुशगवार कोई और चीज़ होती भी नहीं, (ख़ैर) सूरज की

गर्मी से सुबह को जागे, पहले फ़्लां शख्स जागा, फिर फ़्लां फिर फ़्लां फिर चौथे नम्बर पर हज़रत उमर रज़ि० थे और (यह क़ायदा था) कि जब नबी करीम सल्ल० ख्वाब में होते थे तो हम आप को नहीं जगाते थे, जब तक कि आप खुद न जाग जाएं, क्योंकि पता नहीं नींद में क्या नई बात पैदा हुई है, हज़रत उमर चूंकि सख्त आदमी थे, जब वह जाग गए और लोगों की हालत देखी तो ऊंची आवाज़ से तक्बीर पढ़ी और ज़ोर-ज़ोर से तक्बीर पढ़ते रहे, यहां तक कि उन की आवाज़ से हुज़ूर सल्ल० जाग गए, जब हुज़ूर जागे तो लोगों ने हुज़ूर से अपनी तक्लीफ़ बयान की (यानी नमाज़ का क़ज़ा हो जाना ज़ाहिर किया।) आपने फ़र्माया कोई हरज नहीं है या यह फ़र्माया कि कुछ नुक़सान न होगा। इस के बाद लोग चल दिए। कुछ ही दूर चले होंगे कि आप उतर पड़े, वुज़ू का पानी मंगाया, नमाज़ के लिए अज़ान दी गयी और आपने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने देखा कि एक आदमी ने जमाअत के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी। आपने फ़र्माया क्यों, किस वजह से तुमने जमाअत के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? उसने अर्ज़ किया; मैं नापाक हो गया हूं और पानी नहीं है। हुज़ूर ने फ़र्माया, पाक मिट्टी को इस्तेमाल करो वही तुम्हारे लिए काफ़ी है। इस के बाद लोगों ने आप से प्यास की शिकायत की, तो आपने उतर कर हज़रत अली रज़ि० को और एक और आदमी को बुलाया और फ़र्माया जाओ, पानी तलाश करो दोनों चल दिए, (रास्ते) में एक औरत मिली, जिस के पास ऊंट पर पानी के दो मश्केज़े थे, उन्होंने उस से पूछा कि पानी कहां है? उसने जवाब दिया कि कल इसी वक़्त मैं पानी पर थी और हमारे आदमी पीछे हैं, उन्होंने कहा, अच्छा चलो। तो वह बोली, कहां? उन्होंने कहा अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में, उसने कहा क्या उन के पास, जिन को साबी कहते हैं? यह बोले, हां, उन के ही पास चली चल, जिन को तू समझ रही है, आख़िर दोनों हज़रात उस को हुज़ूर की ख़िदमत में लाए और आप से पूरा क़िस्सा बयान कर दिया, आपने फ़र्माया इस औरत को ऊंट से उतार लो, इस के बाद आपने एक बर्तन मंगाया, मश्केज़ों के दहानों से थोड़ा-सा पानी लेकर इन के दहाने बन्द कर दिए और नीचे के मुंह खोल दिए। फिर लोगों में मुनादी करा दी कि पियो और पिलाओ। जिस को पीना था उसने पी लिया और जिसने पिलाना चाहा पिला दिया, आख़िर में जिस को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी उस को पानी

का एक बर्तन (भर कर) दिया और फ़र्माया जा, इस को अपने ऊपर डाल ले, औरत खड़ी देख रही थी कि उस के पानी का क्या हो रहा है ? औरत का पानी तो रोक लिया गया था, मगर खुदा की क़सम ! हमारा ख्याल था कि शायद पानी अपने पहले वाली हालत से भी ज्यादा है इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया इस के लिए (कुछ) जमा करो, लोगों ने खजूरें, आटा और सत्तू इकट्ठे किए। जब सब खाना जमा हो गया और उस को एक कपड़े में बांध कर उस के सामने रख दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तू यह जानती है कि हमने तेरा पानी कुछ भी कम नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने हम को सेराब कर दिया, वह औरत (उस के बाद) अपने घर वालों के पास चली गयी, मगर चूंकि इस को देर हो गयी थी, इस लिए इस के घर वालों ने उस से पूछा कि कहां रुकी रही थी ? उसने जवाब दिया कि एक अजीब बात मुझे पेश आ गयी थी। मुझे दो आदमी (रास्ते में) मिले और एक शख्स के पास ले गये, जिस को साबी कहा है और उसने ऐसा-ऐसा किया, खुदा की क़सम ! वह आसमान व ज़मीन में सब से ज्यादा जादू जानने वाला है। (आसमान व ज़मीन की तरफ़) उस औरत ने अपनी बीच की और शहादत की उंगली उठा कर इशारा किया था, जिस से मुराद आसमान व ज़मीन थी, लफ़्ज़ों में आसमान व ज़मीन न कहा था या उस की मुराद यह थी कि वह खुदा का सच्चा रसूल है, उस के बाद मुसलमानों ने आस-पास के मुश्रिकों को लूटना शुरू किया, मगर जिन मकान में वह औरत थी, उस के पास तक न जाते थे। एक रोज़ उस औरत ने अपनी क़ौम से कहा, मेरा ख्याल है कि ये लोग तुम को जान-बूझ कर छोड़ गये हैं, तो क्या तुम इस्लाम की ख्वाहिश रखते हो ? उन लोगों ने औरत का कहना मान लिया और मुसलमान हो गये।

बाब ७

नमाज़ के बयान में

२०२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं अबूज़र बयान करते थे कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं मक्का में था कि मेरे कोठे की छत फट गई, जिब्रील नाज़िल हुए, मेरा सीना चाक किया, उस को ज़मज़म के पानी से धोया, फिर सोने की एक तश्तरी हिक्मत व ईमान से भरी हुई लाए, उस को मेरे सीने पर बहाया और बाद को सीना मिला कर बन्द कर दिया, फिर मेरा हाथ पकड़ कर दुनिया के आसमान की तरफ़ ले चले। जब मैं आसमान तक पहुंचा तो जिब्रील अलै० ने उस आसमान के दारोग़ा से कहा, खोलो, दारोग़ा बोला कौन है ? उन्होंने कहा, मैं जिब्रील हूं और मेरे साथ हज़रत मुहम्मद सल्ल०, अल्लाह के रसूल हैं, दारोग़ा ने कहा, क्या वह रसूल बनाए गए हैं ? जिब्रील बोले, हां, दारोग़ा ने खोल दिया, हम आसमान पर चढ़े। वहां एक शख्स बैठा हुआ था, जिस के दाएं-बाएं रूहें थीं; जब वह दाएं तरफ़ देखता था तो हंसता था और बाएं तरफ़ देखता था तो रोता था। (मुझे देख कर वह शख्स बोला) खुश आमदीद, ऐ नेक नबी और ऐ नेक बेटे ! मैंने जिब्रील अलै० से पूछा यह कौन है ? जिब्रील अलै० ने कहा, यह हज़रत आदम अलै० हैं। इन के दाएं-बाएं तरफ़ रूहें हैं जो इन की औलाद हैं। दाएं तरफ़ वाली जन्नती हैं और बाएं तरफ़ वाली दोज़खी, इसी लिए जब यह दाएं तरफ़ को देखते हैं तो हंसते हैं और बायीं तरफ़ देखने पर रोते हैं। इस के बाद मुझे दूसरे आसमान की तरफ़ ले गए और जिस तरह पहले कहा था यहां भी कहा। दारोग़ा ने खोल दिया, हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, मैंने आसमानों में हज़रत आदम अलै० को, इद्रीस अलै० को, ईसा अलै० और हज़रत इब्राहीम अलै० को पाया, मगर आपने यह नहीं बताया कि इनके मरतबे क्या-क्या

थे। सिर्फ़ इतना फ़र्माया कि हज़रत आदम अलै० को पहले आसमान में पाया और हज़रत इब्राहीम अलै० को छठे आसमान में।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जब जिब्रील अलै० मुझ को लेकर हज़रत इद्रीस अलै० की तरफ़ गुज़रे, तो हज़रत इद्रीस ने कहा, ख़ुश आमदीद ऐ नेक नबी, ऐ नेक भाई! मैंने कहा, यह कौन हैं? जिब्रील अलै० बोले, यह हज़रत इद्रीस अलै० हैं। (इसी तरह हज़रत मूसा अलै० के पास से भी गुज़र हुआ।) इस के बाद हज़रत ईसा की तरफ़ से गुज़रना हुआ, तो वह भी यही बोले, ख़ुश आमदीद, ऐ नेक नबी और नेक भाई! मैंने पूछा यह कौन हैं? जिब्रील अलै० ने कहा, यह हज़रत ईसा अलै० हैं, फिर मेरा गुज़र इब्राहीम अलै० की तरफ़ से हुआ, तो उन्होंने कहा, ख़ुश आमदीद ऐ नेक नबी और नेक बेटे! मैंने कहा यह कौन हैं जिब्रील अलै० ने जवाब दिया, यह हज़रत इब्राहीम अलै० हैं। इब्ने अब्बास रज़ि० और अबू हब्बा अंसारी रज़ि० कहा करते थे कि हुज़ूर ने फ़र्माया जिब्रील मुझ को ऊपर चढ़ा कर ले गए और हम एक ऊंची सपाट जगह पर पहुंचे, जहां मुझे क़लमों के चलने की आवाज़ सुनाई देती थी, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० का कहना है कि आपने फ़र्माया था, अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत पर पचास वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की थीं लेकिन जब (मैं वापस होकर) मूसा अलै० की तरफ़ से गुज़रा तो उन्होंने पूछा कि अल्लाह तआला ने आप की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है? मैंने कहा कि पचास वक़्त की नमाज़ें। वह कहने लगे, अपने परवरदिगार के पास जाओ, क्योंकि तुम्हारी उम्मत में इस की ताक़त न होगी, मैंने जाकर अपने रब से कमी करायी, तो अल्लाह तआला ने आधी ख़त्म कर दीं। जब हज़रत मूसा अलै० के पास आया और उन से कहा कि आधी ख़त्म कर दी गयीं, तो उन्होंने कहा दोबारा अपने रब के पास जाओ, तुम्हारी उम्मत में इस की भी ताक़त न होगी। मैंने ख़ुदा से और कमी करायी, अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि पांच वक़्त की (नमाज़ें) फ़र्ज़ रहीं और वह सवाब में पचास के बराबर हैं, मेरे यहां हुक्म में तब्दीली नहीं होती है, इस के बाद जब हज़रत मूसा अलै० की तरफ़ लौटा, तो उन्होंने कहा, अब फिर अपने रब के पास जाओ। मैंने कहा अब मुझे अपने रब से शर्म आती है। इस के बाद जिब्रील मुझे (और ऊपर) ले चले, यहां तक कि सिदरतुल मुन्तहा के मक़ाम तक पहुंचे, यहां कई क़िस्म के रंग उस को घेरे हुए थे,

मुझे नहीं मालूम, वह क्या थे, फिर मुझे जन्नत में दाखिल किया गया तो मैंने वहां मोतियों के हार और मुश्क की मिट्टी देखी।

२०३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह तआला ने जब नमाज़ फ़र्ज़ की तो दो-दो रक्अतें सफ़र व हज़र में फ़र्ज़ की थीं। सफ़र की नमाज़ तो वैसे ही रही और हज़र की नमाज़ में ज़्यादती कर दी गयी।

२०४. हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) एक कपड़ा पहन कर नमाज़ पढ़ी, जिस को दोनों किनारे (कंधों) पर इधर-उधर डाल दिये थे।

२०५. हज़रत उम्मे हानी बिन्त अबूतालिब रज़ि० से मक्का की फ़त्ह के दिन की पिछली हदीस रिवायत की गयी है, मगर उन्होंने इतनी और ज़्यादा की, आपने एक कपड़ा पहनकर आठ रक्अतें पढ़ीं, जब फ़ारिग़ हुए, तो मैंने अर्ज़ किया कि मेरी मां के बेटे अली रज़ि० (बिन अबी तालिब) का ख्याल है कि मैं पनाह दे चुकी हूं, वह उसको क़त्ल कर दें, हुमने फ़र्माया उम्मे हानी रज़ि० जिस को तुम पनाह दे चुकीं, उसको हमने भी पनाह दी। हज़रत उम्मे हानी रज़ि० कहती हैं कि यह चाश्त के वक़्त का ज़िक्र है।

२०६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से एक कपड़ा पहन कर नमाज़ पढ़ने के बारे में पूछा, आपने फ़र्माया, क्या तुम में से हर एक के पास दो कपड़े हैं।

२०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम में से कोई शख़्स एक कपड़े में नमाज़ न पढ़े, उस वक़्त तक कि उस के कंधे पर कुछ न हो।

२०८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैं गवाही देता हूं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स एक कपड़ा पहन कर नमाज़ पढ़े, उस को चाहिए कि उस के दोनों किनारे (कंधों) पर इधर-उधर डाल ले।

२०९. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के साथ एक सफ़र में निकला, एक रात में जब किसी काम के लिए आप की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ तो आप को मैंने नमाज़ पढ़ते हुए देखा। मैं (उस वक़्त) एक कपड़ा ओढ़े हुए था, मैं उस को लपेट कर आप के एक तरफ़ खड़ा हो गया और नमाज़ शुरू कर दी, जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो

फ़र्माया जाबिर! रात को क्यों आया है? मैंने अपनी जरूरत बताई। फ़ारिग़ हुआ तो आपने फ़र्माया यह कपड़े में फटा हुआ मुझे दिखाई दे रहा है। मैंने अर्ज़ किया कि एक ही कपड़ा था। फ़र्माया अगर ज्यादा हो तो उसी में लिपट जाया करो (यानी समेट लिया करो) और अगर तंग हो तो तह-बन्द बना लिया करो।

२१०. हज़रत सह्ल रज़ि० कहते हैं कि कुछ आदमी अपनी गर्दनों में लुंगियां बांधे हुज़ूर सल्ल० के साथ बच्चों की तरह नमाज़ पढ़ा करते थे और औरतों से कहा जाता था कि (उस वक़्त तक) सर न उठाओ, जब तक मर्द सीधे न बैठ जाएं।

२११. हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० कहते हैं कि एक सफ़र में मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ था, आपने फ़र्माया, मुग़ीरह! बरतन थाम ले। मैंने थाम लिया, आप (वहां से) चले, यहां तक कि मेरी नज़रों से छिप गए। (वहां जाकर) क़ज़ाए हाजत की, चूंकि आप शामी जुब्बा पहने हुए थे, इस लिए हाथ आस्तीनों से निकालने लगे, मगर आस्तीन तंग थी, इसी लिए आपने हाथ नीचे निकाला, मैंने आप के हाथ पर पानी डाला, आपने नमाज़ की तरह वुज़ू किया, मोज़ों पर मसह किया और नमाज़ पढ़ी।

२१२. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० तहबन्द ओढ़े हुए लोगों के साथ काबा के पत्थर उठा रहे थे, आप के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, भतीजे! अगर तुम अपना तहबंद खोल कर मोंढों पर पत्थरों के नीचे रख लो, (तो अच्छा है।) आपने तह-बन्द खोल कर मोंढों पर रख लिया। फ़ौरन आप बेहोश हो गए, मगर इस के बाद आप को नंगा नहीं देखा गया।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इस तरह कपड़ा लपेटने से मना फ़र्माया है, जिस से हाथ-पांव निकालने का रास्ता न रहे या इंसान एक कपड़ा पहन कर इस तरह गठरी बन कर बैठे कि उस की शर्मगाह का पर्दा न हो।

२१३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने दो क़िस्म की फ़रोख़्त से मना फ़र्माया है। बैअ़ुलमास और बैअ़ुन्नियाज़। बैअ़ु-लमास यह है कि ख़रीदार किसी चीज़ को छोड़ दे तो उस पर क़ुबूल करना ज़रूरी हो जाए, बैअ़ुन्नियाज़ यह है कि बायअ़ (बेचने वाला) मुश्तरी (ख़रीदने वाले) की मतलूबा चीज़ उस की तरफ़ फेंक देता तो उस का

क़ुबूल करना लाज़िम हो जाता था। और इस तरह कपड़ा लपेटने से (मना फ़र्माया है) जिस से हाथ-पांव निकालने को रास्ता न रहे और इस से भी (मना फ़र्माया) कि आदमी एक कपड़े में गठरी बन बैठे।

२१४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज के ज़माने में मुझे मुनादी करने वालों के साथ मिला कर भेजा, जो यह एलान करते थे कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज न करे और न कोई नंगा होकर खाना काबा का तवाफ़ करे। इस के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को सवार कर के पीछे भेजा और हुक्म दिया, सूरः बरात का एलान कर दें। अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि दसवीं ज़िलहिज्जा को हज़रत अली रज़ि० ने मिना में एलान किया कि इस साल के बाद न कोई मुश्रिक हज करे और न कोई नंगा होकर खाना काबा का तवाफ़ करे।

२१५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० खैबर की लड़ाई में थे और हमने जंग के मौक़े के क़रीब ही अंधेरे में सुबह की नमाज़ पढ़ी। इस के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० सवार हुए। मैं आप के पीछे बैठा था। हुज़ूर खैबर के कूचों में (अपनी सवारी) चलाते जाते थे और मेरा, जानू आप की रान में लगता जाता था, आपने अपना तहबन्द खोल दिया और मैं आप की रान की सफ़ेदी देख रहा था। जब आप गांव में दाखिल हुए तो फ़र्माया अल्लाहु अकबर! खैबर वीरान हो गया। हम जब किसी क़ौम के सेहन में दाखिल होते, तो डरे हुए लोगों (खौफ़ज़दा लोगों) की सुबह बुरी हो जाती है। (यानी कुफ़्फ़ार तबाह हो जाते हैं।) ये लफ़्ज़ आपने तीन बार फ़र्माए। रिवायत करने वाला कहता है कि लोग अपने कामों को जा रहे थे, (देख कर कहने लगे,) मुहम्मद सल्ल० और (उन का) लश्कर है। इस तरह हमने खैबर को ज़बरदस्ती हासिल किया, उस के बाद क़ैदी इकट्ठे किए गये, दह्या रज़ि० ने आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क़ैदियों में से एक लौंडी मुझे इनायत फ़र्माइए। आपने फ़र्माया, जा, एक लौंडी ले ले। उन्होंने सफ़िया बिन्त हुयी को ले लिया, इस पर एक शख्स ने खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने सफ़िया बिन्त हुयी दह्या को इनायत फ़र्मा दी। वह तो क़ुरैज़ा और नज़ीर की सरदार है और सिर्फ़ आप के लिए मुनासिब है। फ़र्माया, दह्या को बुलाओ। जब दह्या हाज़िर हुए तो आपने सफ़िया को

देखा, तो फ़र्माया इस के सिवा और कोई लौंडी ले ले। इस के बाद हुज़ूर ने सफ़िया को आज़ाद कर के उन के साथ निकाह कर लिया और उन को आज़ादी को महर क़रार दिया, हुज़ूर सल्ल० रास्ते ही में थे कि हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने हज़रत सफ़िया को बना-संवार कर रात को हुज़ूर की ख़िदमत में पेश किया, सुबह हुई तो हुज़ूर नौशा थे। आपने फ़र्माया, अगर किसी के पास कुछ हो तो लेकर आ जाए और दस्तरख़्वान बिछवा दिया। लोग खजूरें और घी लाने लगे, मेरा ख़्याल है कि रिवायत करने वाले ने सत्तू का भी ज़िक्र किया है। ख़ैर, लोगों ने हैस (एक तरह का खाना होता है) तैयार किया, बस अल्लाह के रसूल सल्ल० का यही वलीमा हुआ।

२१६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा करते थे और ईमानदार औरतें वहां चादरों में छिपी-ढकी आती थीं और (नमाज़ से फ़ारिग़ होकर) घरों को लौट जाती थीं कि कोई उन को पहचानता न था।

२१७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर ने एक नक़्शीन चादर ओढ़ कर नमाज़ पढ़ी और (नमाज़ में) नुक़ूश को एक दफ़ा देखा, जब फ़ारिग़ हुए तो फ़र्माया, इस चादर को अबू जह्म के पास ले जाओ और बे-नक़्शे वाली चादर ले आओ कि इन नुक़ूश ने मुझे इस वक़्त नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दिया।

२१८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत आइशा रज़ि० के पास एक पर्दा था, जिस को आपने अपने मकान के एक तरफ़ लगा दिया था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अपना यह पर्दा मेरे सामने से हटा दो, नमाज़ में इस की तस्वीर मेरे सामने आती हैं।

२१९. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं, (एक बार) एक रेशम का चोग़ा हदिया के तौर पर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया, आपने उस को पहन कर नमाज़ पढ़ी, जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उस को इस सख़्ती के साथ उतार फेंका, जिस से इस का नागवार होना मालूम होता था और फ़र्माया परहेज़गारों के लिए यह मुनासिब नहीं है।

२२०. हज़रत अबू हुजैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को चमड़े के सुर्ख़ क़ुबा में देखा। बिलाल रज़ि० आपके वुज़ू का पानी लिए हुए और लोग इस पानी की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ रहे थे। जिस शख़्स के हाथ कुछ पानी लग जाता था वह उस को बदन पर मल लेता था और

जिस के हाथ कुछ न आता था, वह अपने साथी के हाथों की तरी-ले लेता था, बिलाल रज़ि० को मैंने देखा कि उन्होंने एक छोटा नेजा लेकर (जमीन में) गाड़ दिया और हुज़ूर सुर्ख़ लिबास पहने हुए, दामन उठाए हुए निकले, लकड़ी की तरफ़ मुंह कर के दो रकअत नमाज़ पढ़ाई (उस वक़्त) मैं देख रहा था कि आदमी और चौपाए नेज़े के आगे से गुजर रहे थे।

२२१. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० से पूछा गया कि (हुज़ूर का) मेम्बर किस चीज़ का था, कहने लगे कि अब लोगों में इस बात का मुझ से ज़्यादा जानने वाला कोई बाक़ी न रहा। मेम्बर ग़ाबह नामी जगह के झाऊ का बना हुआ था जिस को फ़्लां शख़्स ने जो फ़्लां औरत का ग़ुलाम था हुज़ूर के लिए तैयार किया था, जब तैयार हो गया तो उस वक़्त आप क़िब्ले की तरफ़ रुख कर के खड़े हुए। अल्लाहु अक्बर कहा। लोग आप के पीछे खड़े थे, आपने क़िरात पढ़ी, रुकूअ किया, लोगों ने भी आपके पीछे रुकूअ किया। फिर आपने सर उठाया पीछे को लौटे, यहां तक कि ज़मीन पर सज्दा किया, मेम्बर का यही क़िस्सा है।

२२२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि मेरी दादी मैका रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० की दावत की, खाना तैयार किया, आपने खाया, इसके बाद इर्शाद फ़र्माया, उठो, मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ाऊं, हज़-रत अनस रज़ि० कहते हैं कि एक चटाई थी, जो ज़्यादा इस्तेमाल होने की वजह से काली हो गयी थी, मैंने उस पर पानी छिड़का और खड़ा हो गया। अल्लाह के रसूल सल्ल० आगे खड़े हुए। मैंने और एक यतीम लड़के ने सफ़ बांधी और हमारे पीछे बूढ़ी औरतें थीं, हुज़ूर सल्ल० ने हम को दो रकअतें पढ़ायीं और वापस तशरीफ़ ले गये।

२२३. हज़रत आइशा रज़ि०, नबी सल्ल० की बीवी कहती हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने सो जाती थी। मेरे दोनों पांव आप के क़िब्ले की तरफ़ होते थे, जब आप सज्दा करते तो मुझे इशारा फ़र्माते, मैं पांव समेट लेती। जब आप खड़े हो जाते तो पैर फैला देती। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि उन दिनों में घर के अन्दर चिराग़ न थे।

२२४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० नमाज़ पढ़ते होते थे और मैं आप के और क़िब्ले के बीच में जनाज़े की तरह चौड़ान में आप के घर वालों के बिस्तर पर पड़ी होती थी।

२२५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ

नमाज़ पढ़ा करते थे, तो कुछ लोग सख्त गर्मी की वजह से कपड़े का दामन सज्दे की जगह रख लेते थे।

२२६. हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया कि क्या हुज़ूर जूतियों समेत नमाज़ पढ़ लेते थे ? तो बोले, हां।

२२७. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० ने पेशाब कर के वुज़ू किया, मोज़ों पर मसह किया, फिर खड़े होकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, पूछा गया तो कहने लगे, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को ऐसा ही करते देखा है। लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ क्योंकि जरीर रज़ि० पीछे के मुसलमानों में से हैं।

२२८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुहैना रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० जब नमाज़ पढ़ते थे, तो दोनों हाथों को इतना फैला कर रखते थे कि आप के बग़लों की सफ़ेदी मालूम होने लगती थी।

क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करना

२२९. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़रमाया, जो शख्स हमारे जैसी नमाज़ पढ़े, हमारे क़िब्ले को रुख करे और हमारे ज़बीहे को खाए वह मुसलमान है। उसके लिए ख़ुदा और रसूल का ज़िम्मा है, इस लिए तुम ख़ुदा के ज़िम्मे को न तोड़ो।

२३०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से पूछा गया कि एक शख्स ने उमरे का तवाफ़ कर लिया, लेकिन सफ़ा व मर्वः के बीच दौड़ नहीं लगाई। क्या वह अपनी बीवी के पास आ सकता है ? कहने लगे अल्लाह के रसूल सल्ल० (एक बार) तशरीफ़ लाए, सात बार काबे का तवाफ़ किया, मुक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और सफ़ा व मर्वः के दर्मियान दौड़ लगायी, तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवी करना एक बेह-तरीन तरीक़ा है।

२३१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ख़ाना काबा में दाख़िल हुए। उस के हर कोने में दुआ की, मगर नमाज़ नहीं पढ़ी। जब बाहर निकल आए तो काबे की तरफ़ (मुंह कर के) दो

रक्अत नमाज़ पढ़ी और फ़र्माया, यही क़िब्ला है।

२३२. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने सोलह-सत्रह माह बैतुल मक़्दिस की तरफ़ (रुख़) कर के नमाज़ पढ़ी। यह रिवायत पहले भी गुज़र चुकी है, दोनों में सिर्फ़ लफ़्ज़ों का इख़्तिलाफ़ है।

२३३. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सवारी पर बैठ कर नमाज़ पढ़ा करते थे, चाहे सवारी का रुख़ किसी तरफ़ हो, लेकिन जब फ़र्ज़ नमाज़ का इरादा करते तो उतर आते थे और क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करते थे।

२३४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेरा तो आपसे अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या नमाज़ में कोई बात पैदा हो गई है? फ़र्माया वह क्या? अर्ज़ किया आपने इतनी रक्अतें पढ़ी हैं (यानी ज़्यादा या कम।) आपने फ़ौरन अपने पांव मोड़, क़िब्ले की तरफ़ मुंह किया, दो सज्दे किए और सलाम फेर दिया। जब हमारी तरफ़ मुंह किया तो फ़र्माया, अगर नमाज़ में कोई नई बात हुई होती तो मैं तुम को बता देता, लेकिन मैं तुम्हारी तरह इंसान हूं, जिस तरह तुम से भूल हो जाती है मुझ से भी हो जाती है। अगर मैं भूल जाया करूं तो मुझे याद दिला दिया करो, अगर तुम में से किसी को अपनी नमाज़ में शक हो जाया करे, तो चाहिए अम्रे हक़ की सही बात सोचे और उसी के मुताबिक़ (नमाज़) पूरी करे, फिर सलाम फेर दे और सज्दे करे।

२३५. हज़रत उमर रज़ि० कहते है कि मैंने अपने परवरदिगार की तीन बातों में मुवाफ़क़त की है (पहली यह कि) मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ किया, काश! हम मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह मुक़र्रर कर लेते, उस वक़्त आयत ,वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही म मुसल्ला' नाज़िल हुई। (दूसरे यह कि) मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! काश हुज़ूर अपनी बीवियों को पर्दा कर लेने का हुक्म देते, क्योंकि उन से अच्छे बुरे (हर क़िस्म के आदमी) बात करते हैं, उस वक़्त पर्दे की आयत नाज़िल हुई। (तीसरे यह कि) रसूलुल्लाह सल्ल० की तमाम बीवियों ने आप से एराज़ कर लिया, मैंने उन से कहा कि हुज़ूर! तुम को तलाक़ दे दें तो उम्मीद है अल्लाह तआला आप को तुम से बेहतर बीवियां अता

फ़रमा दे, जो मुसलमान होंगी, उस वक़्त यही आयत नाज़िल हुई।

२३६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने क़िब्ले की तरफ़ थूक पड़ा हुआ देखा, तो आप को यह बात नागवार मालूम हुई और यह नागवारी आप के चेहरे से मालूम होने लगी। फिर आपने अपने मुबारक हाथ से उस को खुरचा और फ़र्माया, जब तुम में से कोई नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो अपने परवरदिगार से मुख़ातब होता है और परवरदिगार उस के और क़िब्ला के दर्मियान होता है, इस लिए तुम में से कोई शख़्स क़िब्ले की तरफ़ न थूके, हां, दाएं-बाएं या क़दमों के नीचे थूक ले। फिर आपने अपनी चादर का कोना लेकर उसमें थूका और मल दिया और फ़र्माया ऐसा कर लिया करे।

२३७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से यह थूक वाली हदीस रिवायत की गयी है, मगर उस में इतना बढ़ा हुआ है कि दाएं तरफ़ भी न थूके।

२३८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, मस्जिद में थूकना गुनाह है और इस को दफ़न कर देना इस का कफ़्फ़ारा है।

२३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम यह समझते हो कि मेरा ध्यान उधर है, ख़ुदा की क़सम! मुझ से तुम्हारा ख़ुशूअ और रुकूअ छिपा हुआ नहीं है, मैं तुम को अपनी पीठ के पीछे से देख लेता हूं।

२४०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उन घोड़ों को शर्तिया दौड़ाया, जिनको दुबला किया जाना ज़रूरी थी, दौड़ की शुरूआत हफ़या मक़ाम से हुई और सनीयतुलविदा पर ख़त्म हुई और जिन घोड़ों को दुबला करने का मक़सद न था, उन को सनीया के मक़ाम से मस्जिद बनी ज़रीक़ तक दौड़ाया और आगे निकल जाने वाले लोगों में से अब्दुल्लाह (यानी मैं) भी था।

२४१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हर बार से ज़्यादा माल बहरैन से हुज़ूर सल्ल० के पास आया, फ़र्माया इसको मस्जिद में बिखेर दो। जब आप नमाज़ को निकले तो उस की तरफ़ ध्यान भी न दिया, नमाज़ अदा कर चुके तो तशरीफ़ लाकर बैठ गए और जिस शख़्स को देखते, उस को अता फ़र्माते थे, इतने से हज़रत अब्बास रज़ि० आए

और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे भी दीजिए क्योंकि मैंने अपना भी फ़िद्या दिया है और अक़ील का भी। आपने फ़र्माया लो और लप भर कर उन के कपड़े में डाल दिया, मगर उन की नज़र में यह कम था, इस लिए रुक न सके और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन में से किसी को हुक्म दीजिए कि (अपना हिस्सा) उठा कर लाए। फ़र्माया नहीं, हज़रत अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, फिर आप ही उठा कर लाए। फ़र्माया नहीं, इस के बाद आपने उन को कुछ और दिया, मगर उन की नज़र में कम ही था, इस लिए कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन में से किसी को हुक्म दीजिए कि (अपना हिस्सा) मेरे पास उठा कर लाए। फ़र्माया नहीं, इस के बाद आपने अब्बास रज़ि० को इतना दिया कि उन पर लाद दिया और उन के कंधे पर डाल दिया। अब्बास रज़ि० चल दिए, हुज़ूर सल्ल० उन की लालच की वजह से ताज्जुब के साथ उन को देखते रहे, यहां तक कि वह नज़र से ग़ायब हो गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० उस जगह से उस वक़्त उठे जब एक दिरम बाक़ी न रहा।

२४२. हज़रत महमूद बिन रुबीअ अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि उत्बान बिन मालिक रज़ि० (यह बदरी सहाबी हैं) हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अंधा हो गया हूं और अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ाता हूं, लेकिन जब बारिश होने लगती है, तो यह नाला बहने लगता है, जो मेरे और उन के बीच है। इस लिए उन को नमाज़ पढ़ाने मैं उन की मस्जिद में नहीं जा सकता, मैं चाहता हूं कि हुज़ूर मेरे घर तशरीफ़ लाकर नमाज़ अदा करें, ताकि मैं हुज़ूर के मुसल्ले को मुसल्ला क़रार दूं। आपने फ़र्माया, जल्द ही मैं ऐसा करूंगा इंशा अल्लाह। उत्बान रज़ि० कहते हैं कि सुबह को अल्लाह के रसूल सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० मेरे यहां तशरीफ़ लाये, सूरज ऊंचा हो गया था, आकर इजाज़त मांगी, मैंने इजाज़त दी, आप घर में दाख़िल हुए, मगर बैठे नहीं और फ़र्माया, तुम मुझ से कहां नमाज़ पढ़वाना चाहते हो ? मैंने मकान का एक कोना बता दिया। आपने खड़े होकर तक्बीर कही। हमने भी खड़े होकर सफ़ बना ली, आपने दो रक्अतें पढ़ कर सलाम फेरा, मैंने आप को ख़ज़ीरह (एक क़िस्म का खाना) खाने के लिए रोक लिया, जो आप के लिए तैयार किया था, इस के बाद कुछ और घर वाले आ गये और

सब इकट्ठे हो गए। इन में से किसी शख्स ने कहा, मालिक बिन दख्शन कहां है? दूसरा बोला वह मुनाफ़िक़ है, खुदा और रसूल से उस को मुहब्बत नहीं है। आपने फ़र्माया, ऐसा न कहो, क्या तुम को नहीं मालूम कि मैंने ला इला ह इल्लल्ला ह कह दिया है और इस से खुदा की ज़ात के सिवा कोई और मतलब नहीं है। वह बोले खुदा और रसूल अच्छी तरह जानते हैं, फिर उन्होंने अर्ज़ किया, हम देखते हैं कि उस का रुख और खैरख्वाही मुनाफ़िक़ों की तरफ़ है। आपने फ़र्माया जो शख्स ला इला ह इल्लल्लाह कहे और उस से अल्लाह की रज़ा के सिवा कुछ और न मतलब हो, तो उस को खुदा ने दोज़ख पर हराम कर दिया है।

२४३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि (एक बार) उम्मे हबीबा रज़ि० और उम्मे सलमा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से एक गिरजा का ज़िक्र किया, जिस में तस्वीरें थीं और हब्श में दोनों हज़रात ने उस को देखा था, आपने फ़र्माया, इन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता था तो उस की क़ब्र पर मस्जिद बना लेते थे और यह तस्वीरें बनाते थे, क़ियामत के दिन ये लोग खुदा के नज़दीक सारी मख्लूक़ से ज़्यादा बुरे होंगे।

२४४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० एक क़बीले में जिस को बनू उमर बिन औफ़ कहा जाता था, मदीने में तशरीफ़ लाए और चौदह रात वहां ठहरे रहे, फिर क़बीला बनी नज्जार के पास किसी को भेजा, वे लोग तलवारें लटकाए हुए हाज़िर हुए। (मुझे मालूम हो रहा है) कि आप सवारी पर थे, हज़रत अबूबक्र रज़ि० आप के पीछे सवार थे और बनी नज्जार का गिरोह आप के आस-पास था। (इस के बाद आप चल दिए।) हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० के सेहन में आपने सामान उतारा, आप को यह बात पसन्द थी कि जहां नमाज़ का वक़्त हो जाए, वहीं नमाज़ पढ़ लें और बकरियों के बांधने की जगह पढ़ें। आपने मस्जिद की तामीर का हुक्म दिया, बनू नज्जार को बुला कर फ़र्माया, तुम मेरे हाथ अपना बाग़ बेच दो, उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम अल्लाह तआला की खुशी के अलावा इस की और क़ीमत नहीं चाहते। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं तुम को बताऊं, उसमें क्या-क्या था? मुश्रिकों की क़ब्रें उखाड़ दी गयीं, खंडहर बराबर कर दिए गये खजूर के पेड़ काट कर तर्तीब से क़िब्ले की तरफ़ खड़े कर दिए गये, इन के दोनों तरफ़ पत्थर लगा दिए गये और लोगों ने बड़े-बड़े पत्थर लाने

शुरू किए और अश्आर पढ़ते जाते थे, हुज़ूर सल्ल० भी उन के साथ थे और फ़र्माते जाते थे, इलाही ! आख़िरत की भलाई के सिवा कोई भलाई नहीं, (इलाही !) अंसार व मुहाजिरीन को बख़्श दे।

२४५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के बारे में रिवायत है कि वह अपने ऊंट पर नमाज़ पढ़ लेते थे और फ़र्माते थे कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को ऐसा ही करते देखा है।

२४६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अपने घरों में नमाज़ पढ़ो, मगर उन में क़ब्र न बनाओ।

२४७. हज़रत आइशा रज़ि० और इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ, तो आप मुबारक चेहरे पर काली चादर डालने लगे, मगर जब नागवार हुआ तो खोल दिया और फ़र्माया यहूद व नसारा पर ख़ुदा की लानत हो, उन्होंने अपने अंबिया अलै० की क़ब्रों को मस्जिद बना रखा है। (हुज़ूर सल्ल०) इस काम से लोगों को बचाना चाहते थे।

२४८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अरब के एक क़बीले की हब्शी बांदी थी। उन्होंने उस को आज़ाद कर दिया, मगर वह फिर भी उन के साथ रहती रही। (इत्तिफ़ाक़ से) उन लोगों की एक छोटी लड़की बाहर निकली, लड़की चमड़े के फ़ीतों की बनी हुई एक सुर्ख़ हुमेल पहने हुए थी। हुमेल उसने कहीं फेंक दी या ख़ुद कहीं गिर गयी, चील आयी और उसने समझा कि गोश्त है उठा कर ले गई। लोगों ने (बहुत कुछ) खोजा, मगर न मिली। लोगों ने उस बांदी को इल्ज़ाम लगाया और तलाशी लेने लगे और आख़िर में उस के ख़ास मक़ाम में तलाश किया। (हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं) कि मुझ से बांदी ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! मैं वहीं खड़ी थी कि चील आयी और हुमेल डाल गई। मैंने कहा, लो वह यह है जिस की तोहमत तुम लोगों ने मुझ पर लगायी थी, तुम्हारा गुमान (झूठा) था, मैं इस से बरी थी, हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि फिर वह लड़की हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गयी। मस्जिद में उस का ख़ेमा था। मेरे पास आकर बातें करती रहती थी, लेकिन जब मेरे पास आकर बैठती तो यह शेर पढ़ती। (शेर का मज़्मून) 'हुमेल वाला दिन भी ख़ुदा की अजीब चीज़ों में से था। ख़ुदा ने मुझ को कुफ़्र की आबादी से छुटकारा दिया।' मैंने उस से (एक दिन) कहा कि आख़िर यह

क्या बात है कि जब तू मेरे पास आकर बैठती है तो यह शेर जरूर पढ़ती है तो उसने यह क़िस्सा सुनाया।

२४९. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर (एक बार) हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के मकान में तशरीफ़ ले गये, हज़रत अली रज़ि० को नहीं पाया, तो फ़र्माया, तुम्हारे चचा का बेटा कहां है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने जवाब दिया, मेरे और उन के बीच कुछ बात हो गयी थी। वह मुझ पर ग़ुस्से हुए और बाहर चले गये, मेरे पास दिन का आराम भी नहीं किया। आपने एक शख़्स से फ़र्माया, देखो तो कहां हैं? वह शख़्स (लौट कर) आया और अर्ज़ किया कि मस्जिद में सो रहे हैं. हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए। हज़रत अली रज़ि० लेटे हुए थे पहलू से, चूंकि चादर सरक गई थी, इस लिए मिट्टी पहलू को लग गयी थी, रसूलुल्लाह सल्ल० मिट्टी पोंछते जाते थे और फ़र्माते थे अबूतुराब उठो।

हज़रत अबू क़तादा सलमा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, तुम में से जब कोई मस्जिद में दाखिल हो तो चाहिए कि बैठने से पहले दो रक्अत (तहीयतुल मस्जिद) पढ़ ले।

२५०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में मस्जिद कच्ची ईंटों की थी, खजूर की शाखों की छत थी, और खजूर की लकड़ी ही के खंभे थे, फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने भी इस में कुछ नहीं बढ़ाया, हज़रत उमर रज़ि० ने इस में ज़्यादती की, लेकिन इस की बुनियाद वही रहने दी जो हुज़ूर के ज़माने में थी। कच्ची ईंटों और खजूरों की शाखों से इसे तामीर किया और स्तून लकड़ी ही के रखे, फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस को बदल दिया, उस में बहुत ज़्यादती की, दीवारें नक़्शीन पत्थरों की और गच की बनवायीं, स्तून नक़्शीन पत्थरों के और छत साल की बनवाई।

२५१. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० एक दिन हदीस बयान कर रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से मस्जिद की तामीर का ज़िक्र आया तो कहने लगे कि हम एक-एक ईंट उठाते थे और अम्मार रज़ि० दो-दो ईंटें, नबी सल्ल० ने अम्मार रज़ि० को देखा, तो आप उन की मिट्टी झाड़ने लगे और फ़र्माया अम्मार को एक बाग़ी फ़िरक़ा क़त्ल करेगा, यह उन को जन्नत की तरफ़ बुलाएगा और वह उसको दोज़ख की तरफ़। अम्मार रज़ि० कहने लगे कि मैं फ़ित्नों से पनाह मांगता हूं।

२५२. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० कहते हैं कि मैंने मस्जिद बनवाई, तो लोग मुझ पर कुछ एतराज़ करने लगे। मैंने कहा, तुम लोग बहुत एतराज़ करते हो, हालांकि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना है कि जो शख़्स अल्लाह तआला की ख़ुशी तलाश करने के लिए मस्जिद बनाए, उस के लिए ख़ुदा जन्नत में (मकान) बनाएगा।

२५३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स तीर लेकर मस्जिद में गुज़रा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि इन की धारों को रोक ले।

२५४. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स हमारी किसी मस्जिद या बाज़ार में तीर लेकर गुज़रे, तो उस को धारें पकड़ लेनी चाहिए, ऐसा न हो कि किसी मुसलमान को ज़ख़्मी कर दे।

२५५. हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० ने (एक बार) हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० को गवाह बनाकर कहा, तुमको ख़ुदा की क़सम देकर मैं पूछता हूं कि तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना है कि, ऐ हस्सान ! अल्लाह के रसूल की तरफ़ से जवाब दे, ऐ ख़ुदा ! रूहुल क़ुदुस से इस की ताईद फ़र्मा। अबू हुरैरह रज़ि० बोले, हां, (ठीक है।)

२५६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैंने एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० को अपने हुजरे के दरवाज़े पर देखा, हब्शी लोग मस्जिद में खेल रहे थे, रसूलुल्लाह सल्ल० मुझ को अपनी चादर से छिपा रहे थे और मैं उन के खेल को देख रही थी। दूसरी रिवायत में है कि मैं उन की बनावटी जंग देख रही थी।

२५७. हज़रत काब बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि मेरा कुछ क़र्ज़ इब्ने अबी हदरद पर चाहिए था, मैंने मस्जिद में उन पर यह तक़ाज़ा किया, यहां तक कि मेरी और उन की आवाज़ें ऊंची हो गयीं और रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने दौलतख़ाने में उस को सुन लिया। आप अपने हुजरे का पर्दा उठा कर बाहर निकले और फ़र्माया, काब ! मैंने कहा लब्बैक या रसूलल्लाह ! फ़र्माया अपने क़र्ज़ में से इतना माफ़ कर दें और उस मिक़दार की तरफ़ इशारा किया, यानी आधा। मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर, मैंने माफ़ कर दिया, इस के बाद आपने फ़र्माया, (अबू हदरद रज़ि० !) उठ और बाक़ी क़र्ज़ अदा कर दे।

२५८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक काला मर्द या औरत मस्जिद में झाड़ू दिया करता था, उस का इंतिक़ाल हो गया। जब हुज़ूर सल्ल० ने उस के बारे में पूछा तो लोगों ने अर्ज़ किया, उस का इंतिक़ाल हो गया, आपने फ़र्माया, तुमने मुझे इत्तिला क्यों न दी, मुझे उस की क़ब्र बताओ, आप उस की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उस पर नमाज़ पढ़ी।

२५९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब सूद के बारे में सूरः बक़रः की आयतें नाज़िल हुईं तो हुज़ूर मस्जिद की तरफ़ निकले और लोगों के सामने वे आयतें पढ़ीं। इस के बाद शराब की तिजारत को हराम फ़र्माया।

२६०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, पिछली रात एक शैतान जिस ने मुझ से छेड़खानी की, ताकि मेरी नमाज़ ख़राब कर दे, मगर ख़ुदा ने मुझ को उस पर क़ुदरत दी, मैंने इरादा किया कि मस्जिद के किसी स्तून से इस को बांध दूं, ताकि सुबह के वक़्त तुम भी इस को देख लो, लेकिन मुझे अपने भाई सुलेमान अलै० का क़ौल याद आ गया कि ऐ ख़ुदा! मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी हुकूमत अता कर कि मेरे बाद किसी को मुनासिब न हो।

२६१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि ख़न्दक़ की लड़ाई में साद रज़ि० के हाथ की रग में कुछ चोट लगी, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद में ख़ेमा लगवाया, ताकि क़रीब रह कर उन की इयादत करते रहें, मगर लोगों को कुछ घबराहट न थी। मस्जिद में क़बीला बनी ग़िफ़ार का एक और ख़ेमा था, जिस में (हज़रत साद रज़ि०) का ख़ून बह कर पहुंचता था। इस पर वे लोग बोले, ओ ख़ेमा वालो! यह क्या, हमारी तरफ़ तुम्हारे पास से आता है? (लोगों ने देखा) तो उन के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा था, जिस की वजह से उस ख़ेमे में उन का इंतिक़ाल हो गया।

२६२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के दो सहाबी एक अंधेरी रात में आप के पास से वापस हुए, दोनों के साथ दो चिराग़ों की तरह (क़ुदरती रोशनी) थी, जब (रास्ते में) एक दूसरे से अलग हुए तो हर एक के साथ एक-एक हो गया, यहां तक कि वह अपने घर पहुंच गये।

२६३. हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अल्लाह के

रसूल सल्ल० से अपनी बीमारी की शिकायत की। आपने फ़र्माया कि लोगों के पीछे सवार रह कर तवाफ़ कर लो, मैंने तवाफ़ कर लिया, (उस वक़्त) आप अल्लाह के घर के एक कोने में नमाज़ पढ़ने में लगे हुए थे और सूर: तूर पढ़ रहे थे।

२६४. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुत्बा पढ़ा और फ़र्माया, ख़ुदा-ए-तआला ने अपने एक बन्दे को दुनिया में और उन चीज़ों में अख़्तियार दिया जो उस के पास मौजूद हैं (कि जिन को चाहे, वह पसन्द करे।) उसने ख़ुदा के पास की चीज़ें पसन्द कर लीं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० (यह सुन कर) रो दिए। मैंने अपने दिल में कहा, इस बुड्ढे के रोने की क्या वजह है ? अगर एक बन्दे को दुनिया में और अपने पास की चीज़ों में अख़्तियार दे दिया और उसने ख़ुदा के पास की चीज़ों को पसन्द कर लिया (तो उस का क्या नुक़्सान हुआ ?) मगर बाद में मालूम हुआ कि वह बन्दे अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं और हज़रत अबूबक्र रज़ि० चूंकि हम लोगों से ज़्यादा जानने वाले थे (इस लिए वह समझ गये कि हुज़ूर की वफ़ात क़रीब है।) फिर आपने फ़र्माया, अबूबक्र (रज़ि०) मत रोओ, जिस के साथ और जिस के माल का सब से ज़्यादा एहसान मुझ पर है वह अबूबक्र रज़ि० हैं। अगर मैं अपनी उम्मत में से किसी को दोस्त बनाता तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को दोस्त बनाता, लेकिन इस्लामी मुहब्बत और भाईचारा काफ़ी है, अबूबक्र रज़ि० के दरवाज़े के सिवा मस्जिद में कोई दरवाज़ा न रहे, सब बन्द कर दिए जाएं।

२६५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि उस मरज़ में जिस में रसूलुल्लाह सल्ल० इंतिक़ाल फ़र्मा गये, आप सर पर पट्टी बांधे निकले, मेंबर पर बैठे, अल्लाह तआला की तारीफ़ व सना की, फिर फ़र्माया लोगों में कोई ऐसा शख़्स नहीं जिस की दोस्ती और जिस के माल का एहसान मुझ पर अबूबक्र बिन क़ुहाफ़ा रज़ि० से ज़्यादा हो, अगर मैं लोगों में से किसी को दोस्त बनाता तो अबूबक्र रज़ि० को दोस्त बनाता, लेकिन इस्लामी भाईचारा इस से बेहतर है, अबूबक्र रज़ि० की खिड़की के सिवा मस्जिद में जो खिड़की है, मेरी तरफ़ से बन्द कर दो।

२६६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मक्का में तशरीफ़ लाये और हज़रत उस्मान बिन तल्हा को बुलाया, दरवाज़ा खोला तो अल्लाह के रसूल सल्ल०, हज़रत बिलाल रज़ि०, हज़रत उसामा बिन

जैद रज़ि० और उस्मान बिन तल्हा (काबा में) दाखिल हुए। पहला दर-वाज़ा बन्द कर दिया गया। थोड़ी देर ठहरने के बाद सब लोग निकल आये, मैंने आगे बढ़ कर बिलाल रज़ि० से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि वहां नमाज़ पढ़ी। मैंने कहा कहां ? तो कहा, दोनों स्तूनों के बीच। इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, मुझ से यह बात रह गई कि मैं उन से पूछता, कितनी रक्‌अतें पढ़ीं।

२६७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर मिंबर पर थे। एक शख्स ने पूछा कि रात की नमाज़ों के बारे में हुज़ूर सल्ल० का क्या हुक्म है ? फ़र्माया, दो रक्‌अतें होनी चाहिएं और जब सुबह हो जाने का डर हो तो एक रक्‌अत पढ़े, ताकि यह रक्‌अत पढ़ी हुई (दोनों रक्‌अतों) को वित्र बना दे। इब्ने उमर रज़ि० कहा करते थे कि रात के वक़्त आखिरी नमाज़ वित्र पढ़ा करो, क्योंकि हुज़ूर ने उस का हुक्म दिया है।

२६८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को मस्जिद में लेटे हुए एक पांव को दूसरे पांव पर रखे हुए देखा।

२६९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जमाअत की नमाज़, घर की और बाज़ार की नमाज़ से पचीस गुना बढ़ी हुई है। अगर कोई शख्स तुम में से ठीक-ठीक वुज़ू करे और सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से मस्जिद में आये तो जो क़दम उठाएगा, तो अल्लाह तआला उस का एक दर्जा बुलंद करेगा और एक गुनाह कम करेगा। फिर जब मस्जिद में दाखिल होगा तो जब तक नमाज़ की वजह से रुका रहेगा, नमाज़ ही में होगा और जब तक नमाज़ की जगह बैठा रहेगा, फ़रिश्ते उस के लिए दुआ करते रहेंगे कि इलाही ! इस को बख्श दे, इलाही ! इस पर रहम फ़र्मा और यह हालत वापसी के वक़्त तक होगी।

२७०. हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ईमानदार दूसरे ईमानदार के लिए इमारत की तरह होता है, जिस का कुछ हिस्सा कुछ हिस्से को रोके रहता है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में गांठ लीं।

२७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हम को मग़रिब या इशा की दो रक्‌अतें पढ़ायीं, फिर उस लकड़ी के पास जाकर खड़े हो गए जो मस्जिद में रखी थी। उस पर टेक लगायी, ऐसा मालूम

होता था कि आपने गुस्से की हालत में दाहिना हाथ बाएं हाथ पर रखा, उंगलियों में उंगलियां डालीं, दाहिना रुख़्सार बाएं हाथ की पुश्त पर रखा, जल्दबाज़ आदमी मस्जिद के दरवाज़े से निकलने लगे और कहने लगे नमाज़ मुख़्तसर हो गई, लोगों में हज़रत अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० भी मौजूद थे, मगर अल्लाह के रसूल सल्ल० से बात करने से उन को डर मालूम हुआ, इस लिए कुछ अर्ज़ न कर सके, लेकिन जमाअत में एक शख़्स लंबे हाथों वाला था, जिस को ज़ुल यदैन कहा जाता था, उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप भूल गये या नमाज़ घट गयी, फ़र्माया, न मैं भूला न नमाज़ कम हुई, फिर फ़र्माया, क्या वाक़ई इसी तरह है जैसा कि ज़ुल यदैन कहता है (यानी क्या वाक़ई मैंने दो रक्अतें पढ़ी हैं ?) लोगों ने अर्ज़ किया, जी हां (यह सुन कर) आप आगे बढ़े, छूटी हुई नमाज़ अदा की, मामूली सज्दे की तरह या उस से किसी क़दर लंबा सज्दा किया, फिर सर उठाया, अल्लाहु अक्बर कहा और मामूली सज्दे की तरह या उस से किसी क़दर बड़ा सज्दा किया, इस के बाद सर उठाया अल्लाहु अक्बर कहा और सलाम फेर दिया।

२७२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के बारे में रिवायत है कि वह कुछ जगहों पर रास्ते में नमाज़ पढ़ा करते थे और कहा करते थे कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को इन जगहों में नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।

२७३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० जब उमरा या हज करते तो ज़ुल हुलैफ़ा के मक़ाम में उस जगह, जहां मस्जिद है, बबूल के पेड़ों के नीचे उतरा करते थे और जब हज या उमरा या उस जंग से वापस होते, जो उधर होती थी, तो वादी के बीच से निकल कर बत्हा में क़ियाम करते, जो वादी शरक़िया के किनारे पर है, यहां तक कि वहां सुबह हो जाती, मगर हुज़ूर सल्ल० न उस मस्जिद के पास नमाज़ अदा करते, जो हजारा के मक़ाम में है, न उस टीले पर, जिस पर मस्जिद है, बल्कि वहां एक नाला है, जिस के अन्दर रेत के तोदे हैं, उस जगह रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ पढ़ा करते थे। (हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० भी उस के पास नमाज़ पढ़ते थे,) मगर चूंकि बाढ़ आयी थी, इस लिए वह जगह छिप गई, जहां अब्दुल्लाह रज़ि० नमाज़ पढ़ा करते थे, अब्दुल्लाह रज़ि० का बयान है कि नबी सल्ल० ने उस जगह भी नमाज़

पढ़ी है, जहां शर्फ़ रौहा नामी जगह की मस्जिद के अलावा एक और छोटी मस्जिद है, अब्दुल्लाह रज़ि० उस जगह को जानते थे, जहां हुज़ूर ने नमाज़ पढ़ी है और कहते थे कि जब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने खड़े हो, तो वह जगह तुम्हारे दाहिनी तरफ़ होगी और जब तुम मक्का को जाओ तो वह मस्जिद रास्ते के दाहिनी तरफ़ होगी। इस के और बड़ी मस्जिद के बीच लगभग एक पत्थर फेंकने की दूरी है, अब्दुल्लाह रज़ि० उस अर्क़ (एक पहाड़ी है) के पास भी नमाज़ पढ़ते थे, जो रौहा के आख़िरी हिस्से के पास है। उस अर्क़ का आख़िरी किनारा रास्ते के किनारे से मिला हुआ है और उस मस्जिद से क़रीब है जो मक्का को जाते हुए रौहा और मुन्सरिफ़ के दर्मियान पड़ती है। अब वहां एक मस्जिद बनी हुई है, अब्दुल्लाह रज़ि० उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ते थे, बल्कि उस को बाएं और पीछे की तरफ़ छोड़ कर अर्क़ की तरफ़ होकर नमाज़ पढ़ते थे, जब अब्दुल्लाह रज़ि० मक़ामे रौहा से चलते तो उसी जगह पहुंच कर ज़ुहर पढ़ते और जब मक्का से आते थे, तो अगर उस मक़ाम में सुबह से कुछ पहले पहुंच जाते, तो वहीं उतर कर क़रीब, सुबह की नमाज़ अदा करते थे। अब्दुल्लाह रज़ि० का बयान है कि रूशिया गांव के क़रीब एक मोटे पेड़ के नीचे रास्ते के दाएं और सामने की चौड़ और नर्म जगह में रसूलुल्लाह सल्ल० उतरकर आराम फ़र्माते थे, यहां तक कि उस टीले से निकल जाते थे जो जैदं रूशिया नाम के गांव के रास्ते से दो मील क़रीब है। उस पेड़ का (जिस के नीचे हुज़ूर आराम फ़र्माते थे) ऊपर का हिस्सा टूटा हुआ है और बीच में मुड़ा हुआ है, उस के तने में रेत के तोदे भरे हैं, अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने उरूज गांव के पीछे एक नाले के किनारे पर नमाज़ पढ़ी, अगर पहाड़ की तरफ़ जाओ तो वहां एक मस्जिद है जिस के पास दो तीन क़ब्रें हैं। क़ब्रों पर बड़े-बड़े पत्थर रखे हैं इन पत्थरों और बबूल के पेड़ों के बीच उरूज गांव है। जब सूरज ढल चुकता था तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० उरूज गांव से चला करते थे और ज़ुहर की नमाज़ उसी मस्जिद में पढ़ते थे। अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हरशं नाम के टीले के नीचे रास्ते के बाएं तरफ़ दरख़्तों के पास एक तीर की दूरी है। अब्दुल्लाह रज़ि० उस पेड़ की तरफ़ भी नमाज़ पढ़ा करते थे जो रास्ते से बहुत ज़्यादा क़रीब और सब पेड़ों से लंबा है और कहते थे कि नबी सल्ल० जब सफ़रा से निकलते थे तो उस नाले पर ठहरते थे, जो मर्रज़्ज़ाहरान के मक़ाम से

बहुत क़रीब और मदीने की तरफ़ वाक़ेअ है। हुज़ूर सल्ल० की आरामगाह मक्का को जाते हुए रास्ते के बाएं तरफ़ होती थी, आरामगाह और रास्ते में सिर्फ़ एक पत्थर फेंकने की दूरी होती थी, हुज़ूर सल्ल० जब मक्का की तरफ़ आते होते थे, तो मक़ाम जोतुवा में उतरते थे, रात यहीं गुज़ारते थे, सुबह की नमाज़े फ़ज्र यहीं पढ़ते थे, हुज़ूर का मुसल्ला उस मस्जिद में न था, जो वहां बनी हुई है, बल्कि उस के नीचे सख़्त टीले पर था, अब्दुल्लाह रज़ि० बयान करते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पहाड़ के दोनों रास्तों की तरफ़ मुतवज्जह हुए, जो उस के और लंबे पहाड़ के बीच है काबे की तरफ़। तो आपने उस मस्जिद को जो वहां बनायी गई है, इस मस्जिद के बाएं तरफ़ रखा जो टीले के किनारे पर है और नबी की नमाज़गाह उस से नीचे स्याह टीले पर थी (पहले टीले से दस गज़ छोड़ कर या उस के क़रीब-क़रीब) तो तुम को उस पहाड़ के दोनों रास्तों की तरफ़ नमाज़ पढ़नी चाहिए जो तुम्हारे और काबा के दर्मियान है

२७४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि जब हुज़ूर सल्ल० ईद की नमाज़ के लिए निकलते थे, तो हम को लाठी लेने का हुक्म देते। हम लाठी लेकर हुज़ूर सल्ल० के सामने रख देते, आप उस की तरफ़ नमाज़ पढ़ लेते थे और सारे लोग आप के पीछे होते थे, सफ़र में आप इसी तरह करते थे, इस वजह से उमरा ने लाठी बनवानी अख़्तियार की।

हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक़ामे-बत्हा में लोगों को दो रक्अतें ज़ुहर की और अस्र की पढ़ायीं। उस वक़्त आप के सामने डंडा या लाठी (सुतरे के तौर पर) था, औरत और गधे आप के सामने से गुज़र जाते थे।

२७५. हज़रत सुहेल रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर की जा नमाज़ और दीवार के सामने बकरी के गुज़रने के लायक़ फ़ासला था।

२७६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० क़ज़ा-ए-हाजत को तशरीफ़ ले जाते, तो मैं और दूसरा लड़का पीछे-पीछे जाते थे। हमारे साथ एक लाठी और (पानी) का बर्तन होता था, जब आप फ़ारिग़ हो जाते, तो पानी का बर्तन हम आप को दे देते थे।

२७७. हज़रत सल्मा बिन अक्वअ रज़ि० उस स्तून के पास (मस्जिद नबवी में) नमाज़ पढ़ा करते थे जो मसहफ़ के पास है। उन से

पूछा गया कि अबू मस्लमा! क्या बात है तुम जान-बूझ कर इस स्तून के पास नमाज़ पढ़ते हो, जवाब दिया, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को जान-बूझ कर इस स्तून के पास नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।

२७८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के काबा में दाख़िल होने का वाक़िआ बयान किया, फिर फ़र्माया जब बिलाल रज़ि० अन्दर से निकल आए तो मैंने उन से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० ने अंदर क्या-क्या किया? उन्होंने जवाब दिया कि हुज़ूर सल्ल० ने एक स्तून अपने दायीं तरफ़ छोड़ा और एक बायीं तरफ़, और तीन स्तून पीछे किए। (ख़ाना काबा उस वक़्त छः स्तूनों पर क़ायम था।) दूसरी रिवायत में है कि दो स्तून दाएं तरफ़ किए।

२७९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अपनी ऊंटनी को अर्ज़ में कर लेते और उस की तरफ़ नमाज़ पढ़ लेते थे। नाफ़ेअ रज़ि० से कहा गया कि जब सामने से सवारियां चल रही होती थीं (तो हुज़ूर नमाज़ किस तरह पढ़ते थे?) फ़र्माया कि हुज़ूर कजावह को लेकर हमवार कर लेते थे, फिर उस के पिछले हिस्से की तरफ़ नमाज़ पढ़ लेते थे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० भी ऐसा ही करते थे।

२८०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि तुमने हम को कुत्तों और गधों के बराबर कर दिया, हालांकि मुझे याद है कि मैं तख़्त पर लेटी हुई थी, हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाते थे, तख़्त के बीच में नमाज़ को खड़े हो जाते थे। मुझे यह बुरा मालूम होता था कि आप के सामने मैं पड़ी रहूं, इस लिए मैं धीरे-धीरे तख़्त के दोनों पिछले पायों की तरफ़ सरक कर लिहाफ़ से निकल जाती थी।

२८१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० (एक बार) जुमा के दिन एक ऐसी चीज़ की तरफ़ रुख़ किए नमाज़ पढ़ रहे थे, जो लोगों से उन को छिपाए हुए थी (यानी सुतरा था।) उस वक़्त क़बीला अबूमुईत के एक जवान ने आप के सामने से गुज़रने का इरादा किया, मगर अबू सईद ने उसको सीने के बल धकेल दिया। उस जवान ने (इधर-उधर) देखा, मगर सामने के सिवा, गुज़रने की और कोई जगह न पायी। मजबूरन फिर पलटा, अबू सईद रज़ि० ने उस को पहली बार से ज़्यादा धकेला, इस पर वह अबू सईद रज़ि० से दुखी होकर मरवान के पास आया और अबू सईद रज़ि० से जो तक्लीफ़ पायी थी, उस की शिकायत की, अबू सईद रज़ि०

जब मरवान के पास आये, तो मरवान ने कहा, अबू सईद ! आप का और आप के भतीजे का क्या मामला है, फ़र्माया कि मैंने रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना है कि अगर तुम में से कोई किसी चीज़ की तरफ़ रुख किए नमाज़ पढ़ रहा हो (यानी सुतरे की तरफ़) और कोई शख्स सामने से गुज़रने का इरादा करे तो चाहिए कि उस को धकेल दे, अगर वह बाज़ न आए तो उस से मुक़ाबला करे, क्योंकि वह शैतान है।

२८२. हज़रत अबू जुहैम रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, अगर नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला जानता है कि उस पर क्या कुछ गुनाह है, तो चालीस दिन या माह या साल ठहरे रहना सामने गुज़रने से (उस के ख्याल में) अच्छा होता। रिवायत करने वाला कहता है कि मुझे याद नहीं, हुज़ूर सल्ल० ने चालीस दिन फ़र्माया, या चालीस माह, या चालीस साल।

२८३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं बिस्तर पर सोयी हुई होती थी और हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ते होते थे। जब आप वित्र पढ़ने का इरादा फ़र्माते थे, तो मुझे जगा देते थे। मैं भी आप के साथ वित्र पढ़ती थी।

२८४. हज़रत अबू क़तादा अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० नमाज़ पढ़ते में, अपनी नवासी उमामा बिन्त ज़ैनब रज़ि० को जो अबुल आस बिन रबीअ बिन अब्दे शम्स की बेटी थीं, उठाये हुए होते थे। जब सज्दे का इरादा करते तो उतार देते, फिर खड़े होते तो उन को उठा लेते थे।

बाब ८

नमाज़ के वक़्त के बयान में

२८५. हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० कहते हैं (एक बार) हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० ने इराक़ में देर कर के नमाज़ पढ़ी। मैंने उन से जाकर कहा, मुग़ीरह ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि (एक बार) हज़रत जिब्रील अलै० नाज़िल हुए और नमाज़ पढ़ी, हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ पढ़ी। फिर (चौथी बार) दोनों ने नमाज़ पढ़ी। फिर (पांचवीं बार भी) दोनों हज़रात ने नमाज़ अदा की, इस के बाद जिब्रील अलै० ने फ़र्माया, मुझे इस का हुक्म दिया गया है।

२८६. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हम हज़रत उमर रज़ि० के पास बैठे हुए थे, आपने फ़र्माया तुम में से किस को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने वह फ़र्मान दिया है, जो हुज़ूर ने फ़ित्ने के बारे में फ़र्माया था। मैंने कहा, मुझे उसी तरह वह फ़र्मान याद है जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया था। हुज़ूर ने फ़र्माया था कि माल, अह्ल व अयाल और पड़ोसियों की वजह से जिस फ़ित्ने में आदमी मुब्तला होता है, उस को नमाज़, रोज़ा, सदक़ा और अम्र व नह्य की बजाआवरी यानी (नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना) मिटा देती है और तू उस के मुक़ाबले में निडर होगा, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, मेरा मतलब यह नहीं है बल्कि वह फ़ित्ना मुराद है, जो समुद्र की तरह जोश देने वाला होगा। मैंने जवाब दिया, अमीरुल मोमिनीन ! आप को तो उस से भी नुक़सान न होगा। आप के और उस फ़ित्ने के दर्मियान बन्द दरवाज़ा है। हज़रत उमर रज़ि० बोले, वह दरवाज़ा टूट जाएगा (या खुल जाएगा,) फ़र्माया तो कभी बन्द न होगा। हुज़ैफ़ा रज़ि० से जो पूछा गया कि क्या हज़रत उमर उस दरवाज़े को जानते थे, तो जवाब दिया, जिस तरह आज रात के बाद का

सुबह का होना यक़ीनी है, उसी तरह हज़रत उमर रज़ि० उस को जानते थे। मैंने उन से एक हदीस बयान की थी, जो गलत नहीं है, तो जवाब में उन्होंने कहा था कि वह दरवाज़ा उमर रज़ि० हैं।

२८७. हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने (एक बार) किसी अजनबी औरत का बोसा लिया, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर वाक़िया बयान कर दिया। उस वक़्त आयत 'अक़िमस्सला त त र फ़इन्नहा र व ज़ुल्फ़म मिनल्लैलि इन्नल ह स नाति युज हिब्नस्सय्यिआत०' नाज़िल हुई और उस शख्स ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह हुक्म सिर्फ़ मेरे ही लिए है ? फ़र्माया (नहीं बल्कि,) मेरी सारी उम्मत के लिए है। दूसरी रिवायत में है, यह हुक्म उस के लिए है, जो मेरी उम्मत में से उस पर कारबन्द हो।

२८८. हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ख़ुदा को सबसे ज़्यादा कौन सा अमल पसन्द है ? फ़र्माया, वक़्त की पाबंदी के साथ नमाज़। मैंने अर्ज़ किया, इस के बाद कौन-कौन सा ! फ़र्माया मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करना। मैंने अर्ज़ किया, इस के बाद कौन सा, फ़र्माया ख़ुदा की राह में जिहाद करना। रावी कहता है कि यह फ़र्मान रसूलुल्लाह सल्ल० का है (मैंने इस के आगे रसूलुल्लाह सल्ल० से कुछ नहीं पूछा,) अगर मैं और कुछ पूछता तो आप और ज़्यादा फ़र्माते।

२८९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, (लोगो !) तुमको मालूम है अगर किसी के दरवाज़े पर नहर हो और वह रोज़ाना उस में पांच बार नहाये तो क्या कुछ मैल-कुचैल बाक़ी रह सकता है ? लोगों ने अर्ज़ किया नहीं। फ़र्माया यही पांच वक़्त की नमाज़ों की मिसाल है।

२९०. अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया सज्दे में ऐत-दाल रखो (कोई शख्स कुत्ते की तरह बाज़ू न फैलाए) अगर थूकना हो तो सामने या दाएं तरफ़ न थूको, क्योंकि (नमाज़ में) अल्लाह तआला से मुनाजात करता है।

२९१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जब गर्मी सख़्त पड़ने लगे तो नमाज़ों को ठंडा करो, (ठंडे वक़्त में पढ़ो,) क्योंकि गर्मी की तेज़ी जहन्नम की एक लपट है, आग ने परवरदिगार से शिका-

यत की थी और अर्ज़ किया था, खुदावंदा मेरा कुछ हिस्सा कुछ हिस्से को खाये जाता है तो उस को दो सांसों की इजाजत दी गई, एक सांस सर्दी में और एक गर्मी में, वह सख्त गर्मी जिस का तुम को एहसास होता है जहन्नम की है और वह सख्त सर्दी जो तुम को लगती है, ज़महरीर की है।

२६२. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि एक सफ़र में हम हुज़ूर के साथ थे, जब मुअज़्ज़िन ने ज़ुहर की अज़ान देने का इरादा किया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया ठंडक हो जाने दे। (दोबारा) जब उसने फिर अज़ान का इरादा किया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ठंडक हो जाने दे (तीसरी बार) जब उसने फिर अज़ान का इरादा किया तो आपने फिर फ़र्मा दिया, ठंडक हो जाने दे, यहां तक कि हमने टीलों का साया देख लिया, उस वक़्त अज़ान हुई।

२६३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० सूरज ढलने के बाद निकले, ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, फिर मेंबर पर खड़े होकर क़ियामत का ज़िक्र फ़र्माया और फ़र्माया क़ियामत में बड़ी-बड़ी बातें होंगी। जो शख्स कुछ पूछना चाहे, पूछ ले, क्योंकि जो कुछ तुम पूछोगे, मैं तुम को उस वक़्त तक बताऊंगा, जब तक इस जगह खड़ा हूं। लोग खूब रोए मगर आप बार-बार यही फ़र्माते रहे कि पूछो। चुनांचे अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी रज़ि० ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा बाप कौन है ? फ़र्माया तेरा बाप हुज़ाफ़ा है, इस के बाद फिर हुज़ूर ने फ़र्माया, पूछो ! हज़रत उमर ने दो ज़ानू बैठ कर अर्ज़ किया कि हम खुदावंद तआला के रब होने का, इस्लाम के दीन (हक़) होने का और मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत का दिल से इक़रार करते हैं, आप खामोश हो गये, फिर कुछ देर के बाद फ़र्माया, अभी इस बाग़ के सेहन में मेरे सामने जन्नत व दोज़ख को पेश किया गया, मैंने (जन्नत की) तरह खैर और दोज़ख की तरह शर नहीं देखी। इस हदीस का कुछ हिस्सा इल्म के बयान में हज़रत अबू मूसा रज़ि० की रिवायत में बयान किया जा चुका है, लेकिन इस रिवायत में कुछ ज़्यादती और लफ़्ज़ों का अदल-बदल है।

२६४. हज़रत बरज़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० सुबह की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते थे, जब कि हम में से हर शख्स अपने साथी को पहचान सकता था, आप उस में साठ आयतों से सौ तक पढ़ते थे और ज़ुहर

की नमाज सूरज ढल जाने के बाद पढ़ते थे। बाक़ी अस्र की नमाज ऐसे वक़्त पढ़ते थे जब कि हम में से कोई शख़्स (नमाज पढ़ कर) मदीना के पास-पड़ोस में चला जाता था, और वापस भी आ जाता था, फिर भी सूरज बाक़ी रहता था। मग़रिब के बारे में रावी भूल गया। (इशा के बारे में रावी ने कहा) कि हुज़ूर इशा को तिहाई रात तक देर करने में कोई हरज नहीं समझते थे, बल्कि आधी रात तक।

२९५. हज़रत अबू बरज़ह रज़ि० की एक और रिवायत में है कि हज़रत अबू बरज़ा रज़ि० ने इशा का बयान करने के बाद कहा कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० इशा से पहले सोने को और इशा के बाद बातें करने को बुरा समझते थे।

२९६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) मदीना में अस्र व ज़ुहर और मग़रिब व इशा की सात और आठ रक्अतें पढ़ीं (यानी ज़ुहर व अस्र को मिला कर आठ और मग़रिब व इशा को जमा कर के सात।

२९७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हम अस्र की नमाज (ऐसे वक़्त) में पढ़ते कि नमाज के बाद आदमी क़बीला बनी उमर बिन औफ़ की तरफ़ चला जाता था और उन को अस्र की नमाज पढ़ते पाता था।

२९८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अस्र की नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ते थे कि सूरज बुलंद होता था और जाने वाला अवाली मदीने तक चला जाता था और ऐसे वक़्त पहुंच जाता था कि सूरज बुलंद ही होता था, अवाली मदीना का कुछ हिस्सा मदीने से लगभग चार मील के फ़ासले पर है।

२९९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस शख़्स की अस्र की नमाज जाती रही, गोया उसका घर-बार लूट लिया गया।

३००. हज़रत बुरीदा रज़ि० ने एक बादल वाले दिन फ़रमाया, अस्र की नमाज़ जल्दी पढ़ लो, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, जिसने अस्र की नमाज़ छोड़ी, उस के आमाल बर्बाद हो गये।

३०१. हज़रत जरीर रज़ि० कहते हैं कि हम एक रात हुज़ूर के पास बैठे हुए थे, आपने चांद देख कर फ़रमाया, तुम जल्द ही अपने परवरदिगार को इसी तरह देखोगे जिस तरह इस चांद को देख रहे हो, तुम को उस के

देखने में कुछ शक न रहेगा। अगर तुम्हारे लिए मुम्किन हो कि कोई नमाज़ तुम से न रहे, न सूरज निकलने से पहले और न डूबने के बाद, तो ऐसा करो, उस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने तिलावत फ़र्मायी व सब्बिह़ बिहम्दि रब्बि क क़ब्-ल तुलूइश्शम्सि व क़ब्-लल ग़ुरूबिहा।

३०२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, रात-दिन के फ़रिश्ते तुम्हारे पास एक के बाद एक रहते हैं, नमाज़ अस्र व फ़ज्र में सब इकट्ठे हो जाते हैं, रात को रहने वाले फ़रिश्ते जब आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं, तो अल्लाह तआला उनसे दर्याफ़्त फ़र्माता है, तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वे अर्ज़ करते हैं, हमने उन को नमाज़ पढ़ते छोड़ा और जब हम उन के पास गये तब भी वह नमाज़ में लगे हुए थे।

३०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुम में से अगर किसी को अस्र की नमाज़ का एक सज्दा सूरज डूबने से पहले मिल जाए, तो चाहिए नमाज़ पूरी कर ले। इस तरह अगर सुबह की नमाज़ में सूरज निकलने से पहले एक सेज्दा मिल जाय, तो नमाज़ पूरी कर ले।

३०४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि (लोगो!) पिछली क़ौमों के मुक़ाबले में तुम्हारी ज़िंदगी बिल्कुल अस्र व मग़रिब के बीच के वक़्त की तरह है, अह्ले तौरात को तौरात दी गयी और उन्होंने इस पर अमल किया। जब दोपहर हो गयी तो वह लोग आजिज़ हो गए, इस लिए इन को एक-एक क़ीरात (सवाब) अता किया गया, फिर अह्ले इंजील को इंजील दी गई और उन्होंने अस्र की नमाज़ तक अमल किया लेकिन वह भी आजिज़ हो गए और उनको भी एक क़ीरात (सवाब) दिया गया, इस के बाद हम को क़ुरआन मजीद दिया गया और हमने सूरज डूबने तक पूरा किया। हम को दो-दो क़ीरात (सवाब) अता किया गया। इस पर इन दोनों किताब वालों ने अर्ज़ किया, ख़ुदावंदा! इन को तूने दो-दो क़ीरात (सवाब) अता किया और हम को एक-एक क़ीरात, हालांकि हमारे अमल इन से ज़्यादा थे। ख़ुदा-ए-तआला ने फ़र्माया कि क्या मैंने तुम्हारे अज्र में से कुछ कम कर लिया है? उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं। हुक्म हुआ तो यह मेरा फ़ज़्ल है, जिस को चाहता हूं देता हूं।

३०५. हज़रत राफ़ेअ बिन खदीज रज़ि० कहते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर ऐसे वक़्त में वापस होते थे कि अपने तीरों के गिरने की जगह हम को मालूम हो सकती थी।

३०६. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि आं-हज़रत सल्ल० ज़ुहर की नमाज़ दोपहर को और अस्र की ऐसे वक़्त पर अदा फ़र्माते थे कि सूरज साफ़ होता था और मग़रिब की उस वक़्त जब सूरज डूब जाता था और इशा की कभी जल्दी कभी देर से पढ़ते थे। जब आप देखते कि लोग जमा हो चुके हैं तो जल्दी पढ़ते और जब देखते कि लोगों को देर हो गयी है तो आप भी देर कर देते, बाक़ी सुबह की नमाज़ अंधेरे में पढ़ते थे।

३०७. हज़रत अब्दुल्लाह मुज़नी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, देहाती लोग लफ़्ज़ मग़रिब में तुम्हारे (मुहावरे) पर ग़ालिब न हो जाएं, क्योंकि वह मग़रिब की नमाज़ को इशा की नमाज़ कहते हैं, यानी लफ़्ज़ मग़रिब कहने से तुम धोखे में न पड़ जाना। देहाती लोग मग़रिब बोल कर इशा मुराद लेते हैं और इसी लिए वह देर में पढ़ते हैं।

३०८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि इस्लाम फैलने से पहले एक बार हुज़ूर सल्ल० ने इशा की नमाज़ में देर की और (बाहर) तशरीफ़ न लाये, आख़िर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, औरतें और बच्चे तो सो गये, आपने मस्जिद के लोगों से फ़र्माया, ज़मीन के सारे रहने वालों में तुम्हारे सिवा इस नमाज़ का इन्तिज़ार और कोई नहीं करता।

३०९. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि मैं और मेरे साथी, जो मेरे साथ कश्ती में आये थे सहरा-ए-बत्हा के मैदान में ठहरे। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मदीना में थे और रोज़ाना इशा की नमाज़ के वक़्त आप की ख़िदमत में हर गिरोह बारी-बारी से हाज़िर होता था। मैं और मेरे साथी भी आप की ख़िदमत में पहुंचे। आप किसी काम में मशग़ूल थे, इस लिए आपने (इशा) की नमाज़ में देर की थी। जब आधी रात गुज़र गयी तो हुज़ूर सल्ल० आये और लोगों को नमाज़ पढ़ायी, जब नमाज़ ख़त्म कर चुके तो हाज़िर लोगों से फ़र्माया, ठहरे रहो—तुम को ख़ुश होना चाहिए कि तुम पर ख़ुदा की नेमत है कि इस वक़्त तुम्हारे सिवा कोई और शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता या किसी शख़्स ने नमाज़ नहीं पढ़ी। (रावी को शक है कि हुज़ूर सल्ल० ने क्या लफ़्ज़ फ़र्माया) हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं

कि हम यह सुन कर खुश-खुश घर लौटे।

३१०. हज़रत आइशा रज़ि० ने ऊपर की इशा की वेरी वाली रिवायत में इतना और बढ़ा दिया है, लोग सूरज डूबने के बाद एक तिहाई रात तक नमाज़ पढ़ते थे।

३११. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने रिवायत की है कि मुझे अब तक वह वाक़िया सामने नज़र आ रहा है कि हुज़ूर सल्ल० आये। आप के सर से पानी टपक रहा था। एक हाथ आप सर पर रखे हुए थे, फिर फ़र्माया था कि अगर मुझ को उम्मत की मशक़्क़त का डर न होता, तो मैं उन को हुक्म देता कि इशा की नमाज़ इसी वक़्त पढ़ा करें।

३१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के सर पर हाथ रखने का (ढंग) बयान कर के कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उंगलियां फैला कर के सर की तरफ़ उन के पोरवे रखे, फिर बंद कर के फेरते हुए उस हिस्से तक ले गये, जहां चेहरा, दाढ़ी, और कान की जड़ मिली हुई है, दाढ़ी के किनारे आप उसी तरह पकड़ते और निचोड़ते थे।

३१३. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स (दो ठंडी नमाजें,) यानी फ़ज्र व अस्र की नमाज़ पढ़ेगा, जन्नत में दाख़िल होगा।

३१४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि ज़ैद बिन साबित रज़ि० ने मुझ से बयान किया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के साथ सेहरी खायी, फिर हम नमाज़ के लिए खड़े हो गए, हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने पूछा नमाज़ और सेहरी में कितना फ़र्क़ था। ज़ैद ने जवाब दिया, पचास साठ आयतों इतना।

३१५. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि मैं अपने घर सेहरी खाता था, मगर मुझे हुज़ूर सल्ल० के साथ फ़ज्र की नमाज़ में शरीक होने की जल्दी होती थी।

३१६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मेरे सामने अच्छे-अच्छे लोगों ने गवाही दी और सब से ज़्यादा एतबार करने लायक़ मेरे नज़दीक हज़रत उमर रज़ि० हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ज्र के बाद सूरज निकलने से पहले नमाज़ पढ़ने से मना फ़र्माया है, (इसी तरह) अस्र के बाद सूरज डूबने से पहले भी नमाज़ से मना फ़र्माया है।

३१७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल०

ने फ़र्माया, सूरज निकलने और डूबने से पहले नमाज़ पढ़ने का इरादा न करो, जब सूरज का किनारा निकलने लगे, तो उस वक़्त तक देर करो, जब तक सूरज ऊंचा हो जाए और जब सूरज का किनारा डूब जाय, उस वक़्त तक इंतिज़ार करो कि बिल्कुल ग़ायब हो जाए।

३१८. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दो वक़्त नमाज़ों से मना फ़र्माया है—पहला फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने से पहले नमाज़ पढ़ने से, दूसरे अस्र की नमाज़ के बाद सूरज डूबने से पहले नमाज़ पढ़ने से।

३१९. हज़रत मुआविया रज़ि० कहते थे कि तुम लोग यह नमाज़ पढ़ते हो, हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ रहते थे, लेकिन हमने हुज़ूर सल्ल० को यह नमाज़ पढ़ते नहीं देखा बल्कि आपने इस से मना फ़र्माया है, यानी अस्र की नमाज़ के बाद दो रक्अतें।

३२०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि क़सम है उस ज़ात की जो हुज़ूर को दुनिया से ले गयी। आपने इन दोनों को ख़ुदा मिलने के वक़्त तक नहीं छोड़ा और ख़ुदा से हुज़ूर की मुलाक़ात उस वक़्त हुई (यानी इंतिक़ाल उस वक़्त हुआ) कि नमाज़ की वजह से आप के (पांव) पर वरम आ गया था और आप इन दोनों रक्अतों को अक्सर बैठ कर पढ़ा करते थे लेकिन मस्जिद में इस वजह से न करते थे कि लोगों को दिक़्क़त होगी (यानी इन दो रक्अतों की पाबंदी लोगों के लिए मुश्किल होगी) क्योंकि हुज़ूर सल्ल० लोगों पर हल्का बोझ डालने को पसन्द फ़र्माते थे। हज़रत आइशा का मतलब इस से अस्र की बाद की दो रक्अतें हैं।

३२१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि दो रक्अतें हैं, जिन को अल्लाह के रसूल सल्ल० न पोशीदगी में छोड़ते थे, न एलानिया, नमाज़ फ़ज्र से पहले की दो रक्अतें और नमाज़ अस्र के बाद की दो रक्अतें।

३२२. हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं कि एक रात हम हुज़ूर सल्ल० के साथ चले (जब रात का आख़िरी हिस्सा हुआ) तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया, काश ! हुज़ूर आख़िर रात में आराम फ़र्मा लेते। आपने फ़र्माया मुझे डर है कि तुम लोग नमाज़ के वक़्त सोते रहो, बिलाल रज़ि० बोले, मैं तुम सबको जगा दूंगा, ख़ैर सब लेट गये। बिलाल रज़ि० ने अपनी पीठ ऊंटनी से लगा ली और वह भी (इत्तिफ़ाक़) से सो गए। जब हुज़ूर सल्ल० जागे तो सूरज का किनारा ऊंचा हो चुका था, आपने फ़र्माया,

बिलाल रज़ि० ! तुमने अपना कहना पूरा क्यों नहीं किया? बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया (जैसी नींद मुझे रात आयी) ऐसी नींद कभी नहीं आयी। फ़रमाया अल्लाह तआला जब चाहता है वापस कर देता है, बिलाल रज़ि० उठो और नमाज़ के लिए अज़ान दो, उन्होंने वुज़ू किया, जब सूरज बुलंद हो गया और अच्छी तरह रोशन हो गया उस वक़्त आप उठे और नमाज़ पढ़ी।

३२३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जंग खन्दक़ के दिन हज़रत उमर रज़ि० सूरज डूबने के बाद क़ुरैश के कुफ़्फ़ार को बुरा-भला कहते हुए आये और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अभी अस्र की नमाज़ नहीं पढ़ी अर सूरज लगभग डूब गया, आपने फ़रमाया, मैंने भी नहीं पढ़ी फिर हुज़ूर ने वुज़ू किया, हमने भी वुज़ू किया और सूरज डूबने के बाद सहरा-ए-बतहा में अस्र की नमाज़ पढ़ और उस के बाद मग़रिब पढ़ी।

३२४. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो जब याद आ जाए, उस को पढ़ ले, उस का कफ़्फ़ारा सिर्फ़ यही है 'व अक़िमिस्सला त लिज़्िक्री' यानी मेरी याद के वक़्त नमाज़ पढ़ो।

३२५. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जब तक नमाज़ के इन्तिज़ार में रहोगे, नमाज़ में ही रहोगे।

३२६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से नक़ल किया गया है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, जो लोग आज ज़मीन की सतह पर मौजूद हैं, सौ साल में अल्लाह तआला उन को ख़त्म कर देगा।

३२७. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि असहाबे सुफ़्फ़ा फ़क़ीर लोग थे, हुज़ूर ने फ़र्मा दिया था कि जिस शख़्स के पास दो आदमियों का खाना हो, वह तीसरे को ले जाए और अगर चार का हो तो पांचवें को ले जाए और अगर पांच का हो तो छठे को ले जाए। (एक बार) हज़रत अबू बक्र रज़ि० तीन आदमियों को अपने घर लेकर आए और खुद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में चले गए और आप के पास ही उन्होंने शाम का खाना खा लिया, फिर वहीं ठहर कर इशा की नमाज़ पढ़ी। जब नमाज़ हो चुकी तो (हुज़ूर सल्ल० के साथ) लौटे और उस वक़्त तक ठहरे रहे जब तक हुज़ूर सल्ल० ने खाना खाया। रात का कुछ

हिस्सा गुज़र जाने के बाद (घर) आए, उन की बीवी बोलीं, तुम अपने मेहमानों से या मेहमान से क्यों (अब तक) अलग रहे, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या तुमने उन को खाना नहीं खिलाया ? बीवी ने जवाब दिया, खाना तो उन के सामने पेश किया गया था, मगर उन्होंनें उस वक़्त तक (खाने से) इंकार किया जब तक तुम न आ जाओ, रावी कहता है, (यह सुन कर) मैं जाकर (डर की वजह से) छिप गया, अबू बक्र रज़ि० ने कहा ओ जाहिल (कहां है ?) और मुझे बुरा-भला कहा और फ़र्माया खाना खाओ, मगर खुशगवार न हो। उस के बाद फ़र्माया, खुदा की क़सम ! मैं नहीं खाऊंगा। (रावी का बयान है) हम जो लुक़्मा लेते जाते थे उस के नीचे से उस से ज्यादा और पैदा होता जाता था, यहां तक कि सब लोग सेर हो गए और खाना पहले से ज्यादा बच रहा। अबूबक्र रज़ि० ने जब देखा कि खाना इतना बल्कि इस से ज्यादा बाक़ी है तो बीवी ने फ़र्माया यह क्या बात है ? उन्होंने कहा मुझे अपनी आंख की ठंडक की क़सम ! यह खाना तो अब पहले से तीन गुना है, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उस में से कुछ खाया और फ़र्माया, वह क़सम शैतान की तरफ़ से थी। इस के बाद एक लुक़्मा और खाया और फिर उठा कर हुज़ूर सल्ल० की खिद्‌मत में ले गए। (रावी कहता है,) हमारे और एक क़ौम के दर्मियान कुछ समझौता था और समझौते की मुद्दत खत्म हो गयी, इस लिए हमने बारह आदमी अलग किए, उन में से हर एक के साथ (खाना खाने के लिए) कई-कई आदमी हो गए और सभी ने मिल कर वह खाना खाया।

बाब ६

अज़ान के बयान में

३२८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माया करते थे, मुसलमान जब मदीने में आए थे, तो सब इकट्ठे होकर नमाज़ के वक़्त का अन्दाज़ा लगा लिया करते थे, अज़ान नहीं दी जाती, एक दिन सबने इस के बारे में बात-चीत की, किसी ने कहा, नसारा की तरह नाक़ूस बना लो, कोई बोला यहूद के सींग की तरह फूंकने के लिए कुछ और बना लो। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया किसी शख़्स को मुक़र्रर क्यों नहीं कर देते कि नमाज़ के लिए आवाज़ दे दिया करे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया बिलाल रज़ि० उठ और लोगों को नमाज़ के लिए आवाज़ दे।

३२९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया गया था कि अज़ान दो-दो बार कहें और 'क़द क़ामतिस्स-लात' के लफ़्ज़ के सिवाए इक़ामत एक बार कहे।

३३०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जब नमाज़ के लिए अज़ान दी जाती है, तो शैतान पीछे को भागता है, ताकि अज़ान न सुने और उस का गूज़ निकलता जाता है। जब अज़ान पूरी हो चुकती है तो फिर आ जाता है, लेकिन जब नमाज़ के लिए दोबारा एलान किया जाता है तो पीछे को भागता जाता है और फिर जब एलान ख़त्म हो जाता है तो दोबारा आ जाता है, और इंसानों के दिल में वसवसे पैदा करता है कि फ़्लां बात याद करो (उस को वह सारी बातें याद दिलाता है) जो उस को याद नहीं होती हैं, यहां तक कि आदमी को ख़बर नहीं रहती कि कितनी रक्अतें पढ़ीं।

३३१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर को फ़र्माते हुए सुना कि मुअज़्ज़िन की आवाज़ का खिंचाव जब कोई जिन्न या

इंसान सुनता है या और कोई चीज़ सुनती है, हर सूरत में क़ियामत के दिन यह सब इस के गवाह होंगे।

३३२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० जब हम को लेकर किसी क़ौम से जिहाद करते थे, तो सुबह से पहले जिहाद न करते थे। जब सुबह हो जाती और अज़ान की आवाज़ आप सुन लेते, तो जिहाद से रुक जाते और अगर अज़ान की आवाज़ न सुनते तो उन को ग़ारत करते थे।

३३३. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया जब तुम अज़ान सुनो, जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है, तुम भी कहो।

३३४. हज़रत मुआविया रज़ि० से भी इसी तरह रिवायत है, मगर (इतना फ़र्क़ है कि) जब मुअज़्ज़िन 'हय्यअलस्सलात' कहे तो तुम 'लाहौ ल व ला क़ू व त इल्ला बिल्ला ह' कहो। मुआविया रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से इसी तरह सुना है।

३३५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने अज़ान सुन कर यह दुआ पढ़ी अल्ला हुम-म रब्-ब हाज़िहिद्दावति त्ता म्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म द निल्वसील त वल्फ़ज़ील त व ब् अ स्हु मक़ामम महमूद-नि-ल्लज़ी व अत्तहू तो उस के लिए क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत हलाल हो गयी।

३३६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को मैंने फ़र्माते हुए सुना, अगर लोगों को मालूम होता कि अज़ान में और पहली सफ़ में कितना सवाब है, तो ज़रूर वह अज़ान देते और पहली सफ़ में शरीक होते और अगर क़ुरआ अन्दाज़ी के सिवाए यह बात मयस्सर न हो सकती, तो ज़रूर क़ुरआ अन्दाज़ी करते और अगर लोग जानते कि पहले वक़्त में नमाज़ पढ़ने में कितना सवाब है, तो ज़रूर इस की रग़्बत करते और अगर लोगों को जानकारी होती कि इशा व फ़ज्र की नमाज़ों में कितना सवाब है तो ज़रूर आते चाहे घुटनों या चूतड़ों के बल (घिसट कर ही आना होता।)

३३७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया बिलाल रज़ि० रात से अज़ान देते हैं। तुम इब्ने मक्तूम रज़ि० के अज़ान देने तक खाया-पिया करो। इब्ने मक्तूम नाबीना थे, उस

वक़्त तक अज़ान न देते थे जब तक उन से यह न कह दिया जाता कि (भाई) सुबह हो गयी, सुबह हो गयी।

३३८. हज़रत हफ़्सा रज़ि० फ़र्माती हैं कि जब सुबह हो जाती और मुअज़्ज़िन अज़ान देने खड़ा होता, रसूलुल्लाह सल्ल० जमाअत खड़ी होने से पहले दो हल्की रक्अतें पढ़ा करते थे।

३३९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, बिलाल रज़ि० की अज़ान से कोई शख़्स सेहरी खाने से न रुके, क्योंकि वह रात से अज़ान देते हैं, ताकि तहज्जुद पढ़ने वाला आदमी अपने घर वापस चला जाए और सोते हुओं को जगा दे और यह कहने लगे कि फ़ज्र या सुबह हो (गयी।) हुज़ूर सल्ल० ने अपनी उंगलियों से इशारा किया, ऊपर को तरफ़ उठाया, फिर नीचे को झुकाया, (सुबह काज़िब की तरफ़ इस से इशारा था) बल्कि इस तरह कहे कि (सुबह सादिक़ हो गई,) हुज़ूर सल्ल० ने अपनी दोनों बाहादत की उंगलियां एक दूसरी के ऊपर रखीं और फिर फैलाते हुए (दाएं-बाएं) लेकर गए। इस से सुबह सादिक़ की तरफ़ इशारा है।

३४०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने तीन बार फ़र्माया, ख़्वाहिशमन्द के लिए हर दो अज़ानों के दर्मियान नमाज़ है। दूसरी रिवायत में इस तरह आया है, हर दो अज़ानों के दर्मियान नमाज़ है और हर दो अज़ानों के दर्मियान नमाज़ है। फिर तीसरी बार फ़र्माया, जो चाहे अज़ान व इक़ामत के बाद पढ़ सकता है।

३४१. मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० कहते हैं, मैं अपनी क़ौम के कुछ आदमियों के साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बीस दिन तक रहा। चूंकि आप नर्म दिल और रहम वाले थे और बाल-बच्चों का शौक़ हुज़ूर सल्ल० ने हममें देखा, तो इर्शाद फ़र्माया, तुम लोग वापस चले जाओ, उन लोगों को तालीम दो, नमाज़ पढ़ो, जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तुममें से कोई शख़्स अज़ान दे और तुम में जो सब से बड़ा हो इमामत करे।

३४२. हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है, दो शख़्सों को सफ़र का इरादा था, वे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने फ़र्माया, जब तुम बाहर चले जाओ तो अज़ान कहा करो,

तक्बीर पढ़ा करो और जो तुम में सब से बड़ा हो वह इमामत करे।

३४३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मुअज्ज़िन को अज़ान देने का हुक्म देते थे, फिर उस के बाद फ़ौरन फ़र्माते थे, सुनो, सफ़र में जिस रात सर्दी या बारिश हो, कजावों में नमाज़ पढ़ लिया करो।

३४४. हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं, हम हुज़ूर सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से लोगों को कुछ शोर व गुल सुनाई दिया। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो फ़र्माया, क्या बात है? लोगों ने अर्ज़ किया, हम नमाज़ के लिए जल्दी कर रहे थे। फ़र्माया ऐसा न किया करो, जब नमाज़ को आया करो, इत्मीनान व सुकून रखा करो। जितनी नमाज़ मिल जाए पढ़ लिया करो, जो रह जाए उस को बाद में पूरा किया करो।

३४५. हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जब नमाज़ की तक्बीर कही जाए, तो उस वक़्त तक खड़े न हो, जब तक मुझे न देख लो।

३४६. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) नमाज़ के लिए तक्बीर कही गयी। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त मस्जिद के एक तरफ़ एक शख़्स से बातें कर रहे थे। आप नमाज़ को न खड़े हुए, यहां तक कि लोग सो गये।

३४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, क़सम है उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! मैंने इरादा कर लिया है कि (पहले) लकड़ियां जलाने का हुक्म दूंगा, फिर नमाज़ पढ़ने का हुक्म दूंगा। जब अज़ान हो जाएगी तो एक शख़्स को मुक़र्रर कर दूंगा कि इमामत करे। इस के बाद उन लोगों के पास जाऊंगा जो घर बैठे रहे और नमाज़ में शरीक न हुए और घरों समेत उनको जला दूंगा. उस ख़ुदा की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर (लोगों को) मालूम होता कि एक खाली हड्डी या बकरी के दो खुर मिलेंगे तो ज़रूर इशा की नमाज़ में मौजूद होते।

३४८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि जमाअत की नमाज़ अकेले नमाज़ पढ़ने से पचीस हिस्सा फ़ज़ीलत रखती है, रात व दिन के फ़रिश्ते फ़ज्र की नमाज़ में जमा

होते हैं, इस के बाद अबूहुरैरह रज़ि० ने फ़र्माया, जितना चाहो क़ुरआन पढ़ो। 'इन-न क़ुरआनल फ़ज्रि का-न मशहूदा।'

३४९. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, नमाज़ का सब से ज़्यादा अज्र पाने वाला वह शख़्स है, जो सब से ज़्यादा दूर हो और उस के बाद वह, जो उस से कम हो और जो शख़्स नमाज़ का इन्तिज़ार करता रहे, ताकि इमाम के साथ नमाज़ पढ़े, उस का सवाब उस शख़्स से बड़ा है जो (अकेले) नमाज़ पढ़ कर सो जाए।

३५०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, अगर आदमी रास्ते में जाता हो और कोई कांटेदार शाख़ रास्ते से हटा दे, तो ख़ुदा उस का शुक्रगुज़ार होता है और उस को बख़्श देता है। इस के बाद फ़र्माया, शहीद है ताऊन में मरने वाला, हैज़े से मरने वाला, डूब कर मरने वाला, दब कर मरने वाला, ख़ुदा की राह में शहीद होने वाला। बाक़ी हदीस ऊपर गुज़र गयी :

३५१. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि क़बीला बनी सलमा ने चाहा कि अपने मकानों से उठ कर रसूलुल्लाह सल्ल० के क़रीब रहने-सहने लगें आप को यह बात बुरी मालूम हुई कि वे लोग मदीना को ख़ाली कर दें। आपने फ़र्माया, क्या क़दमों के निशानों को तुम लोग सवाब नहीं समझते हो ?

३५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, मुनाफ़िक़ों पर फ़ज्र व इशा की नमाज़ से ज़्यादा कोई बोझ नहीं है। अगर इन को इन दोनों नमाज़ों के सवाब की जानकारी होती, तो दोनों वक़्त ज़रूर आते, चाहे सीने के बल आना पड़ता।

३५३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिस दिन ख़ुदा की मेहरबानी के साए के सिवा और कोई साया न होगा, उस दिन सात शख़्सों को अल्लाह तआला अपनी रहमत के साए में रखेगा। इंसाफ़ पसंद हाकिम, वह आदमी जिसने अल्लाह की इबादत में परवरिश पाई हो, वह शख़्स जिस का दिल मस्जिद में पड़ा हुआ हो, वे दो शख़्स जिन में आपस में दोस्ती सिर्फ़ ख़ुदा के लिए हो, इसी मुहब्बत की वजह से इकट्ठे हों और इसी पर अलग होते हों, वह इज़्ज़तदार आदमी, जिस को किसी ख़ूबसूरत औरत ने बुलाया हो, मगर उसने यह कह दिया हो कि मैं ख़ुदा से डरता हूं, वह आदमी जो इतना छिपे तौर पर ख़ैरात

करता हो कि उस के बाएं हाथ तक को खबर न हो कि उसने दाएं हाथ से क्या खर्च किया, वह शख्स जो अकेले में खुदा का ज़िक्र करता है, तो आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं।

३५४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख्स सुबह व शाम मस्जिद को जाता है, तो जितना वह सुबह व शाम जाता है, उतनी ही अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत की मेहमानी तैयार रख छोड़ता है।

३५५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बह्य उब्दी रज़ि० कहते हैं कि जमाअत खड़ी हो गई, मगर हुज़ूर सल्ल० ने एक शख्स को देखा कि दो रकअतें पढ़ रहा है। जब आपने नमाज़ खत्म की, तो लोगों ने उस को घेर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, सुबह की चार पढ़, सुबह की चार पढ़।

३५६. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० मौत के मर्ज़ में पड़े थे, इतने में नमाज़ का वक़्त हुआ। अज़ान दी गई, आपने फ़र्माया, हज़रत अबूबक्र रज़ि० को हुक्म दो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं, अर्ज़ किया गया, अबूबक्र रज़ि० बहुत ही नर्म दिल आदमी हैं। हुज़ूर की जगह पर खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे। लेकिन आपने फिर वही फ़र्माया और लोगों ने वही अर्ज़ कर दिया, फिर आपने वही क़ौल दोहराया, फ़र्माया, कि औरतो! तुम बेशक यूसुफ़ अलै० के साथ वालियां हो, उस के बाद अबूबक्र रज़ि० निकले। नमाज़ शुरू की, इतने में अल्लाह के रसूल सल्ल० का मर्ज़ कुछ हल्का हुआ, तो आप दो शख्सों पर सहारा देकर निकले। अब तक वह मन्ज़र मेरे सामने है कि हुज़ूर तक्लीफ़ की वजह से दोनों पांव खींचते हुए चल रहे थे, अबूबक्र रज़ि० ने पीछे हट जाने का इरादा किया, मगर आपने उन से इशारे से कह दिया कि अपनी जगह पर रहो, जब आप वहां तक पहुंच गए तो अबूबक्र रज़ि० के एक तरफ़ बैठ गए और नमाज़ पढ़ने लगे। अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर के मुवाफ़िक़ नमाज़ पढ़ते थे और दूसरे लोग अबूबक्र रज़ि० की पैरवी करते थे, दूसरी रिवायत में आया है कि आप हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बाएं तरफ़ बैठ गए और अबूबक्र रज़ि० खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे थे।

३५७. हज़रत आइशा रज़ि० की एक रिवायत में है कि जब हुज़ूर सल्ल० सुस्त पड़ गए और आप का मर्ज़ बढ़ गया, तो आपने अपनी

बीवियों से इजाज़त चाही कि मेरे ही घर में बीमारी गुज़ारें। आप को इजाज़त मिल गई। बाक़ी हदीस अभी ऊपर गुजर गई।

३५८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने (एक बार) लोगों के सामने खुत्बा पढ़ा, फिर मुअज़्ज़िन को अज़ान देने का हुक्म दिया, बारिश का दिन था, जब मुअज़्ज़िन हय-य अलस्सलात पर पहुंचा तो आपने फ़र्माया, (आज) घरों पर नमाज़ होगी। (यह सुन कर) लोग एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे, गोया यह बात उन को पसन्द न आई। इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़र्माया, शायद तुम को नागवार हो, यह बात तो उस शख़्स ने की है, जो मुझसे बेहतर था, यानी नबी सल्ल० ने यह फ़र्माया है कि मुझे पसन्द नहीं कि तुम को दिक़्क़त में डालूं।

३५९. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि एक अन्सारी शख़्स बहुत मोटे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जमाअत में हाज़िर होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकते थे। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के लिए खाना तैयार किया और आप को मकान के अन्दर बुलाया, आप लिए एक चटाई बिछा दी और चटाई के एक तरफ़ पानी छिड़क दिया, आपने इस पर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।

क़बीला जारूद के एक शख़्स ने हज़रत अनस रज़ि० से पूछा कि क्या हुज़ूर चाश्त की नमाज़ पढ़ा करते थे ? आपने फ़र्माया, मैंने हुज़ूर को उसी दिन पढ़ते हुए देखा है।

३६०. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जब शाम का खाना सामने लाया जाए तो मग़्रिब की नमाज़ पढ़ने से पहले उस को खाना शुरू कर दो, शाम का खाना छोड़ कर नमाज़ की जल्दी न करो।

३६१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, मुझ से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मकान के अन्दर क्या किया करते थे ? मैंने जवाब दिया, घर वालों का काम किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता, तो नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते थे।

३६२. हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० कहा करते थे कि मैं तुम्हारे साथ सिर्फ़ नमाज़ ही नहीं पढ़ता हूं, बल्कि इस तरह पढ़ता हूं जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल० को मैंने देखा है। (हुज़ूर सल्ल० की पैरवी भी मेरा मक़सद है।)

३६३. आइशा रज़ि० की वह हदीस ऊपर गुज़र चुकी, जिस में रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया था, इस रिवायत में इतना और भी है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अबूबक्र रज़ि० जब आप की जगह पर खड़े होंगे तो रोने की वजह से लोगों को क़िरात नहीं सुना सकेंगे, इस लिए हुज़ूर सल्ल० हज़रत उमर रज़ि० को हुक्म दे दें कि वह नमाज़ पढ़ा दें। हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने यह अर्ज़ कर दिया, इस पर आपने फ़र्माया, तुम यूसुफ़ अलै० की साथ वालियां हो। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को हुक्म दो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत हफ़्सा रज़ि० मुझ से कहने लगीं कि तुम से कभी भलाई नहीं पा सकती।

३६४. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की उस दर्द की हालत में जिस में आपने वफ़ात पाई, हज़रत अबूबक्र रज़ि० लोगों को नमाज़ पढ़ाया करते थे, जब पीर का दिन हुआ और लोग नमाज़ में सफ़ बांध कर खड़े थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुजरे का पर्दा खोला और हम को खड़े होकर देखने लगे। ऐसा मालूम होता था कि आप का चेहरा (सफ़ेद हो जाने की वजह से) किताब का पन्ना है, फिर हुज़ूर खुशी से हंस दिए, हमने भी हुज़ूर सल्ल० को देखने की खुशी में नमाज़ को तोड़ देने का इरादा किया, हज़रत अबूबक्र रज़ि० एड़ियों पर सरक कर लौटे, ताकि सफ़ से आकर मिल जाएं और उन को ख्याल हुआ कि हुज़ूर सल्ल० नमाज़ के लिए आए हुए हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इशारा किया कि नमाज़ पूरी कर लो। यह कह कर पर्दा छोड़ दिया और उसी दिन आपकी वफ़ात हो गयी।

३६५. हज़रत सहल बिन साद साइदी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० क़बीला बनी उमर बिन औफ़ के पास उन की आपसी इस्लाह के लिए तशरीफ़ ले गए, मुअज़्ज़िन ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की खिद्मत में आकर अर्ज़ किया कि क्या तक्बीर पढ़ी जाए, आप लोगों को पढ़ाएंगे? आपने फ़र्माया, हां, हज़रत अबूबक्र रज़ि० नमाज़ अदा करने लगे, इतने में अल्लाह के रसूल सल्ल० और कुछ दूसरे आदमी नमाज़ में आए, तो अबूबक्र रज़ि० हट कर पहली सफ़ में आकर खड़े हो गए। लोगों ने तालियां बजायीं, मगर अबूबक्र रज़ि० इधर-उधर मुतवज्जह न हुए। जब तालियां ज़्यादा हुईं और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुंह फेरा और रसूल

सल्ल० को (खड़े) देखा, हुजूर सल्ल० ने अबूबक्र रजि० को इशारा किया कि अपनी जगह ठहरे रहो। हजरत अबूबक्र रजि० ने हाथों को उठाया और खुदा की हम्द कही, जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उन को हुक्म दिया था, फिर पीछे हट कर पहली सफ़ के बराबर हो गए और रसूलुल्लाह सल्ल० आगे हो गए। नमाज अदा की। नमाज खत्म कर चुके, तो फ़र्माया, अबूबक्र रजि० ! जब मैंने तुम को हुक्म दिया था तो फिर किस चीज़ ने तुम को अपनी जगह क़ायम रहने से मना किया 'इब्ने अबी क़हाफ़ा को मुनासिब न था कि रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने नमाज पढ़ाए,' फिर हुजूर ने फ़र्माया यह क्या बात है कि नमाज में तुम लोग इमाम को बताने के लिए तालियां ज्यादा बजाते हो, अगर नमाज में कोई बात पेश आ जाए तो चाहिए कि 'सुब्हानल्लाह' कहे। जब सुब्हानल्लाह कहा जाएगा तो उस की तरफ़ ध्यान दिया जाएगा, तालियां बजाना तो औरतों के लिए है।

३६६. हजरत आइशा रजि० फ़र्माती हैं, जब बीमारी की वजह से रसूलुल्लाह सल्ल० बहुत ज्यादा कमजोर हो गए, तो एक दिन फ़र्माने लगे, क्या लोग नमाज को पढ़ चुके ? हमने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी तो नहीं, आप के इन्तिजार में हैं। फ़र्माया मेरे लिए तश्त में पानी रखो। हमने हुक्म को पूरा किया, आपने गुस्ल किया, लेकिन जब उठने का इरादा किया तो बेहोशी तारी हो गयी, कुछ देर के बाद कमी हुई तो फ़र्माया क्या लोग नमाज पढ़ चुके ? हमने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अभी तो नहीं, आप का इन्तिजार कर रहे हैं। (यह सुन कर) फ़र्माया, मेरे लिए तश्त में पानी रखो। (हमने हुक्म की तामील की।) आप बैठे, गुस्ल किया लेकिन उठने का इरादा किया तो कमजोरी आ गयी, कुछ देर के बाद होश आया तो फ़र्माया, क्या लोग नमाज पढ़ चुके ? हमने अर्ज किया, नहीं। हुजूर सल्ल० के इन्तिजार में हैं। फ़र्माया मेरे लिए तश्त में पानी रखो। तश्त में पानी रख दिया गया। आपने बैठ कर गुस्ल किया, मगर जब उठने लगे तो बेहोश हो गए। होश आया तो फ़र्माया, क्या लोगों ने नमाज पढ़ ली ? हमने अर्ज किया नहीं, हुजूर (सल्ल०) के ही इन्तिजार में हैं और वाक़ई लोग मस्जिद में बैठे हुए इशा की नमाज के लिए हुजूर सल्ल० के इन्तिजार में थे। उस वक़्त हुजूर सल्ल० ने अबूबक्र रजि० को कहला भेजा कि लोगों को नमाज पढ़ाओ।

क़ासिद ने हजरत अबूबक्र रजि० से जाकर कह दिया कि अल्लाह के

रसूल सल्ल० आप को हुक्म देते हैं कि आप नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० नर्म दिल आदमी थे, उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, उमर रज़ि० ! तुम नमाज़ पढ़ाओ। उमर बोले, तुम इसके ज़्यादा अह्ल हो, इस लिए उस वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ायी, बाक़ी हदीस ऊपर आ चुकी है।

३६७. हज़रत आइशा रज़ि० से वह हदीस तो ऊपर आ चुकी है, जिस में मरीज़ होने की हालत में घर में नमाज़ पढ़ने की रिवायत थी, इस में इतना और है कि जब (इमाम) बैठ कर नमाज़ पढ़े, तो तुम भी बैठ कर पढ़ो।

३६८. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह्' कहते तो हम में से कोई सर न झुकाए रहता था, जब आप सज्दे में चले जाते, तो हम भी आप के बाद सज्दे में जाते।

३६९. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, तुम में से जो शख़्स भी इमाम से पहले (सज्दे से) सर उठाता है, क्या उस को डर नहीं कि अल्लाह तआला उस के सर को गधे का-सा कर दे या उस की सूरत गधे की-सी सूरत (बना दे।)

३७०. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (हाकिम की बात) सुनो और (उस के हुक्म) को मानो, अगरचे तुम पर किसी हब्शी को हाकिम बना दिया जाए जिसका सर (स्याही में) अंगूर की तरह मालूम होता हो।

३७१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि लोग नमाज़ पढ़ाते हैं, अगर वे ठीक पढ़ाएं, तो उन के और तुम्हारे दोनों के लिए मुफ़ीद है और अगर ग़लती करें तो तुम्हारे लिए मुफ़ीद है और उन के लिए नुक़्सानदेह।

३७२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस पहले आ चुकी है, जिस में बयान किया गया था कि इब्ने अब्बास रज़ि० ने अपनी ख़ाला के घर रात गुज़ारी थी। इस हदीस में इतनी बात और भी है कि हुज़ूर सल्ल० सो गए और आप के सांस की आवाज़ होने लगी और यह क़ायदा भी था कि हुज़ूर सो जाते थे तो आप की सांस की आवाज़ हुआ करती थी। इतने में मुअज़्ज़िन आया, हुज़ूर सल्ल० (जाग कर) उठे,

नमाज़ पढ़ी, मगर वुज़ू नहीं किया।

२७३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ कर, वापस जाकर अपनी क़ौम की इमामत किया करते थे, एक दिन इशा की नमाज़ पढ़ी और सूरः बक़रः की क़िरात की। एक शख़्स जमाअत से अलग हो गया। हज़रत मुआज़ रज़ि० इस पर नुक्ताचीनी करने लगे। यह ख़बर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास पहुंची। आपने फ़र्माया, वह फ़ित्ना पैदा करने वाला है, वह फ़ित्ना पैदा करने वाला है, फ़ित्ना पैदा किया करेगा, फ़ित्ना पैदा किया करेगा, फ़ित्ना पैदा किया करेगा। फिर आपने उन को औसत आयत (न बड़ी, न छोटी) की दो सूरतों के पढ़ने का हुक्म दिया।

२७४. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने (हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं ख़ुदा की क़सम ! फ़लां शख़्स (इमाम) की वजह से फ़ज्र की नमाज़ से रह जाता हूं, क्योंकि वह क़िरात लम्बी करता है। अबू मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि मैंने उस दिन से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० को ग़ुस्से में नहीं देखा। आपने फ़र्माया, कुछ लोग तुम में से नफ़रत पैदा कराते हैं। तुममें से जो शख़्स नमाज़ पढ़ाए, तो चाहिए कि छोटी करे, क्योंकि उन में कमज़ोर और बूढ़े और ज़रूरत वाले सभी होते हैं।

२७५. हज़रत जाबिर रज़ि० की रिवायत की हुई हज़रत मुआज़ रज़ि० की वह हदीस गुज़र चुकी, इस में इतना और ज़्यादा है कि (हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया) तूने 'सब्बिहिस-म रब्बिकल आला' और 'वश्शम्सि व ज़ुहा हा' और 'वल्लैलि इज़ा यग़्शा' क्यों नहीं पढ़ी ?

२७६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ को छोटी और पूरी पढ़ा करते थे।

२७७. हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं खड़ा होता हूं तो चाहता हूं कि नमाज़ को लम्बी कर दूं, लेकिन बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो मुझे अच्छा नहीं मालूम होता है कि उस की मां को तक्लीफ़ दूं, इस लिए नमाज़ को छोटी कर देता हूं।

२७८. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० से रिवायत है, रसूलुल्लाह

सल्ल० ने फ़र्माया, तुम सफ़ों को जरूर बराबर कर लिया करो, वरना अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों में इख्तिलाफ़ पैदा कर देगा।

३७९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, सफ़ों को ठीक कर लो और आपस में मिल कर खड़े हो, मैं तुम को पुश्त ? पीछे से भी देख लेता हूं।

३८०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० रात को नमाज़ अपने हुजरे में पढ़ा करते थे। हुजरे की दीवारें चूंकि छोटी थीं, इस लिए (एक दिन) लोगों ने हुज़ूर सल्ल० के जिस्मे मुबारक को (नमाज़) में देख लिया, तो नमाज़ में आप की इक्तिदा करने लगे। सुबह हुई, लोगों ने यह क़िस्सा बयान किया, दूसरी रात भी हुज़ूर सल्ल० नमाज़ को खड़े हुए और लोग आप के साथ नमाज़ में शरीक हुए, दो या तीन रातें लोगों ने इसी तरह किया, इस के बाद रसूलुल्लाह सल्ल० बैठे रहे और न निकले, जब सुबह हुई और लोगों ने इसका तज़्किरा किया, तो आपने फ़र्माया, मुझे डर हुआ कि कहीं तुम पर रात की नमाज़ न फ़र्ज़ न हो जाए।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ इस हदीस में इतना और बढ़ा हुआ है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैंने तुम लोगों का यह फ़ेल देखा, इस को समझ गया, तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो, क्योंकि फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा और नमाज़ें घर में पढ़नी बेहतर हैं।

३८१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ शुरू करते थे, तो दोनों हाथों को मोंढों तक उठाते थे और जब रुकूअ के लिए तक्बीर कहते थे या रुकूअ से सर उठाते थे, तब भी इसी तरह हाथ उठाते थे और 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना लकल हम्द' फ़र्माते थे, मगर सज्दे में यह काम नहीं करते थे।

३८२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० और अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० नमाज़ को 'अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' से शुरू करते थे।

३८३. हज़रत सह्ल बिन सअद रज़ि० से रिवायत है कि लोगों को हुक्म दिया जाता था कि अपना दायां हाथ नमाज़ में बाएं हाथ पर रखें।

३८४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं अल्लाह के रसूल सल्ल०

ने क़िरात और तक्बीरे तह्‌रीमा के दर्मियान कुछ ख़ामोशी फ़र्माते थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप हुज़ूर पर फ़िदा हों, हुज़ूर क़िरात और तक्बीरे तह्‌रीमा के दर्मियान जो ख़ामोशी फ़र्माते हैं, उन में क्या पढ़ते हैं ? फ़र्माया, यह पढ़ता हूं 'अल्लाहुम-म बाइद बैनी व बै-न-ख़तायाय कमा बा'अत-त बैनल्मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि अल्लाहुम-म नक़्क़िनी मिनल ख़ताया कमा युनक़्क़स्सौबिल अब्‌यज़ि मिनद्दनस अल्लाहुम-ग़्सिल ख़ताया-य बिल्माइ वस्सल्जि वल्बरदि' यानी इलाही ! मेरे और मेरे गुनाहों के बीच इतनी दूरी पैदा कर दे जितनी पूरब और पच्छिम के बीच दूरी है, इलाही ! मुझे गुनाहों से ऐसा साफ़ कर दे जैसा सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ होता है, इलाही ! मेरी ख़ताओं को पानी से, बर्फ़ से और ओलों से यानी (अपनी रहमत से) धो डाल।

३८५. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० की रिवायत के मुताबिक़ पिछली हदीसे कुसूफ़ में इतनी और ज़्यादती की है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुझ से जन्नत इतनी क़रीब हो गई कि अगर मैं हिम्मत करता, तो वहां के ख़ोशों में से एक ख़ोशा तुम्हारे पास ले आता और दोज़ख़ भी इतनी क़रीब हो गई कि मैंने अर्ज़ किया, इलाही! क्या मैं भी इन के साथ हूं ? इतने में एक औरत देखी। रावी का बयान है कि शायद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि उस औरत को एक बिल्ली नोच रही थी। मैंने कहा, उस औरत का क्या हाल है ? फ़रिश्तों ने जवाब दिया, उसने बिल्ली को बांध रखा था। बिल्ली भूखी मर गई, न तो उसने उसको कुछ खाने को दिया, न छोड़ा कि ज़मीन के कीड़े-मकोड़े में से कुछ खाती-फिरती।

३८६. हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ुहर व अस्र की नमाज़ में कुछ पढ़ते थे ? बोले हां, पूछा गया, तुम को कैसे मालूम हुआ ? कहने लगे हुज़ूर सल्ल० के दाढ़ी हिलने से।

३८७. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, लोगों का क्या हाल है कि नमाज़ में निगाहें आसमान की तरफ़ उठाते हैं, इस के बाद आप का क़ौल इस बारे में बहुत सख़्त हो गया, यहां तक कि आपने फ़र्मा दिया, लोगों को इस हरकत से बाज़ आ जाना चाहिए, वरना उन की नज़र छीन ली जाएगी।

३८८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, मैंने नमाज़ में इधर-उधर देखने के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा, तो आपने फ़र्माया, यह एक

झपट्टा है कि शैतान आदमी की नमाज़ में उसे झपट कर ले जाता है।

३८६. हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० कहते हैं कि कूफ़ा के लोगों ने हज़रत साद रज़ि० की हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत की, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने साद रज़ि० को हटा दिया और हज़रत अम्मार रज़ि० को हाकिम बना कर भेजा, कूफ़ियों ने उन की भी शिकायत की, बल्कि यहां तक कहा कि वह नमाज़ ठीक नहीं पढ़ते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने उन के पास किसी को भेज कर कहलवाया, कि अबू इस्हाक़! इन लोगों का ख्याल है कि तुम नमाज़ अच्छी नहीं पढ़ते हो। हज़रत अम्मार रज़ि० ने जवाब दिया, ख़ुदा की क़सम! मैं उन को अल्लाह के रसूल सल्ल० की जैसी नमाज़ पढ़ाता हूं, इस में कोई कमी नहीं करता। इशा की नमाज़ पढ़ता हूं, तो पहली दो रकअतें देर में पढ़ता हूं और आखिरी दोनों रकअतें हल्की कर देता हूं। (हज़रत उमर रज़ि० को मालूम हुआ, तो फ़रमाया) अबू इस्हाक़! मेरा भी तुम्हारे बारे में भी यही ख्याल था, इसके बाद हज़रत उमर ने कूफ़ा में एक आदमी को या कुछ आदमियों को भेजा, ताकि हज़रत अम्मार रज़ि० के हालात की जांच करें, उन लोगों ने जाकर कूफ़ा वालों से हज़रत अम्मार रज़ि० के हालात पूछे, कोई मस्जिद बिना पूछे नहीं छोड़ी, लेकिन सबने आप की खूबी ही बयान की, जब क़बीला बनी अबस की मस्जिद में ये लोग दाखिल हुए, तो एक शख्स उठा, जिस का नाम उसामा बिन क़तादा था और कुन्नियत अबू सादा थी, कहने लगा, जब तुमने हम को क़सम दी है, तो साद की हालत बताते हैं, साद न तो किसी लश्कर के साथ (जंग) पर जाते थे, न बराबरी के साथ (माल) बांटते थे और न इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करते थे। साद (साथ) थे, गुस्से में आकर आगाह हो जाएं, तीन (बद-) दुआएं करता हूं। इलाही! अगर तेरा बंदा झूठा है और न सिर्फ़ दिखावे और शोहरत की तलब के लिए खड़ा हुआ है तो उस की उम्र दराज़ करे, उस को इफ़लास ज़्यादा कर, और फ़ित्नों के सामने उसको पेश कर, उसके बाद जब उसामा बिन क़तादा से पूछा जाता (कि क्या हाल है?) तो जवाब देते, मैं बहुत बूढ़ा हूं, फ़ित्ने में मुब्तला हूं, मुझे साद रज़ि० की बद-दुआ लग गई, हज़रत जाबिर से रिवायत करने वाले ने बयान किया कि मैंने आखिर में उसामा को देखा, बुढ़ापे की वजह से उन की भौंहें तक (सफ़ेद हो गई थीं), आंखों पर आ पड़ी थीं, वह रास्ते में पड़े थे, छोकरियां उन के उंगलियां चुभोया करती थीं।

३६०. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो सूरः फ़ातिहा न पढ़े, उस की नमाज़ ही नहीं है।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल मस्जिद में तशरीफ़ लाए। एक और शख्स भी आया और नमाज़ पढ़ कर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया। आपने सलाम का जवाब देकर फ़र्माया, लौट जा, फिर नमाज़ पढ़, क्योंकि तूने (ठीक) नमाज़ नहीं पढ़ी, उसने लौटकर फिर नमाज़ पढ़ी और आकर सलाम किया। आपने जवाब देकर फ़र्माया, लौट जा, फिर नमाज़ पढ़, तूने ठीक नमाज़ नहीं पढ़ी। इसी तरह हुज़ूर सल्ल० ने तीन बार फ़र्माया, आख़िर उस शख्स ने अर्ज़ किया, उस ख़ुदा की क़सम जिसने आप को सच्चाई के साथ भेजा है, मुझे इस से बेहतर नमाज़ मालूम नहीं। फ़र्माया, तू जब नमाज़ के लिए खड़ा हुआ करे, तो तक्बीर कह, जितना क़ुरआन हो सके, पढ़, फिर रुकूअ कर, जब ठीक रुकूअ कर चुके, तो उठ और सीधा खड़ा हो जा। इस के बाद ठीक-ठीक इत्मीनान के साथ सज्दा कर, फिर सर उठा, इत्मीनान के साथ बैठ, और इसी तरह सारी नमाज़ में कर।

३६१. हज़रत अबूक़तादा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ुहर की पहली दो रक्अतों में सूरः फ़ातिहा और दो सूरतें दूसरी पढ़ा करते थे। पहली रक्अत लम्बी करते थे, दूसरी छोटी, कभी कोई आयत सुनी जाती और नमाज़ अस्र में सूरः फ़ातिहा और दो सूरतें और पढ़ते थे, पहली रक्अत लम्बी पढ़ते थे, और दूसरी छोटी, इसी तरह फ़ज्र की न[illegible] की पहली रक्अत लम्बी करते थे और दूसरी को छोटी।

३६२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि उम्मे फ़ज़्ल (मेरी मां) ने मुझे 'वल्मुर सलाति उरफ़न' पढ़ते सुना तो कहा, बेटे तूने तो ख़ुदा की क़सम यह सूरः पढ़ कर मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० की याद दिला दिया। यह सूरः उन सूरतों में से आख़िरी सूरः है, जो मैंने मग़्रिब की नमाज़ में अल्लाह के रसूल सल्ल० को पढ़ते सुनी है।

३६३. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना कि आप मग़्रिब की नमाज़ में दो लम्बी सूरतों की दो लंबी (आयतें) पढ़ते थे (इस से मुराद सूरः आराफ़ है।)

३६४. हज़रत ज़ुबैर बिन मुत्इम रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह के

रसूल सल्ल० को मग़रिब की नमाज़ में सूरः तूर पढ़ते सुना।

३९५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मैंने अबुल क़ासिम सल्ल० के पीछे इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर आपने इज़स्समा उन शक़्क़त पढ़ी और सज्दा किया। फिर मैं इस की वजह से हमेशा सज्दा करता रहा।

३९६. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० एक सफ़र में थे, इशा की नमाज़ में आपने एक रक्अत में वत्तीनि वज़्ज़ैतून पढ़ी। दूसरी रिवायत में इतना और है कि आप से बेहतर मैंने अच्छी आवाज़ वाला और बेहतर क़िरात वाला और कोई नहीं देखा।

३९७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते थे कि हर नमाज़ में क़िरात की जाए। जिस नमाज़ में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हम को क़िरात सुनाई, हम भी तुम को सुनाएंगे और जिस नमाज़ में हुज़ूर ने क़िरात आहिस्ता पढ़ी, हम भी आहिस्ता पढ़ेंगे। अगर तुमने सूरः फ़ातिहा पर ज़्यादती न की, तो काफ़ी है और अगर ज़्यादती की तो बेहतर है।

३९८. हज़रत इब्ने हब्बी रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० असहाब की जमाअत के साथ बाज़ार उकाज़ के इरादे से (एक बार) चले। उस वक़्त शैतानों के और आसमानी खबरों के दर्मियान आड़ हो गयी थी और उन पर तारे टूट-टूट कर गिरने लगे थे। शैतानों ने अपनी क़ौम से जाकर पूछा, क्यों क्या बात है? वह बोले, हमारे और आसमानी खबरों के बीच रुकावट हो गयी और हम पर शिहाब छोड़े जाने लगे, शयातीन बोले, हो न हो, कोई नई बात है। अच्छा मश्रिक़ और मग़रिब में फिर चल कर आएं, तो देखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० और आप के सहाबा उकाज़ बाज़ार के इरादे से निकले हैं और नख़्ला के मक़ाम में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे हैं, उन्होंने जो क़ुरआन सुना तो कान लगा दिए और कहने लगे, यही बात है कि हम में और आसमानी खबरों में रुकावट हो गयी, उस के बाद जब अपनी क़ौम के पास लौट कर गए, तो जाकर कहा, ऐ क़ौम! हमने अजीब क़ुरआन सुना, जो नेकी की हिदायत करता है। हम इस पर ईमान ले आए। अब अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न करेंगे, उस वक़्त ख़ुदा ने हुज़ूर सल्ल० पर वह्य नाज़िल फ़र्मायी, 'क़ुल ऊहि य इलय-य अन्नहुस्त-म-अ' और वाक़ई हुज़ूर पर क़ौले जिन्न की वह्य भेजी गई।

३९९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जो कुछ पढ़ने का हुक्म था, रसूलुल्लाह सल्ल० ने पढ़ा और जहां ख़ामोशी का हुक्म था, वहां

आपने सुकूत फ़र्माया, तुम्हारा परवरदिगार भूलने वाला नहीं है, तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह के अन्दर बहुत अच्छी पैरवी है :

४००. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० के पास एक शख्स हाज़िर होकर कहने लगा, मैंने आज रात एक रक्अत में मुफ़स्सल पढ़ी, आपने फ़र्माया, तुम शेर की तरह जल्द-जल्द पढ़ते हो। मैं इन एक जैसी सूरतों को जानता हूं, जिन में अल्लाह के रसूल सल्ल० इस्तिमाल किया करते थे। इस के बाद आपने बीस सूरतें ज़िक्र कीं, हर रक्अत में दो-दो सूरतें हैं।

४०१. हज़रत अबूक़तादा रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ज़ुहर की दो रक्अतों में सूरः फ़ातिहा और दो सूरतें और पढ़ा करते थे और पिछली दो रक्अतों में सूरः फ़ातिहा (सिर्फ़) पढ़ते थे, कोई आयत भी सुना देते थे और पहली रक्अत में दूसरी रक्अत से ज़्यादा तूल करते थे। इसी तरह अस्र व फ़ज्र में करते थे।

४०२ हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जब इमाम 'आमीन' कहे तो तुम भी 'आमीन कहो, क्योंकि जिस की 'आमीन' फ़रिश्तों की 'आमीन' के मुवाफ़िक़ हो जाएगी, उस के पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे।

४०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जब तुम में से कोई आमीन कहे और फ़रिश्ते आसमान पर आमीन कहें और उस की आमीन उन की आमीन के मुवाफ़िक़ हो जाए तो उसके पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

४०४. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर हुआ, आप रुकूअ की हालत में थे। मैं सफ़ तक पहुंचने से पहले ही रुकूअ में हो गया। और बाद को हुज़ूर से इस का ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला तेरा लालच ज़्यादा करे, ऐसा फिर मत करना।

४०५. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि मैंने बसरा में हज़रत अली के साथ नमाज़ पढ़ी, हज़रत अली ने फ़र्माया, इस शख्स ने हम को वह नमाज़ याद दिलाई, जो हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ पढ़ा करते थे, फिर ज़िक्र फ़र्माया कि रसूलुल्लाह सल्ल० उठते वक़्त और झुकते वक़्त तक्बीर कहा करते थे।

४०६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल

सल्ल० नमाज़ के लिए खड़े होते थे, तो खड़े होते वक़्त तक्बीर कहते थे। उस के बाद रुकूअ करने के वक़्त तक्बीर कहते थे, फिर जब रुकूअ से पीठ सीधी करते थे, तो समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहते थे और सीधे खड़े होने की हालत में रब्बना लकल हम्द कहते थे।

४०७. हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० के बेटे मुसअब ने हज़रत सअद रज़ि० के पहलू की तरफ़ एक बार नमाज़ पढ़ी। मुसअब रज़ि० कहते हैं कि मैंने हथेलियां बन्द कर लीं, फिर दोनों हाथों को दोनों ज़ानुओं के दर्मियान रखा (और क़ादे में बैठ गया।) मेरे वालिद ने मुझ को इस फ़ेल से मना किया और फ़र्माया, हम ऐसा करते थे, लेकिन हम को इस से मना कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि क़ादे में हाथों को घुटनों पर रखें।

४०८. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि क़ियाम व क़ादा के अलावा अल्लाह के रसूल सल्ल० का रुकूअ-सज्दा, दोनों सज्दों के दर्मियान का वक़्फ़ा, रुकूअ से उठने के बाद का क़ियाम लगभग [illegible] बराबर होते थे।

४०९. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्ल० रुकूअ व सज्दे में फ़र्माया करते थे, सुब्हान क अल्ल हुम-म रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहु मग़्फ़िरली। हज़रत आइशा रज़ि० [illegible] एक और रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्ल० क़ुरआन पर अमल करते थे।

४१०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से [illegible]वायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जब इमाम समि अल[illegible]हु लिमन हमिदह कहे तो तुम 'अल्लाहुम-म रब्बना लकल हम्दु' कहो, क[illegible] कि जिस का क़ौल फ़रिश्तों के क़ौल के मुताबिक़ हो जाएगा, उस के पिछ[illegible] गुनाह माफ़ हो जाएंगे।

४११. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने फ़र्माया कि मैं तुम को अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ के क़रीब-क़रीब (पढ़ कर) बता दूंगा। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० इशा और फ़ज्र की नमाज़ में समि अल्लाहु लिमन हमिदह कहने के बाद क़ुनूत पढ़ते थे, फिर मोमिनों के लिए दुआ और कुफ़्फ़ार पर लानत करते थे।

४१२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मग़्रिब व फ़ज्र की नमाज़ में दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ते थे।

४१३. हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ ज़ुरक़ी रज़ि० कहते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आपने रुकूअ

से सर उठाया तो फ़र्माया 'समि अल्लाहु लिमन हमिद ह।'' (पीछे से एक शख्स ने कहा) 'रब्बना लकल हम्दु हम्दन कसीरन तय्यबम्मुबारकन फ़ीहि' नमाज खत्म करने के बाद आपने फ़र्माया, कलाम करने वाला कौन था, उस शख्स ने अर्ज़ किया, मैं। फ़र्माया, मैंने देखा तीस से ज्यादा फ़रिश्ते इन कलिमात को लिखने के लिए एक-दूसरे से होड़ ले रहे थे।

४१४. हजरत अनस रजि० रसूलुल्लाह सल्ल० की नमाज की कैफ़ियत बयान कर रहे थे कि आप नमाज में रुकूअ के बाद सर उठा कर खड़े होते थे, तो हमारा ख्याल होता था कि (शायद) आप भूल गए हैं कि खड़े हैं और सज्दा नहीं करते।

४१५. हजरत अबूहुरैरह रजि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब रुकूअ से सर उठाते थे तो 'समि अल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना लकल हम्दु' फ़र्माते थे, लोगों के लिए दुआ करते थे और उनका नाम लेते थे और कहते थे, इलाही! तू वलीद बिन वलीद, सलमा बिन हिशाम रजि० अयाश रजि० बिन अबी रबीअ और कमजोर मोमिनों को निजात दे। इलाही क़बीला मुज़र को सख्ती से कुचल दे और उन पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वर्षों तक के क़हत को मुसल्लत फ़रमा, उस जमाने में क़बीला मुज़र के मश्रिकी लोग आप के खिलाफ़ थे।

४१६. हजरत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं, (एक बार) लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या क़ियामत के दिन हम अपने रब को देखेंगे? फ़र्माया, क्या उस चौदहवीं रात के चांद में जिस पर बादल न हो, तुम को कुछ शक है? लोगों ने अर्ज़ किया, नहीं तो ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने फ़र्माया, क्या उस सूरज में तुम को कलाम हो सकता है, जिस पर बादल न हो? अर्ज़ किया, नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! फ़र्माया बिला शक, इसी तरह तुम उस को देखोगे, जब लोग क़ियामत के दिन उठाए जाएंगे, तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा जो जिस किसी की पूजा करता हो उस को उसी की पैरवी करनी चाहिए। चुनांचे कुछ तो सूरज की पैरवी करेंगे कुछ चांद की और कुछ शैतानों की, बाक़ी यह उम्मत रहेगी, जिन में मुनाफ़िक़ भी होंगे। उन पर अल्लाह तआला तशरीफ़ लाएगा और फ़र्माएगा, मैं तुम्हारा रब हूं। वह कहेंगे, हम यहीं रहेंगे, यहां तक कि हमारा रब हमारे पास आजाएगा। वह जब हमारे पास आ जाएगा तो हम उसको पहचान लेंगे। उस वक़्त खुदा-ए-

अज्ज़ व जल्ल उनके पास तशरीफ़ लाएगा और फ़र्माएगा, मैं तुम्हारा रब हूं। वह अर्ज़ करेंगे तू हमारा रब है। अल्लाह तआला उनको (पुले सिरात की तरफ़) बुलाएगा, जहन्नम के पुश्त पर पुल रखा जाएगा, सब से पहले मैं अपनी उम्मत के साथ उस पर से गुज़रूंगा। उस दिन सिवाए रसूलों के (ख़ुदा-ए-तआला से) और कोई कलाम न कर सकेगा, रसूल कहेंगे, इलाही ! सलामती दे, सलामती दे, दोज़ख में आंकुड़े होंगे, जो सादान घास के कांटों की तरह होंगे, तुमने सादान का कांटा तो देखा है ? लोगों ने अर्ज़ किया, जी हां, फ़र्माया बस वह सादान के कांटों की तरह होंगे, मगर उन की लम्बाई ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं जनता है। ये सब आंकुड़े लोगों को उन के आमाल के मुवाफ़िक़ (पकड़ कर) घसीटेंगे, कुछ शख़्स तो अपने बुरे आमालों की वजह से हलाक हो जाएंगे और कुछ का क़ीमा हो जाएगा और फिर उस से छुटकारा मिल जाएगा। जब अल्लाह तआला दोज़ख़ियों में से किसी पर रहमत करनी चाहेगा, तो फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि अल्लाह तआला की परस्तिश करने वालों को निकाल लो। फ़रिश्ते सज्दे के निशान पहचान कर निकाल ले जाएंगे, क्योंकि अल्लाह तआला ने आग के लिए हराम कर दिया है कि वह सज्दा के निशानों को खा सके, इस लिए वह आग से निकल आएंगे। सिवाए सज्दों के निशानों के, आदमी की हर चीज़ को आग खायेगी। जब लोग दोज़ख से निकलेंगे, तो सोख़्ता होंगे। उन पर आबे हयात छिड़का जाएगा और वह इस तरह (तर व ताज़ा) उग जाएंगे, जिस तरह नाले के कीचड़ में बीज से सब्ज़ी उग आती है। इस के बाद जब अल्लाह तआला बन्दों के फ़ैसले से फ़ारिग़ होगा, तो उस वक़्त एक शख़्स जन्नत व दोज़ख के दर्मियान बाक़ी रहेगा और सब से आख़िर में जन्नत में जाएगा, उस वक़्त उस का चेहरा आग की तरफ़ होगा और (अल्लाह तआला) से अर्ज़ करेगा इलाही, मेरा मुंह दोज़ख की तरफ़ से फेर दे। मुझे इस की बदबू ने हलाक कर दिया और लपट ने जला दिया। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, अगर तेरे साथ ऐसा कर दिया जाए तो बहुत जल्द तू कुछ और सवाल करने लगेगा। वह अर्ज़ करेगा नहीं, तेरी इज़्ज़त की क़सम ! अल्लाह तआला उस से वायदे लेकर उस की ख़्वाहिश पूरी कर देगा और उस का मुंह दोज़ख से फेर देगा, जब उस का मुंह जन्नत की तरफ़ हो जाएगा तो उस की सर सब्ज़ी व शादाबी देखकर कुछ दिन तो चुप रहेगा, फिर अर्ज़ करेगा इलाही,

मुझे जन्नत के दरवाज़े के क़रीब पहुंचा दे, अल्लाह तआला फ़र्माएगा, क्या तूने वायदा नहीं किया था कि इस सवाल के बाद कोई और सवाल नहीं करूंगा? वह अर्ज़ करेगा, (यह इस लिए अर्ज़ कर रहा हूं, ताकि) तेरी मख़्लूक़ में सब से ज़्यादा बदबख़्त न रहूं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा, अगर तुझे यह दे दिया जाए, तो मुम्किन नहीं कि इस के अलावा तू और कुछ सवाल न करे। वह अर्ज़ करेगा, तेरी इज़्ज़त की क़सम और कुछ नहीं मांगूगा। ख़ुदा-ए-तआला इस से जिस क़दर अह्द व पैमान चाहेगा, लेगा और जन्नत के दरवाज़े तक बढ़ा देगा। जब वह जन्नत के दरवाज़े पर पहुंच जाएगा, तो किसी क़दर ख़ामोश रहेगा, लेकिन जन्नत की बहार और मौजूदा तर व ताज़गी व सुरूर देख कर अर्ज़ करेगा, इलाही मुझे जन्नत में दाखिल कर दे, अल्लाह तआला फ़र्माएगा, ऐ इब्ने आद म ! तेरी हालत पर अफ़सोस है, तू किस क़दर धोखेबाज़ है, क्या तूने इस बात का अह्द व पैमान नहीं किया था कि जो कुछ दे दिया जाएगा उस के सिवा और कुछ न मांगूंगा ? वह अर्ज़ करेगा, ख़ुदावन्दा ! तू मुझे अपनी मख़्लूक़ में सब से ज़्यादा बदबख़्त न बना देना। उस वक़्त अल्लाह तआला हंसेगा (अल्लाह तआला की ग़ज़बी हालत न रहेगी) और उस को जन्नत में दाखिल होने की इजाज़त दे देगा और फ़र्माएगा अपनी आरज़ूएं बयान कर, वह तमन्नाएं बयान करेगा। जब उस की सारी तमन्नाएं ख़त्म हो जाएंगी ख़ुदा-ए-तआला उस को याद दिलाएगा और फ़र्माएगा, ये तमन्नाएं और कर। जब कुल आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी, तो इर्शाद होगा तेरे लिए यह भी है और इतना और भी। अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० ने अबूहुरैरह से कहा कि हुज़ूर ने फ़र्माया था कि ख़ुदा-ए-तआला फ़र्माएगा तेरे लिए यह भी है, इस से दस गुना और भी। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने जवाब दिया, मुझे तो सिर्फ़ इतना याद है कि ख़ुदा-ए-तआला फ़र्माएगा, तेरे लिए यह भी है और इतना और भी। अबू सईद रज़ि० बोले, मैंने हज़रत सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि तेरे लिए यह भी है और दस गुना और भी।

४१७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि मुझे हुक्म दिया गया है कि जिस्म के सात हिस्सों पर सज्दा करूं, पेशानी पर और आपने इशारा हाथ व नाक की तरफ़ किया (और फ़र्माया) नाक पर, दोनों हाथों पर, दोनों घुटनों पर और पंजों पर, और हुक्म दिया गया है कि हम कपड़ों और बालों को इकट्ठा न करें।

४१८. हज़रत अनस रज़ि० ने फ़र्माया, जैसी नमाज़ मैंने नबी सल्ल० को पढ़ते देखा है, वैसी पढ़ूंगा, उस में कमी न करूंगा। बाक़ी हदीस ऊपर आ चुकी है।

४१६. हज़रत अनस से रिवायत है, हुज़ूर ने फ़र्माया, सज्दे में एत-दाल रखो, तुम से कोई शख्स सज्दे में कुत्ते की तरह कुहनियां न बिछाए, (यानी कुत्ते की तरह न बैठे।)

४२०. हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को नमाज़ पढ़ते हुए देखा है, जब हुज़ूर नमाज़ की ताक़ रक्अत में होते थे, तो उठते थे, बल्कि बराबर ठीक बैठ जाते थे।

४२१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० ने हम को नमाज़ पढ़ायी तो सर को सज्दे से उठाते वक़्त, सज्दा करते वक़्त और दो रक्अतों के बाद खड़े होने के वक़्त आवाज़ से तक्बीर कही और फ़र्माया, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसी तरह (करते) देखा है।

४२२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० नमाज़ में चार ज़ानू बैठते थे। जब उन्होंने अपने बेटे को इस तरह करते देखा तो मना किया और फ़र्माया, नमाज़ में यह ही सुन्नत है, तू अपना दायां पांव खड़ा रखे और बाएं पांव को मोड़े, बेटे ने कहा आप जो ऐसा करते हैं? फ़र्माया मेरे पांव मुझ को उठा नहीं सकते।

४२३. हज़रत अबू हुमैद सायदी रज़ि० ने फ़र्माया, मुझे नबी सल्ल० की नमाज़ तुम लोगों से ज़्यादा याद है, हुज़ूर सल्ल० को मैंने नमाज़ पढ़ते देखा है, जब आप तक्बीर (तहरीमा) कहते थे तो दोनों हाथ दोनों ज़ानुओं के सामने ले आते थे, जब रुकूअ करते थे दोनों हाथ घुटनों पर रखते थे और पीठ को मोड़ते थे। जब सर उठाते थे तो इतने सीधे हो जाते थे कि हर हिस्सा अपनी जगह पर लौट जाता था, फिर सज्दा करते थे, दोनों हाथ ज़मीन पर रखते थे, न बिछा देते थे, न मुट्ठी की तरह बन्द रखते थे। दोनों क़दमों की उंगलियों का रुख क़िब्ले की तरफ़ होता था, जब दोनों रक्अतों के बाद बैठते थे, तो बाएं पांव पर बैठते थे और दाएं पांव को खड़ा रखते थे और जब आख़िरी रक्अत में बैठते थे, तो बाएं पांव को आगे बढ़ा कर दूसरे को खड़ा कर के बैठने की जगह पर बैठते थे।

४२४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुहैना रज़ि० (यह क़बीला अज़दशनवाह से हैं क़बीला अज़्द बनू अब्द मुनाफ़ का साथी था) आप सहाबी

हैं। कहते हैं हम को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने नमाज़ पढ़ायी, पहली दो रक्अतों के बाद बैठे नहीं, बल्कि खड़े हो गए, लोग भी आप के साथ खड़े हो गए, जब आप नमाज़ पूरी कर चुके और लोगों ने सलाम का इन्तिज़ार किया, तो आपने बैठे-बैठे तक्बीर कही, सलाम से पहले दो सज्दे किए, फिर सलाम फेरा।

४२५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं, हम जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ते थे, तो क़ादा में अस्सलामु अला जिब्री ल व मीकाई ल अस्सलामु अला फ़्लां अला फ़्लां कहा करते थे। (यह सुन कर) हुज़ूर ने हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया, अल्लाह तआला तो ख़ुद सलाम है, जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो यह कहना चाहिए।

(तहीयात) 'अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिवातु अस्स-लामु अलै क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि, व ब र कातुहु अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन' क्योंकि जब तुम यह कलिमात कहोगे तो आसमान व ज़मीन में हर जगह ख़ुदा के हर नेक बन्दे को यह पहुंच जाएंगे (ऊपर के कलिमात का आख़िरी हिस्सा यह है) 'अशहदु अल ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

४२६. हज़रत आइशा रज़ि०, नबी सल्ल० की बीवी फ़र्माती हैं, हुज़ूर नमाज़ में यह दुआ करते थे, अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अऊज़ुबि-क मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्दज्जालि व अऊज़ुबि-क मिन फ़ित्नतिल्मह्या व फ़ित्नतिलममाति अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल मासिमि वल मग़्रिमि' यानी इलाही, क़ब्र की अज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूं, ऐ अल्लाह मैं मसीह व दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगता हूं और ज़िंदगी के फ़ित्ने से और मौत के फ़ित्ने से पनाह मांगता हूं, ऐ अल्लाह, मैं गुनाहों से, क़र्ज़दारी से तेरी पनाह चाहता हूं, एक शख़्स ने अर्ज़ किया, आप कर्ज़दारी से कितनी ज़्यादा पनाह चाहते हैं ? फ़र्माया जब आदमी क़र्ज़दार होता है, तो बात कहते वक़्त झूठ बोलता है और वायदा करता है, तो उस के ख़िलाफ़ करता है।

४२७. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में अर्ज़ किया, मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़र्माइए कि मैं नमाज़ में किया करूं। आपने फ़र्माया (यह) कहा करो, अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव व ला युग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त

फ़ग़िफ़र ली मग़्फ़िरतम मिन इन्दि-क व र्हम्नी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम यानी इलाही, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्श नहीं सकता (इस लिए) तू अपनी तरफ़ से मुझे बिल्कुल बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़र्मा। तू ग़फ़ूर व रहीम है।

४२८. तशह्हुद के बारे में इब्ने मस्ऊद रज़ि० की रिवायत की हुई हदीस ऊपर गुज़र चुकी है, दूसरी रिवायत में इतना और बढ़ा हुआ है कि अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू कहने के बाद अपने लिए जो दुआ बेहतरीन समझे, वह करे।

४२९. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० सलाम फेर देते, तो फिर औरतें खड़ी होकर चली जाती थीं और हुज़ूर सल्ल० उठने से पहले कुछ देर ठहरे रहते थे।

४३०. हज़रत उत्बान रज़ि० कहते हैं कि हमने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ी और जब आपने सलाम फेरा तो हमने भी फेरा।

४३१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के वक़्त में जब लोग फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ होते थे, तो बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र होता था और मैं इससे (नमाज़ के ख़त्म होने) को जान लेता था।

४३२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) कुछ ग़रीब आमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुए। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल ! बड़े-बड़े आदमी (मालदार) तो ऊंचे-ऊंचे दर्जों तक पहुंच गए और अनगिनत नेमतें उन को हासिल हो गईं, हमारी तरह नमाज़ भी पढ़ते हैं, हमारी तरह रोज़े भी रखते हैं (इस के अलावा) उनको माल की वजह से यह फ़ज़ीलत हासिल है कि हज और उमरा भी करते हैं जिहाद करते हैं, सद्क़ा और ख़ैरात करते हैं। आपने फ़र्माया क्या मैं तुमको वह चीज़ न बता दूं कि जिस पर अगर तुम चलने लगो तो पिछले लोगों का (मर्तबा) तुम को मिल जाए और आइन्दा तुम्हारे मर्तबे तक कोई न पहुंच सकेगा सिवाए उन लोगों के जो उस पर अमल करें। सभी उन आदमियों से तुम बेहतर हो जाओगे जिन में तुम मौजूद हो, तुम हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अक्बर पढ़ा करो। रावी कहता है कि इस के बाद हम में इख़्तलाफ़ पैदा हो गया क्योंकि एक शख़्स ने कहा कि मैं सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह तो तीस-तीस बार पढ़ूंगा

और अल्लाहु अक्बर चौंतीस बार, हम आप की ख़िद्मत में लौट कर हाज़िर हुए, तो आपने फ़र्माया कि सुब्हानल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह और अल्लाहु अक्बर हर एक तीस बार पढ़ो।

४३३. हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कहा करते थे 'ला इला-ह इल्ल-ल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीरुन अल्लाहुम-म ला मानि-अ लिमा अातै-त वला मुअ्ति-य लिमा मनअ्-त वला यन्फ़उ ज़ल्जद्दि मिन्कल्जद्दु' यानी 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और तारीफ़ उसी के लिए है,' वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, इलाही ! जो कुछ तू अता करे उस को कोई रोक नहीं सकता और दौलत वाले को उस की दौलत तुझ से बचा नहीं सकती।

४३४. हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० नमाज़ पढ़ चुकते, तो हमारी तरफ़ मुंह फेर कर मुतवज्जह होते थे।

४३५. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ि० कहते हैं, एक बार रात को बारिश हुई थी, सुबह को (फ़ज्र की) नमाज़ हुज़ूर ने हुदैबिया में हम को पढ़ायी, जब नमाज़ ख़त्म की, तो लोगों की तरफ़ मुंह कर के फ़र्माया, क्या तुम को मालूम है कि तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया ? लोगों ने अर्ज़ किया, ख़ुदा और उस का रसूल ख़ूब जानते हैं। आपने फ़र्माया (अल्लाह तआला फ़र्माता है,) कि मेरे बन्दों में कुछ लोग मोमिन हुए और कुछ लोग काफ़िर हुए। जो लोग कहते हैं, अल्लाह के फ़ज़्ल व रहमत से बारिश हुई, वह सितारों के (हक़ीक़ी असर) से मुन्किर हैं और मुझ पर उन का ईमान है और जो लोग कहते हैं कि फ़्लां-फ़्लां सितारों की वजह से बारिश हुई, उन का सितारों पर ईमान है और मेरे मुन्किर हैं।

४३६. हज़रत उक़्बा रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) मैंने मदीने में अस्र की नमाज़ हुज़ूर सल्ल० के पीछे पढ़ी, आपने सलाम फेरा और फ़ौरन जल्दी से उठ कर लोगों की गर्दनें छलांगते हुए किसी बीवी के हुजरे की तरफ़ तशरीफ़ लाए। लोग इस जल्दबाज़ी से कुछ परेशान हो गए। कुछ देर बाद आए और लोगों को इस जल्दी करने के वजह से ताज्जुब में देख कर फ़र्माया (नमाज़) में मुझे कुछ सोना याद आ गया (कि मेरे पास रखा

है।) मुझे अच्छा नहीं मालूम हुआ कि (ख़ुदा के ज़िक्र में) उसके (ख़्याल) से कुछ रोक हो, इस लिए मैंने उस को फ़ौरन बांट देने का हुक्म दिया।

४३७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० ने (एक बार) कहा तुम से कोई शख़्स अपनी नमाज़ में शैतान का कोई हिस्सा मुक़र्रर न करें, यानी यह गुमान न करे कि (नमाज़ के बाद) दाहिनी तरफ़ को फिरना वाजिब है और दूसरी तरफ़ न फिरना चाहिए, क्योंकि मैंने कई बार अल्लाह के रसूल सल्ल० को बायीं तरफ़ भी फिरते देखा है।

४३८. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स उस दरख़्त यानी लहसुन खाए, वह हमारे पास हमारी मस्जिदों में न आए, हज़रत जाबिर रज़ि० से पूछा गया कि इसे से क्या मुराद है? फ़र्माया, मेरा ख़्याल है कि आप का मतलब कच्चे (लहसुन) से होगा, कुछ कहते हैं कि आपने बदबू मुराद लिया है।

४३९. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स लहसुन या प्याज़ खाए, वह हम से या हमारी मस्जिदों से दूर रहे और अपने घर बैठा रहे और वाक़ई (एक बार) हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हांडी लायी गयी, जिस में कुछ सब्ज़ तरकारियां थीं, आप को इस में कुछ बू मालूम हुई, तो पूछा (इस में क्या है?) उस में कुछ साग वग़ैरह था। लोगों ने आप से अर्ज़ कर दिया, आपने फ़र्माया फ़लां सहाबी को दे दो। जब आपने उस को खोल कर देखा तो उस के खाने से कराहियत की और फ़र्माया तुम खाओ, क्योंकि मैं उस ज़ात से सरगोशी करता हूं जिस से तुम नहीं करते। दूसरी रिवायत में है आप के सामने तबाक़ लाया गया जिस में कुछ सब्ज़ियां थीं।

४४०. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि (एक बार) हुज़ूर सल्ल० एक (बड़े लावारिस बच्चे) की क़ब्र पर से गुज़रे, जो सब से अलग थी। (वहां) आप इमाम बने और लोगों ने उस पर सफ़ बांधी।

४४१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जुमा के दिन हर बालिग़ पर ग़ुस्ल वाजिब है।

४४२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से एक शख़्स ने पूछा, अल्लाह के रसूल सल्ल० के बाहर तशरीफ़ ले जाने के वक़्त क्या आप कभी मौजूद रहे हैं? फ़र्माया, हां, अगर मेरा मर्तबा आप की नज़र में न होता, तो मैं -

छोटी उम्र वाला होने की वजह से (सफ़र में) मौजूद न हो सकता। एक बाद हुज़ूर सल्ल० उस निशान के पास तशरीफ़ लाए जो कसीर बिन सुल्त रज़ि० के घर के पास है, (वहां) आपने ख़ुत्बा पढ़ा, फिर औरतों के पास तशरीफ़ ले जाकर उन को कुछ वाज़ व नसीहत की और सद्क़ा देने का हुक्म दिया। औरतें अपने हाथ अपनी बालियों की तरफ़ ले जाकर (उन को निकाल कर बिलाल रज़ि० के कपड़े में डालने लगीं, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० बिलाल के साथ घर में तशरीफ़ ले गये।

४४३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर तुम्हारी औरतें मस्जिद जाने के लिए रात को तुम से इजाज़त मांगें तो दे दो।

बाब १०

जुमा के बयान में

४४४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि हम (दुनिया में) सब से पिछले हैं, लेकिन क़ियामत के दिन सब से पहले हैं, सिर्फ़ इतनी बात है कि हम से पहले उन को किताब दी गई है और आज जुमा ख़ुदा का मुक़र्रर किया हुआ दिन है, जिस में वे लोग तो आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए हैं और हम को अल्लाह तआला ने हिदायत फ़र्मा दी, क्योंकि और लोग हम से पीछे रह गए, यहूद एक दिन और ईसाई दो दिन।

४४५. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, हर बालिग़ पर जुमा के दिन

ग़ुस्ल और मिस्वाक करनी वाजिब है और अगर मिल सके तो ख़ुश्बू लगानी वाजिब है।

४४६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने जुमा के दिन ग़ुस्ले जनाबत (नापाकी का ग़ुस्ल) किया और नमाज़ के इरादे से मस्जिद को चला, तो गोया एक ऊंट की क़ुर्बानी की और जो दूसरी घड़ी में गया, उसने गाय की क़ुर्बानी की और अगर तीसरी घड़ी में गया, गोया सींगदार मेंढे की क़ुर्बानी की और अगर चौथी घड़ी में गया तो उसने गोया मुर्ग़ी की क़ुर्बानी की और जब पांचवीं घड़ी में गया तो गोया अंडे की क़ुर्बानी की, इस के बाद जब इमाम (ख़ुत्बे के लिए) निकलता है तो फ़रिश्ते हाज़िर होकर ज़िक्र सुनते हैं और फिर नमाज़ के सवाब के अलावा और सवाब नहीं मिलता।

४४७. हज़रत सल्मान फ़ारसी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करे और हर मुम्किन पाकी हासिल करे, फिर अपना तेल या घर की ख़ुश्बू लगाए, इस के बाद (नमाज़ के लिए) निकले और दो शख़्सों में तफ़रीक़ न करे (यानी दो आदमियों के बीच में घुस कर न बैठे) फिर जब इमाम बोलने लगे तो ख़ामोश बैठ जाए तो उस के दूसरे जुमा से उस जुमा तक गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।

४४८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, मुझ से लोगों ने बयान किया कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया है, तुम अगर नापाक न हो तो भी ग़ुस्ल करो, सरों को धोओ और ख़ुश्बू लगाओ। मैंने जवाब दिया, ग़ुस्ल के बारे में तो ठीक है, लेकिन ख़ुश्बू का हुक्म मुझे मालूम नहीं।

४४९. हज़रत उमर रज़ि० ने मस्जिद के दरवाज़े पर एक रेशमी जोड़ा (बेचते हुए) देखा, तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! काश इस को आप ख़रीद लेते और जुमा के दिन, और उस दिन जब कि वफ़द आया करें पहन लिया करते, तो आपने फ़र्माया, इस को वही शख़्स पहनता है जिस का आख़िरत में कुछ हिस्सा न हो। इस के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में कुछ रेशमी जोड़े आए और आपने उन में से एक जोड़ा हज़रत उमर रज़ि० को दिया, हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, आपने अतारद के जोड़े के बारे में जो फ़र्माया था, वह क्या था ? (अब) आप यह मुझे पहनाते हैं। फ़र्माया मैंने तुम को इस लिए नहीं दिया कि तुम

खुद पहनो, हज़रत उमर रज़ि० ने वह जोड़ा अपने मुश्रिक भाई को दे दिया, जो मक्का में था।

४५०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अगर मुझ को अपनी उम्मत या लोगों की तक्लीफ़ का ख्याल न होता, तो मैं हर नमाज़ के वक़्त उन को मिस्वाक करने का हुक्म देता।

४५१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, मैंने मिस्वाक करने की बहुत ताकीद की है।

४५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जुमा के दिन फ़ज्र की नमाज़ में 'अलिफ़-लाम-मीम तंज़ील', 'हल अता अलल इन्सान' पढ़ा करते थे।

४५३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि तुम में से हर एक हाकिम है और तुम में से हर एक से उस की रियाया के बारे में सवाल किया जाएगा। इमाम (खलीफ़ा) हाकिम है और उस से उस की रियाया का सवाल किया जाएगा, मर्द अपने घर में हाकिम है और उसकी रियाया का उससे सवाल किया जाएगा। नौकर अपने मालिक के माल का हाकिम है और उस से उस की रियाया के बारे में सवाल किया जाएगा। रावी कहता है मेरा ख्याल है, हुज़ूर ने यह भी फ़र्माया था कि आदमी अपने बाप के माल का हाकिम है और उस से उस के रियाया के बारे में सवाल किया जाएगा और तुममें से हर एक हाकिम है जिस से रियाया के बारे में सवाल होगा।

४५४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस (जिस में बयान किया गया था) कि हम (दुनिया में) पिछले हैं और आख़िरत में सब से आगे अभी आ चुकी है, यहां इतना और बढ़ा हुआ है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हर मुसलमान पर वाजिब है कि हफ़्ते में एक दिन गुस्ल करे और सर व बदन धोये।

४५५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, जुमा के दिन लोग एक-एक करके अपने-अपने मकानों से और अवाली मदीना से मश्रिक़ी तरफ़ के गांवों से आया करते थे, (चूंकि) गर्द व ग़ुबार में होकर आते थे, इस लिए धूल उन पर पड़ी होती थी और पसीना आया होता था। (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० की खिद्मत में एक शख्स आया, आप उस वक़्त मेरे पास तशरीफ़ रखते थे। आपने फ़र्माया काश, तुम लोग आज के दिन

के लिए अच्छी तरह पाकीज़गी हासिल कर लिया करते।

४५६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि ये लोग मेहनती मज़दूर थे, जुमा में भी जब जाते, तो इसी हालत में होते, तो उन से कहा जाता था काश, तुम नहा-धो लेते (तो अच्छा होता।)

४५७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जुमा की नमाज़ सूरज ढलने के बाद पढ़ा करते थे।

४५८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब सर्दी ज़्यादा होती तो अल्लाह के रसूल सल्ल० (ज़ुहर) की नमाज़ में जल्दी करते थे और अगर गर्मी सख़्त होती थी तो नमाज़ में देर करते थे और ठंडक कर लेते थे, इस से मुराद जुमा की नमाज़ है।

४५९. हज़रत अबू अबस रज़ि० कहते हैं, मैं जुमा की नमाज़ के लिए जा रहा था, मैंने सुना कि हुज़ूर सल्ल० फ़र्मा रहे थे, जिस के दोनों क़दम अल्लाह तआला के रास्ते में ग़ुबार से भर जाएं उस को अल्लाह तआला दोज़ख़ हराम कर देगा।

४६०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस बात से मना फ़र्माया है कि आदमी अपने भाई को तो बैठे हुए से उठा दे और ख़ुद उस की जगह बैठ जाए, पूछा गया (यह हुक्म) जुमा में है! फ़र्माया जुमा, ग़ैर-जुमा (सब) में है।

४६१. हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० व हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में अज़ान उस वक़्त होती थी जब इमाम मेंबर पर बैठता था। जब हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा हुए और लोग ज़्यादा होने लगे तो आपने मक़ाम ज़वरा (मदीना में मस्जिद के क़रीब एक जगह थी) एक तीसरी अज़ान ज़्यादा कराई।

४६२. हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० का सिर्फ़ एक मुअज़्ज़िन था और जुमा के दिन जब इमाम मेंबर पर बैठता था तो उस वक़्त अज़ान दी जाती था।

४६३. हज़रत मुआविया रज़ि० बिन अबू सुफ़ियान रज़ि० जुमा के रोज़ मेंबर पर बैठे। मुअज़्ज़िन ने अज़ान दी और कहा, अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर। मुआविया ने (भी) कहा, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर। फिर मुअज़्ज़िन ने कहा अश्हदु अन-ल ला इला-ह इल्लल्लाह।

मुआविया रज़ि० ने कहा, मैं भी (यही कहता हूं।) मुअज़्ज़िन ने कहा 'अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह'। मुआविया रज़ि० ने कहा, मैं भी (यही कहता हूं।) जब मुअज़्ज़िन अज़ान पूरी कर चुका तो मुआविया रज़ि० बोले, लोगो! इसी तरह की मज्लिस में जब मुअज़्ज़िन ने अज़ान दी थी, तो मैंने हुज़ूर को वही (कलिमात) कहते सुना था, जो तुमने मेरी ज़ुबान से सुने।

४६४. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस जो मेंबर और दरूद पढ़ने के बारे में थी, वह पहले बयान कर दी गई। इस में दूसरी रिवायत के एतबार से इतना और बढ़ा दिया गया है कि हुज़ूर सल्ल० जब फ़ारिग़ हुए, तो लोगों की तरफ़ रुख करके फ़र्माया, लोगो! मैंने तुम से यह इस लिए कहा है कि तुम मेरी नमाज़ सीख लो और मेरी पैरवी करो।

४६५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं एक स्तून था, जिस से लग कर रसूलुल्लाह सल्ल० खड़े हुआ करते थे। जब आप के लिए मेंबर बना दिया गया तो हमने स्तून की ऐसी आवाज़ सुनी, जैसी दस माह की हामिला ऊंटनी की (कराह) होती है, आख़िर रसूलुल्लाह सल्ल० मेंबर से उतरे और उस स्तून पर अपना हाथ मुबारक रखा।

४६६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० खड़े होकर ख़ुत्बा पढ़ते थे, फिर बैठ जाते थे, फिर खड़े हो जाते थे, जिस तरह कि तुम अब करते हो।

४६७. हज़रत उमर बिन तग़लब रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में (एक बार कुछ) माल बांदी लाए गए। आपने इस ढंग से बांटा कि कुछ लोगों को तो दिया, कुछ को छोड़ दिया। इस के बाद आप को इत्तला मिली कि जिन को आपने छोड़ दिया वह नाराज़ हो गए हैं। (यह सुन कर) हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद फ़र्माया, ख़ुदा की क़सम! मैं कुछ लोगों को देता हूं और कुछ को नहीं देता वह मुझे ज़्यादा प्यारे होते हैं, लेकिन कुछ लोगों के दिलों में मुझे बेचैनी और घबराहट नज़र आती है, इस लिए उन को देता हूं और उन लोगों को मैं उस ग़िना व ख़ैर के सुपुर्द कर देता हूं जो अल्लाह तआला ने उन के दिलों में पैदा की है। इन ही में उमर बिन तग़लब रज़ि० हैं। उमर बिन तग़लब रज़ि० ने कहा मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के एक कलिमा के

बदले में मुंह फेर लेना पसन्द नहीं करता।

४६८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हुज़ूर सल्ल० मेंबर पर तशरीफ़ ले गए और यह आख़िरी दफ़ा था कि हुज़ूर मूंढों पर एक बड़ी चादर डाले हुए सर पर काली पट्टी बांधे हुए उस जगह पर बैठे थे, आपने हम्द व सना की, फिर फ़र्माया लोगो ! मेरे पास जमा हो जाओ। लोग पास आकर जमा हो गए। आपने फ़र्माया और लोग तो बढ़ते जाएंगे, मगर यह क़बीला अन्सार कम होते जाएंगे। उम्मत मुहम्मदिया में से जो शख़्स किसी चीज़ का मुतवल्ली हो, तो जहां तक नफ़ा या नुक़्सान पहुंचाने की ताक़त हो, मुहसिन के एहसान को क़ुबूल करे और ख़ताकारों की ख़ताओं से दरगुज़र करे।

४६९. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० (एक बार) जुमा के दिन लोगों को ख़ुत्बा सुना रहे थे। इतने में एक आदमी आया, आपने फ़र्माया, ऐ शख़्स ! क्या तुमने नमाज़ पढ़ ली ? उसने अर्ज़ किया नहीं, आपने फ़र्माया, उठ नमाज़ पढ़ ले।

४७०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के वक़्त में (एक बार) लोग क़हत में मुब्तला हुए, अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ुत्बा पढ़ने खड़े हुए। (ख़ुत्बे के बीच में) एक आराबी ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सारे माल (यानी जानवर) हलाक हो गए और बच्चे भूखे मर गए, हमारे लिए ख़ुदा से दुआ कर दीजिए। आपने अपने दोनों हाथ उठाए, (उस वक़्त) आसमान पर बादल का टुकड़ा नहीं दिखाई देता था, लेकिन क़सम है उस ख़ुदा की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, अपने हाथ नीचे नहीं किए थे कि पहाड़ों की तरह बादल उठा और मेंबर से आप उतरने न पाए थे कि आप की दाढ़ी से बारिश का (पानी) टपकने लगा, सारे दिन बारिश हुई, फिर दूसरे, तीसरे और चौथे दिन तक होती रही, यहां तक कि दूसरे जुमा तक हुई। इस के बाद वही आराबी या कोई और दूसरा शख़्स खड़ा होकर अर्ज़ करने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इमारतें गिरने लगीं और माल डूब गए। अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि (बारिश बन्द हो जाए।) इस पर आपने दोनों हाथ उठाए और कहा, इलाही ! हमारे आस-पास बारिश कर। हम पर न कर. हुज़ूर सल्ल० हाथ से जिस तरफ़ इशारा फ़र्माते थे, उधर का बादल फट जाता था। मदीना बिल्कुल फ़िज़ा की तरह कुशादा हो गया और सहराए

क़िनात में एक माह तक पानी बहता रहा, और जिस तरफ़ से जो शख्स आता था, बारिश की ज़्यादती बयान करता था।

४७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इमाम के ख़ुत्बा पढ़ने के वक़्त अगर तुम अपने साथी से यह कहो कि ख़ामोश हो जाओ, तो यह लग्व बात है (यानी यह भी नाजायज़ है।)

४७२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जुमा के दिन का तज़्किरा किया और फ़र्माया, इस में एक घड़ी ऐसी है कि अगर ठीक इस घड़ी में कोई मुसलमान बन्दा खड़े होकर नमाज़ पढ़े और अल्लाह तआला से कुछ मांगे तो अल्लाह तआला उस को ज़रूर अता करता है। आपने हाथ से इशारा फ़र्माया कि वह घड़ी बहुत थोड़ी है।

४७३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक क़ाफ़िला ग़ल्ले का लदा हुआ आया, सब लोग उस की तरफ़ मुतवज्जह हो गए, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई—

व इज़ा रऔ तिजारतन अव लह्व-नि-न्फ़ज़्ज़ू इलैहा व तरकू-क क़ायमन।

४७४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ुहर से पहले दो रक्अतें और उस के बाद दो रक्अतें घर में पढ़ते थे। इशा के बाद भी दो रक्अतें पढ़ते थे और जुमा के बाद नमाज़ (ज़ुहर) नहीं पढ़ते थे, जब घर वापस आते थे तो सिर्फ़ दो रक्अतें पढ़ते थे।

बाब ११

ख़ौफ़ की नमाज़ के बयान में

४७५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ नज्द की तरफ़ जिहाद में गया, जब हम लोग दुश्मन के मुक़ाबले पर खड़े हुए, सफ़ें बराबर कीं, तो उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हम को नमाज़ पढ़ायी, एक गिरोह आप के साथ खड़ा हुआ और दूसरा दुश्मन के मुक़ाबले पर रहा। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने साथ के गिरोह के साथ रुकूअ किया और दो सज्दे किए। इस के बाद ये लोग चले गए, और वह गिरोह जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी थी, आपने उस के साथ एक रुकूअ और दो सज्दे किए और सलाम फेर दिया (मुक़्तदियों में से हर आदमी खड़ा हुआ और अपनी-अपनी रकअत पूरी की।)

४७६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत करते हैं कि अगर लोग इस से ज़्यादा हों तो खड़े होकर और सवारी की हालत में नमाज़ पढ़ें।

४७७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० जब जंग अहज़ाब से वापस तशरीफ़ ला रहे थे, तो फ़र्माया कि हर शख़्स क़बीला बनू क़ुरैज़ा में पहुंच कर अस्र की नमाज़ पढ़े, जब अस्र का वक़्त रास्ते में ही गया, तो कुछ लोगों ने कहा कि हम तो वहां पहुंच कर नमाज़ पढ़ेंगे। कुछ कहने लगे कि हम तो पढ़ लेते हैं, हुज़ूर सल्ल० का यह मतलब तो न था कि अस्र की नमाज़ का वक़्त हो जाए—जब भी हम वहीं पहुंच कर नमाज़ पढ़ेंगे। कुछ कहने लगे कि हम तो पढ़ लेते हैं। लोगों ने आप से इस का ज़िक्र किया लेकिन आपने किसी से नागवारी नहीं ज़ाहिर फ़र्मायी।

बाब १२

ईदों के बयान में

४७८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए, (उस वक़्त) मेरे पास दो बांदियां बआस का गाना गा रही थीं। बआस एक क़िले का नाम का, जहां क़बीला औस व ख़ज़रज में एक सौ बीस साल तक लड़ाई जारी रही और आख़िर में हुज़ूर सल्ल० की बरकत से उन में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ हुआ। आप बिस्तर पर लेट गए और मुंह फेर लिया। (इतने में) हज़रत अबूबक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए और मुझे झिड़क कर फ़र्माया, शैतान का राग और रसूल के सामने ! आपने उन की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया, उन को रहने दो, इस के बाद जब हुज़ूर सल्ल० ग़ाफ़िल हो गए, तो मैंने बांदियों को इशारा किया और वह निकल कर चली गयीं।

४७९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर ईदुल फ़ित्र की सुबह को (नमाज़ को) कुछ खजूरें खाने से पहले नहीं जाते थे। हज़रत अनस रज़ि० की दूसरी रिवायत में आया है कि हुज़ूर खजूरें ताक़ अदद में खाते थे (यानी तीन या पांच या सात।)

४८०. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को ईदुल अज़्हा के दिन ख़ुत्बा पढ़ते हुए सुना, आप फ़र्मा रहे थे आज हम सब से पहले जो काम करेंगे, वह यह है कि नमाज़ पढ़ेंगे, फिर वापस होकर क़ुर्बानी करेंगे। जो शख़्स ऐसा करेगा वह हमारे तरीक़े को सही तौर पर पाएगा।

४८१. हज़रत बरा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ईदुल अज़्हा के दिन नमाज़ के बाद ख़ुत्बा सुनाया। आपने फ़र्माया जो शख़्स हमारी नमाज़ पढ़े और हमारी तरह ज़िब्ह करे तो उस

का फ़र्ज़ पूरा हो गया और जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह किया, तो उस का फ़रीज़ा अदा न हुआ। हज़रत बरा रज़ि० के मामूं हज़रत अबू बरदा बिन नय्यार ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपनी बकरी नमाज़ से पहले ज़िब्ह कर ली और यह ख्याल किया कि आज खाने-पीने का दिन है, इस लिए मैंने इस बात को पसन्द किया कि घर में सबसे पहले बकरी ज़िब्ह की जाए, इस लिए मैंने बकरी ज़िब्ह कर के नमाज़ से पहले खाना खा लिया, आपने फ़र्माया, तुम्हारी बकरी सिर्फ़ गोश्त की बकरी है (फ़र्ज़ अदा न हुआ।) उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे पास एक छः माह का बकरी का बच्चा है, जो दो बकरियों से भी ज़्यादा मुझे पसन्द है। क्या मेरी तरफ़ से वह काफ़ी होगा? फ़र्माया हां ! तेरे लिए काफ़ी होगा, मगर तेरे बाद और किसी के लिए काफ़ी न होगा।

४८२. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह तशरीफ़ ले जाते थे और सब से पहले जो काम करते थे, वह नमाज़ होती थी, फिर वापस आकर लोगों के सामने खड़े होते। लोग सफ़ें बांधे बैठे होते थे। आप उन को वाज़ व नसीहत फ़र्माते और अह्कामे इलाही को पूरा करने का हुक्म देते। अगर किसी लश्कर का इन्तिख़ाब करना चाहते तो कर लेते, या किसी और बात का हुक्म देना चाहते, तो दे देते। फिर वापस तशरीफ़ ले जाते, अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि लोग (मरवान के ज़माने तक) इसी हालत पर रहे, यहां तक ईदुल अज़्हा या ईदुल फ़ित्र (की नमाज़ के लिए) मैं मरवान के साथ निकला। उस वक़्त मरवान मदीने का हाकिम था। जब हम ईदगाह में आए, तो देखा कि कसीर बिन सल्त का बनाया हुआ एक मेंबर है और मरवान उस पर नमाज़ पढ़ने से पहले चढ़ना चाहता है। मैंने उस का कपड़ा पकड़ लिया, मगर उसने झटक कर और मेंबर पर चढ़ कर नमाज़ से पहले ख़ुत्बा शुरू कर दिया, मैंने कहा कि तुम ने रसूलुल्लाह सल्ल० का तरीक़ा बदल दिया, मरवान बोला, अबू सईद रज़ि० ! जो तुम्हारा इल्म था वह अब जाता रहा। मैंने कहा ख़ुदा की क़सम ! जो मैं जानता हूं वह उससे बेहतर है जिससे मैं वाक़िफ़ नहीं। उस ने जवाब दिया, बात यह है कि लोग सिर्फ़ हमारी वजह से नमाज़ के बाद नहीं बैठते, इस लिए मैंने ख़ुत्बे को नमाज़ से पहले कर दिया।

४८३. हज़रत इब्ने अब्बास व जाबिर बिन अब्दुल्लाह् रज़ि० कहते हैं कि ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र के दिन अज़ान नहीं दी जाती थी।

४८४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं ईद के दिन अल्लाह् के रसूल सल्ल०, अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, उमर रज़ि० और उस्मान रज़ि० के साथ रहा और ये सब ख़ुत्बे से पहले नमाज़ पढ़ते थे।

४८५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़र्माया, कोई अमल किसी ज़माने में इस (क़ुर्बानी) से इस दस दिन में ज़्यादा अफ़्ज़ल नहीं है। लोगों ने अर्ज़ किया न जिहाद? फ़र्माया न जिहाद। हां, जो शख़्स ख़तरे में जान व माल डाल कर निकला हो और किसी तरह वापस न आया हो (उस का मर्तबा ज़्यादा है।)

४८६. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि तुम अल्लाह् के रसूल सल्ल० के साथ लब्बैक किस तरह कहा करते थे। फ़र्माया लब्बैक कहने वाला लब्बैक कहा करता था और तक्बीर कहने वाला तक्बीर, और इस पर नागवारी का इज़्हार नहीं किया जाता था।

४८७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह् के रसूल सल्ल० ईदगाह् में नह्र भी करते थे और ज़िब्ह भी।

४८८. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि ईद के दिन रसूलुल्लाह् सल्ल० (वापसी) का रास्ता बदल देते थे।

४८९. हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत की हुई हदीसे हब्शा गुज़र चुकी है, यहां इतनी और ज़्यादती है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़र्माया कि हज़रत उमर रज़ि० ने उन लोगों को झिड़का, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ऐ बनू अर्फ़िदा चैन से खेलो (ऐ उमर रज़ि० ! बनी अर्फ़िदा को रहने दे।)

बाब १३

वित्र के बयान में

४६०. हजरत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से रात की नमाज के बारे में पूछा, आपने फ़र्माया, रात की नमाज दो-दो रक्अत होनी चाहिए, हां अगर किसी को सुबह होने का डर हो तो एक रक्अत पढ़े ताकि पढ़ी हुई नमाज वित्र बन जाए।

४६१. हजरत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ग्यारह रक्अतें पढ़ते थे, सो यह आप की रात की नमाज़ थी और आप इतना लंबा सज्दा करते थे, जितनी देर में तुम में से कोई पचास आयतें पढ़े और इतनी देर तक (बराबर) सज्दे में रहते थे और दो रक्अतें नमाज फ़ज्र से पहले पढ़ते थे, उस के बाद दायीं करवट पर उस वक़्त तक लेटे रहते थे कि मुअज्जिन अज़ान के लिए आप की खिदमत में हाज़िर होता था।

४६२. हजरत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर ने सारी रात वित्र पढ़ी और सुबह को आप की वित्र खत्म हुई।

४६३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, रात के वक़्त वित्रों को आखिरी नमाज बनाओ।

४६४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० (सफ़र में) ऊंट पर वित्र पढ़ते थे।

४६५. हजरत अनस रज़ि० से पूछा गया, क्या अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सुबह की नमाज में दुआ-ए-कुनूत पढ़ी है। फ़र्माया, हां। फिर पूछा गया कि क्या रुकूअ से पहले क़ुनूत पढ़ी है, फ़र्माया रुकूअ से थोड़ी देर बाद।

४६६. हजरत अनस रज़ि० से पूछा गया कि नबी के ज़माने में

दुआ-ए-कुनूत पढ़ी जाती थी, फ़र्माया, हां (पढ़ी जाती थी।) पूछा गया क्या रुकूअ से पहले या बाद ? फ़र्माया, पहले। अर्ज़ किया गया, फ़्लां शख्स तो कहता है कि आपने रुकूअ से पहले फ़र्माया है। फ़र्माया झूठ कहा, रसूलुल्लाह सल्ल० ने रुकूअ के बाद एक माह तक कुनूत पढ़ी और मेरा ख्याल है कि आपने मश्रिक़ की तरफ़ लगभग सत्तर आदमी भेजे, जिन को क़ारी कहा जाता था, ये मुश्रिक उन मश्रिकीन के अलावा थे, जिन से समझौता था, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुआ-ए-कुनूत पढ़ी और एक माह तक उन के लिए बद-दुआ करते रहे, दूसरी रिवायत में है, हुज़ूर सल्ल० ने एक माह तक दुआ-ए-कुनूत पढ़ी और रअल व ज़क्वान के लिए बद-दुआ करते रहे।

४६७. हज़रत अनस रज़ि० से यह भी रिवायत है कि कुनूत मग़रिब व फ़ज्र में है।

बाब १४

बारिश की दुआ का बयान

४६८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) नबी सल्ल० बारिश (की दुआ करने) के लिए निकले और चादर को पलट लिया। अब्दुल्लाह रज़ि० की दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।

४६९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस ऊपर गुज़र चुकी जिस में नबी सल्ल० ने कमज़ोर मोमिनों के लिए दुआ और क़बीला मुज़र के लिए बद-दुआ की थी, यहां इतनी और ज़्यादती है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क़बीला ग़िफ़ार की ख़ुदा मग़्फ़िरत करे और क़बीला असलम को ख़ुदा सालिम रखे।

५००. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जब लोगों की इस्लाम से सरकशी देखी, तो कहा इलाही ! इन पर यूसुफ़ रज़ि० के वर्षों की तरह के सात साल क़हत मुसल्लत फ़र्मा। (इस बद-दुआ की वजह से) उन पर ऐसा क़हत पड़ा कि हर चीज़ को ख़त्म कर दिया, यहां तक कि चमड़ा और मुर्दार खाने लगे और यहां तक नौबत पहुंची कि भूख की वजह से आसमान पर धुआं नज़र आने लगा। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अबूसुफ़ियान रज़ि० हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद सल्ल० ! आप अल्लाह की इताअत और रिश्तों के जोड़ने का हुक्म देते हैं और आप की क़ौम हलाक हो चुकी, उन के लिए ख़ुदा से दुआ कीजिए । (इस के जवाब में) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आसमान पर खुला हुआ धुआं आ जाए, (यानी क़ियामत के दिन ।) उस दिन का इन्तिज़ार करो, जब हम सख़्त पकड़ करेंगे। (इस से मुराद जंग बद्र है) बाक़ी आयते लिज़ाम और आयते रूम बाक़ी रही (लिज़ाम से मुराद है, जंग-बद्र या क़ियामत मुराद है।)

५०१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के चेहरा-मुबारक को देखता था कि आप बारिश तलब करते थे। बारिश उस वक़्त नहीं होती थी। (आप की दुआ से इतनी बारिश हुई कि) सारे परनाले बहने लगे, इस पर मुझे अबू तालिब का शेर याद आया—

व अब यज़ु मस्तस्क़ल्ग़ मामु बिवज्हिही समालल यतामा अस्मतुल लिल अरासिली०

यानी आप सफ़ेद चेहरे वाले हैं कि आप की शक्ले मुबारक की बदौलत बादल से बारिश तलब की जाती है और आप यतीमों की फ़रियाद सुनने वाले और बेवाओं की मुहाफ़िज़ हैं।

५०२. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत है कि जब लोग क़हत में मुब्तला हो जाते थे, तो हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मत्तलिब के तुफ़ैल से बारिश तलब किया करते थे और कहते थे इलाही ! हम तेरे पास अपने नबी का वसीला लाते थे, तो तू हम को बारिश देता था, अब तेरे पास अपने नबी के चचा का वसीला लाते हैं, हम को बारिश अता फ़र्मा, लोगों के लिए बारिश हो जाती थी।

५०३. हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत की हुई हदीस ऊपर आ चुकी है, जिस में बयान किया गया था कि हुज़ूर सल्ल० के ख़ुत्बा पढ़ते में एक आदमी आया था और हुज़ूर सल्ल० से बारिश की दुआ कराने का ख़्वास्तगार हुआ था, दूसरी रिवायत के मुताबिक़ उस में इतना और बढ़ा हुआ है कि लोग कहते थे, हमने कुछ दिन सूरज नहीं देखा। आगे जुमा को उसी दरवाज़े से एक आदमी दाख़िल हुआ। आप खड़े ख़ुत्बा पढ़ रहे थे। वह आप के सामने खड़ा होकर अर्ज़ करने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जानवर हलाक हो गए और रास्ते बन्द हो गए, हुज़ूर सल्ल० दुआ करें कि अल्लाह तआला इस बारिश को रोक दे, आपने दोनों हाथ उठा कर कहा, इलाही! हमारे इर्द-गिर्द बरसा, हम पर नहीं। इलाही! टीलों पर, जंगलों में, दरख़्तों के पैदा होने वाली जगहों में न बरसा। रावी कहता है (आप की दुआ से) बारिश बन्द हो गयी और हम धूप में फिरते थे।

५०४. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने दोनों हाथ उठाए और कहा, ऐ ख़ुदा! हम को बारिश अता फ़र्मा। ऐ ख़ुदा! हम को बारिश अता फ़र्मा। ऐ ख़ुदा! हम को बारिश अता फ़र्मा।

५०५. बारिश की दुआ के बारे में अब्दुल्लाह बिन ज़ैद की रिवायत की हुई हदीस का ज़िक्र कर दिया गया, इस रिवायत में इतना और है कि हुज़ूर क़िब्ले की तरफ़ रुख कर के दुआ करने लगे, फिर अपनी चादर को लौट लिया। इस के बाद सब को दो रक्अत नमाज़ पढ़ायी।

५०६. हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० किसी दुआ में दोनों हाथ नहीं उठाते थे, हां बारिश की दुआ में उठाते थे और आप की बग़लों की सफ़ेदी नज़र आ जाती थी।

५०७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब बादल देखते तो फ़र्माते (इलाही!) नफ़ाबख़्श बारिश (कर।)

५०८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब तेज़ हवा चलती थी, तो उस से हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर एक असर पैदा होता था।

५०९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, पुरवा हवा से मेरी मदद की गई और पछुआ हवा से क़ौम आद को हलाक किया गया।

५१०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, ऐ ख़ुदा ! हमारे मुल्क शाम यमन में बरकत अता कर। (नज्दियों ने कहा) और हमारे नजद में ? आपने (फिर) फ़र्माया, ऐ ख़ुदा ! हमारे मुल्क शाम व यमन में बरकत अता कर। (नजदी बोले) और हमारे नजद में ? आपने फ़र्माया, वहां ज़लज़ले और फ़िल्ने होंगे और वहां से शैतान का सींग निकलेगा।

५११. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया ग़ैब की पांच कुंजियां हैं जिन को सिवाए ख़ुदा के कोई नहीं जानता और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल क्या होगा, कोई नहीं जानता कि रहमों के अन्दर क्या है, (लड़की) है या (लड़का?) कोई नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा ? कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा ? कोई नहीं जानता कि बारिश कब होगी ?

बाब १५

सूरज ग्रहन के बयान में

५१२. हज़रत अबू बकरह रज़ि० कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि सूरज ग्रहन हुआ, आप फ़ौरन खड़े हो गए और चादर खींचते हुए मस्जिद में दाख़िल हो गए। हम भी मस्जिद में आ गए। आपने हम को दो रकअतें पढ़ायीं, और पढ़ने में सूरज रोशन हो गया। इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, किसी की मौत की वजह से चांद-सूरज ग्रहन नहीं हुआ करते हैं। अगर तुम ग्रहन देखो तो नमाज़ पढ़ो, दुआ करो, यहां तक कि अंधेरा जाता रहे। अबूबक्र रज़ि० की दूसरी

रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला दोनों में ग्रहन करके अपने बन्दों को डराता है। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि० की रिवायत इस तरह है, रसूलुल्लाह की ज़िंदगी में जब आप के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम का इंतिक़ाल हुआ, उस दिन सूरज ग्रहन हुआ। लोगों ने ख्याल किया कि हज़रत इब्राहीम रज़ि० की वफ़ात की वजह से सूरज ग्रहन हो गया। आपने फ़र्माया, किसी के मरने-जीने की वजह से चांद-सूरज ग्रहन नहीं हुआ करते। तुम जिस वक़्त ग्रहन देखो तो नमाज़ पढ़ो और ख़ुदा से दुआ करो, एक रिवायत में हज़रत आइशा रज़ि० से यों नक़ल किया गया है कि (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में सूरज ग्रहन हुआ, आपने लोगों को नमाज़ पढ़ायी, चुनांचे पहले क़ियाम बहुत लम्बा हो गया, फिर रुकूअ भी बहुत लम्बा था, इसके बाद बहुत लम्बा रुकूअ किया, मगर यह रुकूअ भी पहले रुकूअ से कम था। फिर सज्दा किया और बहुत तवील सज्दा किया, दूसरी रक्अत में भी पहली रक्अत की तरह किया और सलाम फेर दिया। (पढ़ते-पढ़ते) सूरज रोशन हो चुका था, इस के बाद लोगों को ख़ुत्बा सुनाया, ख़ुदा की हम्द व सना के बाद फ़र्माया, चांद-सूरज ख़ुदा की आसारे क़ुदरत में से दो निशानियां हैं, यह किसी के मरने-जीने से ग्रहन नहीं होते हैं, जिस वक़्त ऐसा देखो तो अल्लाह तआला से दुआ करो, तक्बीर कहो, नमाज़ पढ़ो और सद्क़ा दो, ख़ुदा की क़सम! ऐ मुहम्मद सल्ल० की उम्मत! इस मामले में अल्लाह तआला से ग़ैरतमंद कोई नहीं है कि उस का बंदा या बंदी ज़िना करे। ऐ मुहम्मद सल्ल० की उम्मत! ख़ुदा की क़सम, अगर तुम को वह इल्म होता जो मुझ को है, तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा।

५१३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के ज़माने में सूरज ग्रहन हुआ तो निदा की गई कि नमाज़ तैयार है।

५१४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक यहूदी औरत मुझसे कुछ पूछने आयी, वह बात-चीत करते-करते कहने लगी, ख़ुदा तुम को क़ब्र के अज़ाब से बचाए, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा, क्या (लोगों पर) क़ब्रों में अज़ाब होगा? आपने फ़र्माया, हां। हुज़ूर सल्ल० क़ब्र के अज़ाब से बहुत ज़्यादा पनाह मांगा करते थे, फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० से सूरज ग्रहन होने का ज़िक्र किया, आख़िर में आपने फ़र्माया कि लोग क़ब्र के अज़ाब से

पनाह मांग।

५१५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने सूरज ग्रहन का लंबा वाक़िआ ज़िक्र करने के बाद फ़र्माया कि लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने हुज़ूर सल्ल० को देखा कि आपने अपनी जगह पर कोई चीज़ ली, फिर आप पीछे को हटे, फ़र्माया, मैंने जन्नत को देख लिया और उस में से एक गुच्छा अंगूर लेना चाहा, अगर मुझे वह मिल जाता तो जब तक दुनिया बाक़ी है तुम उस को खाते रहते, फिर मैंने दोज़ख को देखा तो आज तक दोज़ख की तरह कोई होलनाक मन्ज़र मेरे सामने नहीं आया, दोज़ख वालों में मैंने ज़्यादा तायदाद औरतों की देखी, लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस की क्या वजह है ? फ़र्माया, उनकी ना-शुक्री की वजह से। अर्ज़ किया गया, क्या वह खुदा की ना-शुक्री करती है ? फ़र्माया ख़ाविंद की ना शुक्री करती हैं और एहसान का इंकार करती हैं। अगर तुम लोग उन के साथ सारी उम्र एहसान करो और फिर तुम्हारी तरफ़ से कोई एक नागवारी की बात नज़र आ जाए, तो कहने लगती हैं कि तुमने हम से कभी अच्छा सुलूक नहीं किया।

५१६. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० कहती हैं कि सूरज ग्रहन के वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने ग़ुलामों को आज़ाद करने का हुक्म दिया है।

५१७. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं, (एक बार) सूरज ग्रहन हुआ, हुज़ूर सल्ल० घबराये हुए उठ खड़े हुए, आप को डर हुआ, कहीं क़ियामत न हो, फिर मस्जिद में तशरीफ़ लाए, नमाज़ पढ़ी, रुकूअ, सुजूद और क़ियाम इतना लम्बा किया कि इससे पहले मैंने कभी हुज़ूर सल्ल० को ऐसा करते नहीं देखा। इस के बाद फ़र्माया, खुदा की ये निशानियां किसी के मरने-जीने से नहीं होती हैं। अल्लाह तआला क़ुदरत की इन निशानियों से बंदों को डराता है, अगर इन में से कोई बात देखो, तो खौफ़ करो और ज़िक्र, अस्तग़्फ़ार और दुआ में मश्ग़ूल हो।

५१८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चांद-ग्रहन की नमाज़ में आवाज़ से क़िरात पढ़ी, क़िरात से फ़ारिग़ होकर तक्बीर कह कर रुकूअ किया। रुकूअ से सर उठा कर समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना लकल हम्दु, कहा। सूरज ग्रहन की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोबारा क़िरात करते थे। दो रक्अतों में चार रुकूअ और चार सज्दे करते थे।

बाब १६

तिलावत के सज्दों के बयान में

५१९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) नबी सल्ल० के मक्का में सूरः नज्म पढ़ी और उसमें सज्दा किया। आप के साथ जो लोग नमाज़ में शरीक हुए थे, उन्होंने भी सज्दा किया। हां, एक बुड्ढे ने नहीं किया और मुट्ठी भर कंकरियां और मिट्टी उठा कर पेशानी से लगा ली और कहने लगा, मेरे लिए यही काफ़ी है। (रावी कहता है,) मैंने देखा वह कुफ़्र की हालत में क़त्ल किया गया।

५२०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का क़ौल है कि सूरः स्वाद (का सज्दा) वाजिब सज्दों में से नहीं है। मैंने नबी सल्ल० को उस में सज्दा भी करते देखा है. इब्ने मस्ऊद रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस तो अभी ऊपर गुज़र चुकी है, जिस में बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सूरः नज्म में सज्दा किया, दूसरी रिवायत में इतना और ज़्यादा है कि आप के साथ मुसलमानों ने, मुश्रिकों ने और जिन्न व इन्स ने सज्दा किया।

५२१. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने सूरः नज्म पढ़ी और उस में सज्दा नहीं किया।

५२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० के बारे में रिवायत है कि उन्होंने सूरः 'इज़स्समाउन्शक़्क़त' पढ़ी और सज्दा किया। इस के बारे में कुछ (एतराज़ के तौर पर) कहा गया तो फ़रमाया, अगर मैंने नबी को सज्दा करते न देखा होता, तो सज्दा न करता।

५२३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हमारे सामने सज्दे वाली कोई आयत तिलावत फ़रमाते थे, तो सज्दा करते थे और हम भी करते थे।

बाब १७

मुसाफ़िर की नमाज़ के बयान में

५२४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उन्नीस दिन ठहरे रहे और क़स्र करते रहे।[1]

५२५. हज़रत अनस रज़ि० कहते है कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ मक्का जाने के लिए मदीना से निकले। आप मदीने को वापस आ जाने तक दो ही रक्अतें पढ़ते रहे। हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया, क्या आप मक्का में मुक़ीम (ठहरने वाला) रहे, तो फ़र्माया, हां दस दिन मुक़ीम रहे।

५२६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ, हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ, हज़रत उमर रज़ि० के साथ, मिना के मक़ाम में दो रक्अतें पढ़ीं और हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ उन की खिलाफ़त की शुरूआत में (दो रक्अतें) पढ़ीं, फिर उन्होंने पूरी नमाज पढ़ी।

५२७. हज़रत हारिसा बिन वह्ब रज़ि० कहते हैं कि मिना में पहले बहुत ज्यादा अम्न हो गया था, उस वक़्त भी मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ वहां दो ही रक्अतें पढ़ीं।

५२८. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से जब कहा गया कि हज़रत उस्मान ने मिना के मक़ाम में चार रक्अतें पढ़ीं, तो—'इन्ना लिल्लाह' पढ़

१. ४८ मील से कम दूरी पर क़स्र नहीं और १५ दिन से कम ठहरने की नीयत हो तो क़स्र की जा सकती है। वरना १५ दिन या उस से ज्यादा की नीयत हो तो फ़िर क़स्र नहीं है अगर किसी की नीयत १५ दिन से कम ठहरने की थी, मगर इत्तिफ़ाक़ी तौर पर और ज्यादा ठहर गया तो क़स्र पढ़ सकता है।

कर बोले, मैंने अल्लाह के रसूल के साथ मिना में दो रक्अतें पढ़ीं, तो काश, चार रक्अतों में से मेरे हिस्से में दो मक़बूल रक्अतें आ जाएं।

५२६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिस औरत का ईमान ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर हो, उस के लिए यह हलाल नहीं कि बिना महरम के साथ के एक दिन-रात की दूरी का सफ़र करे।

५३०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने देखा जब हुज़ूर को जल्द चलना होता था, तो मग़रिब की नमाज़ देर से पढ़ते थे और तीन रक्अतें पढ़ कर सलाम फेर कर कुछ देर इन्तिज़ार फ़र्माते थे, फिर इशा के लिए उठते थे और इशा की दो रक्अतें पढ़ कर सलाम फेर देते थे। इशा के बाद नफ़्ल न पढ़ते थे, इस के बाद बीच रात में क़ियाम फ़र्माते थे।

५३१. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० बिला क़िब्ला की तरफ़ रुख किये, सवारी पर नफ़्ल नमाज़ पढ़ लेते थे।

५३२. हज़रत अनस रज़ि० के बारे में रिवायत है कि आपने गधे पर सवारी की हालत में नमाज़ पढ़ी और गधे का रुख क़िब्ले के बायीं तरफ़ था, जब उन से पूछा गया, तो फ़र्माया, अगर मैं नबी सल्ल० को ऐसा करते हुए न देखता तो हरगिज़ ऐसा न करता।

५३३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के साथ मैं रहा, मगर कभी हुज़ूर सल्ल० को सफ़र में नफ़्लें पढ़ते नहीं देखा और अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० (की सुन्नत) के अन्दर तुम्हारे लिए अच्छी पैरवी है।

५३४. हज़रत आमिर बिन रबीअ रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को सफ़र में सवारी पर नफ़्ल पढ़ते देखा, सवारी का रुख चाहे जिधर भी हो।

५३५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, जब हुज़ूर सफ़र में होते थे, तो ज़ुहर व अस्र और मग़रिब व इशा की नमाज़ें इकट्ठी कर लिया करते थे।

५३६. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं, मुझे बवासीर थी। मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से नमाज़ के बारे में पूछा। आपने फ़र्माया,

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो। अगर ताक़त न हो तो बैठ कर पढ़ो। (इतनी भी) ताक़त न हो तो पहलू पर (लेट कर पढ़ो।)

५३७. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को रात को नमाज़ कभी बैठ कर पढ़ते हुए नहीं देखा। जब बड़ी उम्र को पहुंच गए तो (उस वक़्त) बैठ कर क़िरात करते थे और रुकूअ करना चाहते थे, तो खड़े हो जाते थे और लगभग तीस-चालीस आयतें पढ़ कर रुकूअ करते थे।

५३८. हज़रत आइशा रज़ि० से दूसरी रिवायत में इतना और है कि हुज़ूर सल्ल० इसी तरह दूसरी रक्अत में भी करते थे। जब नमाज़ पूरी कर चुकते और मैं जागती होती, तो मेरे साथ बातें करते थे और सोती होती, तो आप लेट जाते थे।

बाब १८

तहज्जुद की नमाज़ के बयान में

५३९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब रात को तहज्जुद की नमाज़ के लिए खड़े होते थे तो कहते थे, 'अल्लाहुम-म लकल हम्दु अन-त क़य्यिमुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मन फ़ी हिन-न व लकल हम्दु अन-त नूरुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फ़ी हिन-न व लकल हम्दु अन-त मलकुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फ़ी हिन-न व लकल हम्दु अन-तल हक़्क़ु व वअदु कल हक़्क़ु वलिक़ाउ-क हक़्क़ुन व क़ौलु-क हक़्क़ुन वल्जन्नतु हक़्क़ुन वन्नारु हक़्क़ुन वस्साअतु हक़्क़ुन अल्लाहुम म लकल अस्लमतु रब्बि-क आमन्तु व अलै-क तवक्कलतु व इलै-क अनब्तु व बि-क ख़ासम्तु व इलै-क हाकम्तु फ़ग़्फ़िर ली मा क़द्दमतु व मा अख़्ख़रतु

वमा असर रतु वमा आलन्तु अन्तल मुक़द्दिमतुन व अन्तल मुअख़्ख़िर तुन ला इला-ह इल्ला अन-त व ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाह०
(तर्जुमा) इलाही ! तेरे लिए हम्द मुनासिब है, तू आसमानों की, ज़मीनों की और उन चीज़ों की जो उनमें हैं तद्बीर करने वाला है। तेरे ही लिए हम्द मुनासिब है, तू आसमानों को, ज़मीनों को और उन चीज़ों को, जो उन में हैं, रोशन करने वाला है, तेरे ही लिए हम्द मुनासिब है, तू हक़ है। तेरा वायदा हक़ है। तेरी मुलाक़ात हक़ है, तेरा क़ौल हक़, है, जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, सारे अंबिया हक़ हैं, मुहम्मद हक़ हैं, क़ियामत हक़ है, इलाही ! मैं तेरा ताबेदार हूं, तुझ पर ईमान लाया हूं, तुझी पर मेरा भरोसा है, तेरी ही तरफ़ मैं रुजू करता हूं, तेरी ही मदद से मैं दुश्मनों पर झगड़े में ग़ालिब आया हूं, तेरे ही सामने मुहाकमा पेश करता हूं, मेरे अगले-पिछले, छिपे-ज़ाहिर गुनाह माफ़ फ़र्मा दे, तू ही मुक़द्दम करने वाला और तू ही मुअख़्ख़र करने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है और बस ख़ुदा ही से सारी क़ूवत और ताक़त है।

५४०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की ज़िंदगी में जब लोग कोई ख़्वाब देखते, तो आप के सामने बयान करते। मुझे भी ख़्वाहिश पैदा हुई कि कोई ख़्वाब देखूं और अल्लाह के रसूल सल्ल० से बयान करूं। (उस वक़्त मैं) नवजवान लड़का था। और हुज़ूर के ज़माने में मस्जिद में सोया करता था, मैंने ख़्वाब में देखा कि दो फ़रिश्ते मुझे पकड़े हुए दोज़ख़ को लिए जा रहे हैं। यकायक दोज़ख़ की ऐसी मेंड़ बन गयीं, जैसी कुंए की होती है और फिर फ़ौरन उसमें दो सींग लग गए। इस में मैंने कुछ जान-पहचान के आदमी देखे हैं। यह देख कर कहने लगा कि दोज़ख़ से मैं ख़ुदा की पनाह चाहता हूं। फिर एक फ़रिश्ता मिला और मुझ से कहने लगा, तुझे डरना न चाहिए। मैंने यह ख़्वाब हज़रत हफ़्सा से बयान कर दिया और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ कर दिया। आपने फ़र्माया अब्दुल्लाह अच्छा आदमी है, काश रात की नमाज़ पढ़ा करता, इसके बाद मैं रात को बस थोड़ी ही देर सोता था।

५४१. हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की तबियत (एक बार) नासाज़ हो गई और आप एक-दो रात तहज्जुद के लिए न उठे।

५४२. हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० फ़र्माते हैं, (एक

बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० रात के वक़्त मेरे पास और अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, नमाज़ नहीं पढ़ते हो ? मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारी जानें अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं, जब वह हम को उठाना चाहता है, उठा देता है। जब हमने यह कहा तो आप वापस हो गए, मुझे कोई जवाब नहीं दिया। मैं देख रहा था कि आप वापसी में अपनी रानों को (ताज्जुब से) पीट रहे थे और फ़र्मा रहे थे, इंसान सब से ज़्यादा झगड़ालू है।

५४३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि इस के बावजूद कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को कोई अमल पसन्द होता था, लेकिन इस डर से आप उस को छोड़ देते थे कि शायद लोग इस पर अमल करने लग जाएं और वह इन पर फ़र्ज़ हो जाए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने चाश्त की नमाज़ कभी नहीं पढ़ी, मगर मैं इस को पढ़ती हूं।

५४४. हज़रत मुग़ीरा इब्ने शोबा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० खड़े होकर नफ़्ल इतना पढ़ते थे कि आप के दोनों पांव या पिंडुलियों में सूजन आ जाती थी। जब आप से अर्ज़ किया जाता कि इतनी इबादत क्यों करते हैं ? तो फ़र्माते, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं ?

५४५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा प्यारी नमाज़ हज़रत दाऊद अलै० की थी और अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा रोज़े भी हज़रत दाऊद अलै० के थे, हज़रत दाऊद अलै० आधी रात सोते थे, तिहाई रात नमाज़ पढ़ते थे, फिर रात के छठे हिस्से में सोते थे और एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार से रहते थे।

५४६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को सब से ज़्यादा पसन्द वह अमल था जो हमेशा (पाबंदी के साथ) हो। हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा गया कि हुज़ूर सल्ल० कब उठा करते थे ? फ़र्माया, जब मुर्ग़ की आवाज़ सुनते थे, और दूसरी रिवायत में है, जब मुर्ग़ की आवाज़ सुनते थे, तो उठते थे, फिर नमाज़ पढ़ते थे।

५४७. हज़रत आइशा रज़ि० से एक रिवायत नक़ल की गयी है कि जब सुब्ह का वक़्त होता था, हुज़ूर ख़्वाब में होते थे।

५४८. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) जो मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ रात को नमाज़ पढ़ी, तो आप खड़े ही

रहे, यहां तक कि मैंने एक बुरा इरादा किया, पूछा गया कि आपने क्या इरादा किया था ? फ़र्माया, मैंने इरादा किया था कि खुद बैठ जाऊं और आप को खड़ा छोड़ दूं ।

५४६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० की रात की नमाज़ तेरह रक्अत होती थी ।

५५०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि रात की नमाज़ अल्लाह के रसूल सल्ल० तेरह रक्अत पढ़ते थे, इन ही में वित्र और सुबह की दो रक्अतें शामिल होती थीं ।

५५१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० महीने में इतने दिनों तक रोज़े न रखते थे कि हमारा ख्याल हो जाता था कि शायद अब रोज़े न रखेंगे, फिर इतने (लगातार) रोज़े रखते थे कि हमारा ख्याल हो जाता था कि इसमें (शायद) आप एक रोज़ा भी न छोड़ेंगे और अगर कोई चाहता कि हुज़ूर सल्ल० को रात के वक़्त नमाज़ पढ़ते देख ले, तो देख सकता था और अगर चाहता कि सोते हुए देख ले, तो देख सकता था ।

५५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, जब तुम में से कोई शख्स सो जाता है तो शैतान उस की गुद्दी पर तीन गिरहें लगाता है, हर गिरह लगा कर (कहता है) तू लम्बी रात में सोता रह । अब अगर जाग कर आदमी खुदा की याद करता है तो एक गिरह खुल जाती है और जब वुज़ू करता है तो दूसरी गिरह खुलती है और जब नमाज़ पढ़ता है, तीसरी गिरह भी खुल जाती है और सुबह को पाक-साफ़ उठता है, वरना सुबह को सुस्त और दिल का कमीना बन कर उठता है ।

५५३. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने एक शख्स का ज़िक्र किया गया, वह बराबर सोता रहता है और सुबह को नमाज़ नहीं पढ़ता है, आपने फ़र्माया, शैतान उस के कान में पेशाब कर देता है ।

५५४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, हर रात, जब कि रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रहता है अल्लाह तआला दुनिया के आसमान पर नुज़ूल फ़र्माता है और इर्शाद फ़र्माता है कि कौन शख्स है जो मुझ से दुआ करे और मैं उस की दुआ क़ुबूल कर लूं ? कौन शख्स है जो मुझ से कुछ मांगे और मैं उस को अता करूं ? कौन शख्स है जो मुझ से मग्फ़िरत चाहे और मैं उस की

बख्शिश करूं ?

५५५. हज़रत आइशा रज़ि० से (एक बार) हुज़ूर सल्ल० की रात की नमाज़ के बारे में पूछा गया तो फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० रात के शुरू में सोते थे और आख़िरी रात में उठते, नमाज़ पढ़ते और फिर अपने बिस्तर पर चले जाते थे। फिर उस वक़्त उठते थे जब मुअज़्ज़िन अज़ान कहता था। अगर ज़रूरत होती तो गुस्ल फ़र्माते थे, वरना सिर्फ़ वुज़ू कर के बाहर आ जाते थे।

५५६. हज़रत आइशा रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० की रमज़ान की नमाज़ के बारे में पूछा गया तो फ़र्माया, अल्लाह के रसूल सल्ल० रमज़ान और ग़ैर-रमज़ान सब में ग्यारह रक्अत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे। पहले चार रक्अतें पढ़ते थे, जिनकी ख़ूबी और लम्बा होना न पूछो, फिर चार रक्अतें और पढ़ते थे, उन की ख़ूबी और लम्बे होने का सवाल भी मत करो, इसके बाद तीन रक्अतें पढ़ते थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सो जाते थे ? फ़र्माया, आइशा रज़ि० ! मेरी आंखें सोती हैं दिल नहीं सोता।

५५७. हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाये, तो क्या देखते हैं कि एक रस्सी दो खंभों के बीच लम्बी-लम्बी बंधी हुई है। फ़र्माया यह कैसी रस्सी है ? अर्ज़ किया गया, यह हज़रत ज़ैनब रज़ि० की रस्सी है। (जब नमाज़ पढ़ते-पढ़ते) हज़रत ज़ैनब रज़ि० को कुछ सुस्ती हो जाती है, तो उस को पकड़ कर लटक जाती हैं और सुस्ती दूर हो जाती है, फ़र्माया नहीं उस को खोल दो, तुम में से हर शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ पढ़े, जब तक चुस्त रहे, जब सुस्त हो जाए तो बैठ रहे।

५५८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं, मुझ से अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, अब्दुल्लाह ! तू फ़लां शख़्स की तरह न हो जाना, जो सारी रात क़ियाम करता है। मैंने (यह सुन कर) रात का क़ियाम छोड़ दिया।

५५९. हज़रत उबादा रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स रात को जाग कर (यह दुआ) कहे कि ख़ुदा-ए-वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की हुकूमत है और उसी के लिए सारी तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, हर

तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है। ख़ुदा सारे ऐबों से पाक है और अल्लाह सबसे बड़ा है, सब ताक़त और क़ूवत ख़ुदा ही से है, इस के बाद कहे, इलाही ! मुझे बख़्श दे या कोई और दुआ करे, तो उस की दुआ क़ुबूल हो जाती है और अगर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ेगा, तो वह भी मक़्बूल होगी।

५६०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० (एक बार) अपना क़िस्सा बयान करते हुए अल्लाह के रसूल सल्ल० का ज़िक्र कर रहे थे कि तुम्हारा भाई यानी रुवाहा ग़लत अश्आर नहीं कहता है, (अश्आर का तर्जुमा यह है) हम में अल्लाह के रसूल हैं, जब फ़ज्र हो जाती है, तो वह अपनी किताब (क़ुरआन) तिलावत करते हैं, उन्होंने हम को गुमराही के बाद हिदायत की राह दिखायी, हमारे दिल उन का यक़ीन रखते हैं, जो कुछ उन्होंने फ़र्माया वह वाक़ेअ होने वाला है, वह रात भर अपने पहलू को बिस्तर से दूर रखते हैं और मुश्रिकों की ख़्वाबगाह में मुश्रिकों के वज़न से बिस्तर भारी होते हैं।

५६१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं मुझे नज़र आ रहा था कि रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में मेरे हाथ में दीबा का एक टुकड़ा था, मैं जन्नत के जिस मक़ाम में जाने का इरादा करता था, वह टुकड़ा मुझे वहां उड़ा कर ले जाता था। मैंने देखा कि दो आदमी मेरे पास आए, बाक़ी हदीस ऊपर गुज़र गई।

५६२. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्ल० हम को क़ुरआन की सूरः की तालीम देते थे, इसी तरह सारे मामले में इस्तिख़ारे की तालीम देते थे, आप फ़र्माते थे कि जिस वक़्त तुम में से कोई किसी काम का इरादा करे, तो चाहिए कि दो रक्अतें फ़र्ज़ के अलावा पढ़े, फिर कहे, इलाही ! मैं तुझ से तेरे इल्म के साथ भलाई चाहता हूं और तेरी क़ुदरत से (इस काम के) असली अन्दाज़े की तलब में हूं, मैं तुझसे तेरे अज़ीम फ़ज़्ल चाहता हूं, क्योंकि तू क़ुदरत रखता है और मुझे क़ुदरत नहीं है, तू जानता है और मैं नहीं जानता, तू ग़ैब का जानने वाला है। इलाही ! तेरी जानकारी में यह काम मेरे लिए दीन व दुनिया और अन्जामकार में अच्छा हो तो मेरे लिए इस को मुक़द्दर कर दे, इस को मेरे लिए आसान फ़र्मा दे और इस में मुझे बरकत अता कर और तेरे इल्म में अगर यह काम मेरे लिए दीन व दुनिया और अन्जामेकार बुरा हो, तो इस को मुझ से हटा दे और इस से मुझ को रोक दे और जहां भी

हो, मेरे लिए भलाई मुक़र्रर फ़र्मा और मुझे इस से खुश कर (यहां अपनी ज़रूरत का नाम ले।)

५६३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० फ़ज्र की दो रक्अतों से ज़्यादा किसी नफ़्ल की पाबंदी में सख़्त न थे।

५६४. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि सुबह की नमाज़ से पहले की दोनों रक्अतें रसूलुल्लाह सल्ल० बहुत हल्की पढ़ते थे, यहां तक कि मेरा ख़्याल होता था जाने आप ने सूरः हम्द भी पढ़ी (या नहीं।)

५६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मुझे मेरे दोस्त ने तीन बातों की मरते दम तक करने की नसीहत की है, हर महीने में तीन दिन के रोज़े, चाश्त की नमाज़, वित्र पढ़ कर सोना।

५६६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ज़ुहर से पहले चार रक्अतें और फ़ज्र से पहले दो रक्अतें नहीं छोड़ते थे।

५६७. हज़रत अब्दुल्लाह मुज़नी रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मग़रिब की नमाज़ से पहले नमाज़ पढ़ो, फिर तीसरी बार फ़र्माया, यह (हुक्म) उस के लिए है जिस को यह बात बुरी मालूम हो कि लोग उस को सुन्नत बना लें।(यह हुक्म मन्सूख़ है) यह इस्लाम के शुरू ज़माने का वाक़िआ है।

बाब १९

मक्का और मदीना की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत के बयान में

५६८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, कजावे सिर्फ़ तीन मस्जिदों की तरफ़ (जाने के लिए) कसे जाएं, मस्जिदे बैतुल हराम, मस्जिदे रसूल, मस्जिदे बैतुल मक़्दिस।

५६९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ दूसरी जगहों की हज़ारों नमाज़ से बेहतर है, मगर काबा इस से अलग है।

५७०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० सिर्फ़ दो दिन चाश्त की नमाज़ पढ़ते थे, (एक उस दिन) जिस दिन मक्का में आते थे, वहां चूंकि चाश्त के वक़्त दाख़िल होते थे, इस लिए तवाफ़ कर के दो रक्अत मक़ामे (इब्राहीम) के पीछे पढ़ते थे, दूसरे उस दिन जब मस्जिद क़ुबा में आते थे, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० वहां हफ़्ते के दिन आते थे और मस्जिद में दाख़िल होने के बाद मकरूह समझते थे कि नमाज़ पढ़े बग़ैर निकल कर चले जाएं, रावी का बयान है कि हुज़ूर सल्ल० मस्जिद क़ुबा की सवार और पैदल (जो भी हो) ज़ियारत करते थे और कहते थे, मैं वैसे ही करता हूं जैसे मैंने असहाब रज़ि० को करते देखा। मैं किसी को रात-दिन के किसी वक़्त में नमाज़ पढ़ने से नहीं रोकता, मगर सूरज निकलने और डूबने के वक़्त नमाज़ पढ़ने का इरादा न करो।

५७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मेरे मकान और मेरे मेंबर के बीच की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मेंबर मेरे हौज़ पर है।

५७२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० को सलाम करते थे और आप उस वक़्त नमाज़ में होते थे और आप जवाब दे दिया करते थे, लेकिन जब हम नजाशी के पास से लौटे और आकर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया तो आपने जवाब नहीं दिया और फ़र्माया, इस से जवाब में रुकावट होती है।

५७३. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० कहते हैं कि पहले हम नमाज़ में अपने साथी से बात किया करते थे, यहां तक कि यह आयत नाज़िल हुई, 'हाफ़िज़ू अलस्सलाति वस्सलातिल वुस्ता व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन।' इस के बाद हम को नमाज़ में ख़ामोश रहने का हुक्म दे दिया गया।

५७४. हज़रत मुईक़ीब रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस शख़्स से, जो सज्दागाह की मिट्टी बराबर कर रहा था, फ़र्माया अगर तू करना ही चाहे, तो सिर्फ़ एक बार।

५७५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अबू

बरदा रजि० ने किसी जिहाद में एक रोज नमाज पढ़ी और चौपाए की लगाम आप के हाथ में थी, चौपाया बिगड़ने लगा और आप उसके पीछे हो गए। जब आप से इस के बारे में पूछा गया, तो फ़र्माया, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ छः, सात या आठ लड़ाइयां लड़ी हैं और आप की सहूलत फ़र्मायी देखी है, खुदा की क़सम ! अगर मैं चौपाए के साथ वापस चला जाऊं, तो इस से मेरे नज़दीक बेहतर है कि इस को छोड़ दूं और वह थान पर चला जाए और फिर मुझ पर इस का बोझ पड़े ।

५७६. हज़रत आइशा रज़ि० ने सूरज ग्रहन का क़िस्सा ज़िक्र कर के फ़र्माया कि आपने आग को देखा था कि उस के कुछ हिस्से कुछ को खाये जाते थे और इस में अम्र बिन लुह्यी भी था जिस ने बुतों के नाम पर सांड़ छोड़ने की शुरूआत की थी ।

५७७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, (एक दिन) मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किसी काम पर भेजा। मैंने जाकर वह काम पूरा किया और वापस आकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हो गया, आप को सलाम किया, मगर आपने जवाब नहीं दिया। मेरे दिल में इस से वह सदमा पैदा हुआ, जिस को ख़ुदा ख़ूब जानता है. मैंने ख्याल किया कि शायद रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे देर में आने की वजह से नाराज़ हो गए, इस लिए मैंने आप को फिर सलाम किया......मगर आपने जवाब नहीं दिया, इस से मेरे दिल में वही बात आयी और फिर मैंने सलाम किया तो आपने सलाम का जवाब देकर फ़र्माया, चूंकि मैं नमाज़ पढ़ रहा था, सिर्फ़ इस लिए तुम को सलाम का जवाब न दे सका, उस वक़्त आप ऊंटनी पर सवार थे, जिसका रुख़ क़िब्ले की तरफ़ न था ।

५७८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है कि अपने कोख पर हाथ रख कर नमाज़ पढ़ें ।

बाब २०

सहव के बयान में

५७६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं, (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ज़ुहर की पांच रक्अतें पढ़ीं। आपसे पूछा गया, क्या नमाज़ में ज़्यादती हो गयी है? तो फ़र्माया यह क्यों कर! अर्ज़ किया गया, आपने पांच रक्अतें पढ़ीं, आपने फ़ौरन सलाम फेर कर दो सज्दे किए।

५८०. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को अस्र के बाद दो रक्अतें पढ़ने से मना फ़र्माते हुए सुना, मगर फिर आप को ही दो रक्अतें पढ़ते देखा, उस वक़्त मेरे पास अंसार की कुछ औरतें थीं। मैंने आप के पास एक को भेज कर कहा कि आप के बराबर खड़ी हो कर कहना कि उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं, मैंने आप को इन दो रक्अतों से मना फ़र्माते हुए सुना, मगर मैं देख रही हूं कि आप पढ़ रहे हैं। अब अगर हुज़ूर सल्ल० तुझ को इशारा कर दें तो हट आना, चुनांचे लड़की ने वैसा ही किया। आपने हाथ से इशारा किया, वह पीछे हट गई, जब आप फ़ारिग़ हो गए तो फ़र्माया, ऐ अबू उमैया की बेटी! तूने अस्र के बाद की दो रक्अतों के बारे में पूछा है। मेरे पास क़बीला अब्दुलक़ैस के कुछ आदमी आए थे, जिन की वजह से मैं ज़ुहर के बाद की दो रक्अतें न पढ़ सका, चुनांचे वह दोनों रक्अतें यही थीं।

नोट—अहनाफ़ के नज़दीक यह हुज़ूर सल्ल० के साथ मख़्सूस था, दूसरे को नमाज़ अस्र के बाद नमाज़ पढ़ना सही नहीं।

बाब २१

जनाज़े के बयान में

५८१. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० ने एक बार इर्शाद फ़र्माया, एक आने वाले ने परवरदिगार के पास से आकर मुझे ख़बर दी कि जो शख़्स मेरी उम्मत में से मर जाए और ख़ुदा के साथ किसी चीज़ को (ज़ात या सिफ़ात में) शरीक न बनाता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा, मैंने अर्ज़ किया, अगरचे उसने ज़िना और चोरी की हो ? (जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।)

५८२. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया जो शख़्स अल्लाह तआला का (ज़ात व सिफ़ात) में किसी चीज़ का शरीक बनाए, वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा। मैं कहता हूं जो शख़्स अल्लाह तआला का किसी चीज़ को शरीक न बनाए और मर जाए तो जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।

५८३. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हम को सात बातों (के करने का) हुक्म दिया है, जनाज़ों के साथ जाने का, मरीज़ों की इयादत करने का, दावत करने वाले की (दावत) क़ुबूल करने का, मज़लूम की मदद करने का, क़सम पूरी करने का, सलाम का जवाब देने का और छींकने वाले को दुआ देने का। बाक़ी चांदी के बर्तन (के इस्तेमाल) से, सोने की अंगूठी से, रेशमी कपड़े से, दरियाई से, मिस्री अतलस से और कमख़्वाब से मना फ़र्माया।

५८४. हज़रत उम्मे अला अन्सारिया रज़ि० फ़र्माती हैं कि मुहाजिरीन की (मेहमानी के बारे में) क़ुरआ पड़ा, हमारे हिस्से में उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० की मेहमानी आयी, इस लिए हमने उन को अपने यहां ठहराया, जब वह मर्ज़ुल मौत में मुब्तला होकर इन्तिक़ाल कर गए, तो

ग़ुस्ल देकर उन ही के कपड़ों का उन को कफ़न दे दिया गया। इतने में अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ लाए। मैं (उस वक़्त) कह रही थी, अबू साइब (उस्मान बिन मज़ऊन की कुन्नियत) ! तुम ख़ुदा की रहमत हो, मैं शहादत देती हूं कि ख़ुदा ने तुम को इज़्ज़त अता फ़र्मायी। (यह सुन कर) रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, तुझे यह कैसे मालूम हुआ कि वह ख़ुदा के सामने सुर्ख़रू होगा। मैंने अर्ज़ किया (अगर अल्लाह तआला उस की इज़्ज़त अफ़ज़ाई न फ़र्माएगा) तो और किस को इज़्ज़त देगा ? आपने फ़र्माया उस को तो मौत आ चुकी और ख़ुदा की क़सम ! मैं उस के लिए भलाई की उम्मीद (भी) करता हूं, लेकिन ख़ुदा की क़सम ! मुझे रसूल होने के बावजूद इस का इल्म नहीं कि अल्लाह तआला इस के साथ क्या करेगा, उम्मुल अला फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद के बाद मैं कभी किसी को बे-गुनाह ख़्याल नहीं करती थी।

५८५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जब मेरे बाप का क़त्ल हुआ, तो मैं रोता हुआ उन के चेहरे से कपड़ा हटाने लगा। लोग मुझे ऐसा करने से रोकने लगे मगर हुज़ूर सल्ल० ने मना नहीं किया। मेरी फूफी फ़ातिमा रज़ि० भी रो रही थीं, आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अब रोओ मत ! फ़रिश्ते इस पर बराबर साया किए हुए थे, मगर तुमने उन को अलग कर दिया।

५८६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, जिस दिन हज़रत नजाशी का (हब्श में) इंतिक़ाल हुआ, उसी दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस की इत्तिला दी, ख़ुद बाहर तशरीफ़ लाकर मस्जिद में आए, सफ़ ठीक कराई और नमाज़ को खड़े होकर चार तक्बीरें पढ़ीं।

५८७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० की आंखों में आंसू जारी थे और आपने फ़र्माया था कि ज़ैद रज़ि० ने झंडा लिया, मगर वह काम आ गए। इस के बाद जाफ़र रज़ि० ने झंडा लिया मगर वह भी काम आ गए। फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने झंडा पकड़ लिया, लेकिन वह भी शहीद हो गए, आख़िर में ख़ालिद बिन वलीद ने बिला हाकिम होने के लिया, तो उस से कामियाबी हासिल हुई।

५८८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिस मुसलमान के तीन नाबालिग़ बच्चे मर जाएं, उसको अल्लाह तआला

अपनी रहमत की तुफ़ैल में जन्नत में ज़रूर दाखिल करेगा।

५८६. हज़रत उम्मे अतीया अन्सारिया रज़ि० कहती हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० की साहबज़ादी की वफ़ात हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने हमारे पास तशरीफ़ लाकर फ़र्माया, इस को तीन बार या पांच बार या जितनी भी ज़रूरत हो, उस से ज़्यादा बार पानी और बेरी के पत्तों से नहलाओ, आख़िरी बार में काफ़ूर भी डाल लेना और फ़ारिग़ होकर मुझे इत्तिला कर देना। चुनांचे जब हम (ग़ुस्ल से) फ़ारिग़ हो गए, तो आप को इत्तिला दे दी, आपने हमको अपना तहबन्द दिया, फ़र्माया, इसको तहबन्द की तरह पहना दो।

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया था कि ग़ुस्ल दाएं तरफ़ से वुज़ू के आज़ा से शुरू करना। उम्मे अतीया रज़ि० कहती हैं कि हमने साहबज़ादी के बालों के कंघी से तीन हिस्से कर दिए थे।

५६०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० को तीन सफ़ेद सूती यमनी कपड़ों का कफ़न दिया गया, जिन में न कुरता था, न अमामा।

५६१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ अरफ़ा के मक़ाम पर ठहरा हुआ था, यकायक सवारी से गिर कर उस की गर्दन टूट गयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इस को पानी और बेरी के पत्तों से ग़ुस्ल देकर दो कपड़ों का कफ़न दो, मगर (हुनूत) (एक बनायी हुई ख़ुश्बू) न लगाना, न सर को ढांकना, क्योंकि क़ियामत के दिन यह लब्बैक कहता हुआ उठेगा।

५६२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) का इंतिक़ाल हुआ तो उस का बेटा रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उस के कफ़न के लिए अपना कुर्ता दे दीजिए और उस की नमाज़ पढ़ कर उस के गुनाह माफ़ हो जाने की दुआ कर दीजिए, आपने अपना कुर्ता दे दिया (यानी वायदा फ़र्माया) और फ़र्माया जब जनाज़ा तैयार हो जाए तो मुझे इत्तिला कर देना, मैं उस की नमाज़ पढ़ूंगा (चुनांचे जब जनाज़ा तैयार हो गया, तो) उसने आप को इत्तिला दी, जब आपने इस पर नमाज़ का इरादा किया, तो हज़रत उमर रज़ि० ने आपको हटा लिया और अर्ज़ किया क्या हुज़ूर सल्ल० को मुनाफ़िक़ों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने

से अल्लाह तआला ने मना नहीं फ़र्मा दिया है ? आपने फ़र्माया, मुझे नमाज़ पढ़ने और न पढ़ने, दोनों बातों का अख्तियार दे दिया गया है। अल्लाह तआला का फ़र्मान है तुम उन के लिए मग़फ़िरत तलब करो या न करो, (दोनों) बराबर है। अगर सत्तर बार उनके गुनाहों की माफ़ी चाहोगे, तो ख़ुदा उनको हरगिज़ माफ़ नहीं फ़र्माएगा, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने उसकी नमाज़ पढ़ी, मगर नमाज़ के बाद यह आयत नाज़िल हुई कि अगर (मुना-फ़िक़) मर जाए तो उस पर कभी नमाज़ न पढ़ो।

५६३. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उबई के दफ़न होने के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० (वहां) तशरीफ़ ले गए, क़ब्र से निकलवा कर किसी क़दर लुआबे दहन उस पर डाला और अपना कुरता उस को पहना दिया।

५६४. हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० कहते हैं कि हमने अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ हिजरत की, इस लिए हमारा अज्र ख़ुदा के पास यक़ीनी हो गया, अब हम में से कुछ शख़्स बग़ैर (दुनिया का) अज्र हासिल किए हुए मर गए और कुछ के आमाल का (दुनिया का) फल पुख़्ता हो गया और (दुनिया में इस्लामी फ़ुतूहात के बाद) उन्होंने इस फल को तोड़ना शुरू कर दिया, जब मुस्अब बिन उमैर रज़ि० उहद की लड़ाई में शहीद हो गए, तो उस वक़्त एक चादर के सिवा हम को और कुछ हाथ नहीं आया और चादर (भी) इतनी थी कि उनका सर ढांकते थे तो पांव निकल जाते थे और पांव को ढांकते थे, सर रह जाता था, (मजबूरन) हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि सर तो ढांक दो और पांव पर घास डाल दो।

५६५. हज़रत सह्ल रज़ि० कहते हैं कि एक औरत किनारीदार चादर रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को पहनाने के लिए यह चादर अपने हाथ से बुनी है, आप को चूंकि ज़रूरत थी, इस लिए ले ली और उसका तहबन्द बांध कर हमारे पास तशरीफ़ लाए, एक शख़्स को वह चादर बहुत अच्छी मालूम हुई और अर्ज़ किया, चादर तो बहुत अच्छी है, मुझे पहनने को दे दीजिए (हुज़ूर सल्ल० ने वह चादर उस को दे दी) यह देख कर लोग उस शख़्स से कहने लगे, यह तूने अच्छा नहीं किया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने तो ज़रूरत की वजह से उस को पहना था और तूने मांग ली, क्योंकि यह तुझ को

मालूम ही था कि हुजूर सल्ल० सवाल रद्द नहीं करेंगे। वह कहने लगा, मैंने पहनने के लिए नहीं ली है, बल्कि अपना कफ़न बनाने के लिए ली है, हज़रत सह्ल रज़ि० कहते हैं कि उसी चादर से उस का कफ़न बना।

५६६. हज़रत उम्मे अतीया रज़ि० कहती हैं कि हम को जनाज़ों के साथ जाने से मना कर दिया गया था, लेकिन ज़ोर देकर मना नहीं किया गया।

५६७. हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, जिस औरत का ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान हो, उस को किसी मुर्दा का तीन दिन से ज़्यादा सोग करना, हलाल नहीं है। हां शौहर का सिर्फ़ चार माह दस दिन सोग है।

५६८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि एक औरत किसी क़ब्र के पास बैठी हुई रो रही थी, अल्लाह के रसूल सल्ल० का (उस तरफ़) से गुज़रना हुआ, तो आपने उस से फ़र्माया, ख़ुदा से डर और सब्र कर, उसने हुज़ूर सल्ल० को नहीं पहचाना और जवाब दिया मुझ से अलग रहो, तुझ पर ऐसी मुसीबत नहीं पड़ी है (वरना ऐसी बात न कहता।) उसके बाद जब उसको बताया गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० थे तो वह हुज़ूर सल्ल० के दरबार पर हाज़िर हुई, चूंकि दरवाज़े पर दरबान नहीं थे (इस लिए अन्दर आ गई) और अर्ज़ किया, (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०!) मैंने हुज़ूर सल्ल० को पहचाना न था, (इस वजह से मुझ से गुस्ताख़ी हुई, अब सब्र करूंगी। आपने फ़र्माया, सब्र सिर्फ़ सदमा के शुरू के वक़्त (एतबार का) होता है।

५६९. हज़रत उसामा, रज़ि० बिन यज़ीद कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० की एक साहबज़ादी ने ख़िदमते अक़्दस में पयाम भेजा कि मेरा लड़का इंतिक़ाल के क़रीब है, हुज़ूर (ज़रा) तशरीफ़ ले आएं। आपने सलाम के बाद कहला भेजा कि जो कुछ ख़ुदा ने किया या दिया सब उसी का है, हर चीज़ की (ज़िंदगी) ख़ुदा के पास एक मुद्दत तक मुक़र्रर है, तुम को सब्र करना चाहिए और सवाब की उम्मीद रखनी चाहिए, साहबज़ादी ने दोबारा क़सम देकर पयाम भेजा कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाएं, यह सुन कर हुज़ूर सल्ल० खड़े हो गए। साद बिन उबादा रज़ि०, मुआज़ बिन जबल रज़ि०, उबई बिन कअब रज़ि०, ज़ैद बिन साबित रज़ि० और कुछ दूसरे शख़्स साथ थे, जब आप वहां पहुंचे, तो बच्चा आप की ख़िदमत में लाया

गया, उस वक्त उसके सांस का चलना पुराने मश्केज़े की तरह था, आपकी आंखों से आंसू जारी हो गए, यह देखकर हज़रत साद रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह क्या ? फ़र्माया, यह रहमत है जिस को अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा किया है और खुदा भी सिर्फ़ उन ही बन्दों पर रहम फ़र्माता है (जो दूसरों पर) रहम करते हैं।

६००. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हम (उस वक्त) हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी के यहां मौजूद थे। हुज़ूर सल्ल० बच्चे की क़ब्र पर बैठे हुए थे और दोनों आंखों से आंसू जारी थे और इर्शाद फ़र्माया था कि क्या तुम में कोई शख्स है जिसने आज रात हमबिस्तरी न की हो, अबूतल्हा रज़ि० ने अर्ज़ किया, मैं हूं। आपने फ़र्माया, क़ब्र में उतरो। अबूतल्हा रज़ि० क़ब्र में उतरे।

६०१. हज़रत उमर रज़ि० कहते थे कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मय्यत पर घर वालों के रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है, हज़रत उमर रज़ि० की वफ़ात के बाद जब यह ख़बर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० को पहुंची तो फ़र्माया उमर रज़ि० पर खुदा रहम करे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह नहीं फ़र्माया कि मोमिन के घर वालों के रोने की वजह से खुदा अज़ाब में मुब्तला करता है बल्कि सिर्फ़ यह फ़र्माया था कि काफ़िर पर घर वालों की कुछ गिरया व ज़ारी की वजह से अज़ाब बढ़ा देता है। तुम्हारे लिए (इस क़ौल के सबूत के वास्ते) क़ुरआन काफ़ी है। इर्शाद हुआ कि कोई शख्स दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।

६०२. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि एक यहूदी औरत पर उस के घर वाले रो रहे थे, उधर से हुज़ूर सल्ल० का गुज़र हुआ तो फ़र्माया, लोग इस पर रो रहे हैं और क़ब्र में उस पर अज़ाब हो रहा है।

६०३. हज़रत मुग़ीरह रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को इर्शाद फ़र्माते हुए सुना कि मुझ पर झूठ बांधना और लोगों पर झूठ बांधने की तरह नहीं है, जो शख्स मुझ पर जान-बूझ कर झूठ बांधे, उस को अपना ठिकाना दोज़ख में बना लेना चाहिए। हुज़ूर सल्ल० यह भी फ़र्माते थे कि जिस शख्स पर नौहा किया जाता है उस को उस नौहा की वजह से अज़ाब दिया जाता है।

६०४. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख्स सीना पीटे, गरेबान फाड़े और जाहिलियत के ज़माने की

तरह चीखे-चिल्लाए, वह हम में से नहीं है।

६०५. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि मुझे सख़्त बीमारी थी, हुज़ूर सल्ल० मेरी इयादत को विदाई हज में तशरीफ़ लाए। मैंने अर्ज़ किया कि मेरी बीमारी की बेहद शिद्दत को तो हुज़ूर देख ही रहे हैं, मैं मालदार आदमी हूं, मगर एक बेटी के सिवा मेरा और कोई वारिस नहीं है। क्या मैं अपना दो तिहाई माल ख़ैरात कर सकता हूं? फ़र्माया, नहीं। मैंने अर्ज़ किया क्या आधा माल ख़ैरात कर सकता हूं? फ़र्माया, नहीं, सिर्फ़ एक तिहाई माल (ख़ैरात) कर सकते हो और एक तिहाई भी ज़्यादा है। वारिसों को मालदार छोड़ना तुम्हारे लिए इस से बेहतर है कि तुम उन को फ़क़ीर छोड़ कर मर जाओ और वह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। तुम ख़ुदा की ख़ुशी के लिए जो कुछ ख़र्च करोगे उसका अज्र तुम को ज़रूर मिलेगा चाहे बीवी के मुंह में लुक़्मा ही दो। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपने साथियों से पीछे रह जाऊंगा (यानी) हिजरत न कर सकूंगा और मक्का में ही रहूंगा। आपने फ़र्माया, तुम हरगिज़ पीछे नहीं रहोगे, जो नेक आमाल करोगे उन से तुम्हारे दर्जों और मर्तबे में ज़्यादती होती जाएगी और शायद तुम बाद तक रहो कि कुछ लोगों को तुम से फ़ायदा पहुंचे और कुछ को नुक़्सान। (इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया) इलाही! मेरे सहाबा की हिजरत पूरी कर, उन को एड़ियों के बल न लौटा। रसूलुल्लाह सल्ल० बेचारे साद बिन ख़ौला रज़ि० पर अफ़सोस किया करते थे। उन का इंतिक़ाल मक्का ही में हो गया और (हिजरत न कर सके।)

६०६. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) मैं बीमार हुआ और ग़शी तारी हो गई, मेरा सर घर की एक औरत की गोद में रखा हुआ था और वह रो रही थी, मगर मैं (बेहोशी और ग़फ़लत की वजह से) उसको किसी तरह नहीं रोक सकता था। जब मुझे होश आया तो मैंने कहा, जिससे रसूलुल्लाह सल्ल० ने बेज़ारी ज़ाहिर फ़र्मायी है, मैं भी उससे बेज़ार हूं, हुज़ूर ने मुसीबत के वक़्त पीटने वाली, सर मुंड़ाने वाली और गरेबान फाड़ने वाली औरतों से बेज़ारी ज़ाहिर फ़र्मायी।

६०७. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास जब इब्ने हारिसा रज़ि० और जाफ़र रज़ि० और इब्ने रवाहा रज़ि० की शहादत की ख़बर आयी तो आप (सदमा की वजह से)

बैठ गए, मैं दरवाज़ों के दरीज़ों से देख रही थी कि आप पर ग़म के आसार मालूम हो रहे थे। एक शख्स ने आकर जाफ़र रज़ि० की औरतों के रोने का ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया उनको (रोने से) मना कर दो, वह शख्स चला गया और दोबारा हाज़िर होकर कहा कि औरतें कहना नहीं मानतीं, आपने फ़र्माया फिर उन को मना कर दो, वह शख्स चला गया और तीसरी बार हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह हम से ज़बर-दस्त साबित हुयीं (उन्होंने हमारा कहना नहीं माना) उम्मुल मोमिनीन का ख्याल है कि उस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया था कि उन के मुंह में ख़ाक डाल दो।

६०८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अबू तल्हा रज़ि० के बेटे का इंतिक़ाल हुआ तो तल्हा रज़ि० कहीं बाहर (गये हुए) थे। उन की बीवी ने एक बात बनायी और बेटे को एक कोने में अलग रख दिया। जब अबू तल्हा घर में आए और लड़के की हालत पूछी, तो बीवी ने कहा, अब सांस को सुकून है और उम्मीद है कि आराम हो जाएगा। अबू तल्हा रज़ि० ने यह सुन कर इत्मीनान से रात बसर की और सुबह को ग़ुस्ल करके जब बाहर जाना चाहा तो बीवी ने लड़के के इंतिक़ाल की ख़बर बयान की। अबू तल्हा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ उस की नमाज़ पढ़ी और फिर अपना और बीवी का वाक़िआ बयान किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, उम्मीद है कि अल्लाह तआला दोनों को इस रात में बरकत अता फ़र्मा-येगा। एक अंसारी शख्स का बयान है कि हुज़ूर सल्ल० की इस दुआ के असर से मैंने देखा कि उनके नौ बच्चे हुए और सबने क़ुरआन पढ़ा।

६०९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ अबू सैफ़ लोहार के यहां गए, अबू सैफ़ रज़ि० हज़रत इब्रा-हीम रज़ि० के दूध शरीक बाप थे। हुज़ूर सल्ल० ने अपने साहबज़ादे इब्रा-हीम को लेकर प्यार किया और सूंघा (फिर वापस आ गए।) इसके बाद (एक बार और) हम अबू सैफ़ रज़ि० के यहां गए, तो हज़रत इब्राहीम रज़ि० नज़अ की हालत में थे, यह देख कर हुज़ूर सल्ल० की दोनों आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप (रोते हैं ?) फ़र्माया ऐ इब्ने औफ़ ! यह रहमत है, इस के बाद (एक बार और) हुज़ूर सल्ल० रोए, फिर फ़र्माया, आंख आंसू बहाती है और दिल ग़मगीन है, मगर हमारे मुंह से वही बात

निकलती है, जो हमारे मालिक को पसन्द हो, ऐ इब्राहीम ! हम तुम्हारी जुदाई से रंजीदा हैं।

६१०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि साद बिन उबादा रज़ि० किसी मर्ज़ में मुब्तला हुए, हुज़ूर सल्ल० इयादत को तशरीफ़ ले गए, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० साथ थे, जब साद रज़ि० के पास पहुंचे, तो देखा कि साद रज़ि० के चारों तरफ़ ख़िद्मतगार हैं, आपने फ़र्माया क्या साद रज़ि० गुज़र गए ? लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ! नहीं। हुज़ूर सल्ल० रोने लगे। लोगों ने जो हुज़ूर सल्ल० को रोते देखा तो ख़ुद भी रोने लगे, आपने इर्शाद फ़र्माया कि तुमने नहीं सुना कि अल्लाह तआला आंख के आंसू और दिल के ग़म पर अज़ाब नहीं देता है, बल्कि इस का बयान करने की वजह से अज़ाब देता है या रहम फ़र्मा देता है (यानी ज़ुबान से बयान करने से अल्लाह तआला अज़ाब देता है और अगर चाहता है तो माफ़ कर देता है) मुर्दे पर घर वालों के पीटने की वजह से अज़ाब होता है।

६११. हज़रत उम्मे अतीया रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमसे बैअत लेते वक़्त इस बात का अह्द ले लिया था कि हम मय्यत पर नोहा न करेंगे, मगर पांच औरतों के सिवा, हममें से इसको किसी ने पूरा नहीं किया। उम्मे सुलैम रज़ि०, उम्मे अला अंसारिया रज़ि०, बिन्त अबी मेहरा जो हज़रत मुआज़ रज़ि० की बीवी थीं और दो औरतें और थीं या उम्मे सुलैम, उम्मे अला, अबी सुबरह की बेटी, हज़रत मुआज़ रज़ि० की बीवी और एक औरत और थी।

६१२. हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अगर तुम किसी का जनाज़ा आते हुए देखो और उस के साथ न जाओ, तो ठहर जाओ ताकि जनाज़ा तुम से पीछे हो जाए या तुम जनाज़े से पीछे हो जाओ या जनाज़ा आगे बढ़ाने से पहले नीचे उतार कर रख दिया जाए।

६१३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० और मरवान दोनों एक जनाज़े में शरीक थे, अबूहुरैरह रज़ि० मरवान का हाथ पकड़े जा रहे थे। (क़ब्र के पास पहुंच कर) दोनों जनाज़ा रखे जाने से पहले बैठ गए, इतने में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० भी आ गए और मरवान का हाथ पकड़ कर कहा, उठ

खुदा की क़सम ! इस को भी मालूम है कि नबी ने जनाज़ा उतारने से पहले बैठ जाने से मना फ़र्माया है। अबूहुरैरह रज़ि० बोले, (हां) सच है।

६१४. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हमारी तरफ़ से एक जनाज़ा गुज़रा। रसूलुल्लाह सल्ल० खड़े हो गए और हम भी खड़े हो गए, मगर बाद को हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह तो यहूदी का जनाज़ा था, फ़र्माया, तुम जनाज़ा देखो, तो खड़े हो जाया करो।

६१५. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जब जनाज़ा (तैयार कर के) रख दिया जाता है और लोग उस को कंधों पर उठा लेते हैं, तो अगर मुर्दा नेक होता है, तो कहता है, बढ़ाए चलो और अगर नेक नहीं होता, तो कहता है, हाय अफ़सोस ! मुझ को कहां लिए जाते हो, उस की आवाज़ इंसान के सिवा हर चीज़ सुनती है, अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाए।

६१६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर ने फ़र्माया, जनाज़े को जल्द ले जाओ, क्योंकि अगर वह नेक है तो उसको बेहतरी की तरफ़ ले जाओ और अगर ऐसा नहीं है तो शर है जिस को तुम अपने कंधों से (जल्द) उतार दो।

६१७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से कहा गया कि अबूहुरैरह रज़ि० का क़ौल है कि जो शख्स जनाज़े के साथ जाए, उस के लिए एक क़ीरात सवाब है, इब्ने उमर रज़ि० बोले, अबूहुरैरह रज़ि० ने ज़्यादती की, लेकिन हज़रत आइशा रज़ि० ने अबूहुरैरह रज़ि० की तस्दीक़ की और फ़र्माया, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यही इर्शाद फ़र्माते हुए सुना है। इब्ने उमर रज़ि० ने कहा कि तो हमने बहुत से क़ीरात (सवाब के) खो दिए।

६१८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० मर्ज़ुल मौत में मुब्तला थे और आपने फ़र्माया था, खुदा यहूद व नसारा पर लानत करे, जिन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को मस्जिदें[1] बना रखा है, हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ि० फ़र्माती हैं कि अगर यह खौफ़ न होता तो लोग हुज़ूर सल्ल० की क़ब्रे मुबारक बिल्कुल ज़ाहिर कर देते, मगर मुझ को

१. क़ब्रों को मस्जिदें बनाने का यह मतलब है कि वहां जाकर ग़ैर-अल्लाह को सज्दा करना। इससे मुसलमानों को बचना चाहिए।

इसी का डर है कि रौज़ा मुबारक को मस्जिद बना लिया जाएगा।

६१६. हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि एक औरत निफ़ास की हालत में मर गई थी, मैंने उस की नमाज़ रसूलुल्लाह सल्ल० के पीछे पढ़ी। आप जनाज़े के बीच में खड़े हुए।

६२०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने एक जनाज़े की नमाज़ में सूरः फ़ातिहा पढ़ी, ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि जनाज़े की नमाज़ में सूरः फ़ातिहा पढ़नी सुन्नत है।

६२१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, बन्दा को जब क़ब्र में रख कर उसके साथी मुंह मोड़ कर इतने दूर चले जाते हैं कि वह सिर्फ़ उन की जूतियों की आवाज़ सुन सकता है उस वक़्त उस के पास दो फ़रिश्ते (मुन्कर नकीर) आते हैं और मुर्दा को बिठा कर कहते हैं तू इस शख़्स यानी मुहम्मद सल्ल० के बारे में क्या कहा करता था? वह अगर मोमिन है, तो कहता है मैं गवाही देता था कि वह ख़ुदा के बन्दे और रसूल हैं, इस लिए उस से कह दिया जाता है कि अपने दोज़ख़ के ठिकाने को देख, अल्लाह तआला ने इस के बदले में तेरे लिए जन्नत में जगह इनायत फ़र्मायी है। बन्दा दोनों जगहों को देखता है, बाक़ी काफ़िर और मुनाफ़िक़ (फ़रिश्तों को) जवाब देता है, मुझे तो और कुछ इल्म न था, जो लोग कह देते थे मैं भी कह देता था (दिल से मेरा यक़ीन न था) उस वक़्त उस से कहा जाता है, तेरा यक़ीन न था और न (दिल से कलिमा तौहीद) तू पढ़ता था, इस के बाद उसके दोनों कानों के बीच में हथौड़े मारे जाते हैं और वह इतना चीख़ता है कि जिन्न व इंसान के सिवा उस के पास की हर चीज़ सुनती है।

६२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि मूसा अलैहिस्स-लाम के पास मलकुल मौत को भेजा गया, मलकुल मौत जब उन के पास (आदमी की शक्ल में) आए, तो मूसा अले० ने उन को थप्पड़ मारा, (जिस से मलकुल मौत की एक आंख फूट गई।) मौत के फ़रिश्ते ने वापस आकर बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि तूने मुझे ऐसे बन्दे के पास भेजा, जो मरना नहीं चाहता है, अल्लाह तआला ने उन की आंख वापस देकर फ़र्माया कि मूसा अले० के पास लौट कर जा और उस से कह दे कि बैल की पुश्त पर हाथ रखे, जितने बाल उस के हाथ के नीचे आएं, हर बाल के बदले एक साल की उम्र, (इस के लिए) है। (मलकुल मौत ने हुक्म के

मुताबिक़ जाकर मूसा अलै० को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया) हज़रत मूसा अलै० ने अर्ज़ किया, इलाही ! इस के बाद क्या होगा, फ़रमाया, आख़िर मौत, मूसा अलै० ने अर्ज़ किया तो फिर इसी वक़्त (मेरी जान) क़ब्ज़ कर ले, मगर इतनी ख़्वाहिश है कि एक पत्थर फेंकने की मिक़दार के बराबर मुझे पाक ज़मीन (वादी ऐमन) से क़रीब कर दे, हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया था कि अगर मैं वहां होता तो मूसा अलै० की क़ब्र पर लाल टीले के पास, रास्ते के किनारे पर, मैं तुम को दिखा देता।

६२३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि उहद के शहीदों में से दो-दो को एक कपड़े में अल्लाह के रसूल सल्ल० इकट्ठा कर के पूछते जाते थे, इन में से क़ुरआन किस को ज़्यादा याद था, जिस को क़ुरआन ज़्यादा याद होता, उस को क़ब्र में पहले उतारते और फ़रमाते कि क़ियामत के दिन मैं उन की गवाही दूंगा, फिर बग़ैर ख़ून साफ़ किये और ग़ुस्ल व नमाज़ के उन को दफ़न करने का हुक्म दे देते थे।

६२४. हज़रत उक़्बा रज़ि० बिन आमिर कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाये और जनाज़े की नमाज़ की तरह उहद के शहीदों की नमाज़ पढ़ी, फिर लौट कर मेंबर के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया मैं तुम्हारा हरावल हूं और तुम्हारी गवाही दूंगा, ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त अपने हौज़ को देख रहा हूं, मुझे ज़मीन की ख़ज़ानों की कुंजियां अता की गई हैं, ख़ुदा की क़सम ! मुझे तुम्हारे मुश्रिक हो जाने का तो ख़ौफ़ नहीं है बल्कि इस का डर है कि मेरे बाद तुम ज़मीन के ख़ज़ानों का लालच करने लगोगे।

६२५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ एक गिरोह में से होकर इब्ने सय्याद के पास गए, जब वहां पहुंचे तो उसको बनू मग़ाला के टीलों के पास बच्चों के साथ खेलता पाया। इब्ने सय्याद उस वक़्त बालिग़ होने के क़रीब हो चुका था, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस को हाथ से मारा और फ़रमाया कि तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, इब्ने साद ने आप की तरफ़ देख कर कहा, (हां,) मैं गवाही देता हूं कि आप बिना पढ़े-लिखे लोगों के लिए रसूल हैं, आपने यह सुन कर उस के सवाल का जवाब नहीं दिया और फ़रमाया, मेरा ख़ुदा पर, उस के सारे रसूलों पर ईमान है। फिर आपने

फ़र्माया (इस बारे में) तेरी क्या राय है ? बोला मेरे पास सच्चे-झूठे आते हैं ? आपने फ़र्माया, तेरे मामले में गड़बड़ हो गई (सच और झूठ का तुझे फ़र्क़ नहीं मालूम होता।) मैंने तुझ से पूछने के लिए एक बात (दिल) में छिपाई है। हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत दिल में छिपाई थी। यौ-म तातिस्स-माउ बि दुख़ानि, इब्ने सय्याद बोला, आपने दुख़ का लफ़्ज़ छिपाया है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, दूर हो, तू अपने मर्तबा से हरगिज़ नहीं बढ़ सकता। (यह बात-चीत सुन कर) हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे इजाज़त दीजिए, मैं इस की गर्दन उड़ा दूं, आपने फ़र्माया, यह अगर वही (दज्जाल) है तो तुम इस को क़त्ल नहीं कर सकते और अगर नहीं है तो क़त्ल करने से कोई फ़ायदा नहीं है। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० और उबई बिन काब खजूर के पेड़ की तरफ़ को चले, जिस के नीचे इब्ने सय्याद मौजूद था, इब्ने सय्याद ने नहीं देखा और आप चुपके से उस की बातें सुनने लगे, हुज़ूर सल्ल० ने देखा कि वह एक चादर ओढ़े लेटा है और कुछ गुनगुना रहा है, इब्ने सय्याद की मां ने हुज़ूर सल्ल० को देख लिया तो कहने लगी, ऐ साफ़ ! (इब्ने सय्याद का नाम है) यह मुहम्मद सल्ल० मौजूद हैं। (यह सुन कर) इब्ने सय्याद उठ गया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर यह औरत इब्ने सय्याद को छोड़े रखती, (इत्तिला न देती) तो वह ज़रूर कुछ करता।

६२६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, एक यहूदी लड़का हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत किया करता था, जब वह बीमार हुआ तो हुज़ूर सल्ल० उस की इयादत को तशरीफ़ ले गए और सिरहाने बैठ कर फ़र्माया, मुसलमान हो जा, उसने बाप की तरफ़ देखा, जो पास ही बैठा था, बाप ने कहा, अबुलक़ासिम का कहना मान ले, वह मुसलमान हो गया, हुज़ूर सल्ल० यह फ़र्माते हुए बाहर तशरीफ़ लाए, अल्हम्दु लिल्लाह, ख़ुदा ने उस को दोज़ख़ से छुटकारा दे दिया।

६२७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जिस तरह चौपाए के पैदा होते वक़्त जिस्म के सारे हिस्से ठीक होते हैं और तुम न उन को कनकटा देखते हो, न नकटा, इसी तरह हर बच्चा फ़ितरते (इस्लाम) पर पैदा होता है, मगर बाद में उस के मां-बाप उस को यहूदी या ईसाई या मजूसी बना लेते हैं, अबूहुरैरह रज़ि० कहा करते थे, यह फ़ितरते इलाही है जिस पर सब लोगों को ख़ुदा ने पैदा

किया है और ख़ुदाई फ़ितरत में कोई तब्दीली नहीं हो सकती। यही क़ायम रहने वाला दीन है।

६२८. हज़रत मुसय्यिब बिन हुज़्न रज़ि० से रिवायत है कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० उन के पास तशरीफ़ लाए। (उस वक़्त) अबूजह्ल बिन हिशाम, अब्दुल्लाह बिन उबई और उमय्या बिन मुग़ीरह, उन के पास मौजूद थे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, चचा 'लाइला ह इल्लल्लाह' कह दो। मैं इस कलिमा की शहादत तुम्हारे लिए ख़ुदा के सामने दूंगा। अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बोले, अबू तालिब ! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुंह मोड़ते हो मगर रसूलुल्लाह बराबर यही लफ़्ज़ पेश करते रहे और वह दोनों भी वही क़ौल दोबारा और बार-बार कहते रहे, आख़िर में अबू तालिब ने कलाम ख़त्म होने पर कहा, मैं अब्दुल मत्तलिब के दीन पर हूं और ला इला ह इल्लल्लाहु कहने से इंकार कर दिया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ख़ुदा की क़सम ! जब तक मुझे मना न किया जाए, मैं तुम्हारे लिए बराबर ख़ुदा से माफ़ी मांगूंगा, इस के बाद अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्मायी (मा का न लिन्नबीयि) (आख़िर तक :)

६२९. हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं, एक बार हम एक जनाज़े की शिरकत में क़ब्रस्तान बक़ीअ में आए, अल्लाह के रसूल सल्ल० भी हमारे पास तशरीफ़ लाकर बैठ गए, आप के पास उस वक़्त एक लकड़ी थी, आपने सर झुका कर लकड़ी से ज़मीन कुरेदनी शुरू की और फ़र्माया, तुम में से हर शख़्स की जगह जन्नत या दोज़ख़ में लिखी हुई है और हर शख़्स का सईद या शक़ी होना भी लिखा हुआ है। एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फिर हम लिखे हुए पर भरोसा क्यों न कर लें और अमल क्यों न छोड़ दें ? हम में से जो शख़्स सईद होगा वह सआदतमन्दों जैसे आमाल की तरफ़ ध्यान देगा और जो शक़ी होगा, वह अह्ले शक़ावत के आमाल की तरफ़ झुकेगा, आपने फ़र्माया सआदतमन्दों को सईदों के आमाल की तौफ़ीक़ अता की गई है अह्ले शक़ावत को बदबख़्तों के जैसे आमाल की तौफ़ीक़ मिली है, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत पढ़ी (फ़अम्मा मन अअ्-ता वत्तक़ा।)

६३०. हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने इस्लाम के सिवा दूसरे दीन की जान-बूझ कर झूठी

कसम खायी, तो वह ऐसा ही है, जैसा उसने कहा और जिस शख्स ने लोहे से अपने आप को क़त्ल किया, तो उस को दोज़ख की आग में उसी लोहे से अज़ाब दिया जाएगा। हज़रत जुन्दुब रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि एक शख्स के पांव में ज़ख्म था। उसने खुदकुशी कर ली, उस पर अल्लाह तआला ने फ़र्माया, मेरे बन्दे ने मुझ से पहले अपनी जान ले ली मैंने उस पर जन्नत हराम कर दी।

६३१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं हुज़ूरे अक्रम सल्ल० का इर्शाद है जो खुद अपना गला घोंट ले, वह दोज़खी है, जो खुद अपने नेज़ा मारे, वह भी (दोज़खी है।)

६३२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, (एक बार) सहाबा रज़ि० का एक जनाज़े की तरफ़ से गुज़र हुआ और सबने उस की तारीफ़ की, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया लाज़िम हो गयी, दूसरी बार एक और जनाज़े की तरफ़ से गुज़रे और उस की बुराई की, हुज़ूर ने फ़र्माया, लाज़िम हो गयी यानी जिस की तुमने तारीफ़ की उस के लिए जन्नत, और जिस की तुमने बुराई बयान की उस के लिए दोज़ख लाज़िम हो गई और तुम लोग ज़मीन पर खुदा के गवाह हो।

६३३. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक बार इर्शाद फ़र्माया, जिस मुसलमान की नेकी की चार आदमी गवाही दें खुदा उसको जन्नत में दाखिल कर देता है। हमने अर्ज़ किया, अगर तीन आदमी (गवाही दें ?) फ़र्माया तीन गवाही दें, (तब भी खुदा उस को जन्नत में दाखिल कर देगा।) हमने अर्ज़ किया, अगर दो हों ? फ़र्माया, चाहे दो ही हों। एक शख्स के बारे में हमने पूछा ही नहीं।

६३४. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जब मुसलमान को क़ब्र में बिठाया जाता है और उस के पास फ़रिश्ते आते हैं तो वह तौहीद व रिसालत की गवाही देता है। अल्लाह तआला का क़ौल व युस्बितुल्लज़ी न आमनू बिल्क़ौलिस्साबित से यही मुराद है।

६३५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने अह्ले क़लीब (क़लीब एक कुंवां था) जिस में अबू जह्ल, उमय्या, उत्बा और शैबा वग़ैरह मरे पड़े थे, को झांककर फ़र्माया, अल्लाह तआला ने जो कुछ तुम से वायदा किया था, वह तुम को मिल गया, अर्ज़ किया गया ऐ

अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुर्दों को खिताब फ़र्माते हैं ? फ़र्माया तुम्हारे कान उन से बढ़ कर नहीं हैं, मगर फ़र्क़ यह है कि वह जवाब नहीं दे सकते।

६३६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अब उन लोगों (बद्र में क़त्ल किये गये लोगों) को मालूम हुआ कि मैं जो कुछ उन से कहता था वह सच है कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते।

६३७. हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र रज़ि० कहती हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० एक बार खुत्बा पढ़ने खड़े हुए। आपने क़ब्र के फ़िल्ने का ज़िक्र किया, जिस में आदमी मुब्तला होता है। सारे मुसलमान सुन कर चीख़ पड़े।

६३८. हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० सूरज डूबने के बाद बाहर तशरीफ़ लाए और आपने एक आवाज़ सुनी, तो फ़र्माया यहूद पर क़ब्रों में अज़ाब हो रहा है।

६३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० दुआ किया करते थे, इलाही ! मैं क़ब्र और दोज़ख के अज़ाब से, ज़िंदगी और मौत के फ़ित्नों से और मसीह दज्जाल की आज़माइश से तेरी पनाह चाहता हूं।

६४०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मरने के बाद तुम में से हर एक के सामने सुबह व शाम उस के रहने की जगह पेश की जाएगी। अगर जन्नती होगा, तो जन्नतियों में उस का ठिकाना होगा और अगर दोज़खी होगा, तो दोज़खियों में उस की जगह होगी और उस से कह दिया जाएगा कि जब तक अल्लाह तआला क़ियामत के दिन तुझे उठाए, तेरा यही ठिकाना है।

६४१. हज़रत बरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम का जब इंतिक़ाल हुआ तो आपने फ़र्माया, उस को दूध पिलाने वाली जन्नत में मिलेगी। (वफ़ात के वक़्त हज़रत इब्राहीम की उमर अठारह माह थी।)

६४२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० से मुश्रिकों की औलाद की हालत पूछी गयी कि क्या वह जन्नती हैं या दोज़खी ? फ़र्माया, अल्लाह तआला ने उन को पैदा किया था, तो अच्छी

तरह जानता था कि ये (बढ़ कर) क्या अमल करेंगे।

६४३. हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया करते थे, क्या आज रात तुम में से किसी ने कोई ख्वाब देखा है? अगर किसी ने कोई ख्वाब देखा होता तो अर्ज़ कर देता था और आप उस की ताबीर दे देते थे। एक दिन मामूल के मुताबिक़ पूछा, तुम में से किसी ने कोई ख्वाब देखा है? हमने अर्ज़ किया नहीं। फ़र्माया, आज मैंने दो शख्सों को (ख्वाब में) देखा कि मेरे पास आकर मेरा हाथ पकड़ कर एक मुक़द्दस ज़मीन में ले गए। देखता क्या हूं कि यहां एक शख्स बैठा है और एक खड़ा है, जिस के हाथ में लोहे का जंबूर है और बैठे हुए आदमी के कल्ले को गुद्दी तक चीर डालता है, फिर दूसरे कल्ले को भी इसी तरह चीरता है, इतने में पहला जबड़ा ठीक हो जाता है और वह उस को चीरने लगता है। मैंने इन दोनों शख्सों से पूछा, यह क्या मामला है। बोले आगे चलो, एक शख्स पर गुज़र हुआ तो चित लेटा था। उस के सर के पास एक शख्स बड़ा भारी पत्थर लिए खड़ा था और ज़ोर से मारता था कि पत्थर लुढ़क कर (दूर) चला जाता था। वह पत्थर लेने जाता था तो उसका सर फिर असली हालत पर हो जाता था और फिर वह इस को मारता था कि पत्थर लुढ़क कर (दूर) चला जाता था। वह पत्थर लेने जाता था तो उस का सर फिर असली हालत पर हो जाता था और फिर वह उसको मारता था, मैंने पूछा यह क्या बात है? वे दोनों बोले, आगे चलो हम आगे चल दिए और चलते-चलते एक ग़ार पर पहुंचे, जो तनूर की तरह ऊपर से तंग और अन्दर से चौड़ा था। आग उस के अन्दर भड़क रही थी और उस में नंगे मर्द व औरतें मौजूद थीं। जब आग ऊपर को उठ आती, तो वह भी ऊपर को इतने उठाते कि निकलने के क़रीब हो जाते और जब आग नीचे को दब जाती वह भी दब जाते थे। मैंने पूछा, यह क्या है? वह दोनों शख्स बोले, आगे चलो। हम आगे चल दिए, यहां तक कि एक खून की नहर पर पहुंचे, इसमें एक आदमी खड़ा था और किनारे पर एक और आदमी था, जिस के सामने बहुत से पत्थर रखे थे। नहर के अन्दर वाला आदमी जब नहर के बाहर निकलने के इरादे से आता था, तो किनारे वाला शख्स इस ज़ोर से उस के मुंह पर पत्थर मारता था कि वह फिर अपनी जगह लौट जाता था और अगर फिर निकलना चाहता था तो वह

शख़्स फिर पत्थर मार कर इस को लौटा देता था। मैंने कहा, यह क्या है ? वह दोनों बोले, आगे चलो। हम चल दिए, चलते-चलते एक निहायत हरे-भरे बाग़ में पहुंचे। उसमें एक दरख़्त था, जिसकी जड़ में एक बूढ़ा आदमी और कुछ बच्चे बैठे थे और दरख़्त के पास एक शख़्स बैठा आग धौंक रहा था। हम दरख़्त के ऊपर चढ़ गए और ऐसे मकान में पहुंच गए, जिस से बेहतर मकान मैंने कभी नहीं देखा। वहां बहुत से मर्द, औरतें, बूढ़े, जवान और बच्चे सब ही मौजूद थे। इसके बाद इससे और ऊपर गए और पहले घर से भी ज़्यादा उम्दा एक घर देखा, जिसमें बूढ़े और जवान सब मौजूद थे। आख़िर मैंने कहा कि तुमने रात भर मुझे फिराया, अब मैंने जो कुछ देखा है, उस की हक़ीक़त बताओ। उन्होंने जवाब दिया, बहुत अच्छा, जिस शख़्स का जबड़ा चीरा जा रहा था वह झूठा आदमी था, वह झूठी बातें कहा करता था और वह दुनिया में मशहूर हो जाती थीं। क़ियामत तक उसके साथ इसी तरह मामला होता रहेगा, और जिस शख़्स का सर कुचला जा रहा था, उस को अल्लाह तआला ने क़ुरआन की तालीम दी थी, मगर वह क़ुरआन को छोड़ कर रात भर सोता रहता था और दिन में उस पर अमल नहीं करता था। क़ियामत तक उस के साथ योंही होता रहेगा। बाक़ी वह शख़्स जो आपने नहर में देखा था, वह सूदख़्वार था और आग के गढ़े में ज़िना करने वाले लोग थे और दरख़्त की जड़ में बूढ़े आदमी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन के पास जो बच्चे थे, वह लोगों की औलादें थीं और जो आग धौंक रहा था, वह दोज़ख़ का दारोग़ा था और पहला मकान जिसमें आप दाख़िल हुए थे, वह आम मोमिनों का घर था और दूसरा मकान शहीदों का था और मैं जिब्रील (अलै०) हूं, यह मीकाइल अलै० हैं। आप अपना सर उठाइए, मैंने सर उठाया, तो मेरे ऊपर कुछ बादल-सा था। जिब्रील व मीकाईल अलै० ने कहा, यह आपका मकान है, मैंने कहा मुझे छोड़ दो, मैं अपने घर में चला जाऊं। वे कहने लगे, अभी तुम्हारी उम्र बाक़ी है, पूरी नहीं हुई, पूरी हो जाएगी, तो अपने घर में आ जाओगे।

६४४. हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं, एक शख़्स ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ किया, मेरी मां का इंतिक़ाल हो गया और मेरा ख़्याल है कि अगर उसको बोलने का मौक़ा मिलता तो वह ख़ैरात करती, तो क्या अगर मैं उस की तरफ़ से ख़ैरात कर दूं, तो उसको

सवाब मिलेगा ? फ़र्माया—हां।

६४५. हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० मर्ज़ की हालत में दिनों का अन्दाज़ा करते थे कि आज मैं कहां हूंगा और कल कहां (यानी किस बीवी के यहां) हूंगा, और मेरी बारी को बहुत दूर ख्याल करते थे, आख़िरकार जब मेरी बारी का दिन आया, तो ख़ुदा ने रूहे मुबारक मेरे ही पहलू और सीने के दर्मियान क़ब्ज़ की और हुज़ूर सल्ल० मेरे ही घर में दफ़्न हुए।

६४६. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि वफ़ात के वक़्त हुज़ूर सल्ल० छः आदमियों से (लाज़िमी) ख़ुश थे, उस्मान रज़ि०, तलहा रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, अली रज़ि०, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और सअद बिन वक़्क़ास रज़ि०।

६४७. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का इर्शाद है कि मुर्दों को गालियां न दो और न बुरा कहो, क्योंकि वह अपने किए को पहुंचेंगे।

बाब २२

ज़कात के फ़र्ज़ होने के बयान में

६४८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० को यमन की तरफ़ भेजा, ताकि तौहीद व रिसालत की तरफ़ बुलाएं। अगर लोग कहना मान लें तो उन को बता दें कि अल्लाह तआला ने माल पर ज़कात भी फ़र्ज़ की है, जो मालदारों से लेकर फ़क़ीरों को दी जाएगी।

६४९. हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० कहते हैं, एक शख़्स ने

अल्लाह के रसूल सल्ल० की खिदमत में अर्ज़ किया कि मुझे ऐसा अमल बता दीजिए, जिस के ज़रिए मैं जन्नत में चला जाऊं। लोग कहने लगे, इस को क्या हो गया है? (यह कैसी चीज़ मांग रहा है?) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इस को बड़ी ज़रूरत है, अच्छा तुम खुदा की बन्दगी किया करो, किसी को उस का शरीक न बनाओ, नमाज़ पाबन्दी से ठीक-ठीक पढ़ो, ज़कात अदा करो, रिश्तेदारों से मेहरबानी का बर्ताव करो।

६५०. हज़रत अबुहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि एक देहाती ने हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मुझे ऐसा अमल बता दीजिए, जिस को करने से मैं जन्नत में चला जाऊं, फ़र्माया, खुदा की इबादत करो, किसी चीज़ को उस का शरीक न बनाओ, फ़र्ज़ नमाज़ ठीक-ठीक अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो, वह कहने लगा, उस खुदा की क़सम, जिस की क़ुदरत के क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं इस से ज़्यादा नहीं करूंगा, जब पीठ मोड़कर चलता हुआ, तो आपने फ़र्माया, जिसको जन्नती शख्स को देखना पसन्द हो वह उस को देख ले।

६५१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि जब हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात हो गई और हज़रत अबू बक्र रज़ि० खलीफ़ा हुए और अरब के लोगों में से जो मुसलमान काफ़िर हुए थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने (हज़रत अबू बक्र रज़ि०) से कहा कि लोगों से किस तरह क़िताल कर सकते हैं? हुज़ूर सल्ल० का तो इर्शाद था कि मुझे लोगों से लड़ने का उस वक़्त तक हुक्म है, जब तक ला इला ह इल्लल्लाहु न कहें, जो शख्स तौहीद का क़ायल हो गया, उसने जायज़ खून के सिवाए (क़िसास वग़ैरह से) अपना माल और अपनी जान मुझ से बचा ली, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़र्माया, जिसने नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ किया, मैं उस से ज़रूर लड़ाई करूंगा, क्योंकि ज़कात माली हक़ है। खुदा की क़सम! अगर लोग मुझसे एक भेड़ के बच्चे को भी रोक लें, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० को अदा करते थे, तो मैं उन से ज़रूर लड़ूंगा। उमर रज़ि० बोले, ब खुदा! इस की वजह सिर्फ़ यह है कि अल्लाह तआला ने लड़ाई के लिए अबूबक्र रज़ि० का सीना कुशादा कर दिया है, इस लिए मेरा भी ख्याल है कि क़िताल दुरुस्त और ठीक है।

६५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अगर ऊंटों के मालिक ने ऊंटों का हक़ अदा नहीं किया, तो

(क़ियामत के दिन) ऊंट दुनिया की हालत से ज़्यादा मज़बूत और चुस्त व मुस्तैद होकर आएंगे और अपने खुरों से उस शख्स को रौंद डालेंगे और अगर बकरियों वाले ने बकरियों का हक़ अदा नहीं किया, तो (क़ियामत के दिन) बकरियां पहले से ज़्यादा क़वी होकर आएंगी और अपने खुरों से उस को पामाल करेंगी और सींगों से मारेंगी, इन जानवरों के हुक़ूक़ में से एक हक़ यह भी है कि पानी के घाट पर इन को दूहा जाए (ताकि मुसाफ़िरों को) और राहगीरों को उन का दूध दिया जा सके। ऐसा न हो कि तुममें से कोई क़ियामत के दिन बकरी को गर्दन पर लादे हुए आए। बकरी चिल्लाती हो और वह मुझे पुकारता हो और मैं कहता हूं कि मैं अल्लाह तआला से तुम को किसी तरह नहीं छुड़ा सकता, क्योंकि खुदा का पयाम पहुंचा चुका हूं। ऐसा भी न हो कि ऊंटों वाला क़ियामत के दिन ऊंट को गर्दन पर लादे हुए आए, ऊंट चिल्ला रहा हो और शफ़ाअत के लिए मुझे पुकारता हो और मैं कहता हूं कि खुदा के सामने मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, क्योंकि तब्लीग़ के हुक्म कर चुका हूं।

६५३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जिस को खुदा ने माल दिया हो और वह ज़कात अदा नहीं करता हो, क़ियामत के दिन उस का माल गंजे अज़दहे की शक्ल में लाया जाएगा, जिस की चार आंखें होंगी, दोनों जबड़ों में झाग भरे होंगे और तौक़ की तरह आदमी की गरदन में पड़ा होगा और दोनों जबड़ों को पकड़ कर कहेगा मैं तेरा माल हूं और तेरा खज़ाना हूं, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़र्मायी।

व ला यह्सबन्नल्लज़ी न यब्खलून (आखिर तक)

६५४. हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि पांच ओक़िया से कम में ज़कात नहीं है। पांच ऊंटों से कम में ज़कात नहीं है। पांच वसक़ से कम में ज़कात नहीं है, वसक़ साठ साअ का होता है। एक साअ तक़रीबन दो सेर तीन पाव (साअ ८० तोला के सेर (अंग्रेज़ी) से साढ़े तीन सेर का होता है।)

६५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जो शख्स पाक कमाई से छुहारे के बराबर खैरात करता है, अल्लाह तआला उस को दाएं हाथ से क़ुबूल फ़रमाता है, क्यों कि अल्लाह तआला अच्छी कमाई का माल ही क़ुबूल फ़र्माता है, फिर उस को मालिक के लिए इस तरह बढ़ाता है, जिस तरह तुम अपने बच्चे को (पाल-

कर) बढ़ाते हो, आख़िर में वह पहाड़ की तरह हो जाता है।

६५६. हज़रत हारिसा बिन वह्ब रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर-ए-अक्रम को इर्शाद फ़र्माते सुना है कि लोगो ख़ैरात करो, क्योंकि एक बार ज़माना ऐसा भी आएगा कि आदमी ख़ैरात का माल लिए-लिए फिरेगा और लेने वाला नहीं मिलेगा। हर शख़्स कहेगा, अगर कल ले आते, तो मैं ले लेता, आज मुझे ज़रूरत नहीं।

६५७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जब तुम में माल की इतनी ज़्यादती हो जाएगी कि बहा-बहा फिरेगा और माल वाले को फ़िक्र होगी कि इस को कौन क़ुबूल करे, अगर किसी के सामने पेश करेगा तो वह कहेगा कि मुझे ज़रूरत नहीं, उस वक़्त के बाद क़ियामत होगी।

६५८. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० कहते हैं, मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िद्मत में मौजूद था कि दो आदमी हाज़िर हुए। एक को ग़रीबी की शिकायत थी और दूसरा [illegible] और माल ले जाना चाहता था, लेकिन रास्ते में अम्न न था, इस लिए रास्ता बन्द हो जाने की उसे शिकायत थी, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, रास्ता बन्द हो जाने का तो यह जवाब है कि कुछ ही ज़माने के बाद क़ाफ़िले, बिला मुहाफ़िज़ के, मक्का तक जाया करेंगे, रही मुहताजी तो क़ियामत उस के बाद क़ायम होगी, जबकि आदमी ख़ैरात का माल लिए फिरेगा और लेने वाला नहीं मिलेगा। फिर (क़ियामत के दिन) ख़ुदा के सामने आकर खड़ा होगा, ख़ुदा और उस के दर्मियान न कोई पर्दा होगा, न तर्जुमान, उस वक़्त अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि क्या मैंने तेरे पास अपना रसूल नहीं भेजा था, वह जवाब देगा, जी हां! भेजा था, इस के बाद वह अपनी दाएं तरफ़ देखेगा तो आग के टुकड़े नज़र आएंगे और बाएं तरफ़ देखेगा, तब भी आग ही नज़र आएगी। इस लिए चाहिए कि तुम आग से बचो, अगरचे छुहारे का एक टुकड़ा देकर ही सही, अगर यह भी मुम्किन न हो, सिर्फ़ अच्छी ही बात कह कर।

६५९. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि आदमी ख़ैरात के लिए सोना लिए फिरेगा और लेने वाला कोई नहीं मिलेगा। मर्दों की कमी और औरतों की ज़्यादती की यह हालत होगी कि एक-एक शख़्स के पीछे

चालीस-चालीस औरतें फिरेंगी और उस की सरपरस्ती में आएंगी।

६६०. हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब हम को खैरात करने का हुक्म देते थे, तो हम बाज़ार जाकर सामान ढोने की मज़दूरी करते थे और एक आध सेर ग़ल्ला (वग़ैरह) कमाते थे और फिर खैरात करते थे और आज कल कुछ लोगों के पास लाखों रुपए हैं (और वे खैरात नहीं करते।)

६६१. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि (एक बार) एक औरत अपनी दो बेटियों को लेकर सवाल करने आयी, मगर मेरे पास से उसको एक खजूर के सिवा और कुछ न मिला। उसने खजूर लेकर दोनों बेटियों को बांट दिया और खुद न खाया, जब वह चली गई तो अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ लाए। मैंने वाक़िआ बयान किया तो फ़र्माया, जो शख्स इन लड़कियों की वजह से किसी तक्लीफ़ में मुब्तला होगा, उस के लिए ये लड़कियां आग से पर्दा बन जाएंगी।

६६२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! किस खैरात का सब से ज़्यादा सवाब है? फ़र्माया, जो खैरात तुम ऐसी हालत में करो कि तुम तन्दुरुस्त भी हो, माल की तुम को ख्वाहिश भी हो, ग़रीबी का डर भी हो, (वह खैरात सब से बेहतर है।) ऐसा न हो कि आखिरी वक़्त में जब दम हलक़ में आ जाए, तो कहो, फ़लां को इतनी देना और फ़लां को इतनी।

६६३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० से किसी बीवी ने पूछा कि हम में से आप से पहले कौन मिलेगी? फ़र्माया, सब से ज़्यादा लम्बी हाथ वाली, बीवियां हाथ नापने लगीं। हज़रत सौदा रज़ि० का सब से लम्बा हाथ निकला, लेकिन बाद में हम को मालूम हुआ कि हाथ की लम्बाई से हुज़ूर सल्ल० की मुराद खैरात थी। चुनांचे हज़रत सौदा रज़ि० ही सब से पहले हुज़ूर सल्ल० से मिलीं और उन को खैरात करना पसन्द भी था।

६६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि एक शख्स ने कहा, मैं खैरात करूंगा। चुनांचे जब खैरात का माल लेकर चला, तो किसी चोर के हाथ में दे दिया। लोग सुबह को बातें करने लगे कि चोर को खैरात दी गई, तो वह शख्स कहने लगा,

इलाही ! तेरा शुक्र है, अब मैं (फिर) ख़ैरात दूंगा। चुनांचे (दोबारा) ख़ैरात का माल लेकर चला, तो ज़ानिया औरत को दे आया, लोग सुबह को बातें करने लगे कि आज रात ज़िना करने वाली औरत को ख़ैरात दी गई। वह शख़्स कहने लगा, इलाही ! तेरा शुक्र है कि ज़ानिया को ख़ैरात दिलवाई। अब मैं फिर ख़ैरात दूंगा, चुनांचे (तीसरी बार) ख़ैरात के लिए माल लेकर चला, तो किसी मालदार के हाथ में पहुंच गया, लोग फिर कहने लगे कि आज एक दौलतमंद को सद्क़ा दिया गया, उस शख़्स ने कहा इलाही ! तेरा शुक्र है कि तूने (अनजानेपन में) चोर, ज़िना करने वाली और दौलतमंद को सद्क़ा दिलवा दिया, अल्लाह तआला ने उसके पास पयाम भिजवाया कि (तेरी ख़ैरात बेकार नहीं गई,) चोर को ख़ैरात देने में (तो यह हिक्मत है) कि शायद इस की वजह से वह चोरी करना छोड़ दे और शायद ज़ानिया भी ज़िना से तौबा कर ले, रहा दौलतमंद आदमी तो शायद उस को भी इस से नसीहत हासिल हो और वह भी ख़ैरात करने लगे।

६६५. हज़रत मअन बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि ख़ुद मैंने, मेरे बाप ने और मेरे दादा ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से बैअत की और हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद पैग़ाम भिजवा कर मेरा निकाह कर दिया। (एक दिन) मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में शिकायत लेकर पहुंचा, क्योंकि मेरे बाप ने कुछ सद्क़ा की अशर्फ़ियां निकाली थीं और मस्जिद में किसी के पास रखवाई थीं (कि जिसे चाहना दे देना,) मुझे इत्तला मिली तो मैं जाकर ले आया। बाप ने कहा, ख़ुदा की क़सम ! मेरा इरादा तो तुझे देने का न था। मैं यह झगड़ा लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ, आप ने फ़र्माया, यज़ीद ! तूने नीयत की, इसका सवाब तुझे मिलेगा और मअन ! जो तूने ले लिया वह तेरा ही है।

६६६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, हुज़ूरे अक्रम सल्ल० का इर्शाद है कि औरत जब ऐतदाल के साथ अपने घर का खाना खर्च करती है, और उस में से सद्क़ा दे देती है, इस शर्त के साथ कि उस की नीयत घर बिगाड़ने की न हो, तो खर्च करने का सवाब औरत को मिलता है और कमाई करने का मर्द को, ऐसे ख़ज़ानची को भी सवाब मिलता है, उन में से कोई किसी के सवाब को कम नहीं कर सकता।

६६७. हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० कहते हैं, हुज़ूरे अक्रम

सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। (ख़ैरात देने की) शुरूआत उन लोगों से करो, जिन की परवरिश से तुम्हारा ताल्लुक़ हो, जो पाकदामन बनना चाहता है, ख़ुदा उस को पाकदामन बना देता है। जो ग़नी बनता है, ख़ुदा उस को ग़नी कर देता है।

६६८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेंबर पर तशरीफ़ ले जाकर ख़ैरात का, पाकदामनी का, और सवाल करने का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़र्माया कि ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है, ऊपर का हाथ देने वाला और नीचे का मांगने वाला है।

६६९. हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० के पास जब कोई सवाल करने वाला आता और आप से किसी ज़रूरत का सवाल किया जाता, तो आप फ़र्माते कि इस की मदद करो। तुम को इस का अज्र मिलेगा। अल्लाह तआला अपने नबी की ज़ुबान से जो फ़ैसला या हुक्म चाहता है, कराता है।

६७०. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० कहती हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझ से फ़र्माया, (ख़ैरात से हाथ) न बन्द करो, वरना मुझ से भी बन्दिश कर ली जाएगी। दूसरी रिवायत में है, माल को जोड़-जोड़ कर मत रख, वरना अल्लाह तआला भी तुझ से रोक रखेगा, जितना मुम्किन हो, ख़र्च करती रह।

६७१. हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने जाहिलियत के ज़माने में जो इबादत और ख़ैरात की है और ग़ुलामों को आज़ाद किया है, क्या उस का सवाब मिलेगा ? फ़र्माया, पिछली नेकियों पर पाबन्द रहने के लिए ही तू मुसलमान हुआ है (यानी इस का सवाब मिलेगा।)

६७२. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अमानतदार मुसलमान ख़ज़ानची अगर ख़ुशी से, कम व बेशी किए बग़ैर पूरे तौर पर (मालिक के) हुक्म के मुताबिक़ (ख़ैरात की मद में) ख़र्च करे, तो वह भी ख़ैरात करने वाले की तरह है।

६७३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जब लोग सुबह को निकलते हैं तो दो फ़रिश्ते उतरते हैं, एक कहता है, इलाही ख़र्च करने वाले को, उस का बदल अता कर, दूसरा

कहता है इलाही ! कंजूस को हलाकत नसीब कर।

६७४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि कंजूस और सख़ी की मिसाल उन दो शख़्सों की तरह है, जो सीने से गर्दन तक लोहे का लिबास पहने हों, सख़ी आदमी जितना कम ख़र्च करता है, उस का लिबास बढ़ता जाता है, यहां तक कि सारे बदन को ढांक कर पांव को भी छिपा लेता है और कंजूस चूंकि कुछ ख़र्च करना नहीं चाहता, इस लिए उस के लिबास की हर कड़ी अपनी जगह जमी रहती है, वह बहुत कुछ इस को बढ़ाना चाहता है, मगर वह कुशादा नहीं होती।

६७५. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हर मुसलमान पर सद्क़ा करना वाजिब है, लोगों ने अर्ज़ किया कि अगर किसी के पास कुछ न हो, फ़र्माया अपने हाथ से मज़दूरी करे और अपने आप को नफ़ा पहुंचाए और सद्क़ा भी करे। लोगों ने अर्ज़ किया, अगर यह भी न हो सके। फ़र्माया मुहताज, मज़्लूम की मदद करे। लोगों ने अर्ज़ किया अगर यह भी न हो सके। फ़र्माया नेकी का हुक्म करे और बुराई से (लोगों) को मना करे, क्योंकि उस के लिए यही सद्क़ा है।

६७६. हज़रत उम्मे अतीया रज़ि० कहती हैं कि नसीबा अन्सारिया रज़ि० के पास (सद्क़े) की एक बकरी भेजी गई, उन्होंने इस में से कुछ गोश्त हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ि० के पास भेज दिया। जब रसूलुल्लाह सल्ल० (अन्दर तशरीफ़ लाए) तो हज़रत आइशा रज़ि० से फ़र्माया, तुम्हारे पास कुछ (खाने को) है ? उम्मुल मोमिनीन ने अर्ज़ किया, वही नसीबा का भेजा हुआ बकरी (का गोश्त) है। फ़र्माया लाओ, वह अपने मक़ाम पर पहुंच गया, (वह हमारे लिए सद्क़ा नहीं है।)

६७७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने मुझ को वह अह्काम लिखे, जो अल्लाह तआला ने अपने नबी पर नाज़िल फ़र्माए थे, यानी अगर किसी शख़्स के ऊंटों में ज़कात एक साल का मादा बच्चे इतना वाजिब हो और उसके पास एक साल का ऊंट का मादा बच्चा न हो, बल्कि दो साल का मादा बच्चा हो, तो उस से दो साल वाला मादा बच्चा ले लिया जाए और ज़कात वसूल करने वाला उस को बीस दिरहम या दो बकरियां वापस दे दे। (दूसरी सूरत यह है) कि अगर एक साल का मादा बच्चा न हो, बल्कि दो साल का नर बच्चा हो,

तो वही ले लिया जाए और कुछ वापस न दिया जाए।

६७८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझे यह अह्काम लिखे, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्ज़ फ़र्माया था कि शरीकों से अगर ज़कात वसूल करने वाला ज़कात बराबर ले ले और ऊंट दोनों के मिले-जुले हों मगर एक के ज़्यादा और दूसरे के कम हों, तो एक शरीक (कम ऊंटों वाला) दूसरे शरीक (ज़्यादा ऊंटों वाले से) वापस ले ले, ताकि बराबरी हो जाए।

६७९. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि एक देहाती ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर हिजरत के बारे में पूछा, आपने फ़र्माया, यह तो सख़्त चीज़ है, क्या तेरे पास कुछ ऊंट हैं (जिस की ज़कात अदा करता है?) उसने अर्ज़ किया, जी हां! फ़र्माया, तो दर-याओं के उस पार (अह्कामे इलाही के मुवाफ़िक़) अमल किए जा, अल्लाह तआला तेरे आमाल के सवाब में (कहीं) कमी नहीं करेगा।

६८०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने मुझे सदक़ा के फ़र्ज़ लिख दिए थे, जो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्ल० पर मुक़र्रर फ़र्माए थे। अगर किसी के ऊंटों पर ज़कात चार साल के बच्चे जितना फ़र्ज़ हो और उस के पास चार साल का बच्चा न हो, बल्कि एक तीन साल का हो, उस से तीन साल का बच्चा और दो बकरियां ली जाएं और अगर (बकरियों के बजाए) बीस दिरहम देना उस को आसान हो, तो बीस दिरहम दे और अगर ज़कात तीन साल के बच्चे जितना फ़र्ज़ हो और तीन साल का बच्चा न हो, बल्कि चार साल का बच्चा हो, तो चार साल का बच्चा ले लिया जाए और ज़कात वसूल करने वाला बीस दिरहम या दो बकरियां वापस दे दे। और अगर ज़कात में तीन साल का बच्चा फ़र्ज़ हो और तीन साल का मौजूद न हो, दो साल का मादा बच्चा हो, तो वही लेकर बीस दिरहम या दो बकरियां वापस दे दी जाएं और अगर ज़कात में दो साल का मादा बच्चा वाजिब हो और तीन साल का बच्चा मौजूद हो, तो तीन साल का बच्चा लेकर बीस दिरहम या दो बकरियां वापस कर दी जाएं। अगर ज़कात में दो साल का मादा बच्चा वाजिब हो और दो साल का मादा बच्चा न हो, बल्कि एक साल का मादा बच्चा मौजूद हो, तो यही ले लिया जाए और उस के साथ बीस दिरम या दो बकरियां ली जाएं।

६८१. हजरत अनस रजि० कहते हैं कि हजरत अबू बक्र रजि० ने मुझे बहरैन में यह खत भेजा—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। नीचे लिखी हुई जकात अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुसलमानों पर फ़र्ज की है और खुदा ने अपने रसूल सल्ल० को इस का हुक्म दिया है, जिस शख्स से उस के मुवाफ़िक़ मांगा जाए, वह अदा करे। अगर उस से ज्यादा तलब किया जाए, तो न दे। चौबीस ऊंट या उस से कम में हर नौवे पर एक बकरी (जकात) की फ़र्ज है। पचीस से पैंतीस तक एक साल का मादा बच्चा, छत्तीस से पैंतालीस तक दो साल का मादा बच्चा, छियालीस से साठ तक एक तीन साल का मादा बच्चा जो जुफ़्ती के क़ाबिल हो, इक्सठ से पचहत्तर तक चार साल का, छिहत्तर से नव्वे तक दो, दो साल का मादा बच्चा, ९१ से १२० तक दो, तीन साल की मादा जुफ़्ती के क़ाबिल, एक सौ बीस से ज्यादा में हर चालीस पर एक दो साल का मादा बच्चा और हर पचास पर एक साल का बच्चा है। अगर किसी के पास सिर्फ़ चार ऊंट हों तो उन में जकात नहीं है, अगर मालिक की ख्वाहिश हो तो सद्क़ा के तौर पर कुछ दे दे, वरना जकात वाजिब नहीं है, हां, पांच ऊंटों की जकात एक बकरी है।

६८२. अगर बकरियां चालीस हो जाएं और ज्यादातर जंगल में (मुफ़्त चरती हों, तो चालीस से एक सौ बीस तक एक बकरी ली जाए, एक सौ बीस से दो सौ तक दो बकरी, दो सौ से तीन सौ तक तीन बकरी, इस के बाद हर सौ पर एक बकरी फ़र्ज है, अगर बकरियां चालीस से कम हों तो जकात नहीं। (मालिक चाहे तो सद्क़े के तौर पर कुछ दे दे) चांदी में जकात चालीसवां हिस्सा है, शर्त यह है कि दो सौ दिरहम हों, अगर एक सौ नव्वे दिरहम हों, तो जकात नहीं है (हां, अगर मालिक चाहे तो सद्क़े के तौर पर कुछ दे दे।)

६८३. हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि हुजूर सल्ल० ने जब हजरत मुआज रजि० को यमन का हाकिम बना कर भेजा था, तो यह भी आखिर में फ़र्मा दिया था कि तुम किताबी फ़िरक़ों की तरफ़ जा रहे हो, इन की उम्दा-उम्दा बातों से परहेज करना।

६८४. हजरत अनस रजि० कहते हैं कि मदीना में सभी अन्सार से ज्यादा हजरत अबू तल्हा रजि० के बाग़ थे और उन के सारे बाग़ों में बेरहा नाम का बाग़ ज्यादा पसन्द था, क्योंकि यह मस्जिद नबवी के सामने

है। रसूलुल्लाह सल्ल० (कभी-कभी) तशरीफ़ ले जाकर वहां बेहद लतीफ़ पानी पिया करते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई कि 'लन तना लुल बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम मा तुहिब्बून' तो अबू तल्हा रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िद्मत में खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि जब तक अपना पसन्दीदा और बेहतरीन माल ख़र्च न करोगे, सवाब (पूरा-पूरा) नहीं मिलेगा और मुझे सारे माल से ज़्यादा बेरहा का बाग़ पसन्द है, इस लिए मैं ख़ुदा के लिए इस को ख़ैरात करता हूं और उम्मीद करता हूं कि इस का सवाब ख़ुदा के यहां जमा रहेगा। आप अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ जहां चाहें इस को ख़र्च करें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वाह, वाह ! माल तो बहुत फ़ायदे का है। तुमने जो कुछ कहा, मैंने सुन लिया। मेरा ख़याल है तुम इस को अपने रिश्तेदारों के लिए वक़्फ़ कर दो। अबू तल्हा रज़ि० बोले (बहुत ख़ूब !) मैं ऐसा ही करता हूं, चुनांचे अबू तल्हा रज़ि० ने वह बाग़ अपने चचा के लड़कों और दूसरे रिश्तेदारों में बांट दिया।

६८५. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि इब्ने मसऊद रज़ि० की बीवी हज़रत ज़ैनब रज़ि० की ख़िद्मत में हाज़िर हुईं, आप मकान में तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने इत्तिला कराई। अर्ज़ किया गया कि ज़ैनब रज़ि० आयी हैं। फ़र्माया, कौन ज़ैनब ? अर्ज़ किया गया, इब्ने मसऊद रज़ि० की बीवी। फ़र्माया, हां बुला लो। उन को बुलाया गया, (अन्दर आकर) उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुज़ूर सल्ल० ने आज सद्क़ा देने का हुक्म दिया है, मेरे पास कुछ ज़ेवर है। मैं इस को ख़ैरात करना चाहती हूं। इब्ने मसऊद रज़ि० बोले, मैं और मेरा बेटा सब से ज़्यादा ख़ैरात लेने के हक़दार हैं। आपने फ़र्माया, इब्ने मसऊद रज़ि० ने सच कहा, तेरा शौहर और लड़का दूसरे सद्क़ा लेने वालों से ज़्यादा हक़दार है।

६८६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, किसी मुसलमान पर उस के (सवारी के) घोड़े और (ख़िद्मत के) ग़ुलाम में ज़कात नहीं है।

६८७. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल० मेंबर पर तशरीफ़ ले गए। हम लोग आप के इर्द-गिर्द बैठे थे। आपने फ़र्माया, मैं अपने बाद तुम्हारे हक़ में दुनिया की उस ख़ुशहाली

और रख-रखाव से डरता हूं जिस का दरवाज़ा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा। एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या ख़ैर (ईमान) से शर (कुफ़्) पैदा हो सकता है ? आप ख़ामोश हो गए, लोगों ने उस शख़्स से कहा, तुझ से हुज़ूर सल्ल० कलाम नहीं फ़र्माते और तू है कि बोले ही जाता है। इस के बाद जो हमने (नज़र उठा कर) देखा, हुज़ूर सल्ल० पर वह्य के नाज़िल होने की निशानियां थीं। आपने पसीना पोंछा और फ़र्माया, सवाल करने वाला कहां है ? गोया आपने उसकी तारीफ़ की, फिर फ़र्माया बेशक, ख़ैर शर हासिल होने का ज़रिया नहीं है, लेकिन रबी की कुछ पैदावार (कभी) क़त्ल भी कर देती है या (कम से कम) मौत के क़रीब कर देती है, मगर उन ही जानवरों को, जो सब्ज़ी खाते हैं कि जब खाते-खाते उन की कोखें फूल जाती हैं, तो धूप में आकर लेट जाते हैं और खाए हुए डाल देते हैं। (क़ज़ाए हाजत के तौर पर नहीं) और पेशाब करते हैं फिर जब ज़रा पेट खाली हो जाता है, तो चरने लगते हैं, माल भी सब्ज़ व शीरीं है और मुसलमान का बेहतरीन साथी है, मगर उस वक़्त, जबकि उन में से मिस्कीनों को, यतीमों को और मुसाफ़िरों को दिया जाए जो शख़्स नाहक़ (लोगों का) माल लेता है, उस की मिसाल ऐसी है जैसे कोई खाता तो हो और जी न भरता हो। ऐसा माल क़ियामत के दिन उस शख़्स के खिलाफ़ गवाही देगा।

६८८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० की बीवी ज़ैनब रज़ि० की हदीस ऊपर गुज़र चुकी। उसी में हज़रत ज़ैनब रज़ि० इतना और बयान करती हैं कि मैं जब हुज़ूर सल्ल० के पास गई तो दरवाज़े पर एक और औरत मेरी तरह ज़रूरतमन्द मौजूद थी। इतने में हज़रत बिलाल रज़ि० हमारे पास आये, तो मैंने कहा ज़रा अल्लाह के रसूल सल्ल० से पूछ दो कि यह काफ़ी है कि मैं अपने शौहर पर और अपने यतीम बच्चों पर, जो मेरी ही परवरिश में हैं, ख़र्च कर दूं ? हज़रत बिलाल रज़ि० ने जाकर पूछा। आपने फ़र्माया, हां ऐसा कर सकती है, ज़ैनब के लिए दो सवाब हैं, एक रिश्तेदारी का, दूसरा ख़ैरात का।

६८९. हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सल्मा रज़ि० फ़र्माती हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मैं अबू सलमा रज़ि० के बेटों पर ख़र्च कर सकती हूं ? क्योंकि यह मेरे ही बेटे हैं। फ़र्माया, (हां) उन पर ख़र्च कर, जो कुछ तू उन पर ख़र्च करेगी, उस का सवाब तुझे

मिलेगा।

६९०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि (एक बार) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने खैरात करने का हुक्म दिया। लोगों ने (आकर) अर्ज़ किया कि इब्ने जमील रज़ि० और खालिद बिन वलीद रज़ि० और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब नहीं देते, मना करते हैं, आपने फ़र्माया, इब्ने जमील रज़ि० तो (वहां) इस लिए मना करता होगा कि वह बिल्कुल ग़रीब था, खुदा और रसूले खुदा ने उसको दौलतमन्द बना दिया, बेशक उस का न देना सरकशी की दलील है। रहे खालिद रज़ि० तो तुम उन पर जुल्म करते हो, उन्होंने तो अपनी ज़िरहें और जंग के हथियार खुदा की राह में वक़्फ़ कर रखे हैं, बाक़ी अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रसूले खुदा सल्ल० के चचा हैं, उन पर दो गुना सद्क़ा वाजिब है।

६९१. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि कुछ अंसारियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से कुछ मांगा, आपने उन को दे दिया। उन्होंने फिर मांगा, आपने उन को फिर दे दिया, उन्होंने फिर सवाल किया। आपने उन को फिर दे दिया, यहां तक कि आप के पास जो कुछ मौजूद था, वह खत्म हो गया। आखिर में हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मेरे पास जो बेहतरीन चीज़ होगी मैं तुम से बचा कर न रखूंगा। जो शख्स पाक दामन बनना चाहेगा खुदा उसे पाक दामन बना देगा, जो ग़नी बनेगा खुदा उस को ग़नी कर देगा। जो सब्र करने वाला बनेगा उस को खुदा साबिर कर देगा और किसी शख्स को सब्र से बेहतर और बड़ी चीज़ नहीं दी गई।

६९२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर तुम में कोई शख्स रस्सी में लकड़ियों का गट्ठर बांध कर पीठ पर लाद कर लाए, तो दूसरे के पास जाकर सवाल करने से यह अच्छा है, (मालूम नहीं) वह उस को दे या न दे।

६९३. हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की एक दूसरी रिवायत में आया है कि जो शख्स लकड़ियों का गट्ठर पीठ पर लाद कर बाज़ार में लाकर बेचे, अल्लाह तआला इस वजह से उस की आबरू महफ़ूज़ रखे, यह इस बात से बेहतर है कि वह लोगों से मांगता फिरे, लोग उस को दें या न दें।

६९४. हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह

के रसूल सल्ल० से कुछ मांगा, आपने मुझे दे दिया, मैंने फिर सवाल किया। आपने और दे दिया। मैंने तीसरी बार मांगा आपने फिर दिया। आखिर में फ़र्माया, हकीम ! यह माल सब्ज़ व शीरीं है, जो शख्स इसको नफ़्स की सखावत के साथ लेता है उस को बरकत अता होती है और जिस को इंतिज़ार करने और तकते रहने के बाद मिलता है, उसको बरकत नहीं मिलती और ऐसा आदमी उस शख्स की तरह होता है, जो खाता तो है, मगर सेर नहीं होता, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। हकीम कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं उस खुदा की क़सम खाकर कहता हूं, जिसने आपको हादी बना कर भेजा है। अब मैं दुनिया को छोड़ते वक्त तक आप के बाद किसी से कोई चीज़ न लूंगा, चुनांचे अबूबक्र रज़ि० अपने खिलाफ़त के दौर में हकीम रज़ि० को कुछ देने के लिए बुलाते रहे और वह बराबर क़ुबूल करने से इंकार करते रहे, हज़रत उमर रज़ि० भी (अपने खिलाफ़त के दौर में) हकीम रज़ि० को कुछ देना चाहा, मगर उन्होंने क़ुबूल करने से इंकार कर दिया, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मुसलमानो ! मैं तुम को गवाह बनाता हूं कि मैं उस माले ग़नीमत में से हकीम रज़ि० को उस का हक़ दे रहा हूं और वह लेने से इंकार कर रहा है, रसूलुल्लाह सल्ल० के बाद हकीम रज़ि० जब तक ज़िंदा रहे किसी से कुछ न लिया।

६६५. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब मुझे कुछ तोहफ़ा इनायत फ़र्माते थे, तो मैं अर्ज कर दिया करता था कि यह उस शख्स को दीजिए जो मुझ से ज़्यादा ज़रूरत वाला है, आखिर आपने फ़र्माया कि अगर सवाल किए बग़ैर और इन्तिज़ार के बग़ैर तुम्हारे पास माल आ जाए तो ले लिया करो, वरना इस के पीछे न पड़ा करो।

६६६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जो शख्स हमेशा मांगता रहता है, जब क़ियामत का दिन आएगा, तो उस के मुंह पर गोश्त की बोटी न होगी, क़ियामत के दिन सूरज इतना क़रीब होगा कि (उस की गर्मी से) लोगों के आधे कानों तक पसीना पहुंच जाएगा, इस हालत में लोग हज़रत आदम अलै०, हज़रत मूसा अलै० से फ़र्याद करेंगे और आखिर में मुहम्मद सल्ल० से मदद मांगेंगे।

६९७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, मिस्कीन वह नहीं है जो एक दो लुक्मों या एक दो खजूरों के लिए लोगों के पास मारा-मारा घूमता-फिरता है, मिस्कीन वह है जिस को ज़रूरत इतनी चीज़ न मिले तो न लोगों को उस की हालत मालूम हो कि उस को ख़ैरात दे सकें और न ख़ुद किसी से सवाल करने पर तैयार हो।

६९८. हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ि० कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ तबूक की जंग में शरीक होने के लिए चले। जब आप क़ुरा की वादी में तशरीफ़ लाए, तो एक औरत को एक बाग़ में खजूर के पेड़ के नीचे बैठा देखा। आपने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया, अन्दाज़ा करो। (इसमें कितनी खजूरें होंगी ?) ख़ुद आपने उस को दस वसक़ अन्दाज़ा किया और उस औरत से फ़र्माया कि जितनी खजूरें पैदा हों, उन को वज़न कर लेना, ख़ैर वहां से चल कर हम तबूक में पहुंचे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, आज रात बहुत सख़्त हवा चलेगी, जिसके पास ऊंट हो उस को बांध दे, रात को न उठे, हुक्म के मुताबिक़ हमने ऊंट बांध दिए। (रात को) सख़्त हवा चली, एक आदमी जो खड़ा हुआ, तो हवा ने उस को तै नामी पहाड़ पर जा गिराया, शाहे ऐला ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में एक सफ़ेद खच्चरी और ओढ़ने के लिए एक चादर हदिए के तौर पर भेजी, आपने उस को जज़ीरा पर बरक़रार रखा, (जंग से फ़ारिग़ होकर) जब हुज़ूर सल्ल० क़ुरा की वादी में तशरीफ़ लाए, तो उस औरत से मालूम किया, कितनी खजूरें हुईं, अर्ज़ किया, दस वसक़ ! यही अन्दाज़ा रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया था, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने हम से फ़र्माया, मुझे मदीना जल्द जाना है, जो मेरे साथ जल्द चलना चाहे तो चलो। (हम हुज़ूर सल्ल० के साथ चल दिए) जब आप मदीना के क़रीब पहुंचे तो फ़र्माया यह तय्यिबा है, उहुद पहाड़ को देखा तो फ़र्माया यह पहाड़ी हम से मुहब्बत करती है और हमें उस से मुहब्बत है। क्या मैं तुम को बताऊं कि अंसार में से किस का मकान बेहतरीन है ? लोगों ने अर्ज़ किया जी हां, इर्शाद फ़र्माया बनी नज्जार के मकान, इस के बाद बनी अब्दुल अशहल के, फिर बनी सायदा के और अन्सार के सारे घरों में ख़ैर है।

६९९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया जो चीज़ें आसमान के या चश्मों के या तालाबों के पानी से सेराब होकर (पैदा हुई हों) उस में दसवां हिस्सा (ज़कात) है और जो कुएं के

पानी से सेराब होकर (पैदा हुई हों,) उस में बीसवां हिस्सा (ज़कात) है।

७००. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि खजूरें टूटने के मौसम में अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िद्मत में खजूरें लायी जाती थीं। हर शख़्स अपने-अपने सद्क़े की खजूरें लाकर हाज़िर करता होता, खजूरों का एक ढेर लग जाता था और हसनैन रज़ि० उन से खेला करते थे। (एक दिन) हज़रत हसन रज़ि० या इमाम हुसैन रज़ि० ने उन में से एक खजूर मुंह में रख ली और रसूलुल्लाह सल्ल० ने देख लिया, फ़ौरन उन के मुंह से निकाली और फ़र्माया, तुम को मालूम नहीं कि मुहम्मद सल्ल० की औलाद सद्क़ा नहीं खाती।

७०१. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने एक शख़्स को अल्लाह की राह में एक घोड़ा सवारी के लिए दिया, मगर उसने इस घोड़े को बिल्कुल ख़राब और बेकार कर दिया। मुझे ख़्याल हुआ कि यह सस्ता बेच देगा, इस लिए मैं ख़रीद लूं। (यह मस्अला) मैंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, आपने फ़र्माया, उस को न ख़रीदो और अपनी सद्क़ा की हुई चीज़ चाहे एक दिरहम में मिले, मगर वापस न लो, क्योंकि सद्क़ा को वापस लेने वाला क़ै को लौटाने वाले की तरह है।

७०२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मैमूना रज़ि० की लौंडी को एक बकरी सद्क़ा की हुई मिली और वह मर गई। नबी सल्ल० ने उस को पड़ा देखा, तो फ़र्माया, तुम इस की खाल क्यों न काम में लाओ? उन्होंने अर्ज़ किया, यह मुर्दा है। फ़र्माया मुर्दार का सिर्फ़ खाना हराम है।

७०३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िद्मत में वह गोश्त पेश किया गया जो बरीरा रज़ि० को सद्क़ा में मिला था। (आपने उस को ले लिया) और फ़र्माया, यह उस के लिए सद्क़ा है और हमारे लिए हदिया है।

७०४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबई रज़ि० कहते हैं कि जब कोई क़ौम अपना सद्क़ा हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में पेश करती, तो आप फ़र्माते, इलाही! इन की औलाद पर रहमत नाज़िल फ़र्मा, एक बार मेरे वालिद हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में अपना सद्क़ा लाए, आपने फ़र्माया, इलाही! अबू ऊफ़ा की औलाद पर रहमत नाज़िल फ़र्मा।

७०५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० से रिवा-

करते हैं कि क़ौम बनी इस्राइल में से एक शख़्स ने किसी दूसरे इस्राइल से हज़ार दीनार क़र्ज़ मांगा। उसने दे दिया। (वापसी में चूंकि दरिया पड़ता था, इस लिए दरिया को पार करने के लिए उस को नाव की जरूरत पड़ी, मगर) दरिया के पार आने के लिए उसे कोई सवारी नहीं मिली, मजबूरन एक लकड़ी लेकर उस को खोखली कर के दीनार उस में भर दिए और दरिया में उस को डाल दिया (और ख़ुदा से दुआ की, यह लकड़ी क़र्ज़ लेने वाले को पहुंचा दे) इत्तिफ़ाक़ से यह लकड़ी उस के हाथ लग गई, जिसने क़र्ज़ दिया था। उसने घर में जलाने के लिए लकड़ी को उठा लिए और उस को खोला तो माल निकला (अच्छी नीयत का फल।)

७०६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, (अगर कोई किसी के चौपाए को ज़ख़्मी कर दे, तो) चौपाए के ज़ख़्म का मुआवज़ा नहीं है, चौपाया कुएं में गिर कर मर जाए तो मुआवज़ा नहीं। खानों में कुछ टैक्स नहीं। दफ़न किया हुआ ख़ज़ाना मिल जाए तो (उस में) पांचवा हिस्सा सरकारी है।

७०७. हज़रत अबू हुमैद रज़ि० साअदी कहते हैं कि बनू असद के एक शख़्स मुसम्मा बिन बक़ीआ को रसूलुल्लाह सल्ल० बनू ने सलीम के सद्क़ों को वसूल करने पर मुक़र्रर फ़र्माया, इब्ने बक़ीआ जब (वापस) आये तो उन से हिसाब मांगा।

७०८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि सुबह के वक़्त मैं अबूतलहा के बच्चे अब्दुल्लाह को रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में ले गया, ताकि आप तहनीक कर दें (खजूर चबा कर बच्चे के मुंह में देकर कलिमा की उंगली से उस के तल्वे से मली जाती है, ताकि बच्चे को खाने का मज़ा मालूम हो और कुछ खाने लगे, इस को तहनीक कहते हैं) आप उस वक़्त दाग़ने का आला अपने हाथ में लिए सद्क़ा के ऊंटों को दाग़ रहे थे।

बाब २३

सदक़ा-ए-फ़ित्र के बयान में

७०६. हज़रत इब्ने उम्र रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हर मुसलमान मर्द, औरत, छोटे-बड़े, आज़ाद गुलाम, पर सद्क़ा-ए-फ़ित्र एक साअ खजूर या जौ फ़र्ज़ किया है और नमाज़ को जाने से पहले इसको अदा करने का हुक्म दिया है।

७१०. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हम हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में ईदुल फ़ित्र के दिन अपने खाने में से एक साअ अदा किया करते थे। उस वक़्त हमारी ख़ूराक़ जौ, किशमिश, पनीर और खजूरें थीं।

७११. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हर छोटे-बड़े, आज़ाद और गुलाम पर सद्क़ा-ए-फ़ित्र एक साअ खजूर या जौ फ़र्ज़ किया है।

बाब २४

हज के बयान में

७१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० के पीछे सवारी पर बैठे थे कि क़बीला ख़शम की एक औरत आई, फ़ज़्ल उस की तरफ़ देखने लगे। वह फ़ज़्ल को देखने लगी, नबी सल्ल० ने फ़ज़्ल के मुंह को दूसरी तरफ़ फेर दिया। उस

औरत ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मेरा बाप बहुत बूढ़ा है, सवारी पर ठीक नहीं बैठ सकता. और इस ज़माने में उस को हज के फ़र्ज़ को अदा करने का मौक़ा मिला है, क्या मैं उसकी तरफ़ से हज कर सकती हूं ? आपने फ़र्माया, हां। (यह वाक़िआ विदाई हज का है।)

७१३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को देखा कि आप ज़ुलहुलैफ़ा के मक़ाम में ऊंटनी पर सवार हो रहे थे, फिर एहराम बांध रहे थे और ऊंटनी आप को लेकर सीधी खड़ी हो रही थी।

७१४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऊंटनी पर सवार होने की हालत में हज किया और इसी पर आप के खाने-पीने का सामान था।

७१५. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम जिहाद को सब से अच्छा अमल ख़्याल करते हैं, क्या हम जिहाद न करें ? फ़र्माया, नहीं, बल्कि मक़्बूल हज बड़ा जिहाद है।

७१६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स अल्लाह के लिए हज करे, न उस में हम-बिस्तरी करे, न गंदी बातें कहे, न और कोई गुनाह का काम करे, तो वह ऐसा ही पाक व साफ़ होकर लौटेगा, जैसा पैदाइश के दिन था।

७१७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (हज व उमरा के लिए) मीक़ात (जहां से एहराम बांधा जाता है) मुक़र्रर फ़र्मा दिया है, मदीना के लोग-ज़ुलहुलैफ़ा, नज्दियों के लिए 'क़र्नुलमनाज़िल', शामियों के लिए 'हज्फ़ा', यमन के लोगों के लिए यलमलम, इन जगहों के बाशिन्दों के लिए यही मीक़ात हैं और उन लोगों के लिए भी, जो इधर से होकर गुज़रें, बाक़ी इन के अन्दर रहने वालों के लिए मीक़ात वह जगह है, जहां से चलना शुरू करें, चुनांचे मक्का वालों के लिए मक्का मीक़ात है।

७१८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बत्हा के मक़ाम में (जो मक़ाम ज़ुलहुलैफ़ा में दाखिल है) क़ियाम किया, और वहीं नमाज़ पढ़ी। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० भी यों ही करते थे।

७१६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल०, जब तशरीफ़ ले जाते, तो मस्जिद शजरा में नमाज़ पढ़ते थे और जब वापस होते थे तो ज़ुलहुलैफ़ा के अन्दर वादी के बीच में नमाज़ पढ़ते थे और वहीं रात गुज़ारते थे। जाते में शजरा के रास्ते से जाते थे और वापसी में मुअर्रिस से आते थे।

७२०. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने अक़ीक़-वादी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़र्माते हुए सुना कि रात एक आने वाले (जिब्रील) ने मुझ से आकर कहा कि इस मुबारक जंगल में नमाज़ पढ़वा दो, (एहराम के वक़्त,) कहो कि मैंने हज के साथ उमरा की भी नीयत की है।

७२१. हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० (एक बार) पिछली रात को ज़ुलहुलैफ़ा के अन्दर बतने वादी के मक़ाम में आराम फ़र्मा रहे थे कि आप से ख्वाब की हालत में किसी (फ़रिश्ते) ने कहा कि आप बरकत वाले बत्हा में हैं।

७२२. यअ्ला बिन उमैया रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, जिस वक़्त हुज़ूर सल्ल० पर वह्य नाज़िल होती हो, आप मुझे दिखाना, चुनांचे (एक दिन) हुज़ूर सल्ल० जारााना के मक़ाम में थे, सहाबा रज़ि० का गिरोह भी हाज़िर था, इतने में एक आदमी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुज़ूर उस शख्स के बारे में क्या हुक्म देते हैं जिसने उमरा का एहराम बांधा, मगर खुश्बू उसने इतनी मली थी कि बिल्कुल तर हो रहा था ? थोड़ी देर आप खामोश रहे और आप पर वह्य नाज़िल होने लगी, हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे इशारा किया, मैं जा पहुंचा। आप के सर पर उस वक़्त एक कपड़ा पड़ा हुआ था, जिस से मुबारक सर ढका हुआ था। मैंने झुक कर देखा तो आप का चेहरा लाल हो रहा था और आप हांफ रहे थे। धीरे-धीरे आप की यह हालत जाती रही तो आपने फ़र्माया, उमरा के बारे में सवाल करने वाला कहां है ? वह शख्स हाज़िर किया गया, फ़र्माया, जो खुश्बू लगी हुई है, उस को तीन बार धो डालो, जुब्बे को उतार दो और उमरा में वही काम करो, जो हज में करते हो।

७२३. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, जब हुज़ूर सल्ल० एहराम बांधते थे, तो मैं हुज़ूर सल्ल० के खुश्बू लगाती थी

और बैतुल्लाह के तवाफ़ से पहले एहराम खोलते थे, तो उस वक़्त भी खुश्बू लगाती थी।

७२४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० बालों को गोंद से जमाए हुए थे और उस वक़्त आप एहराम बांधते थे।

७२५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमेशा मस्जिद (ज़ुलहुलैफ़ा से) एहराम बांधा।

७२६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक बार) हज़रत उसामा रज़ि० अरफ़ा के मक़ाम से मुज़दलफ़ा तक अल्लाह के रसूल सल्ल० के पीछे (ऊंटनी पर) सवार रहे, उस के बाद मुज़दलफ़ा से मिना तक फ़ज़्ल सवार रहे और दोनों ने (ही) कहा कि आख़िरी पत्थर फेंकने तक हुज़ूर सल्ल० बराबर लब्बैक कहते रहे।

७२७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० कंघी कर चुके, तेल डाल चुके और आपने और सहाबा ने तहबंद और चादरें पहन लीं, तो आप मदीना से तशरीफ़ ले चले और ज़ाफ़रानी रंग की चादर के सिवा जिस का रंग छूट कर बदन को लगता है और किसी तरह के तहबंद या चादर पहनने से मना नहीं फ़रमाया, सुबह को ऊंटनी पर सवार होकर ज़ुलहुलैफ़ा के मक़ाम से जाग कर पहुंचे, वहां पहुंच कर आपने और सहाबा रज़ि० ने सीधे खड़े होकर एहराम बांधा और (क़ुर्बानी के) जानवरों के गले में क़लावा (पट्टा) लटकाया (यह वाक़िआ २५ ज़ीक़ादा का है,) फिर ज़िलहिज्जा की चार रातें गुज़ारने के बाद मक्का में पहुंचे, बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई की और चूंकि जानवरों के क़लावे बांध कर ले गए थे, इस लिए एहराम खोल दिया, इस के बाद हुजों के पास ऊपरी मक्का में आराम फ़रमाया। उस वक़्त आप एहराम बांध चुके थे, अव्वल तवाफ़ करने के बाद, आप फिर काबा के पास नहीं गए। जब आप अरफ़ा से वापस हुए, तो असहाब रज़ि० को हुक्म दिया कि जिस शख़्स के पास क़ुर्बानी का जानवर न हो और पहले से उसने क़लावा न बांध दिया हो, जाकर ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ करे, सफ़ा व मरवह के दर्मियान सई करे, फिर सर के बाल कतरवा कर एहराम खोल दे, अगर बीवी के साथ हो, तो बीवी से मुक़ारबत और ख़ुश्बू लगाना और कपड़े पहनना उस के लिए हलाल है।

७२८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० इस तरह लब्बैक कहते थे—लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक लब्बैक ला शरी-क ल-क इन्नल हम-द वन्नेम-त ल-क वल्मुल-क ला शरी-क ल-क !

७२९. हज़रत अनस रज़ि० का बयान है कि हमने अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ मदीना में ज़ुहर की चार रकअतें पढ़ीं, फिर ज़ुलहुलैफ़ा में (पहुंच कर) अस्र की दो रकअतें पढ़ीं। रात को आप वहीं रहे। सुबह को सवार होकर बेदा नामी जगह पर आए। (यहां पहुंच कर) आपने ख़ुदा की हम्द पढ़ी, सुब्हानल्लाह, अल्लाहु अक्बर कहा और हज व उमरा का एहराम बांधा। (जब) हम तवाफ़ व सई वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर आए, तो आपने लोगों को एहराम खोल देने का हुक्म दिया, लोगों ने एहराम खोल दिया, फिर ज़िलहिज्जा की सात तारीख़ को हज का एहराम बांधा, रावी का बयान है कि हुज़ूर सल्ल० ने बहुत से जानवर अपने मुबारक हाथ से ज़िब्ह किए। चुनांचे मदीने में अब्रे रंग के दो मेंढे ज़िब्ह किए थे।

७३०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ज़ुलहुलैफ़ा से लब्बैक शुरू करते थे और हरम में पहुंच कर लब्बैक ख़त्म करते थे, तुवा के पास पहुंच कर रात गुज़ारते थे, सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद वहीं ग़ुस्ल करते थे कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऐसे ही किया था।

७३१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया, गोया मेरी नज़रों के सामने है, मूसा अलै० वादी में दाख़िल हो रहे हैं और लब्बैक पढ़ रहे हैं।

७३२. हज़रत अबूमूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे यमन की तरफ़ अपनी क़ौम के पास भेजा था, मैं वापस आया तो आपने बत्हा नामी जगह में मुझ से फ़र्माया, किस चीज़ का एहराम बांधा है? मैंने अर्ज़ किया, जिस चीज़ का हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने बांधा है, फ़र्माया, तेरे साथ हदी (क़ुर्बानी का जानवर) भी है? मैंने अर्ज़ किया, नहीं, आपने मुझे हुक्म दिया (कि तवाफ़ कर के सफ़ा व मरवह के दर्मियान) सई करूं, मैंने काबे का तवाफ़ कर के सफ़ा व मरवह का चक्कर लगाया, फिर आपने एहराम खोल देने का हुक्म दिया। मैंने एहराम खोल दिया और अपने घर वालों में से एक औरत के पास आया, उसने मेरे बालों में कंघी की या सर धोया, जब हज़रत उमर

रज़ि० आए (यानी उन की ख़िलाफ़त का दौर आया) तो फ़रमाने लगे, अगर हम अल्लाह की किताब पर अमल करते हैं तो हम को सिर्फ़ उमरा कर के बग़ैर हज के एहराम न खोल देना चाहिए, क्योंकि अल्लाह तआला हुक्म देता है 'व अतिम्मुल हज-ज वल्उमर-तलिल्लाह' कि हज और उमरा को पूरा करो और अगर हम सुन्नत नबवी पर अमल करें, तब भी बिना क़ुर्बानी किए (एहराम न खोलना चाहिए,) क्योंकि आप क़ुर्बानी करने के बाद एहराम खोलते थे।

७३३. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज के दिनों में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ हम रात को चले, सर्फ़ के मक़ाम में (पहुंच कर) आराम फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० सहाबा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए और उन से फ़रमाया, जिस के पास हुदी न हो और उमरा करना चाहे, तो कर ले और जिस के पास हुदी हो वह ऐसा न करे। चुनांचे कुछ सहाबियों ने उमरा किया, कुछ ने नहीं किया। अक्सर को चूंकि हुदी लाने की ताक़त थी, (यानी मालदार थे) और उन के पास क़ुर्बानी का जानवर मौजूद था, इस लिए उमरा न कर सके।

७३४. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हम सिर्फ़ हज करने का ख्याल लेकर हुज़ूर सल्ल० के साथ चले। (मक्का) पहुंच कर हमने काबे का तवाफ़ किया, हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि जिस के पास हुदी न हो, वह एहराम खोल दे। चुनांचे, जो लोग हुदी नहीं ले गए थे, उन्होंने भी एहराम खोल दिया, हज़रत सफ़िया रज़ि० बोलीं, मेरा ख्याल है कि मेरी वजह से लोगों को रुक जाना पड़ेगा। आपने फ़रमाया, अक़रा हलक़ा (मूंडी काटी) क्या तूने दसवीं तारीख़ का तवाफ़ नहीं किया? उन्हों ने अर्ज़ किया, कर तो चुकी हूं। फ़रमाया कुछ हरज नहीं है, चलो चल।

७३५. हज़रत आइशा रज़ि० की दूसरी रिवायत में है कि हम विदाई हज के साल अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ चले। हम में से कुछ ने उमरा का एहराम किया था, कुछ ने हज का, कुछ ने हज व उमरा दोनों का, रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज का एहराम बांधा था, जिन्होंने सिर्फ़ हज या हज व उमरा दोनों का एहराम किया था उन्हों ने दस तारीख़ से पहले एहराम नहीं खोला।

७३६. हज़रत उस्मान रज़ि० (लोगों को) 'मत अतुल हज' (हज व उमरा इकट्ठा करने) से मना करते थे, हज़रत अली रज़ि० ने जब यह

देखा तो हज व उमरा (दोनों, साथ एहराम बांधा) और कहा, लब्बैक लि उमर-त वल हज्ज, फिर फ़र्माया, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की सुन्नत को किसी के कहने से नहीं छोड़ूंगा।

७३७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि लोग (जाहिलियत के ज़माने में) ख्याल करते थे कि हज के महीनों में उमरा करना सब से बड़ा गुनाह है और कहा करते थे कि जब ज़ख्म (जो बोझ उठाने की वजह से) ऊंट की पीठ पर हो गया हो, अच्छा हो जाए, निशान मिट जाएं, सफ़र का माह गुज़र जाए, तो उमरा करने वाले के लिए उमरा करना हलाल है, चुनांचे जब चार तारीख को सुबह के वक़्त हुज़ूर सल्ल० हज का एहराम बांध कर तशरीफ़ लाए और दूसरे सहाबा रज़ि० ने भी हज का एहराम बांधा, तो हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि उमरा का एह-राम करो, लोगों को यह बात बोझ मालूम हुई, इस लिए अर्ज़ करने लगे, किना हलाल है (हज या उमरा ?) फ़र्माया सब कुछ हलाल है।

७३८. हज़रत उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा रज़ि० फ़र्माती हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह क्या बात है कि उमरा करने के बाद लोगों ने एहराम खोल दिया और आपने नहीं खोला ? फ़र्माया, मैंने हुदी के क़लावा बांधा है और सर में गोंद लगा हुआ है। मैं ज़िबह करने के बाद एहराम खोलूंगा।

७३९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से एक शख्स ने तमत्तोअ हज के बारे में पूछा और कहा, लोग मुझे इस से मना करते हैं। आपने उस को तमत्तोअ करने का हुक्म दिया। उस शख्स ने कहा कि मैंने ख्वाब में देखा है कि एक शख्स कह रहा है, हज भी मक़बूल है और उमरा भी। इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़र्माया, हुज़ूर सल्ल० की यही सुन्नत है।

७४०. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, जिस दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने साथ हुदी का जानवर लेकर गए थे, तो मैंने हुज़ूर सल्ल० के साथ हज (का एहराम) किया और लोगों ने हज इफ़राद के एहराम बांधे थे। आपने उनको हुक्म दिया कि काबे का तवाफ़ और सफ़ा व मरवा की सई कर के खोल दो और बाल कतरवा कर ठहरे रहो। ७ ज़िलहिज्जा को एहराम हज के लिए बांधो और जिस नीयत से तुम आए हो, उस को बदल कर तमत्तोअ कर लो, लोगों ने अर्ज़ किया, हम तमत्तोअ किस तरह कर सकते हैं? हमने तो सिर्फ़ हज की नीयत की है।

फ़र्माया, मैं जो कुछ तुम को हुक्म दूं वह करो, मैं भी अगर हुदी न लाता तो जो हुक्म तुम को दिया है वही मैं भी करता, मेरे साथ कोई महरम उस वक़्त तक एहराम नहीं खोल सकता, जब तक हुदी को ठिकाने न लगा दे। लोगों ने हुक्म की तामील की।

७४१. हज़रत इम्रान रज़ि० कहते हैं कि क़ुरआन नाज़िल हो रहा था और हमने अहदे रिसालत में तमत्तोअ किया था। (न क़ुरआन में उस के ख़िलाफ़ कोई हुक्म नाज़िल हुआ और न हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया। (बाक़ी) एक शख़्स (हज़रत उमर रज़ि०) ने अपनी राय से जो चाहा, कहा।

७४२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि (हज करने के ज़माने में) रसूलुल्लाह सल्ल० कदार के मक़ाम की तरफ़ से उस ऊंची पहाड़ी के रास्ते से मक्के में दाख़िल हुए जो बतहा में है और निचली पहाड़ी से निकल आए।

७४३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से पूछा, क्या दीवारें काबा के अन्दर दाख़िल हैं? फ़र्माया, हां। मैंने अर्ज़ किया, दरवाज़ा क्यों ऊंचा है? फ़र्माया, यह तेरी क़ौम ने किया है, ताकि जिस को चाहें दाख़िल होने दें, जिस को चाहें न दाख़िल होने दें। अगर मुझे यह ख़्याल न होता कि लोगों का जाहिलियत का दौर अभी जल्द ही गुज़रा है, तो मैं दीवार को काबा के अन्दर दाख़िल कर लेता और दरवाज़ा (नीचा कर के) ज़मीन से मिला देता, मगर मुझे ख़ौफ़ है कि उन के दिलों को नागवार गुज़रेगा।

७४४. हज़रत आइशा रज़ि० की दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर तेरी क़ौम का ज़माना जाहिलियत के वक़्त से क़रीब न होता तो मैं हुक्म देता कि काबा को ढाकर जो हिस्से निकल गये हैं, उस में दाख़िल कर लिए जाएं (दीवारें खोद कर) बुनियादे इब्राहीम अलै० तक पहुंचा दी जाएं और दरवाज़ा (तोड़ कर) ज़मीन से मिला दिया जाए और (नये सिरे से) दो दरवाज़े मश्रिक़ी और मग़्रिबी लगा दिए जाएं।

७४५. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मक्का में अपने कौन से मकान में ठहरेंगे, आपने फ़र्माया, अक़ील ने कौन-सा मकान छोड़ा है? (यानी जो मकान

अक़ील ने छोड़ा है मैं उस में उतरूंगा।) अक़ील को अबूतालिब का वरसा मिला था, क्योंकि अक़ील, तालिब, जाफ़र रज़ि० और हज़रत अली चारों अबूतालिब के बेटे थे, अक़ील और तालिब तो काफ़िर थे, इस लिए उनको अबूतालिब की मीरास मिली, और हज़रत अली व जाफ़र रज़ि०, चूंकि मुसलमान हो गए थे, इस लिए उन को मीरास नहीं मिली।

७४६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने जब मक्का में तशरीफ़ लाने का इरादा किया, तो फ़र्माया, इंशाअल्लाह कल को खीफ़ बनी कनाना (गज़ब) में हम ठहरेंगे जहां कुफ़्फ़ार ने बैठ कर कुफ़्र पर (एक रहने की) क़समें खायी थीं और इस वाक़िए की तफ़्सील यह है कि क़ुरैश व कनाना ने क़समें खायी थीं कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब से निकाह करेंगे, न उनसे खरीद व फ़रोख़्त रखेंगे और उस वक़्त तक (ये बातें) जारी रहेंगी, जब तक रसूलुल्लाह सल्ल० को हमारे हवाले न कर दें।

७४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, एक हब्शी छोटी-छोटी पिंडुलियों वाला काबा को वीरान करेगा।

७४८. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि रमज़ान शरीफ़ के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले लोग आशूरा मुहर्रम (१० मुहर्रम) का रोज़ा रखते थे और उसी दिन काबा पर पर्दा डाला जाता था, जब अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ कर दिए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अब चाहे आशूरा का रोज़ा रखे और चाहे न रखे।

७४९. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, याजूज-माजूज के निकलने के बाद भी खाना काबा का ज़रूर हज किया जाएगा और उमरा ज़रूर हुआ करेगा।

७५०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० जब (मक्का) में तशरीफ़ लाए, तो काबा में दाखिल होने से इंकार कर दिया, क्योंकि वहां बुत मौजूद थे। (अव्वल) बुतों को निकाल देने का हुक्म दिया, बुत निकाल दिए गये, हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलै० की तस्वीरें भी वहां मौजूद थीं, जिन के हाथों में तीर थे, हुज़ूर सल्ल० ने उन को भी निकलवा दिया, फिर काबा में दाखिल हुए। हर कोने में तक्बीर पढ़ी, मगर नमाज़ नहीं पढ़ी।

७५१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० और आप के असहाब रज़ि० मक्का में तशरीफ़ लाए, तो मुश्रिक आपस में कहने लगे, (देखो तो) रसूलुल्लाह सल्ल० और उन के साथी आ रहे हैं। मदीना के बुख़ार ने उन की कैसी कमज़ोर हालत कर रखी है, (यह सुन कर) हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० को हुक्म दिया कि (तवाफ़ के वक़्त) तीन चक्कर ख़ूब अकड़ कर लगाएं, लेकिन दोनों रुक्नों के दर्मियान मामूली चाल से चलें। हुज़ूर सल्ल० ने लोगों पर रहम खाकर सहाबा को अकड़ कर चलने से मना फ़र्माया। वरना हर चक्कर में अकड़ कर चलने का हुक्म देते।

७५२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का में तशरीफ़ लाए और संगे असवद का बोसा दे चुकते, तो सात चक्करों में से तीन चक्कर दौड़ कर लगाते (बाक़ी तवाफ़ मामूली चाल से करते।)

७५३. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, हम को अकड़ कर चलने से मतलब ही क्या था, हमने तो सिर्फ़ मुश्रिकों को यह अकड़ दिखायी थी। अब अल्लाह तआला ने मुश्रिकों को हलाक कर दिया, (इस लिए अब अकड़ कर चलना बेकार है,) मगर चूंकि यह अल्लाह के रसूल सल्ल० का फ़ेल है, इस लिए हम इस को छोड़ना पसन्द नहीं करते।

७५४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने जब से रसूलुल्लाह सल्ल० को इन दोनों रुक्नों को बोसा देते देखा है, उस वक़्त से मैंने इनको बोसा देना नहीं छोड़ा, चाहे दिक़्क़त हो या सहूलत।

७५५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि विदाई हज में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऊंट पर सवार होकर तवाफ़ किया, आप लकड़ी से रुक्न को छूते थे, (बोसा नहीं देते थे।)

७५६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से एक शख़्स के संगे असवद के इस्तिलाम (छूना या बोसा देना) के बारे में पूछा। फ़र्माया, रसूलुल्लाह सल्ल० इस को (कभी) छूते भी थे और कभी बोसा भी देते थे। उसने अर्ज़ किया, अगर इतनी भीड़ हो कि मैं दबा जाता हूं तो क्या करूं? फ़र्माया, इस्तिलाम ज़रूर करो, मैंने रुक्ने यमानी के पास से हुज़ूर सल्ल० को इस्तिलाम करते या बोसा देते देखा है।

७५७. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह

सल्ल० जब (हज) को तशरीफ़ लाए, तो सब से पहले आपने वुज़ू किया, फिर तवाफ़ किया, मगर सिर्फ़ इसी से उमरा पूरा नहीं होता, इस के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० व उमर रज़ि० ने भी इसी तरह हज किया।

७५८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० तवाफ़ (क़दूम) के बाद दो रक्अतें पढ़ कर सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई किया करते थे।

७५९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) तवाफ़ के दौरान हुज़ूर सल्ल० का गुज़र एक शख्स पर हुआ जो तवाफ़ कर रहा था, मगर उसने दूसरे शख्स के हाथ में अपना हाथ फ़ीते या डोरे वग़ैरह से बांध रखा था। हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से उस का डोरा काट दिया, और फ़र्माया, उस का हाथ पकड़ कर खींचो।

७६० हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि विदाई के हज से पहले हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को एक साल अमीरे हज बनाया, उन्होंने मुझे मिना को भेजा ताकि लोगों में एलान कर दूं कि कोई मुश्रिक इस साल के बाद हज न करे और न कोई नंगा होकर काबे का तवाफ़ करे। (जाहिलियत के ज़माने में नंगे होकर तवाफ़ करते थे।)

७६१ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० मक्का में तशरीफ़ लाये, (सब से पहले) काबा का तवाफ़ किया, सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई की और फिर अरफ़ा से वापसी के वक़्त काबा के पास न गये।

७६२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से मिना के बजाए मक्का में रात को रहने की इजाज़त चाही, क्योंकि अब्बास रज़ि० हाजियों को पानी पिलाने का काम करते थे, आपने उन को इजाज़त दे दी।

७६३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० पानी की सबील पर तशरीफ़ लाये और पानी मांगा, हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा कि फ़ज़्ल जाओ। हुज़ूर सल्ल० के लिए अपनी वालिदा के पास से पानी लाओ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मुझे यही पानी पिला दो, उन्होंने अर्ज़ किया—ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! लोग इस में हाथ डालते हैं (आप के लिए) यह मुनासिब नहीं है। (फ़र्माया) नहीं, यही दे दो, चुनांचे, आपने वही पानी पिया और वहां से चाहे ज़मज़म पर तशरीफ़

लाए। लोग पानी पिलाने में लगे हुए थे। फ़र्माया, काम में लगे रहो, तुम नेक काम कर रहे हो (ताज़ीम व तकरीम की ज़रूरत नहीं है।) अगर (भीड़ की ज़्यादती की वजह से) तुम्हारे दब जाने का डर न होता, तो मैं भी (डोल की) रस्सी अपने इस मक़ाम (कंधे) पर रख कर (लोगों को) पानी पिलाता।

७६४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को ज़मज़म का पानी दिया, आपने खड़े-खड़े पी लिया। दूसरी रिवायत में है कि उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ऊंट पर (सवार) थे।

७६५. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० के भांजे उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि० ने उम्मुल मोमिनीन से 'इन्नस्सफ़ा वल मरव-त मिन शआ-यिरिल्लाहि फ़मन हज्जल बै-त अविअ्-त-म-र फ़ला जुना-ह अलैहि इंय्यत-त्व-व-फ़ बिहिमा के माने पूछे और कहा (इस आयत से मालूम होता है कि) अगर कोई सफ़ा व मरवा के बीच तवाफ़ व सई न करे तो कुछ हरज नहीं है। उम्मुल मोमिनीन रज़ि० ने फ़र्माया, भांजे! यह क़ौल ठीक नहीं है, जो मानी तुमने बयान किए अगर आयत के यही मानी होते, तो तवाफ़ न करने में कोई हरज न था (लेकिन यह मतलब ग़लत है)। यह आयत अन्सार के बारे में नाज़िल हुई है। अन्सार मुसलमान होने से पहले मनात बुत के लिए एहराम बांधते थे और मुसलसल के मक़ाम में पहुंच कर उस की पूजा करते थे, इस लिए सफ़ा व मरवा के बीच सई करना उन पर बोझ होता था, लेकिन जब मुसलमान हो गए, तो अल्लाह के रसूल सल्ल० से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम पहले सफ़ा व मरवा के तवाफ़ को बुरा समझते थे, अब क्या हुक्म है? उस वक़्त ऊपर की यह आयत नाज़िल हुई, हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने सफ़ा व मरवा के बीच चक्कर लगाने को मसनून क़रार दिया है। इस लिए किसी के लिए इस को छोड़ना जायज़ नहीं है।

७६६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह सल्ल० जब पहला तवाफ़ करते थे तो पहले तीन बार अकड़ कर चक्कर लगाते थे, फिर चार बार मामूली रफ़्तार से सफ़ा व मरवा के बीच घूमते थे, तो बतन में दौड़ते थे।

७६७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, (एक बार)

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० और आप के असहाब ने हज का एहराम बांधा, मगर किसी के पास हुदी न थी, सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्ल० और तल्हा रज़ि० के पास थी और चूंकि हज़रत अली रज़ि० यमन से आये थे, इस लिए इन के पास भी क़ुर्बानी का जानवर था, लिहाज़ा हज़रत बोले कि मैंने इसी का एहराम बांधा है, जिस का रसूलुल्लाह सल्ल० ने बांधा है, हुज़ूर सल्ल० ने सभी सहाबा को हुक्म दिया कि जिस के पास हुदी न हो, वह उमरा की नीयत कर ले और काबा के तवाफ़ के बाद बाल कतरवा कर एहराम खोल दे, (हज न करे।) लोगों ने अर्ज़ किया, हम तो मिना जाएंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो बात मुझे आख़िर में मालूम हुई, अगर पहले से मालूम होती तो मैं हुदी न लाता और अगर मेरे पास हुदी होती तो मैं एहराम खोल देता।

७६८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है, एक शख़्स ने अर्ज़ किया, अगर आप को मालूम हो तो मुझे बता दीजिए कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने सात ज़िलहिज्जा को ज़ुहर व अस्र की नमाज़ कहां पढ़ी, आपने फ़रमाया, मिना में, उसने कहा वापसी के दिन अस्र की नमाज़ कहां पढ़ी? फ़रमाया अबतह के मक़ाम में। आख़िर में हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे हुक्काम जैसा करें तुम भी वैसा ही करो।

७६९. हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ि० कहती हैं कि लोगों को अरफ़ा के दिन शक हुआ कि पता नहीं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह का रोज़ा है या नहीं, इस लिए मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पीने के लिए एक चीज़ भेजी, आपने उस को पी लिया।

७७०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि सूरज डूबने के बाद मैंने हज्जाज (बिन यूसुफ़ सक़फ़ी) के (दरवाज़े) पर पर्दे के पास जाकर आवाज़ दी। हज्जाज कुसुम की रंगी हुई चादर ओढ़े बाहर निकला और कहने लगा अबू अब्दुर्रहमान रज़ि०! क्या बात है? मैंने कहा कि अगर सुन्नत की पैरवी करना मक़सद है तो चल। वह बोला, क्या अभी चलूं? मैंने कहा, हां, (अभी) मुझे इतनी मुहलत दो कि सर पर पानी बहा लूं, इस के बाद आता हूं। मैं (सवारी से) उतर पड़ा, थोड़ी देर के बाद हज्जाज बाहर निकला और चल दिया। सालिम बिन अब्दुल्लाह रज़ि० भी उस वक़्त मौजूद थे, फ़रमाने लगे, अगर सुन्नत की पैरवी चाहता है तो ख़ुत्बा मुख़्तसर पढ़ना और वक़ूफ़ में जल्दी करना। हज्जाज ने मेरी तरफ़

देखा, मैंने कहा सच तो है, अब्दुल मालिक ने हज्जाज को लिख दिया था कि हज के कामों में इब्ने उमर रज़ि० की मुख़ालफ़त न करना।

७७१. हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ि० कहते हैं कि मेरा ऊंट गुम हो गया था, अरफ़ा के दिन मैं उस की तलाश को निकला, देखता क्या हूं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० अरफ़ा के मक़ाम में खड़े हैं। मैंने (अपने दिल में) कहा कि यह तो क़ुरैशी हैं इन का यहां क्या काम है।

७७२. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० से पूछा गया कि विदाई हज में वापसी के वक़्त हुज़ूर सल्ल० की रफ़्तार कैसी थी ? फ़र्माया, (रास्ता तंग होता था तो) मामूली रफ़्तार और चाल से और कुशादगी मिल जाती थी, तो तेज़ चाल से चलने लगते थे।

७७३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अरफ़ा के दिन मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ वापस आया, आप को अपने पीछे सख़्त डांटने और ऊंटों के मारने की आवाज़ आयी, तो फ़र्माया, लोगो ! धीरे-धीरे सुकून के साथ चलो, तेज़ चलना कुछ अच्छा नहीं है।

७७४. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० मुज़दलफ़ा के मक़ाम के पास रात को ठहरीं और नमाज़ पढ़ने खड़ी हो गयीं, थोड़ी देर नमाज़ पढ़ी, फिर फ़र्माया, बच्चे, क्या चांद छिप गया ? जवाब मिला—जी हां। फ़र्माया बस तो चलो, लोग चल दिए। हज़रत अस्मा रमी जमरह (कंकरियां फेंकना) करने के बाद वापस आयीं और सुबह की नमाज़ अपने ठहरने की जगह पर पढ़ी, एक शख़्स ने अर्ज़ किया मेरा ख़्याल है कि हम बहुत अंधेरे में चल पड़े थे। फ़र्माया, बेटे ! हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने औरतों को इस की इजाज़त दे दी है।

७७५. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हम मुज़दलफ़ा में ठहरे तो हज़रत सौदा रज़ि० ने लोगों की भीड़ से पहले चल देने की हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त मांगी क्योंकि हज़रत सौदा रज़ि० देर में चला करती थीं। हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी चुनांचे वह लोगों के हुजूम से पहले चल दीं और हम वहीं ठहरे रहे, सुबह को हम हुज़ूर सल्ल० के साथ चले (मगर इतनी तक्लीफ़ हुई कि) अगर मैं भी हज़रत सौदा रज़ि० की तरह हुज़ूर से इजाज़त ले लेती तो सारी ख़ुशी वाली चीज़ों से मुझे यह बात ज़्यादा पसन्द थी।

७७६. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने जमा के मक़ाम में आकर दो

नमाजें (मग़रिब व इशा) अलग-अलग एक अज़ान और एक ही तक्बीर से पढ़ीं और दोनों नमाज़ों के बीच में शाम को खाना खाया फिर सुबह सादिक़ निकलने के बाद फ़ज्र की नमाज़ ऐसे वक़्त में पढ़ी कि कोई तो कहता था कि सुबह हो गई है कोई कहता था अभी नहीं हुई, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़र्माया कि इस जगह पर मग़रिब व इशा की नमाजें अपने-अपने वक़्त से हटा दी गई हैं, लिहाज़ा लोगों को अंधेरा पड़े मक़ाम में जमा हो जाना चाहिए और फ़ज्र की नमाज़ उसी वक़्त पढ़नी चाहिए यह कहने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह ने किसी क़दर तवक़्क़ुफ़ किया जब उजाला हो गया तो फ़र्माया, अगर अमीरुल मोमिनीन उसी वक़्त वापस हो जाते तो सुन्नत की मुवाफ़क़त हो जाती। आख़िरकार (१० ज़िलहिज्जा तक) लब्बैक कहते रहे और १० ज़िलहिज्जा को जमरा आख़िरी की रमी की।

७७७. हज़रत उमर ने मक़ाम जमा में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद किसी क़दर ठहर कर फ़र्माया कि मुश्रिकीन सूरज निकलने के बाद वापस होते थे और कहते थे (पहाड़ !) ज़्यादातर रौशन रह, हुज़ूर सल्ल० ने उन की मुख़ालफ़त की और सूरज निकलने से पहले वापस हुए।

७७८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, एक शख़्स हुदी का ऊंट लिए जा रहा था, रसूलुल्लाह सल्ल० ने देख कर फ़र्माया, इस पर सवार हो जा, उसने अर्ज़ किया, यह हुदी का जानवर है। आपने फ़र्माया सवार हो जा, उसने फिर अर्ज़ किया, यह हुदी का जानवर है, फ़र्माया, अरे ! इस पर सवार हो जा ।

७७९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि विदाई हज में रसूलुल्लाह सल्ल० ने उमरा अदा कर के हज को तमत्तोअ बना लिया (तमत्तोअ भी एक खास क़िस्म का हज है) और ज़ुलहुलैफ़ा के मक़ाम से जो हुदी साथ ले गए थे, उस को ज़िब्ह किया। आपने पहले उमरा का एहराम बांधा था, फिर हज का एहराम। लोगों ने भी उमरा कर के हज को तमत्तोअ बना लिया, मगर कुछ लोगों के पास क़ुर्बानी का जानवर था। कुछ के पास न था, इस लिए हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० जब मक्का में तशरीफ़ लाए, तो फ़र्माया, जो हुदी लाया हो, उस के लिए कोई हराम चीज़ हलाल नहीं है, (यानी उस का हराम पहले ही की तरह बाक़ी है) और जिस के पास हुदी न हो, वह काबे का तवाफ़ कर के सफ़ा व मरवा

में सई करे, फिर बाल कतरवा कर एहराम खोल दे, इस के बाद हज का एहराम बांधे। हां, जिस के पास क़ुर्बानी का जानवर न हो, वह तीन दिन के रोज़े तो हज के दिनों में रखे और सात दिन के घर को वापसी के वक़्त।

७८०. हज़रत मंसूर बिन मख़्रमा रज़ि० और मरवान बिन हकम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हुदैबिया की जंग के ज़माने में कुछ ऊपर एक सौ दस सहाबियों की जमाअत के साथ मदीना से तशरीफ़ ले गए। जब ज़ुलहुलैफ़ा में पहुंचे, तो आपने हदी की गर्दन में क़लावा डाला, उस का शिआर किया और उमरा का एहराम बांधा।

७८१. हज़रत आइशा रज़ि० को ख़बर मिली कि इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं, जो शख़्स पहले से मक्का को हदी भेज दे, तो उस पर वे सारी चीज़ें हराम हो जाती हैं, जो हाजी पर हराम हैं। हां, क़ुर्बानी करने के बाद (यह हुरमत जाती रहती है।) आपने फ़र्माया, इब्ने अब्बास का कहना सही नहीं है। मैंने अपने हाथ से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की क़ुर्बानी के जानवरों के क़लावे बटे हैं और आपने ख़ुद उन को पहनाया है और मेरे वालिद के साथ उन को भेजा है, मगर हदी के ज़िब्ह होने तक अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए हलाल चीज़ों में से कोई चीज़ हराम नहीं हुई।

७८२. हज़रत आइशा रज़ि० की दूसरी रिवायत में है कि नबी सल्ल० ने एक बकरी की गर्दन में क़लावा डाला, उस को ज़िब्ह होने को भेजा और ख़ुद घर में एहराम खोल कर ठहरे रहे।

७८३. एक और रिवायत में आया है, मैंने जानवरों की क़ुर्बानी के पट्टे ऊन के बुने थे।

७८४. हज़रत अली रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़र्माया, जो जानवर तुमने ज़िब्ह कर दिए हों, उन की झूलें और खालें ख़ैरात कर दो।

७८५. हज़रत आइशा रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस ऊपर गुज़र चुकी है, जिस में आपने फ़र्माया था कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ २५ ज़ीक़ादा को चले थे। इस रिवायत में इतना और ज़्यादा है कि १० ज़िलहिज्जा को हमारे पास गाय का गोश्त लाया गया। मैंने कहा यह गोश्त कैसा है? जवाब मिला, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपनी बीवियों की तरफ़ से क़ुर्बानी की है।

७८६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि जहां रसूलुल्लाह ज़िब्ह करते थे, मैं भी वहीं क़ुर्बानी करता था।

७८७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने देखा कि एक शख़्स ऊंट को बिठा कर ज़िब्ह कर रहा है। फ़र्माया, इस को उठा कर एक पांव बांध कर तीन पांव पर खड़ा कर के सुन्नते मुहम्मदी की पैरवी करो।

७८८. हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं, मुझ को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने क़ुर्बानी के जानवरों पर मुक़र्रर फ़र्माया, और हुक्म दिया कि क़साई को उन की कोई चीज़ (खाल वग़ैरह) मज़दूरी में न दूं।

७८९. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़र्माते हैं, हम मिना के मक़ाम में क़ुर्बानी का गोश्त तीन दिन के बाद नहीं खाते थे। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने हम को रुख़सत दे दी और फ़र्माया, (क़ुर्बानी का गोश्त) खाओ और (बाक़ी) को जमा रख छोड़ो, चुनांचे फिर खाने लगे (और बाक़ी बचा हुआ गोश्त) जमा रखने लगे।

७९०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने (एक) हज में सर मुंड़ाया था।

७९१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इलाही! सर मुंड़ाने वालों पर रहम फ़र्मा, लोगों ने अर्ज़ किया और कतरवाने वालों पर भी! (फिर वही) फ़र्माया, इलाही! सर मुंड़ाने वालों पर रहम फ़र्मा। लोगों ने (फिर) अर्ज़ किया और कतरवाने वालों पर (भी!) आपने फ़र्माया और कतरवाने वालों पर भी।

७९२. हज़रत अबूहुरैरह ने भी यह रिवायत बयान की है मगर लफ़्ज़ रहम के बजाए मग़्फ़िरत तीन बार नक़ल किया है।

७९३. हज़रत मुआविया रज़ि० कहते हैं, मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाल क़ैंची से कतरे।

७९४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से एक शख़्स ने पूछा, मैं रमीजिमार (कंकरियां फेंकना) किस वक़्त में करूं? फ़र्माया, जब इमाम कंकरियां फेंके, तुम भी फेंको। उसने दोबारा फिर यही सवाल किया, तो फ़र्माया, धूप ढलने के बाद कंकरियां फेंकते थे।

७९५. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० वादी के अन्दर से (खड़े होकर) रमी किया करते थे। लोगों ने कहा और लोग तो वादी के ऊपर से कंकरियां फेंकते हैं (और आप वादी के अन्दर से?) फ़र्माया, ख़ुदा वह्दहू ला

शरीक की क़सम ! उस शख़्स की यही जगह है, जिस पर सूरः बक़रः नाज़िल हुई।

७९६. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० जुमरा कुबरा के पास जा पहुंचे, काबा को बाएं तरफ़ और मिना को दाएं तरफ़ छोड़ा फिर सात कंकरियां फेंकीं और फ़र्माया, उसने इसी तरह रमी की है, जिस पर सूरः बक़रः नाज़िल हुई है।

७९७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० क़रीब के जुमरा के पास पहुंच कर, सात कंकरियां मारते थे और हर कंकरी के बाद तक्बीर पढ़ते थे, फिर आगे बढ़ते-बढ़ते आबादी में पहुंच जाते थे, वहां देर तक क़िब्ले की तरफ़ मुंह किए खड़े रहते और हाथ उठा कर दुआ करते रहते थे, इस के बाद आख़िरी जुमरा की रमी वादी के अन्दर से खड़े होकर करते थे, मगर उस के पास ठहरते न थे और (फ़ौरन) लौट कर फ़र्माते थे, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसी तरह करते देखा है।

७९८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि लोगों को हुक्म था कि (हज के औक़ात) का आख़िरी हिस्सा काबे में गुज़ारें मगर हैज़ वाली औरत के लिए इस हुक्म में छूट कर दी गई।

७९९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मुस्तहब में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर कुछ देर सो कर काबा को गए और तवाफ़ किया।

८००. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हैज़ वाली औरतों को इजाज़त थी कि अरफ़ात से लौट कर (आख़िरी तवाफ़ किए बग़ैर) सीधी चली जाएं। (शुरू में) इब्ने उमर रज़ि० इस से इंकार करते थे, लेकिन आख़िर में उन को कहते सुना कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हैज़ वाली औरतों को इस की इजाज़त दे दी है।

८०१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मुस्तहब सिर्फ़ एक (मामूली) जगह है, वहां ठहरना कुछ (फ़ायदेमंद) नहीं मगर रसूलुल्लाह सल्ल० वहां उतरे हैं, (इस लिए ठहरना चाहिए।)

८०२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० जब (हज) को आते थे तो मक़ाम ज़ीतुवा में रात गुज़ारते थे। सुबह को (मक्का में) दाख़िल होते थे, वापस आते वक़्त उस बतहा में उतरते (जो ज़ुलहुलैफ़ा में है) और रात को रहते थे और सुबह को बयान फ़र्माते थे कि नबी ऐसा ही किया करते थे।

बाब २५

उमरा के बयान में

८०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, एक उमरा दूसरे उमरे तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है। बाक़ी मक़बूल हज का बदला जन्नत के सिवा और कुछ नहीं है।

८०४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से हज से पहले उमरा करने का हुक्म पूछा गया, फ़र्माया, कोई हरज नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने हज से पहले उमरा किया है।

८०५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (सारी उम्र में) कितने उमरे किए हैं, फ़र्माया, चार, जिन में से एक रजब के महीने में किया था। सवाल करने वाले ने पूछा कि मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से अर्ज़ किया, अम्मा! सुनती हो, अबू अब्दुर्रहमान क्या कहते हैं? फ़र्माया, क्या बात है, मैंने कहा वह कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (सारी उम्र में) चार उमरे किए हैं, जिन में से एक रजब के महीने में किया था। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़र्माया, कि ख़ुदा अब्दुर्रहमान पर रहम करे, हुज़ूर सल्ल० ने कोई उमरा ऐसा नहीं किया, जिस में वह साथ न हों (इसके बावजूद वह ऐसा भूल गए।) आपने रजब में कभी उमरा नहीं किया।

८०६. हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (सारी उम्र में) कितने उमरे किए, फ़र्माया चार। हुदैबिया का उमरा ज़ीक़ादा के माह में किया था, जबकि मुश्रिकों ने आप को (हज करने से) रोक लिया था, दूसरा उमरा अगले साल ज़ीक़ादा के माह में किया जबकि मुश्रिकों से सुलह हुई थी, तीसरा उमरा जराना का, जबकि जंग हुनैन की ग़नीमत आपने तक़्सीम की थी। सवाल करने वाले ने पूछा,

हज किसने किए ? फ़र्माया एक।

८०७. हज़रत अनस रज़ि० से दूसरी रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने एक उमरा उस वक़्त किया जब कुफ़्फ़ार ने आप को लौटा दिया था, फिर अगले साल उमरा-ए-हुदैबिया (किया) फिर एक उमरा ज़ीक़ादा में (किया) और एक उमरा हज के साथ किया।

८०८. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ज़ीक़ादा माह में हज करने से पहले दो बार उमरा किया।

८०९. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ि० कहते हैं, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया कि हज़रत आइशा रज़ि० के पीछे सवार होकर तनईम के मक़ाम से उन को उमरा करा दूं।

८१०. उक़्बा के मक़ाम में सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम रसूलुल्लाह सल्ल० से मिले। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त रमी कर रहे थे। सुराक़ा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह रमी हुज़ूर ही के साथ मख़्सूस है ? फ़र्माया नहीं, हमेशा के लिए है।

८११. हुज़ूर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० से उमरा करने के लिए फ़र्माया कि उमरा तुम्हारे ख़र्च या तक्लीफ़ बर्दाश्त करने जैसा है।

८१२. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० जब हजून के मक़ाम की तरफ़ से गुज़रतीं, तो फ़र्माती थीं, अल्लाह तआला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फ़र्माए। हम जब आप के साथ इस जगह ठहरे थे, तो उस वक़्त हम हल्के-फुल्के थे, हमारी सवारियां और तोशे कम थे, मैंने और मेरी बहन आइशा रज़ि० ने, ज़ुबैर रज़ि० ने और फ़्लां-फ़्लां शख़्सों ने उमरा कर के तवाफ़ किया था और एहराम खोल दिए थे। फिर शाम के वक़्त हज का एहराम बांधा था।

८१३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० जब किसी जिहाद या हज या उमरा से वापस तशरीफ़ लाते, तो हर ऊंची ज़मीन पर (गुज़रते वक़्त) पहले तीन बार तक्बीर पढ़ते, फिर फ़र्माते, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुलमुल्कु व ल हुल्हम्दु व हु व अला कुल्लि शइन क़दीर आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न साजिदू-न लिरब्बिना हामिदू-न व सदक़ल्लाहु वअ् दहु व न-स-र अब्दहू व ह-ज़-मल अह्ज़ा-ब वह्दहू।

८१४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं जब हुज़ूर सल्ल० मक्का से तशरीफ़ लाए तो अब्दुल मुत्तलिब के खानदान के छोटे-छोटे बच्चे आप के सामने आए। आपने एक को गोद में उठा लिया और दूसरे को पीछे सवार कर लिया।

८१५. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० रात को अपने घर (सफ़र से) तशरीफ़ नहीं लाते थे, बल्कि हमेशा या सुबह के वक़्त तशरीफ़ लाते थे या शाम के वक़्त।

८१६. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है कि कोई आदमी रात को अपने घर (सफ़र से) आए।

८१७. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० किसी सफ़र से तशरीफ़ लाते तो जब मदीना के (मकानों के) दरवाज़े देखने लगते ऊंटनी को तेज़ कर देते थे अगर घोड़ा (सवारी) होता तो उस की बाग उठा देते थे।

८१८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, सफ़र अज़ाब का एक टुकड़ा है, ऊंटनी को (चैन के साथ) खाने-पीने और सोने से रोकता है। इस लिए चाहिए कि आदमी की ज़रूरत पूरी हो जाए फ़ौरन घर वापस आ जाए।

८१९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, जब (हुदैबिया के ज़माने में) नबी सल्ल० को (हज से) रोक दिया गया तो आपने (एहराम खोल दिया) सर मुंड़वा दिया, बीवियों से मुक़ारबत की। क़ुर्बानी का जानवर ज़िब्ह किया और फिर दूसरे साल उमरा किया।

८२०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहा करते थे (लोगो!) क्या तुम को अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुन्नत काफ़ी नहीं है? अगर कोई शख्स (एहराम करने के बाद) बीमारी (या दुश्मन) की वजह से हज न कर सके तो काबा का तवाफ़ करे, सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई करे और एहराम बिल्कुल खोल दे, फिर अगले साल हदी ले जाए और हज करे। अगर हदी न मिले तो रोज़े रखे।

८२१. हज़रत मसूर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सर मुंड़वाने से पहले क़ुर्बानी की और असहाब रज़ि० को भी यह हुक्म दिया।

८२२. हज़रत कअब बिन अजज़ह रज़ि० कहते हैं कि हुदैबिया के

मक़ाम में रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरे पास तशरीफ़ लाकर क़ियाम फ़र्माया, (उस ज़माने में) मेरे सर से जूंएं गिरती थीं (यानी जूंएं सर में ज़्यादा हो गई थीं) आपने फ़र्माया, जूंओं से तुझे तक्लीफ़ है, मैंने अर्ज़ किया, जी हां, फ़र्माया सर मुंड़वा दे, हज़रत कअब रज़ि० कहते हैं कि आयत 'फ़मन का-न मिन्कुम मरीज़न'……मेरे ही बारे में नाज़िल हुई है इसके बादहुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तीन दिन के रोज़े रख या (सोला रतल ग़ल्ला वग़ैरह) ख़ैरात कर या कुछ हो सके तो क़ुर्बानी कर।

८२३. हज़रत कअब बिन अजरह रज़ि० से दूसरी रिवायत में आया है कि ऊपर की आयत ख़ास कर मेरे ही बारे में नाज़िल हुई है (अगर्चे बिला लिहाज़ हुक्म) तुम सब के लिए आम है।

बाब २६

शिकार करने के बयान में

८२४. हज़रत अबूक़तादा रज़ि० कहते हैं कि हुदैबिया की जंग के साल हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ चले और लोगों ने तो एहराम बांध लिया था, (सिर्फ़) मैंने एहराम नहीं बांधा था, इसी बीच में हम को ख़बर मिली कि दुश्मन ग़ैक़ा के मक़ाम में मौजूद है चुनांचे हमने उस तरफ़ रुख़ कर दिया। (रास्ते में) लोगों ने एक नील गाय देखी और एक दूसरे को देख कर हंसने लगे, मैंने जो देखा तो उसके पीछे घोड़ा डाल दिया, नेज़ा मार कर (भागने से तो) उस को रोक दिया, मगर साथियों ने मेरी मदद बिल्कुल न की (सिर्फ़ मैंने अकेले उस का शिकार किया।) सबने मिल कर उस का गोश्त खाया और रसूलुल्लाह सल्ल० से मिल जाने के इरादे से हम सब चल दिए मगर यह डर लगा हुआ था कि कहीं (दुश्मन की वजह से हम रसूलुल्लाह

सल्ल० से अलग न रह जाएं,) कुछ दूर तक मैं घोड़ा उठाए हुए चला गया। आखिर में असल की चाल से चलने लगा, रात को क़बीला बनू ग़िफ़ार के एक आदमी से मुलाक़ात हुई। मैंने पूछा तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल० को कहां छोड़ा, उसने जवाब दिया, अल्लाह के रसूल सल्ल० तअहुन मक़ाम (मशहूर चश्मा) में थे मगर फ़र्माते थे कि मक़ाम सुक़्या को चलो (यह सुन कर) मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के पीछे चल दिया और खिद्मते अक़्दस में पहुंचकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! सहाबा रज़ि० ने मुझे हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में भेजा है और सलाम अर्ज़ किया है उनको इस बात का डर है कि कहीं दुश्मन के दर्मियान में हायल हो जाने की वजह से आप उनसे अलग न रह जाएं, इस लिए हुज़ूर सल्ल० कुछ इन्तिज़ार फ़र्माएं (तो बेहतर है) दूसरी बात यह है कि हमने रास्ते में नील गाय का शिकार किया था उसमें से कुछ गोश्त बचा हुआ मौजूद है, हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया खाओ।

८२५. दूसरी रिवायत में है कि अबूक़तादा रज़ि० ने फ़र्माया, हम मदीना से तीन मील की दूरी पर हुज़ूर सल्ल० के साथ क़ाहदा के मक़ाम में मौजूद थे, हम में से कुछ एहराम बांधे हुए थे और कुछ का एहराम न था, इस से आगे ऊपर की हदीस बयान की।

८२६. हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि जब सहाबा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर हो गए तो आपने फ़र्माया, क्या तुम में से किसी ने उस को शिकार पर हमला करने की राय दी थी या इशारा किया था, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया नहीं, आपने फ़र्माया, तो बाक़ी गोश्त तुम खा सकते हो।

८२७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० मक़ाम अब्वा या रव्वानु में आराम फ़र्मा थे कि मुस्अब रज़ि० बिन जुसामा लैसी ने तोहफ़ा में एक नील गाय पेश किया मगर आपने वापस कर दी लेकिन जब मुस्अब रज़ि० के चेहरे पर कुछ नाराज़गी के (आसार) देखे तो फ़र्माया, हम चूंकि महरम हैं, इस लिए हमने तुम्हारी नील गाय वापस कर दी।

८२८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है कि पांच जानवर ठीक नहीं हैं, हरम के अन्दर (भी) इनको मारा जाए, कौआ, बिच्छू, चूहा और काटने वाला कुत्ता, चील।

८२९. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़र्माते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ मिना के मक़ाम में एक ग़ार में (बैठे हुए) थे कि सूरः वल्मुर सलात नाज़िल हुई आप तिलावत फ़र्माते जाते थे और मैं (आप को ज़ुबान से सुन कर) याद करता जाता था, हुज़ूर सल्ल० ख़ूब मज़े ले-ले कर पढ़ रहे थे। इतने में एक सांप (ऊपर से) गिरा हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया मार डालो, हम लपके मगर वह चला गया, आपने फ़र्माया, जिस तरह तुम उस के शर से महफ़ूज़ रहे उसी तरह वह तुम्हारे शर से महफ़ूज़ रहा।

८३०. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है छिपकली कितना बुरा जानवर है मगर मारने का हुक्म देते हुए मैंने हुज़ूर सल्ल० से नहीं सुना।

८३१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, जिस दिन मक्का फ़तह हो गया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अब हिजरत नहीं अलबत्ता जिहाद और (जिहाद की नीयत) बाक़ी है लिहाज़ा अगर तुम को जिहाद के लिए बुलाया जाए तो (घरों से) निकल खड़े हो।

८३२. हज़रत इब्ने बुहैना रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एहराम की हालत में लही जुमल के मक़ाम में अपने सर के बीच पछने लगवाए थे।

८३३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एहराम की हालत में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि० के साथ निकाह किया था।

८३४. हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० एहराम की हालत में सर किस तरह धोते थे। आपने (सर पर) हाथ ले जाकर कपड़ा उतारा, जब सर बिल्कुल खुल गया तो एक शख़्स से कहा पानी डालो, उसने आप के सर पर पानी डाला। आपने हाथों से सर को (किसी क़द्र) हरकत दी। हाथों को सर पर आगे से पीछे ले गये और वापस लाए, फिर फ़र्माया, रसूलुल्लाह सल्ल० को मैंने ऐसा ही करते देखा है।

८३५. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि मक्का की फ़तह के दिनों में रसूलुल्लाह सल्ल० सर पर ख़ूद ओढ़े हुए (मक्का में) दाख़िल हुए (काबा के अन्दर दाख़िल होकर) ख़ूद उतारा ही था कि एक शख़्स ने

आकर इत्तिला दी कि इब्ने ख़तल काबा के पर्दों से लिपटा हुआ है। आपने फ़र्माया, उसको क़त्ल कर दो।

८३६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि क़बीला जुहैना की एक औरत ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरी मां ने हज करने की नज़्र मानी थी, लेकिन हज करने से पहले मर गयी, क्या मैं उस की तरफ़ से हज कर लूं ? आपने फ़र्माया, हां, उस की तरफ़ से हज कर ले, देख अगर तेरी मां पर कुछ क़र्ज़ होता तो उस की तरफ़ से तू अदा करती (या नहीं ?) लोगो ! ख़ुदा का हक़ अदा करो। अल्लाह तआला हक़ पूरा करने का बहुत ज्यादा हक़दार है।

८३७. हज़रत साइब रज़ि० बिन यज़ीद फ़र्माते हैं, मेरी उम्र सात साल की थी कि रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ मुझे हज कराने ले जाया गया

८३८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि जब अल्लाह के रसूल सल्ल० हज से वापस तशरीफ़ लाए तो उम्मे सिनान अन्सारिया से फ़र्माया तूने (हमारे साथ) हज क्यों न किया ? उन्होंने अर्ज़ किया, सिनान के बाद (यानी ख़ाविंद) की वजह से, क्योंकि उन के दो ऊंट थे। एक पर तो वह ख़ुद हज करने चले गए और दूसरा हमारी ज़मीनें सींचा करता है। आपने फ़र्माया, रमज़ान शरीफ़ में उमरा करना हमारे साथ हज करने के बराबर है।

८३९. हज़रत अबू सईद रज़ि० जिन्होंने रसूल सल्ल० के साथ रह कर जिहाद किया था, फ़र्माते हैं कि चार बातें मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुनी हैं, जिन से मुझे बहुत ख़ुशी हासिल हुई—

(१) कोई औरत बिना शौहर या महरम के साथ के दो दिन की दूरी का सफ़र न करे।

(२) दो दिन यानी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के दिन कोई रोज़ा न रखे।

(३) दो नमाज़ों के बाद और कोई नमाज़ न पढ़ी जाए। अस्र के बाद सूरज डूबने से पहले और फ़ज्र के बाद निकलने से पहले।

(४) तीन मस्जिदों के अलावा और किसी मस्जिद की तरफ़ जाने के लिए कजावे न कसे जाएं, यानी सफ़र न किया जाए, तीन मस्जिदें यह हैं—मस्जिद हराम यानी काबा, मस्जिद नबवी, मस्जिद अक़्सा यानी बैतुलमक़्दिस।

८४०. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने देखा कि एक बूढ़ा आदमी अपने दो बेटों पर सहारा देकर जा रहा है, आपने फ़र्माया यह शख़्स ऐसा क्यों कर रहा है ? लोगों ने अर्ज़ किया इसने पैदल चल कर हज करने की नज़् मानी है, फ़र्माया अल्लाह तआला को उसकी जान अज़ाब में डालने की कोई परवाह नहीं है, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने उस को सवार हो जाने का हुक्म दिया।

८४१. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि मेरी बहन ने पैदल हज करने की नज़् मानी और मुझे यह मस्अला मालूम करने का हुक्म दिया, मैंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, फ़र्माया इस को पैदल भी चलना चाहिए और सवार होकर भी।

बाब २७

मदीना के फ़ज़ाइल के बयान में

८४२. हज़रत अनस रज़ि० फ़र्माते हैं हुज़ूरे अक़्दस का इर्शाद है कि फ़लां जगह से फ़लां जगह तक मदीना हरम है न वहां के पेड़ काटे जाएं न उस में कोई नई बात (बिदअत) ईजाद की जाए. जो शख़्स वहां कोई नई बात करे उस पर ख़ुदा की, फ़रिश्तों की, और सारे लोगों की लानत।

८४३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मदीना की दोनों पथरीली ज़मीनों के दर्मियान जो जगह है वह हरम है, (ख़ुदावंद तआला ने) मेरी ज़ुबान से (इसको) हरम कहलवाया है, रावी कहता है कि नबी सल्ल० जब हारिस के पास तशरीफ़ लाए तो फ़र्माया, बनी हारसा मैं जानता हूं कि तुम हरम से निकल गए हो, इस के बाद मुंह लौटा कर देखा तो फ़र्माया नहीं। अभी तुम लोग हरम

ही में हो।

८४४. हज़रत अली रज़ि० फ़र्माते हैं हमारे पास अल्लाह की किताब के सिवा और उस नबी सल्ल० की तहरीर के सिवा और कुछ नहीं है. तहरीर में मौजूद है कि आयर के मक़ाम (मशहूर पहाड़) से फ़्लां जगह तक मदीना हरम है, जो शख़्स इस जगह कोई बिद्अत करे या बिद्अती को ठिकाना देगा उस पर खुदा की, फ़रिश्तों की और सारे आदमियों की लानत है, उसकी न नफ़्लें मक़बूल हैं, न फ़राइज़, इसके बाद फ़र्माया, सारे मुसलमानों के समझौते एक से हैं जो शख़्स किसी मुसलमान के समझौते के खिलाफ़ काम करेगा उस पर खुदा की, फ़रिश्तों की और सारे इंसानों की लानत है, न उस की नफ़्ल मक़बूल हैं, न फ़र्ज़ और अगर कोई (मुसलमान) किसी क़ौम (कुफ़्फ़ार) का बग़ैर सरदारों की इजाज़त के, दिली दोस्त बना, उस पर खुदा की, फ़रिश्तों की और सारे लोगों की लानत हो, उस के फ़र्ज़ न मक़बूल है, न नफ़्ल।

८४५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मुझे ऐसी आबादी में (रहने का) हुक्म मिला है जो सारी आबादियों पर ग़ालिब आएगा। लोग उस को यसरिब कहते हैं, उसी का नाम मदीना है वह (शरीर) लोगों को अपने अन्दर (रहने) से ऐसा दूर कर देगा, जिस तरह भट्ठी लोहे की मैल दूर कर देती है।

८४६. हज़रत अबू हुमैद रज़ि० कहते हैं, हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ (जंगे) तबूक से आकर जब मदीना के सामने पहुंचे तो आपनें फ़र्माया, यह तय्यिबा है।

८४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, मदीना की हालत बहुत ही अच्छी होगी, (यानी नेकी और दौलत वग़ैरह के लिहाज़ से,) मगर लोग वहां रहना छोड़ देंगे, भूखे दरिंदों-परिंदों के सिवा इस में कोई नहीं रहेंगे, सब से आख़िर में क़बीला मुज़ैना के दो चरवाहे मदीना के इरादे से चलेंगे, चिल्ला-चिल्ला कर बकरियां हुंक-हुंका कर लाते होंगे, (मदीना में पहुंचेंगे, तो) वहशी जानवरों के सिवा वहां और किसी को न पाएंगे, (इस लिए मदीना से चले जाएंगे,) जब सनीयतुल विदा के मक़ाम तक पहुंचेंगे, तो औंधे होकर गिर पड़ेंगे।

८४८. हज़रत सुफ़ियान बिन अबू ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह

के रसूल सल्ल० को फ़र्माते सुना, जब यमन फ़त्ह होगा तो कुछ लोग अपने जानवरों को हांकते हुए (मदीना में) आएंगे, यहां से घर वालों को और तमाम उन लोगों को जो उन का कहना मानेंगे, सवार कर के यमन को ले जाएंगे, काश ! उन को मालूम होता कि मदीना (में रहना) उन के लिए बेहतर था। इसी तरह शाम फ़त्ह होगा, तो कुछ लोग ऊंट हंका कर लाएंगे और (मदीना से) घर वालों को और अपने चेलों को (शाम) ले जाएंगे, काश ! उन को मालूम होता कि मदीना (में रहना) ही उन के लिए बेहतर था। इराक़ फ़त्ह होगा, तब भी लोग ऊंट लाकर अपने घर के लोगों और तरफ़दारों को इराक़ ले जाएंगे । ऐ काश ! उन को मालूम होता कि मदीना का (ठहरना) ही उन के लिए बेहतर था।

८४९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जिस तरह सांप अपने बिल में सिमट कर आ जाता है, उसी तरह ईमान मदीना में सिमट कर आ जाएगा।

८५०. हज़रत साद रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, मदीना के लोगों में से जो शख्स मक्कारी करेगा, वह नमक की तरह पिघल कर खत्म हो जाएगा।

८५१. हज़रत उसामा रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीना के किसी टीले पर खड़े होकर फ़र्माया, मुझे जो कुछ दिखाई दे रहा है, क्या तुम को भी दिखाई दे रहा है ? मुझे दिखायी दे रहा है कि तुम्हारे घरों में बारिश की तरह फ़िल्ने पैदा होंगे।

८५२. हज़रत अबूबक्र रज़ि० फ़र्माते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जाल का खौफ़ मदीना में न होगा, क्योंकि उस वक्त मदीना के सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते।

८५३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने फ़र्माया, मदीना के रास्तों पर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, न इस में ताऊन आ सकता है न दज्जाल।

८५४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, हर शहर को दज्जाल ज़रूर पामाल करेगा, मगर मक्का और मदीना में न आ सकेगा, इन दोनों शहरों के हर रास्ते पर फ़रिश्ते सफ़ में खड़े होंगे, फिर मदीना में तीन बार ज़लज़ला आएगा, जिस की वजह से सारे काफ़िर और मुनाफ़िक़ निकल कर दज्जाल के पास चले जाएंगे।

८५५. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने हम से दज्जाल के (हालात के) बारे में एक लम्बी हदीस बयान फ़र्मायी, जिस के ज़ैल में फ़र्माया, दज्जाल मदीना के किसी टीले पर आकर उतरेगा। मदीने के रास्तों में आना उसके लिए मना होगा, अब से पहले उस के पास एक बेहतरीन शख़्स जाकर कहेगा, मैं गवाही देता हूं कि तू वही दज्जाल है जिस के बारे में हम से रसूलुल्लाह सल्ल० इर्शाद फ़र्मा गए हैं। दज्जाल (लोगों से) कहेगा, अगर मैं इस शख़्स को मार कर फिर इसको ज़िंदा कर दूं, तो क्या फिर भी तुम मेरी ख़ुदाई में शक करोगे ? लोग कहेंगे, नहीं। दज्जाल उस शख़्स को क़त्ल कर के ज़िंदा कर देगा। जब वह ज़िंदा हो जाएगा तो कहेगा, वल्लाह ! आज से ज़्यादा तेरे हालात पर जानकारी मुझे कभी नहीं हुई, यह सुन कर (दज्जाल) फिर उस को क़त्ल करने को कहेगा, मगर नहीं कर सकेगा।

८५६. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं, एक आराबी ने हाज़िर होकर हुज़ूर सल्ल० से इस्लाम की बैअत की, मगर दूसरे दिन बुख़ार में जलता हुआ आया और अर्ज़ किया, मेरी बैअत कर दीजिए। आपने तीन बार इंकार फ़र्माया, आख़िर में इर्शाद फ़र्माया, मदीना भट्ठी की तरह है। अपने अन्दर की ख़बासत और मैल दूर कर देगा और पाकीज़ा ही पाकीज़ा (हिस्सा) बाक़ी छोड़ेगा।

८५७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इलाही ! मदीना में मक्का से दोगुनी बरकत अता फ़र्मा।

८५८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, हुज़ूर सल्ल० जब मदीना में तशरीफ़ लाए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत बिलाल रज़ि० बीमार हो गए, हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जब बुख़ार आता था, तो यह शेर पढ़ते थे, 'हर आदमी सुबह को अपने घर वालों में मज़े उड़ाता होता है और मौत उस की जूती के फ़ीते से भी ज़्यादा क़रीब होती है,' हज़रत बिलाल रज़ि० का जब बुख़ार दूर होता तो ऊंची आवाज़ से पढ़ते, (लोगो) सुनो, काश ! मुझे मालूम हो जाता कि मैं (ज़िंदगी) की कोई एक रात जंगल में (रह कर) गुज़ार सकूं और मेरे आस पास अज़ख़र वग़ैरह घास होगी, या किसी दिन मक़ाम मुजन्ना के पानी पर उतर सकूं या या मेरे सामने तुफ़ैल और शामा (पहाड़ियां) होंगी,' (यह सुन कर) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, इलाही ! जिस तरह शैबा बिन रबीआ, उक़्बा बिन रबीआ

और उमय्या बिन खल्फ़ ने हम को हमारी ज़मीन (मक्का) से निकाल कर मदीना की ज़मीन में ला डाला है, तू भी उन पर लानत कर, इस के बाद फ़रमाया, इलाही! जिस तरह हमारे दिल में मक्का की मुहब्बत है उसी क़दर या उस से भी ज़्यादा हम को मदीना की मुहब्बत अता फ़र्मा। इलाही! हमारे साअ और मुद (ग़ल्ला के वज़न के पैमाने होते थे) में बरकत अता कर, इलाही! मदीना को हमारे लिए सेहतगाह की जगह बना दे और इस का बुख़ार मक़ाम जुह्फ़ा को मुन्तक़िल फ़र्मा दे। हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, मदीना की ज़मीन बहुत ही वबावाली थी, मगर अब वादियों से साफ़ पानी जारी रहता है।

बाब २८

रोज़े के बयान में

८५६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है, रोज़े तमाम गुनाहों के लिए ढाल हैं, इस लिए गंदगी और जिहालत की बातें, अगर कोई शख़्स लड़ाई-झगड़ा या गाली गलौज करे तो उस से दोबारा कह देना चाहिए कि हमारा रोज़ा है, उस ख़ुदा की क़सम! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह तआला को मुश्क की ख़ुश्बू से भी ज़्यादा पसन्द है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि रोज़ेदार खाना-पीना और दूसरी ख़्वाहिशें सिर्फ़ मेरे लिए छोड़ता है, इस लिए रोज़े ख़ास मेरे ही लिए हैं और मैं ही उस को इनाम दूंगा, और एक नेकी का दस गुना सवाब दिया जाएगा।

८६०. हज़रत सह्ल रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जन्नत में एक दरवाज़ा रय्यान है। क़ियामत के दिन सिर्फ़ रोज़ेदार ही उस से दाख़िल हो सकेंगे, कोई और उस से न जा सकेगा, जब रोज़ेदार दाख़िल हो जाएंगे तो बन्द कर दिया जाएगा, कोई दूसरा उस में

न घुस सकेगा।

८६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जिसने दो जोड़ ख़ुदा की राह में ख़र्च किए उस को जन्नत के दरवाज़ों से पुकारा जाएगा। ऐ ख़ुदा के बन्दे ! यह (दरवाज़ा) बेहतर है। (इधर से जन्नत में दाख़िल हो,) इस लिए जो नमाज़ी होगा, वह नमाज़ के दरवाज़े से, जो जिहाद करने वाला होगा, वह जिहाद के दरवाज़े से, जो रोज़ेदार होगा, वह बाब रय्यान से, और जो ख़ैरात करने वाला होगा, वह सद्क़ात वाले दरवाज़े से पुकारा जाएगा और हर शख़्स अपने मख़सूस दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल होगा, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों, जिस शख़्स को इन दरवाज़ों से आवाज़ दी जाएगी, तो वह तो उसके लिए अच्छा है ही, मगर कोई शख़्स ऐसा भी होगा, जिस को सभी दरवाज़ों से बुलाया जाए ? फ़र्माया, हां है और मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसे ही लोगों में से होगे।

८६२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, रमज़ान आता है, तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

८६३. दूसरी रिवायत में है कि रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है।

८६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जो रोज़ेदार झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़े, तो अल्लाह तआला को भी इस की ज़रूरत नहीं कि वह खाना-पीना छोड़ दे।

८६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की रिवायत की हुई इस हदीस में इतना और ज़्यादा है कि (अल्लाह तआला फ़र्माता है) आदमी का हर अमल उस के लिए है और रोज़े मेरे लिए हैं, मैं ही इस की जज़ा दूंगा, रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं—

(१) इफ़्तार के वक़्त ख़ुश होता है,

(२) जब ख़ुदा से मिलेगा तो ख़ुश होगा।

८६६. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जो शख़्स निकाह कर सकता है, कर ले और जो नहीं कर सकता, वह ज़रूर रोज़ा रखे कि रोज़ा शहवानी ताक़त को कमज़ोर करता है।

८६७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल०

ने फ़र्माया, महीना उन्तीस रातों का होता है, इस लिए तुम चांद देख कर रोज़ा रखो, अगर चांद बादल में छिपा हो, तो पूरे तीस दिन गिन लो।

८६८. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़र्माती हैं, (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपनी बीवियों से एक माह के लिए ताल्लुक़ खत्म कर दिया, उन्तीस दिन गुज़र गए तो सुबह के वक़्त या शाम के वक़्त तशरीफ़ लाए। अर्ज़ किया गया, आपने एक माह तक घर में दाखिल न होने की क़सम खायी थी, फ़र्माया, महीना उन्तीस दिन का भी होता है।

८६९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ईद के दोनों महीने (सवाब में) कम नहीं होते, चाहे उन्तीस दिन के हों या तीस दिन के, यानी रमज़ान और ज़िलहिज्जा।

८७०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० रिवायत करते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, हम अनपढ़ लोग हैं, न लिख सकते हैं, न हिसाब जानते हैं, महीना इतना भी होता है और इतना भी, यानी कभी उन्तीस दिन का, कभी तीस दिन का।

८७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, कोई शख्स रमज़ान से एक दो दिन पहले रोज़ा न रखे, हां अगर रोज़ा रखने का आदी हो तो रख ले।

८७२. हज़रत बरा बिन आज़िब कहते हैं कि सहाबा रज़ि० में से जब कोई शख्स इफ़्तार के वक़्त सोता होता था, तो फिर सारी रात और पूरा दिन बग़ैर इफ़्तार के गुज़ार देता था और दूसरे दिन शाम को इफ़्तार करता था, (एक दिन) क़ैस बिन सुरमा अन्सारी का रोज़ा था, इफ़्तार का वक़्त हुआ, तो अपनी बीवी से आकर कहा, क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है? बीवी ने कहा, मेरे पास खाना मौजूद तो नहीं है, लेकिन मैं जाती हूं, (शायद) तुम्हारे लिए मिल जाए। चूंकि क़ैस सारे दिन मज़दूरी किया करते थे, इस लिए (थक कर) उन की आंखें बन्द हो गयीं, बीवी वापस आयी उन को सोता देख कर बोली, अब तुम्हारा बड़ा नुक़सान हो गया, खैर दूसरे दिन (दोपहर के वक़्त क़ैस को ग़श आने लगे, उस का ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने भी हुआ, (आप खामोश हो गए।) उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई कि उहिल-ल लकुम लै लतस्सियामिर्रफ़सुइला निसाइकुम (आखिर तक) यानी रोज़ों की रात में हमबिस्तरी करनी तुम्हारे लिए हलाल है, लोग यह सुन कर खूब खुश हुए, यह हुक्म भी उस

वक़्त नाज़िल हुआ कि जब तक फ़ज्र का सफ़ेद डोरा (रात की तारीकी के) स्याह डोरे से निकल न जाए, उस वक़्त तक खाओ-पीओ।

८७३. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० कहते हैं, जब आयत हत्ता य-त बय्य-नू लकुमुल्खैतुल अब्यज़ु मिनल खैति ल अस्वदि (आख़िर तक) नाज़िल हुई, तो मैंने ऊंट के दो ज़ानू बन्द एक सफ़ेद, दूसरा काला लेकर तकिए के नीचे रख लिए और रात को उन को देखता रहा, लेकिन मुझे सफ़ेदी मालूम नहीं हो सकी, सुबह को रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर वाक़िया अर्ज़ किया। आपने फ़र्माया, यह तो रात की स्याही और दिन की सफ़ेदी मुराद है।

८७४. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं, हमने (एक दिन) रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ सेहरी खायी, सेहरी के बाद आप नमाज़ के लिए खड़े हो गए, रावी से पूछा गया कि अज़ान और सेहरी के दर्मियान कितना फ़ासला था, जवाब दिया, पचास आयतें पढ़ने के बराबर।

८७५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, इर्शादे गरामी है, सेहरी खाओ, उस में बरकत है।

८७६. हज़रत सल्मा बिन अक्वअ रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने आशूरा के दिन एक शख्स को एलान करने के लिए भेजा कि जो शख्स दिन में कुछ खा चुका हो (वह शाम तक) रोज़ा पूरा कर ले, (शाम तक कुछ न खाए,) और अगर कुछ खाया हो तो शाम तक कुछ न खाये, (रोज़ा रख ले।)

८७७. हज़रत आइशा रज़ि० व उम्मे सलमा रज़ि० फ़र्माती हैं, (कभी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० बीवियों की मुक़ारबत की वजह से (सुबह तक नापाक रहते थे) फिर गुस्ल कर के रोज़ा रख लेते थे।

८७८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० रोज़ेदार होने की हालत में (कभी) बोसा लेते थे और तुम लोगों से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० को अपनी ख्वाहिश पर क़ाबू था।

८७९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, जब (रोज़ेदार) भूल कर कुछ खा-पी ले, तो रोज़ा पूरा कर ले। (यह न ख्याल करे कि रोज़ा मेरा टूट गया, क्योंकि अल्लाह तआला ने इस को खिलाया-पिलाया है।

८८०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हम हज़रत मुहम्मद रसू-

लुल्लाह सल्ल० के पास बैठे थे कि एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं तबाह हो गया। फ़र्माया, कैसे ? अर्ज़ किया, मैं रमज़ान शरीफ़ में अपनी बीवी से रोज़ा की हालत में हमबिस्तरी कर बैठा। आपने फ़र्माया, क्या तुझे कोई ग़ुलाम मयस्सर है ? अर्ज़ किया नहीं, फ़र्माया क्या लगातार दो माह के रोज़े रख सकता है ? अर्ज़ किया नहीं, फ़र्माया साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकता है ? अर्ज़ किया नहीं। रावी का बयान है कि वह थोड़ी ही देर ठहरा था कि आप की ख़िद्मत में एक ज़ंबील पेश की गई, जिस में खजूरें भरी हुई थीं। आपने फ़रमाया, सवाल करने वाला कहां चला गया ? उसने अर्ज़ किया, हाज़िर हूं। आपने फ़र्माया, यह ले और सद्क़ा कर दे। उसने अर्ज़ किया, अपने से ज़्यादा मुहताज को दे दूं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ख़ुदा की क़सम, मदीना का कोई घर मेरे घर से ज़्यादा मुहताज नहीं है, आप हंस पड़े कि आप के मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए, फिर आपने फ़र्माया, अपने घर वालों को खिला दे।

८८१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एहराम बांधे हुए रसूलुल्लाह सल्ल० ने पछने लगवाए और रोज़े की हालत में भी पछने लगवाए।

८८२. हज़रत इब्ने अबी ऊफ़ा रज़ि० कहते हैं, एक सफ़र में हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ थे. हुज़ूर सल्ल० ने एक शख़्स से फ़र्माया, उतर कर मेरे वास्ते सत्तू घोल, उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (अभी सूरज मौजूद है।) फ़र्माया उतर, मेरे वास्ते सत्तू घोल, हुक्म के मुताबिक़ उस शख़्स ने उतर कर सत्तू घोला और आपने पिया, फिर पूरब की तरफ़ हाथ से इशारा कर के फ़र्माया, जब तुम देख लो कि रात इस तरफ़ से आने लगी, तो रोज़ेदारों के लिए इफ़्तार का वक़्त होगा।

८८३. उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि (एक बार) हम्ज़ा बिन अम्र असलमी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मैं सफ़र में रोज़ा रखूं ? (हम्ज़ा बिन अम्र रज़ि० रोज़े बहुत रखा करते थे।) फ़र्माया, चाहे रखो, चाहे न रखो।

८८४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रमज़ान शरीफ़ में रोज़े की हालत में मक्का के लिए तशरीफ़ ले गए, जब मक़ाम क़दीद (एक चश्मा) में पहुंचे, तो रोज़ा खोल लिया, बाक़ी लोगों ने भी उसी वक़्त

इफ़्तार किया।

८८५. हज़रत अबूदरदा रज़ि० कहते हैं कि गर्मी के ज़माने में एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे। गर्मी की यह कैफ़ियत थी कि तेज़ी की वजह से लोग सरों पर हाथ रख लेते थे, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० और इब्ने रुवाहा रज़ि० के अलावा हममें से किसी का रोज़ा न था।

८८६. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह के साथ सफ़र किया करते थे। आपने देखा कि लोगों की भीड़ में एक शख़्स पर साया किया जा रहा है। फ़र्माया, यह क्या बात है? लोगों ने अर्ज़ किया कि यह शख़्स रोज़ेदार है। फ़र्माया सफ़र में रोज़ा रखना कुछ अच्छी बात नहीं है।

८८७. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं हम अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ सफ़र किया करते थे, मगर न रोज़ेदार बे-रोज़ा शख़्स को कुछ कहता-सुनता था, न बे-रोज़ेदार शख़्स रोज़ेदार को।

८८८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, जो शख़्स मर जाए और उस पर रोज़े फ़र्ज़ रह जाएं, तो उस का वली उस की तरफ़ से रोज़ा रख ले।

८८९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरी वालिदा का इंतिक़ाल हो गया और एक माह के रोज़े उस पर रह गए हैं, क्या मैं उस की तरफ़ से रोज़े रख सकता हूं? फ़र्माया हां, ख़ुदा क़र्ज़ अदा किए जाने का ज़्यादा हक़दार है।

८९०. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जब तक लोग इफ़्तार में जल्दी करते रहेंगे, अच्छे रहेंगे।

८९१. रबीअ बिन्त मुअव्वज़ रज़ि० कहती हैं, हुज़ूर सल्ल० ने दस मुहर्रम की सुबह को अन्सार के देहात में यह ख़बर भेजी कि जिस शख़्स ने (आज) सुबह को कुछ खा-पी लिया हो, वह (दिन का) बाक़ी हिस्सा पूरा करे (शाम तक कुछ न खाए) और अगर कुछ न खाया-पिया, तो रोज़ा रख ले। हज़रत रबीअ रज़ि० फ़र्माती हैं, इसके बाद हम दस तारीख़ का रोज़ा रखते रहे और बच्चों को भी रखवाते रहे और सूफ़ की गुड़ियां बच्चों के सामने डाल दिया करते थे। अगर कोई बच्चा खाने के लिए

रोता था तो हम उस के सामने गुड़ियां डाल देते थे, ताकि खाना इफ़्तार के वक़्त काम आए।

८६२. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को मैंने इर्शाद फ़र्माते हुए सुना, लगातार रोज़े न रखो, (यानी रोज़े पर बिना खाये-पीये रोज़ा न रखो) अगर रोज़ा रखना चाहो, तो (ज़्यादा से ज़्यादा) सिर्फ़ सेहरी तक खाने-पीने से रुके रहो।

८६३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने रोज़े पर रोज़ा रखने से मना फ़र्माया, तो एक मुसलमान ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप तो रोज़े पर रोज़ा रखते हैं। फ़र्माया, तुम में से कौन शख़्स मेरी तरह हो सकता है, मुझे तो मेरा परवरदिगार रात को खिलाता-पिलाता है। आख़िरकार जब लोग रोज़े पर रोज़ा रखने से बाज़ न आए, तो आपने उन को एक दिन रोज़े पर रोज़ा रखवाया और दूसरे दिन भी ऐसा ही किया। उस के बाद चांद हो गया, तो फ़र्माया, मैं तुम से और (ज़्यादा रोज़े पर रोज़ा) रखवाता, मतलब यह है कि लोगों ने चूंकि रमज़ान से न मिलाने से इंकार कर दिया था, इस लिए आप उन को (इस काम की) सज़ा देनी चाहते थे, फिर फ़र्माया, काम उतना ही उठाओ जितनी ताक़त हो।

८६४. हज़रत अबूहुजैफ़ा रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० और हज़रत अबूदर्दा के दर्मियान भाईचारा कराया तो हज़रत सलमान रज़ि० अबूदर्दा के मकान पर गए, उम्मे दर्दा फटा-पुराना कपड़ा पहन कर सामने आयीं, सलमान रज़ि० बोले, क्यों यह क्या हाल है? उम्मे दर्दा रज़ि० कहने लगीं, तुम्हारे भाई अबूदर्दा रज़ि० को दुनिया की ज़रूरत नहीं है, इतने में अबूदर्दा रज़ि० आ गए और सलमान रज़ि० के लिए खाना तैयार कर खाने को कहा, सलमान रज़ि० बोले, तुम भी खाओ। उन्होंने कहा, मेरा रोज़ा है, सल्मान रज़ि० ने कहा, जब तक तुम न खाओगे, मैं भी न खाऊंगा। जब रात हुई (और दोनों ने खाना खाया) तो अबूदर्दा रज़ि० (नमाज़ के लिए) उठने लगे। सल्मान रज़ि० बोले, सो जाओ, अबूदर्दा रज़ि० सो गए। (रात को फिर किसी वक़्त) उठे और (नमाज़ के लिए) जाने लगे, सल्मान रज़ि० ने कहा सो जाओ, अबूदर्दा रज़ि० फिर सो गए। आख़िरी रात में सल्मान रज़ि० ने कहा, अब उठो (चुनांचे दोनों ने उठ कर) नमाज़ (तहज्जुद) अदा की, फिर सलमान

रज़ि० कहने लगे, तुम्हारे रब का भी तुम पर हक़ है और नफ़्स का भी, और घर वालों का भी इस लिए हर हक़दार का हक़ अदा किया करो। (सुबह को) जब अबूदर्दा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप से इस का ज़िक्र किया, आप ने फ़रमाया सलमान रज़ि० ने सच कहा।

८६५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० रोज़े (बराबर) रखते जाते थे कि हमारा ख़्याल हो जाता था कि शायद आप अब रोज़ा न छोड़ेंगे और रोज़ा न रखते थे (तो इतने दिनों तक कि) हमारा ख़्याल हो जाता था कि शायद अब रोज़े रखेंगे ही नहीं, मगर मैंने कभी नहीं देखा कि रमज़ान के सिवा आप ने कभी पूरे महीने के रोज़े रखे हों, और शाबान से ज़्यादा रोज़े रखते हुए भी मैं ने आप को नहीं देखा।

८६६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, ताक़त जितना ही काम शुरू करो, क्यों कि जब तक तुम (किसी अमल के करने से) न उकता जाओ, ख़ुदा भी मलूल नहीं होता। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हुज़ूर को वही नमाज़ पसन्द थी, जो अगरचे थोड़ी ही हो, मगर पाबन्दी के साथ हो, चुनांचे आंहज़रत जब कोई नमाज़ पढ़ते थे, तो उस की पाबन्दी करते थे।

८६७. हज़रत अनस रज़ि० से रसूलुल्लाह सल्ल० के रोज़ों के बारे में सवाल किया गया, तो फ़रमाया, मैं जब हुज़ूर सल्ल० को रोज़ेदार किसी महीने में देखना चाहता था तो देख लेता था, बे रोज़ा देखना चाहता था तो देख लेता था। रात को तहज्जुद पढ़ते देखना चाहता था, तो देख लेता था। रात को सोते देखना चाहता था, तो देख लेता था।। मैंने हुज़ूर सल्ल० की हथेलियों से ज़्यादा नर्म न कोई रेशम देखा, न मख़मल और हुज़ूर सल्ल० के पसीना की ख़ुश्बू से ज़्यादा ख़ुश्बूदार न मुश्क सूंघा, न अंबर।

८६८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की रिवायत की हुई वह हदीस ऊपर गुज़र गई, जिस में रोज़ा मिला कर रखने से मना किया गया था। उसके आख़िर में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, काश मैं रसूलुल्लाह सल्ल० की उस इजाज़त (रोज़ा न रखने) को क़ुबूल कर लेता।

८९९. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की दूसरी रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने दाऊद अलै० के रोज़े की हालत का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत दाऊद अलै० जब दुश्मन से भिड़ जाते थे, तो फिर भागते न थे, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने अर्ज़ किया, मुझे दाऊद अलै० के कामों में से किस आदत की पैरवी करना चाहिए, फ़र्माया, जिस शख़्स ने लगातार दो रोज़े रखे, उसने हक़ीक़त में रोज़ा न रखा (यानी तुम भी दाऊद अलै० की तरह रोज़े रखो, एक दिन छोड़ कर, एक दिन रोज़ा।)

९००. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० उम्मे सुलैम रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए, उन्होंने कहा, कुछ खजूरें और घी ख़िद्मत में पेश किया, आपने फ़र्माया, अपना घी कुप्पी में और खजूरें उन के बर्तन में वापस डाल दो। मेरा रोज़ा है, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने घर के एक कोने में खड़े होकर नफ़्ल नमाज़ पढ़ी और उम्मे सुलैम रज़ि० और उन के घर वालों के लिए दुआ फ़र्मायी, उम्मे सुलैम रज़ि० ने अर्ज़ किया, मेरा एक ख़ास अज़ीज़ है, उस के लिए दुआ फ़र्मा दीजिए, फ़र्माया कौन है? उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० का ख़ादिम अनस रज़ि०। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मेरे लिए दुनिया व दीन की बेहतरी के लिए दुआ की और फ़र्माया, इलाही! उस को माल और औलाद अता फ़र्मा और बरकत दे। चुनांचे (हुज़ूर सल्ल० की दुआ की वजह से) मैं सभी अन्सार से ज़्यादा मालदार हूं और मेरी बेटी उमैना रज़ि० बयान करती थी कि हज्जाज के बसरा में आने के वक़्त तक तुम्हारी ख़ास औलादें एक सौ बीस से कुछ ज़्यादा दफ़्न हो चुकी थीं।

९०१. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने एक शख़्स से पूछा, ऐ शख़्स! तूने इस महीने के आख़िर दिनों के रोज़े नहीं रखे? उसने अर्ज़ किया, नहीं। फ़र्माया, अब चूंकि तूने रोज़े नहीं रखे हैं, इस लिए दो दिन के रोज़े रखना।

९०२. हज़रत जाबिर रज़ि० से पूछा गया क्या हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने जुमा के दिन रोज़ा रखने से मना फ़र्माया है? फ़र्माया, हां।

९०३. हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस कहती हैं, हुज़ूरे अक्रम मेरे यहां तशरीफ़ लाए। मेरा रोज़ा था, आपने फ़र्माया, तूने कल रोज़ा रखा था? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। फ़र्माया, कल रोज़ा रखने का इरादा है?

मैंने अर्ज़ किया, नहीं। फ़र्माया, तो इफ़्तार कर ले।

६०४. हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा गया, क्या अल्लाह के रसूल सल्ल० (इबादत वग़ैरह के लिए) कोई दिन ख़ास कर लेते थे? फ़र्माया, नहीं, बल्कि हुज़ूर सल्ल० के आमाल पाबन्दी के साथ होते थे, मगर तुम में से किस में रसूलुल्लाह सल्ल० जैसी ताक़त है (कि हर अमल पाबन्दी के साथ करे।)

६०५. हज़रत आइशा रज़ि० और इब्ने उमर रज़ि० ने किसी को तशरीक़ के दिनों (६ ज़िलहिज्जा से १३ ज़िलहिज्जा[illegible]) के रोज़े रखने की इजाज़त नहीं दी, हां जिसके पास क़ुर्बानी न हो, उसको इजाज़त दे दी।

६०६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, जाहिलियत के ज़माने में क़ुरैश आशूरा का रोज़ा रखते थे और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० भी रखते थे। जब मदीना में तशरीफ़ लाये, तो ख़ुद भी रखा और लोगों को भी रखने का हुक्म दिया, लेकिन जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए, तो फिर आशूरा का रोज़ा छोड़ दिया, अब जो चाहे रखे, चाहे न रखे।

६०७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० जब मदीना में तशरीफ़ लाए, तो देखा कि यहूद आशूरा का रोज़ा रखते हैं। आपने फ़र्माया, यह क्या बात है? उन्होंने अर्ज़ किया, यह दिन बुज़ुर्गी वाला है। ख़ुदा तआला ने इसी दिन बनी इस्राईल को उन के दुश्मन (फ़िरऔन) से छुटकारा दिलाया था, इस लिए इस दिन मूसा अलै० रोज़ा रखते थे (और हम भी रखते हैं।) फ़र्माया, तुम्हारे मुक़ाबले में मूसा के आमाल का ज़्यादा हक़दार हूं, फिर उस दिन हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और लोगों को भी रखने का हुक्म दिया।

बाब २६

तरावीह की नमाज़ के बयान में

६०८. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, एक रात रसूलुल्लाह सल्ल० आधी रात के वक़्त तशरीफ़ ले गए और मस्जिद में (जाकर) नमाज़ पढ़ी और लोगों ने भी पढ़ी और वफ़ात तक (हुज़ूर सल्ल०) का यही तरीक़ा रहा।

६०९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, कुछ सहाबियों को (महीने के) आख़िरी हफ़्ते में शबे क़द्र दिखाई दी। हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने फ़र्माया, चूंकि मैं देखता हूं कि तुम सब के ख़्वाब आख़िरी हफ़्ते में ही हुए हैं, इस लिए जो शबे क़द्र को तलाश करना चाहे, वह आख़िर हफ़्ते में तलाश करे।

६१०. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हमने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ रमज़ान के दर्मियानी अशरे में एतिकाफ़ किया, २० तारीख़ को सुबह के वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने (एतिकाफ़ या मस्जिद से) निकल कर हम को ख़ुत्बा सुनाया और फ़र्माया—शबे क़द्र मुझे दिखाई गई थी, मगर मैं भूल गया (कि किस तारीख़ में दिखाई गई।) लेकिन तुम लोग इस को आख़िर अशरा में ताक़ तारीख़ों में तलाश करो। मैंने ख़्वाब में यह भी देखा कि मैं कीचड़ और पानी में सज्दा कर रहा हूं, इस लिए अब जिसने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ एतिकाफ़ किया, वह चला जाए क्यों कि एतिकाफ़ हो चुका और बारिश होने वाली है। हज़रत अबूसईद रज़ि० कहते हैं कि हम लोग हुक्म के मुताबिक़ वापस आ गए, उस वक़्त आसमान पर बादल का छोटा टुकड़ा भी दिखाई न देता था, यकायक बादल उठा और बरस पड़ा। मस्जिद की छत चूंकि खजूर की शाख़ों की थी, इस लिए टपकने लगी। जब लोग नमाज़ को खड़े हुए तो हमने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल० पानी और कीचड़ में सज्दा कर रहे हैं और पेशानी मुबारक पर

कीचड़ का निशान हो गया है।

६११. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं, इर्शाद गरामी है कि शबे क़द्र को २१-२३ और २५ की रात में तलाश करो।

६१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की दूसरी रिवायत में है, हुज़ुर सल्ल० ने फ़र्माया है कि शबे क़द्र आख़िरी अशरह में है, इस लिए २३ या २९ की रात में तलाश करो।

६१३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, जब आख़िरी अशरा आता था, तो हुज़ूर सल्ल० तहबन्द को ख़ूब कस लेते थे, फिर ख़ुद भी जागते थे और घर वालों को भी जगाते थे।

बाब ३०

एतिकाफ़ के बयान में

६१४. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में (हमेशा) वफ़ात तक एतिकाफ़ किया करते थे और आप के बाद बीवियां किया करती थीं।

६१५. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मस्जिद में बैठे-बैठे (एतिकाफ़ की हालत में) मेरी तरफ़ (दरीचे से) सर मुबारक झुका देते थे। मैं (बालों में) कंघी कर दिया करती थी, आप एतिकाफ़ के वक़्त बग़ैर (ज़रूरी) हाजत के घर में तशरीफ़ न लाते थे।

६१६. हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जाहिलियत के दिनों में मैंने मस्जिदे हराम में एतिकाफ़ करने की नज़्र मानी थी, फ़र्माया, अपनी नज़्र पूरी कर लो।

६१७. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, (एक बार) हुज़ूर सल्ल०

ने एतिकाफ़ करने का इरादा किया, जब एतिकाफ़ करने चले तो जाकर देखते क्या हैं कि मुख़्तलिफ़ ख़ेमे लगे हुए हैं, आइशा रज़ि० का अलग, हज़रत हफ़्सा रज़ि० का अलग, ज़ैनब रज़ि० का अलग। आपने फ़रमाया, क्या तुम लोग बीवियों का यह फ़ेल अच्छा समझते हो, (यानी मुम्किन है यह फ़ेल ख़ुलूस से न हो बल्कि सिर्फ़ फ़ख़्र मक़्सूद हो) इसके बाद हुज़ूर सल्ल० लौट आए, उस वक़्त एतिकाफ़ न किया, बल्कि शव्वाल के महीने के अशरा में किया।

६१८. उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ि० फ़र्माती हैं, रमज़ान के आख़िरी अशरा में हुज़ूर सल्ल० ने मस्जिद में एतिकाफ़ किया था, मैं सिर्फ़ ज़ियारत के लिए ख़िद्मत में हाज़िर हुई, थोड़ी देर तक बैठ कर बातें कर के वापस होने के लिए खड़ी हो गई। हुज़ूर सल्ल० भी मुझे वापस करने के लिए खड़े हो गए। मस्जिद के उस दरवाज़े तक पहुंची थी जो हज़रत उम्मे सलमा के दरवाज़े के पास था कि इतने में दो अंसारी आ गए और रसूलुल्लाह सल्ल० को सलाम किया, आपने फ़रमाया, रुक जाओ यह सफ़िया रज़ि० बिन्त हुयी हैं इनको यह हुक्म बार गुज़रा और बोली सुब्हा-नल्लाह, आपने फ़रमाया, इंसान के बदन में जहां ख़ून पहुंचता है शैतान भी वहां पहुंचता है, इस लिए मुझे ख़ौफ़ हुआ कि कहीं शैतान तुम्हारे दिलों में कुछ फ़ासिद ख़याल न पैदा कर दे।

६१९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० हर रमज़ान में दस दिन एतिकाफ़ किया करते थे और वफ़ात का साल आया तो आपने बीस दिन एतिकाफ़ किया।

बाब ३१

ख़रीद व फ़रोख़्त के बयान में

६२०. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम मदीना में आए तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरे और साद

बिन रबीअ के दर्मियान भाईचारा करा दिया, साद रज़ि० बोले, चूंकि मैं सारे अंसार से ज़्यादा मालदार हूं लिहाज़ा मैं अपना आधा माल तुझे देता हूं और मेरी दो बीवियां हैं, इन में जो तुझे पसन्द हो मैं उस को तलाक़ दे दूं, इद्दत गुज़रने के बाद तू उस से निकाह कर लेना, मैंने जवाब दिया मुझे उस की ज़रूरत नहीं है (हां यह बताओ कि) कोई तिजारती मंडी भी है। साद रज़ि० ने जवाब दिया बाज़ार क़ैनुक़ाअ है, मैं मंडी को गया और वहां से पनीर और घी लाया (और उस को बेचा) फिर ज़्यादातर वहां आना-जाना शुरू कर दिया कुछ ही दिन गुज़रे होंगे कि मैं मालदार हो गया और एक अंसारी औरत से शादी कर ली और रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ तो आपने मेरे कपड़ों पर कुछ पीले रंग के निशान देखे फ़र्माया, तुमने निकाह किया है, मैंने अर्ज़ किया जी हां, फ़र्माया किससे, मैंने अर्ज़ किया एक अंसारी औरत से, फ़र्माया मह्र क्या दिया, मैंने अर्ज़ किया, गुठली बराबर सोना, फ़र्माया वलीमा करो चाहे एक ही बकरी का हो।

९२१. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, हलाल खुला हुआ है और हराम भी खुला हुआ है और इन दोनों के बीच कुछ शुब्हे वाली (छिपी हुई) चीज़ें हैं जो शख़्स मुश्तबहा गुनाह को छोड़ देता है, वह ज़ाहिरी गुनाह को ज़रूर छोड़ देगा, और अगर छिपे हुए गुनाह पर जुरात की तो वह जल्द ही ज़ाहिरी गुनाह में भी पड़ जाएगा। मना किए हुए उमूर ख़ुदा के (मुक़र्रर किए हुए) बाड़ें हैं जो उन के पास आकर चरेगा वह अंक़रीब उन में भी घुस आएगा।

९२२. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि उत्बा बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने अपने भाई सअद बिन अबी वक़्क़ास को वसीयत की कि ज़मआ की बांदी का बच्चा मेरा है, इस को ले लेना, चुनांचे मक्का की फ़त्ह के एक साल बाद सअद बिन अबी वक़्क़ास ने बच्चा ले लिया और कहने लगे यह मेरा भतीजा है मुझे मेरे भाई ने इसकी वसीयत की थी (यह सुनकर) अब्दुल्लाह बिन ज़मआ रज़ि० खड़े हो गए और कहा कि यह मेरा भाई है और मेरे बाप की छोकरी का बेटा है जो मेरे वालिद के ज़ेर फ़राश हुआ है, आख़िरकार दोनों रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुए, साद रज़ि० बोले, यह मेरा भतीजा है भाई ने मुझे इस की वसीयत कर दी थी, अब्दुल्लाह बिन ज़मआ कहने लगे, यह मेरा भाई है मेरे बाप की लौंडी

का बेटा है, मेरे बाप के ज़ेरे फ़राश पैदा हुआ है, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, अब्दुल्लाह लड़का तू ले ले क्योंकि बच्चा बिछौने वाले का है और ज़िना करने वाले के लिए पत्थर है, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने जब उत्बा की मुशाहबत देखी तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ से फ़र्माया इस से पर्दा करो, चुनांचे उस लड़के ने मरते दम तक हज़रत सौदा रज़ि० को नहीं देखा।

६२३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, कुछ लोगों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया कि हमारे पास लोग गोश्त लाते हैं और हम को इस का इल्म नहीं होता कि उन्होंने (ज़िब्ह के वक़्त) उस पर ख़ुदा का नाम लिया है या नहीं (हमारे लिए क्या हुक्म है?) फ़र्माया, तुम उस पर ख़ुदा का नाम लेकर खा लो।

६२४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि उन को परवाह भी न होगी, किस ज़रिए से (माल हासिल), हुआ हलाल तरीक़े से या हराम तरीक़े से ?

६२५. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० फ़र्माते हैं, हम रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में तिजारत किया करते थे इस लिए हमने हुज़ूर सल्ल० से बैअ़ सर्फ़ (सोने चांदी की ख़रीद व फ़रोख़्त) के बारे में पूछा। आपने फ़र्माया, अगर हाथ व हाथ हो तो कोई हरज नहीं है और उधार हो तो नाजायज़ है।

६२६. अबूमूसा रज़ि० कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ि० के पास जाने की इजाज़त चाही, मगर उन्होंने मुझे इजाज़त न दी। मालूम होता था कि वह (किसी काम में) लगे हुए थे। मैं लौट आया, जब आप काम से फ़ारिग़ हुए तो फ़र्माया, अब्दुल्लाह बिन क़ैस की मैंने आवाज़ सुनी थी, उसको बुला लो। लोगों ने कहा, वह वापस चले गए। आपने मुझे बुलाया, मैं पहुंचा, तो मैंने अर्ज़ किया, (रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में) हम को यही हुक्म था कि अन्दर आने की अगर इजाज़त न मिले तो वापस चले जाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, इस पर कोई हदीस पेश कर सकते हो, मैंने कहा जी हां. चुनांचे मैं अंसार की मजलिस में गया और गवाही देने वाले को तलब किया, अंसार ने कहा, हम सब में छोटे अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० हैं यह गवाही देंगे, मैं अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० को साथ लेकर पहुंचा

और अबूसईद रज़ि० ने मेरे क़ौल की गवाही दी, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० का यह हुक्म इस वक़्त तक मालूम ही न था क्योंकि तिजारत के लिए बाज़ार के आने जाने में लगा रहा।

९२७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि जो शख़्स चाहता हो कि उस की रोज़ी ज़्यादा हो और उमर दराज़ हो, वह रिश्तेदारों से मेल मिलाप करे।

९२८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, मैं जौ की रोटी और कुछ बूदार चर्बी लेकर हुज़ुर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० ने मदीना में एक यहूदी के पास अपनी ज़िरह गिरवी रखी थी और घर वालों के लिए जौ ख़रीदे थे, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना है कि मुहम्मद सल्ल० के घर वालों के पास न किसी रात को साअ भर गेहूं रहे न साअ भर कोई और ग़ल्ला हालांकि हुज़ूर सल्ल० को नौ बीवियां थीं।

९२९. हज़रत मिक़दाम रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है, कोई शख़्स अपने हाथ की कमाई से बेहतर खाना कभी नहीं खाता है। हज़रत दाऊद अलै० जो अल्लाह के नबी थे, वह भी अपने हाथ की कमाई खाते थे।

९३०. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, ख़ुदा उस बन्दे पर रहम फ़र्माए जो अपने हक़ का तक़ाज़ा करने और ख़रीद व फ़रोख़्त करने में आसानी बरतता है।

९३१ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, पिछले लोगों में से एक शख़्स की रूह से फ़रिश्तों ने मुलाक़ात की और कहा, तूने कोई नेक अमल भी किया है ? रूह बोली, मैं अपने आद-मियों को हुक्म देती थी कि वह तंगदस्त (क़र्ज़दारों) को मुहलत दें और मालदारों से आंखें बचा जाएं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने इस वजह से उस रूह से दरगुज़र फ़र्मायी।

९३२. हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, ख़रीद व फ़रोख़्त करने वाले जब तक (अपनी जगह से) अलग हो न जायें, उन को (लेने या न लेने का) अख़्तियार है। तो बैअ में इन को बरकत हासिल होगी और अगर छिपाएंगे और झूठ बोलेंगे, तो बैअ की बरकत मलियामेट कर दी जाएगी।

६३३. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं, हमको गुड्डा (अच्छी बुरी मिली हुई) खजूरें मिलती थीं और हम (कभी) खजूरों के एक साअ के बदले में उन को दो साअ बेचते थे। इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, दो साअ एक साअ के बदले में और दो दिरहम एक दिरहम में न बेचे जाएं।

६३४. हज़रत अबूहुजैफ़ा रज़ि० कहते हैं, मैंने एक पछने लगाने वाले गुलाम को खरीदा और उस की सींगिया तुड़वा फेंकी, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुत्ते और खून की क़ीमत से मना फ़र्माया है, सूद लेने देने से और गोदने गुदवाने से भी मना फ़र्माया है और तस्वीरें खींचने वाले पर लानत भेजी है।

६३५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि झूठी क़सम खाने से माल तबाह और बरकत मलिया-मेट हो जाती है।

६३६. हज़रत खब्बाब रज़ि० कहते हैं, मैं जाहिलियत के ज़माने में लोहारी का पेशा करता था। आस बिन वायल पर मेरा कुछ क़र्ज़ आता था (मुसलमान हो जाने के बाद) मैं उस के पास क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने लगा, तो उसने कहा जब तक मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत का इंकार न करेगा, मैं तेरा क़र्ज़ न दूंगा। मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० की नुबूवत का तो मैं उस वक़्त तक भी इंकार न करूंगा जब तक अल्लाह तआला तुझे मार कर फिर ज़िंदा कर के उठाए। वह बोला कि अच्छा तो उस वक़्त तक ठहरा रह कि मैं मरूं और फिर ज़िंदा कर के उठाया जाऊं (उस वक़्त) मुझे माल और औलाद मिलेगी तो तेरा क़र्ज़ अदा कर दूंगा। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई अफ़रऐतल्लज़ी क-फ़-र बि आयातिना व क़ा-ल ल ऊति यन-न मालंव व वलदा!

६३७. हज़रत अनस बिन मालिक कहते हैं कि एक दर्ज़ी ने खाना तैयार किया और रसूलुल्लाह सल्ल० की दावत की। मैं भी अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ खाने गया, दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने कुछ रोटी और शोरबा पेश किया, शोरबा में कद्दू और क़ीमा पड़ा था। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल० प्याले के अन्दर इधर-उधर कद्दू तलाश कर रहे हैं, उसी दिन से मुझे कद्दू से मुहब्बत हो गयी।

६३८. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, एक जिहाद में मैं रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ था। मगर ऊंट की (सुस्त रफ़्तारी) ने

मुझे (औरों से) पीछे कर दिया और थका भी दिया, हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, जाओ, मैंने अर्ज़ किया जी—फ़र्माया, क्यों क्या हुआ, मैंने अर्ज़ किया ऊंट ने मुझे पीछे भी कर दिया और थका भी दिया, इसी वजह से मैं सब से पीछे रह गया। आपने उतर कर अपनी लकड़ी से ऊंट को मारा और फ़र्माया, सवार हो जाओ, सवार, (फिर तो मैंने ऊंट की यह कैफ़ियत देखी कि) मुश्किल से रसूलुल्लाह सल्ल० के आगे होने से उसको रोकता था, आपने फ़र्माया, क्या तुमने निकाह कर लिया ? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। फ़रमाया, कुंवारी से या ब्याही हुई से ? मैंने अर्ज़ किया, ब्याही हुई से, फ़र्माया, नवजवान लड़की से क्यों नहीं किया ? तुम उस से दिल्लगी करते और वह तुम से करती। मैंने अर्ज़ किया, मेरी कई छोटी बहनें हैं, मैंने चाहा किसी ऐसी औरत से शादी करूं जो उन को घेरे रखे, उन के बालों में कंघी करे और सरपरस्ती रखे। फ़र्माया, देखो तुम (घर) पहुंचने वाले हो, एहतियात से काम लेना, फिर फ़र्माया, अपना ऊंट बेचते हो ? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने एक अवक़िया के बदले खरीद लिया। फिर आप मुझ से पहले तशरीफ़ ले गए (आखिरी रात को मदीना पहुंच गए) मैं सुबह को पहुंचा, तो मस्जिद के दरवाज़े पर आप को पाया। फ़र्माया अब आए हो ? मैंने अर्ज़ किया, जी हां। फ़र्माया, ऊंट (यहीं) छोड़ दो और मस्जिद में जाकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ो, मैंने मस्जिद के अन्दर जाकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि उन को एक अवक़िया चांदी तोल दो और बिलाल रज़ि० ने मुझे चांदी तोल दी और झुकती तोल कर दी। मैं पीठ फेर कर (चांदी लेकर) चल दिया। आपने फ़र्माया, जाबिर रज़ि० को बुलाओ। मैं समझ गया कि आप ऊंट वापस करेंगे और मुझे यह बात बहुत ही ना-पसन्द थी। फ़र्माया अपना ऊंट ले लो और क़ीमत भी तुम ही ले लो।

९३९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कुछ ऊंट पेट के बीमार खरीदे। उस शख्स का एक शरीक था (उस को मालूम हुआ तो) वह उमर रज़ि० के पास आया और कहने लगा, मेरे शरीक ने आप के हाथ पेट के बीमार ऊंट खरीद कर डाले हैं और आप को इत्तिला नहीं दी। इब्ने उमर रज़ि० ने फ़र्माया, रहने दे। हम को हुज़ूर सल्ल० का यह फ़र्मान तसलीम है कि एक का मर्ज़ दूसरे को नहीं होता है।

६४०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अबू तय्यिबा ने रसूलुल्लाह सल्ल० के पछने लगवाए। आपने उस को एक साअ खजूरें देने का हुक्म दिया और (चूं कि अबू तय्यिबा ग़ुलाम था इस लिए) इस के मालिकों से इस टैक्स में कमी करा दी, जो मालिकों ने इसे अदा करना मुक़र्रर कर रखा था, जैसे एक रुपया रोज देता होगा।

६४१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने पछने लगवाए और लगवाने वाले को (उस की उजरत अता की)। अगर पछने लगवाने की उजरत हराम होती तो हुज़ूर सल्ल० न देते।

६४२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, मैंने एक तोशक खरीदी, जिस में तस्वीरें बनी हुई थीं। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस को देखा तो दरवाज़े पर खड़े रहे, अन्दर तशरीफ़ न लाए। चेहरे से नागवारी के आसार देख कर समझ गई और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं खुदा और रसूले खुदा की तरफ़ रुजूअ करती हूं, मुझ से क्या क़ुसूर हो गया है ? फ़र्माया यह तोशक कैसी है ? मैंने अर्ज़ किया, आप के लिए मैंने खरीदी है ताकि इस को बिछा कर उस पर आप बैठें, फ़र्माया, इन तस्वीरों के बनाने वाले क़ियामत के दिन अज़ाब में मुब्तला होंगे और उन से कहा जाएगा कि अपने पैदा किए हुओं में अब जान भी डालो। जिस घर में तस्वीरें होती हैं उस में (रहमत के फ़रिश्ते) नहीं आते।

६४३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, हम लोग एक सफ़र में रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे, हज़रत उमर रज़ि० का एक सरकश ऊंट था। मैं उस पर सवार था, ऊंट मुझ से न रुक सकता था और सब से आगे ही बढ़ा जाता था। हज़रत उमर रज़ि० उसको डांटकर (पीछे) लौटा देते थे। मगर वह आगे ही बढ़ा जाता, हज़रत उमर रज़ि० फिर उस को डांट कर लौटाते थे, यह देख कर रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, उमर रज़ि० ! इस को मेरे हाथ बेच दो। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, यह हुज़ूर सल्ल० ही का है। मगर आपने फ़र्माया, (ऐसे नहीं, मेरे हाथ बेच दो, हज़रत उमर रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० के हाथ उस को फ़रोख्त कर दिया जब खरीद व फ़रोख्त हो गई तो) हुज़ूर सल्ल० ने कहा, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ! अब यह तेरा ही है, जो चाहे कर।

६४४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, एक शख्स ने हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में अर्ज़ किया, मैं खरीदारी में धोखा खा जाता हूं, आपने

फ़र्माया, जब तुम ख़रीद व फ़रोख़्त किया करो, तो कह दिया करो कि (दीन में) धोखा नहीं है।

६४५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, काबा ढाने का (इरादा करने वाला) लश्कर लड़ाई करता हुआ जब ज़मीन पर पहुंचेगा, तो वहां सबके सब अव्वल से आख़िर तक ज़मीन में धंस जाएंगे ? मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! सब क्यों ज़मीन में धंस जाएंगे। उन में तो बाज़ारी लोग और ग़ैर जंगी आदमी भी होंगे ? फ़र्माया, धंसेंगे तो सब, बाक़ी अपनी-अपनी नीयतों के मुवाफ़िक़ (क़ियामत के दिन) उठाए जाएंगे।

६४६. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं, (एक दिन) रसूलुल्लाह सल्ल० बाज़ार में थे कि एक शख़्स ने कहा अबू क़ासिम सल्ल०! आपने उस तरफ़ मुंह फेर कर देखा? उस शख़्स ने अर्ज़ किया, मैंने (आप को नहीं बुलाया था) उस शख़्स को बुलाया था, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम तो रख लिया करो, लेकिन मेरी कुन्नियत पर कुन्नियत न रखा करो।

६४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्ल० (एक तरफ़ को) तशरीफ़ ले चले। (मैं साथ था) मगर न आप मुझ से बात करते थे, न मैं आप से, आख़िर कार बनू क़ैनुक़ाअ के बाज़ार में पहुंचे और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के मकान के सेहन में बैठ गए और फ़र्माया, क्या यहां नन्हा है ? क्या यहां नन्हा है ? (यानी हज़रत हसन बिन अली रज़ि०) मगर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने हज़रत हसन रज़ि० को कुछ देर रोके रखा, मैंने ख़्याल किया कि शायद आप उनको नहला-धुला रही होंगी या हार-बार पहनाती होंगी। (थोड़ी देर के बाद,) हज़रत हसन रज़ि० दौड़ते हुए आए। हुज़ूर सल्ल० ने उन को गले लगाया और प्यार किया, फिर फ़र्माया, इलाही ! इस से मुहब्बत फ़र्मा और जो शख़्स इससे मुहब्बत करे, उस से भी मुहब्बत फ़र्मा।

६४८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में लोग बन्जारों से ग़ल्ला ख़रीद लेते थे। हुज़ूर सल्ल० उन के पास आदमी भेज कर उन को इस फ़ेल से मना कराते थे और फ़र्माते थे, जहां ग़ल्ला (ख़रीदा हो) वहीं न बेचो, यानी ऐसा न करो कि ग़ल्ला ख़रीद कर बेचने वाले के पास छोड़ दो और घर बैठे-बैठे दूसरे शख़्स के हाथ (फ़रोख़्त

कर दो। (हां, (क़ब्ज़ा कर के) फ़रोख़्त करने की जगह ले जाकर फ़रोख़्त कर दो। इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इस बात से मना फ़र्माया है कि ग़ल्ला जिस वक़्त ख़रीदा जाए, उसी वक़्त वहीं बेच दिया जाए, जब तक कि उस पर पूरा-पूरा क़ब्ज़ा न कर लिया जाए।

६४६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से रसूलुल्लाह सल्ल० की वह ख़ूबियां पूछी गयीं, जिन का ज़िक्र तौरात में किया गया था। फ़र्माया, हां जो ख़ूबियां क़ुरआन में हैं, उनमें से कुछ ख़ूबियों का ज़िक्र तौरात में है, क़ुरआन शरीफ़ में है, ऐ नबी सल्ल० ! हम ने तुम को गवाह, ख़ुशख़बरी देने और डराने वाला बना कर भेजा है, तुम उन बड़ों के निगरां हो, मेरे बन्दे और रसूल हो, मैंने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा है। तुम बद अख़्लाक़ और सख़्त दिल नहीं हो, न बाज़ारों में चीख़ते-फिरते हो, तुम बुराई का बदला बुराई से नहीं देते हो, बल्कि माफ़ कर देते हो और दर-गुज़र करते हो, ख़ुदा-ए-तआला तुम्हारे ज़रिए से गुमराह क़ौम को सीधा कराएगा, वह तौहीद की क़ायल हो जाएगी, और इस मिल्लत की वजह से अंधे आंख वाले हो जाएंगे, बहरे सुनने लगेंगे और तंगदिल खुल जाएंगे, उस वक़्त तुम्हारी वफ़ात होगी।

६५०. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन हराम पर कुछ क़र्ज़ था। इसी हालत में उनका इंतिक़ाल हो गया। मैंने हुज़ूर सल्ल० से सिफ़ारिश कराई कि क़र्ज़ख़्वाह कुछ क़र्ज़ा माफ़ कर दें। आपने सिफ़ारिश की, मगर क़र्ज़ख़्वाहों ने न माना। हुज़ूर सल्ल० ने मुझ से फ़र्माया, जाओ अपनी खजूरों को छांट कर हर क़िस्म की अलग-अलग कर लो, अजवह अलग रख दो और ग़ज़्क़ ज़ैद अलग, (जब छांट चुको तो) मुझे इत्तिला देना (मैंने हुक्म के मुताबिक़ सब खजूरों को अलग-अलग कर के) हुज़ूर सल्ल० को इत्तिला दी। आप तशरीफ़ लाए, खजूरों के ढेर के दर्मियान बैठ गए। मुझ से फ़र्माया, लोगों ! (क़र्ज़ख़्वाहों को) नाप-नाप कर दो, मैंने नाप कर सब के हिस्से पूरे कर दिए और फिर भी इतनी खजूरें बाक़ी रहीं कि मालूम होता था कि ज़रा भी कम नहीं हुई।

६५१. हज़रत मिक़दाम बिन मअदी करब रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया कि हज़रत इब्राहीम अलै० ने जिस तरह मक्का को हराम क़रार दिया है, उसी तरह मैं मदीने को हराम बताता हूं। हज़रत इब्राहीम रज़ि० ने मक्का के लिए (ख़ैर व बरकत) की

दुआ की थी, मैं मदीना के लिए दुआ/करता हूं कि वहां के साअ और मुद में अल्लाह तआला बरकत अता फ़र्माए।

६५२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, नबी सल्ल० के ज़माने में मैंने देखा कि जो लोग ग़ल्ला को अटकल से बग़ैर नाप-तौल के खरीदते थे, उन को मारा जाता था ताकि पहले ग़ल्ला को अपने मकानों में रख कर (पूरा-पूरा क़ब्ज़ा कर लें,) बाद को फ़रोख्त कर दें।

६५३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने मना फ़र्माया है कि आदमी बग़ैर पूरा-पूरा क़ब्ज़ा करने के ग़ल्ला को बेचा करे। इब्ने अब्बास रज़ि० से पूछा गया इस से क्या मतलब है? फ़र्माया, रुपए के बदले रुपया और ग़ल्ला उधार यानी एक शख्स ने ग़ल्ला खरीदा जो मौजूद न था, और फिर उसको दूसरे शख्स के हाथ फ़रोख्त कर दिया और रुपया वसूल कर लिया, तो गोया रुपए के बदले रुपए को बेचा, क्योंकि ग़ल्ला तो क़ब्ज़े में आया ही न था और मिल्कियत की तामील बग़ैर क़ब्ज़े के नहीं होती।

६५४. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, सोने की खरीद व फ़रोख्त के बदले अगर हाथ के हाथ न हो, तो सूद है, इसी तरह गेहूं के बदले गेहूं, जौ के बदले जौ, खजूरों के बदले खजूरें, अगर हाथ के हाथ न हों तो सूद हो जाता है (यानी बदले पर दोनों तरफ़ से क़ब्ज़ा ज़रूर है, वरना सूद के हुक्म में है।)

६५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, शहरी आदमी गांव वाले के हाथ न फ़रोख्त करे, (शर्त यह है कि शहर वालों को ग़ल्ला न मिलता हो और वह भूखे मर रहे हों) दर न बढ़ाओ (अगर नीयत खरीदने की न हो) आदमी अपने भाई के मोल पर मोल न करे, (यानी अगर दूसरा खरीद रहा हो तो जब तक वह छोड़ कर अलग न हो जाए उस वक़्त तक उस चीज़ को न खरीदे) कोई औरत अपनी बहन को तलाक़ दिलवाना इस वजह से न चाहती हो कि उस का मुनाफ़ा खुद हासिल करे (यानी खुद उस के शौहर से निकाह कर ले।)

६५६. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, एक शख्स ने अपने ग़ुलाम को मुदब्बिर किया था (ग़ुलाम से कहा था कि मेरे इंतिक़ाल के बाद तू आज़ाद है) मगर वह शख्स (कुछ मुद्दत के बाद) मुहताज हो गया (और ग़ुलाम को बेचना चाहा।) रसूलुल्लाह सल्ल० ने ग़ुलाम को पकड़

कर फ़र्माया, मुझ से इन को कौन खरीदता है ? हज़रत नुऐम रज़ि० ने उस गुलाम को खरीद लिया और हुज़ूर ने वह गुलाम उन को दे दिया।

९५७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हब्लुल हब्ला के मोल से मना फ़र्माया है। हब्लुन हब्ला जाहिलियत के ज़माने में एक क़िस्म की खरीद व फ़रोख्त होती थी कि आदमी अपनी हामिला ऊंटनी के पेट के अन्दर का बच्चा बेच देता था और अगला उस बच्चे का जो बच्चा हो, उस को भी बेच देता था। हुज़ूर सल्ल० ने इसको मना फ़र्मा दिया क्योंकि मालूम नहीं बच्चा ज़िंदा हो या मुर्दा, नर हो या मादा, वाक़ई हमल हो या बीमारी वग़ैरह।

९५८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, अगर कोई शख्स बकरी के थनों में दूध जमा रख छोड़े और बेचने को ले जाए और दूसरा शख्स उस दूध वाली बकरी को खरीद ले और उस का दूध दुहे तो अगर पसन्द हो रख ले, (वरना वापस कर दे) मगर दूध के बदले एक साअ खजूरें देनी ज़रूरी हैं।

९५९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर कोई छोकरी ज़िना करे और उस का ज़िना ज़ाहिर हो जाए तो (उस का मालिक) उस के कोड़े लगाए। सिर्फ़ झिड़कने-डांटने पर ही बस न करे। अगर फिर ज़िना करे तो फिर कोड़े लगाए डांटने, झिड़कने पर न बस करे, हमेशा बार-बार ज़िना करे तो उसे बेच दे जिस क़ीमत पर हो (चाहे बालों की रस्सी ही के बदले हो।)

९६० हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि बन्जारों से मिलने में पहल न करे। कोई शहरी किसी गांव वाले के हाथ फ़रोख्त न करे। इब्ने अब्बास रज़ि० से पूछा गया इसका क्या मतलब है कि शहरी गांव वाले के हाथ न बेचे। फ़र्माया, मतलब यह कि कोई शहरी किसी गांव वाले के खरीदने का दलाल न बने कि दलाल बन कर गांव वाले को नुक़सान पहुंचा दे।

९६१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बैअ मज़ाबना से मना फ़र्माया है। तर खजूरों को खुश्क खुरमों के बराबर फ़रोख्त करना या किशमिश को तर अंगूरों के बदले बराबर नाप कर बेचना, मुज़ाबना कहलाता है।

९६२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया,

कोई शख्स दूसरे की मोल पर मोल न करे और जब तक सौदा बाजार में लाकर न डाल दिया जाए, उस वक़्त तक (उस के लेने के लिए) पहल न करे।

९६३. हज़रत मालिक बिन औस रज़ि० कहते हैं, मैंने सौ दीनार की चांदी भुनानी चाही, तो तल्हा बिन उबैदुल्लाह ने मुझे बुलाया, हम आपस में दर के बारे में बात करने लगे आखिर में एक दर पर दोनों राज़ी हो गए, तल्हा रज़ि० ने सोना लेकर हाथ से उलट-पुलट कर देखना शुरू किया और मुझ से कहा इतनी देर ठहर जाओ कि मेरा खज़ांची गाबा से आ जाए, हज़रत उमर रज़ि० (कहीं) इस क़ौल को सुन रहे थे। आपने (मुझ से) फ़रमाया, जब तक तू वसूल न करे, इस से जुदा न होना, क्योंकि खुदा की क़सम! रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि (क़ब्ज़ा) हाथ के हाथ न हो तो सोना सोने के बदले फ़रोख्त करना (या चांदी चांदी के बदले बेचना) सूद है।

९६४. हज़रत अबूबकरा रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शादे मुबारक है कि सोना सोने के बराबर, चांदी चांदी के बराबर बेचा करो (कमी-बेशी न करो) हां, सोने के बदले चांदी या चांदी के बदले सोना जिस तरह चाहो बेचा करो।

९६५. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, सोने के बदले में बराबर-बराबर फ़रोख्त करो, कमी-बेशी न करो और चांदी को चांदी के बदले में वज़न में बराबर करके बेचो, कमी-बेशी न करो और सोना-चांदी अगर गायब हो, तो उसको नक़द क़ीमत पर भी न बेचो।

९६६. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० फ़रमाते थे कि दीनार की बैअ़ के बदले में दिरहम की बैअ़, दिरहम के बदले में जायज़ है। लोगों ने कहा इब्ने अब्बास रज़ि० तो इस के खिलाफ़ कहते हैं (अबूसईद रज़ि० खामोश हो गए और) इब्ने अब्बास रज़ि० से (जाकर) पूछा कि क्या तुम ने यह बात नबी सल्ल० से सुनी है या क़ुरआन में देखी है? इब्ने अब्बास रज़ि० बोले, इन दोनों बातों में से तो मैं कुछ कह नहीं सकता, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० के क़ौलों का तुम को मुझ से ज़्यादा इल्म है। मुझ से तो उसामा रज़ि० ने कहा था कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया है, सूद सिर्फ़ उधार में होता है यानी नक़द सोने-चांदी की बैअ़ उधार नाजायज़ है।

९६७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, खजूरों को उस वक़्त तक न बेचो, जब तक उनकी दुरुस्ती (पुख़्तगी) न ज़ाहिर हो जाए और खजूरों को खजूरों के बदले में न बेचो। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० के हवाले से बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस के बाद अरय्या (ताज़ा या सूखे खजूरों के बदले में बेचने की) इजाज़त दे दी थी और इसके अलावा इजाज़त नहीं दी।

९६८. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने पेड़ पर लगी हुई कच्ची खजूरों के मोल से मना फ़रमाया है और सिर्फ़ अराया की दूसरी खजूरों के मोल से भी मना फ़रमाया है। हां, अगर दिरहम व दीनार के मुक़ाबले में हो तो ख़ैर।

९६९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पांच वसक़ या उस से कम की बैअ अराया करने की इजाज़त दी है।

९७०. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में लोग (कच्चे) फल ख़रीद लेते थे और जब काट लेते थे और उन से रुपए के तक़ाज़े का वक़्त आता था तो कहते थे कि फलों में दम्मान, क़ुश्शाम मर्ज़ और दूसरी आफ़तें पैदा हो गई थीं और (ख़ामख़ाह) झगड़ा होता था और जब रसूलुल्लाह सल्ल० के पास इस तरह के ज़्यादा झगड़े आने लगे तो आपने इस झगड़े को दूर करने के लिए मश्विरों के तौर पर इर्शाद फ़रमाया कि अगर (झगड़ों से) बाज़ नहीं आते, तो जब तक फलों में सलाहियत न पैदा हो जाए, उस वक़्त तक इनकी ख़रीद व फ़रोख़्त न किया करो।

९७१. हज़रत जाबिर रज़ि० बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फलों के मोल से मना फ़र्मा दिया है, उस वक़्त तक कि सुर्ख़, ज़र्द और खाने लायक़ न हो जाएं।

९७२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फलों के मोल से मना फ़रमाया है, उस वक़्त तक कि पक न जाएं।

९७३. हज़रत अनस रज़ि० से पूछा गया कि फल कैसे पक जाएं, फ़रमाया कि सुर्ख़ हो जाएं (क्योंकि अगर कच्चे फलों की बैअ करोगे और ख़ुदा ने फल न दिए तो बताओ किस तरह अपने भाई से रुपया वसूल कर

सकते हो।

९७४. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० और हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक शख़्स को ख़ैबर का कलेक्टर बना कर भेजा, वहां से यह शख़्स रसूलुल्लाह सल्ल० की खि़दमत में उम्दा-उम्दा खजूरें लाया। आपने फ़र्माया, क्या ख़ैबर की सारी खजूरें ऐसी ही होती हैं ? अर्ज़ किया नहीं, तो ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम यह खजूरें एक साअ भर रद्दी खजूरों के दो साअ में लेते हैं और उनके दो साअ तीन साअ में। फ़र्माया, ऐसा न करो, बल्कि अच्छी-बुरी मिली हुई रुपए के बदले में फ़रोख़्त कर दिया करो, फिर अच्छी खजूरें रुपयों से ख़रीदा करो।

९७५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है कि आदमी अनाज की बालों को ग़ल्ला के बदले फ़रोख़्त करे या बैअ मुलामसा या मुनाबज़ा करे (मुंह से कुछ नहीं कहा) सिर्फ़ ख़रीदने वाले ने बैअ को छोड़ दिया यह मुलामसा कहलाता है। अगर बिना कुछ कहे बैअ पर कंकर पत्थर या कुछ फेंक कर मारे यह मुनाबज़ा हो गई, जाहिलियत में यह दोनों तरीक़े अपनाए जाते थे।

९७६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, हज़रत मुआविया रज़ि० की वालिदा हिन्दा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अबूसुफ़ियान रज़ि० कंजूस आदमी है (ख़र्च पूरा नहीं देता।) अगर मैं कुछ चुपके से ले लिया करूं तो कुछ हर्ज है ? फ़र्माया, तू और तेरे बच्चे इतना ले सकते हैं जो नेक चलनी से ख़र्च करने के बाद तेरे लिए काफ़ी हो जाए।

९७७. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस जायदाद वग़ैरह में शुफ़आ लाज़िम कर दिया है, जो तक़सीम न हुई हो और अगर हद बन्दी हो जाए और रास्ते अलग-अलग बना दिए जाएं तो, शुफ़आ नहीं है।

९७८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि हज़रत इब्राहीम अलै० हज़रत सारा रज़ि० को साथ लेकर वतन छोड़ करके एक गांव में पहुंचे, वहां एक बादशाह ज़ालिम शख़्स मौजूद था, उस को ख़बर लगी कि इब्राहीम अलै० एक हसीन औरत को लेकर आए हैं, चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलै० के पास क़ासिद भेजकर पुछवाया तुम्हारे साथ यह औरत कौन है ? हज़रत इब्राहीम अलै० ने फ़र्माया,

यह मेरी बहन है। इस के बाद हज़रत सारा रज़ि० के पास आए, फ़रमाया तुम मेरी बात झूठी न करना। मैंने उन लोगों से कह दिया है कि तुम मेरी बहन हो, क्योंकि धरती पर (इस ज़माने में) मेरे और तुम्हारे सिवा कोई ईमानदार नहीं है, यह कह कर हज़रत सारा रज़ि० को बादशाह के पास भेज दिया। (सारा वहां पहुंचीं, तो) उस ज़ालिम बादशाह ने उन पर हाथ डालना चाहा, हज़रत सारा रज़ि० ने वुज़ू कर के दुआ की, इलाही! तुझ पर और तेरे रसूल पर मेरा ईमान है और मैंने अपना सतर खाविंद के सिवाए सभी से महफ़ूज़ रखा है, तू मुझे इस काफ़िर के क़ाबू में न दे। (यह दुआ हज़रत सारा के मुंह से निकलनी थी कि) बादशाह का दम घुटने लगा और ज़मीन पर पांव पीटने लगा। यह देख कर हज़रत सारा रज़ि० ने दुआ की कि इलाही! अगर यह मर गया तो लोग कहेंगे कि उसी ने क़त्ल किया (हज़रत सारा रज़ि० की इस दुआ से) अल्लाह तआला ने बादशाह को आज़ादी दे दी, मगर उसने फिर हाथ डालना चाहा। हज़रत सारा रज़ि० ने दोबारा वुज़ू कर के दुआ की कि इलाही! अगर तुझ पर और तेरे रसूल पर मेरा ईमान है और मैं बा अस्मत हूं तो इस काफ़िर को मुझ पर दस्तरस न दे। फ़ौरन बादशाह का सांस घुटने लगा और वह ज़मीन पर पांव पीटने लगा, हज़रत सारा ने फिर दुआ की, इलाही! अगर यह मर गया तो लोग कहेंगे कि मैंने इस को क़त्ल किया है। ख़ुदा-ए-तआला ने बादशाह को फिर रिहाई दी। आख़िर में बादशाह कहने लगा कि तुमने तो मेरे पास शैतान को भेज दिया, इस को आजर[1] लौंडी दे दो और इब्राहीम अलै० के पास पहुंचा दो। चुनांचे हज़रत सारा रज़ि० इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास वापस आयीं और कहने लगीं, क्या आपको इत्तिला हुई कि अल्लाह तआला ने काफ़िर को ज़लील किया और उस ने एक छोकरी ख़िद्मत के लिए दी।

६७९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर-ए-करीम सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत जल्द ईसा इब्ने मरयम अलै० तुम में उतरेंगे। इंसाफ़ के साथ हुकूमत करेंगे। सलीब को तोड़ेंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल करेंगे, जज़िया ख़त्म कर देंगे, माल यहां-वहां फिरेगा, कोई उस को क़ुबूल करने

---

१. आजर हज़रत हाजरा रज़ि० को लिखते है, यह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम कीवालिदा थीं।

वाला न होगा।

६८०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के पास एक शख्स ने कहा, मैं (पेशावर) आदमी हूं। मेरा गुज़ारा दस्तकारी पर है। तस्वीरें बनाया करता हूं। आपने फ़र्माया, मैं तुझ से वही कहूंगा जो रसूलुल्लाह सल्ल० से मैंने सुना है। मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना है कि तस्वीर बनाने वाले को अल्लाह तआला अज़ाब में मुब्तला करेगा, (ताकि अपनी बनाई हुई तस्वीरों में रूह भी फूंके) और तस्वीरों में जान कभी न डाल सकेगा (इस लिए उस पर अज़ाब हमेशा होता रहेगा) यह सुन कर वह शख्स बहुत दुखी हुआ कि उस का चेहरा पीला पड़ गया। यह देख कर इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़र्माया, अफ़सोस! अगर तू नहीं मानता और तस्वीरें ही बनानी चाहता है, तो उन दरख्तों वग़ैरह की तस्वीरें बना, जिन में जान नहीं है।

६८१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है, मैं क़ियामत के दिन तीन शख्सों से झगड़ा करूंगा, एक वह शख्स जिसने किसी बात की क़सम खायी, या कुछ ज़िम्मेदारी की और यह काम मेरा वास्ता देकर किया, लेकिन फिर इस के खिलाफ़ किया, दूसरा वह शख्स जिसने किसी आज़ाद मर्द को फ़रोख्त कर के क़ीमत खायी। तीसरा वह शख्स जिसने किसी मज़दूर को मज़दूरी पर रखा और पूरा-पूरा काम लेकर मज़दूरी न दी।

६८२. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का में थे और मक्का की फ़त्ह वाला साल था कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना, खुदा और उसके रसूल सल्ल० ने शराब, मुर्दार सूअर और मूर्तियों की बैअ हराम की है, अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुर्दार की चर्बी का क्या हुक्म है? इस से तो कश्तियां और खालें चिकनी होती हैं और लोग चिराग़ों में जलाते हैं, फ़र्माया, नहीं, यह हराम ही है। यहूदियों पर खुदा की मार, इस के बावजूद कि खुदा ने उस को हराम कर दिया, मगर उन्होंने उस को पिघला कर बेचना और क़ीमत खानी अख्तियार की।

६८३. हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने कुत्ते की क़ीमत, ज़िना की उज्रत और काहिन की मिठाई खाने से मना फ़र्माया है।

बाब ३२

सलम के बारे में

९८४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब मक्का से मदीना तशरीफ़ लाए, तो देखा कि लोग एक-एक, दो-दो साल के फलों की बैअ सलम करते हैं। आपने फ़र्माया, जो शख्स बैअ सलम करे, वह नाप-तौल पहले से ठहराए।

९८५. हज़रत इब्ने अबी अवफ़ी रज़ि० कहते हैं, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० के वक़्त में और हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में गेहूं, जौ, किशमिश और खजूरें बैअ सलम के तौर पर बेचा करते थे। दूसरी रिवायत में है हम शामी काश्तकारों से गेहूं, जौ और किशमिश में पैमाना तै कर के मुक़र्रर मुद्दत ठहरा कर बैअ सलम करते थे। पूछा गया कि जिन चीज़ों की तुम बैअ सलम करते थे, वह चीज़ें काश्तकार कहां से लाते? (क्या उन ही के यहां पैदा होती थीं या कहीं और से लाते थे) फ़र्माया, हम उन से यह पूछा नहीं करते थे।

बाब ३३

शुफ़आ के बारे में

९८६. हुज़ूर-ए-अकरम सल्ल० के आज़ाद किए हुए गुलाम अबू राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं कि मैंने सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से आकर

कहा, मेरी दो कोठरियां जो तुम्हारे मकान में हैं मुझ से इनको खरीद लो। सअद रज़ि० बोले, चार हज़ार दिरहम क़िस्तवार तो मैं दे सकता हूं, इस से ज़्यादा नहीं दे सकता हूं। मैंने कहा, पांच सौ अशर्फ़ियां तो मुझे उन की (और लोगों) से मिल रही हैं, मगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि पड़ोसी क़रीब होने की वजह से (माल खरीदने का) ज़्यादा हक़दार है (इस लिए मैं चार हज़ार दिरहम में तुम को देता हूं) वरना कोई वजह न थी कि पांच सौ अशर्फ़ियां मिल रही हैं और मैं चार हज़ार दिरहम में तुम को दे देता।

९८७ हज़रत आइशा रज़ि० ने (एक बार) रसूलुल्लाह सल्ल० की खिद्मत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे दो पड़ोसी हैं, मैं हदया किस को दूं ? फ़र्माया, जिस का दरवाज़ा तुम्हारे घर से नज़दीक हो।

बाब ३४

इजारा के बारे में

९८८. हज़रत अबूमूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं, मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिद्मत में हाज़िर हुआ। मेरे साथ क़बीला अशअर के दो आदमी और भी थे, (जो आमिल बनना चाहते थे।) मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे इस का इल्म न था कि दोनों हाकिमे माल बनने की ख्वाहिश रखते हैं। फ़र्माया, जो शख्स खुद हुकूमत व माल चाहता है हम उस को मुक़र्रर नहीं कर सकते।

९८९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने जिस नबी को मब्ऊस फ़र्माया, उस से (नुबूवत

से पहले) बकरियां जरूर चरवायीं, सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, हुजूर सल्ल० ने भी बकरियां चराई हैं ? फ़रमाया हां, मैं मक्का वालों की बकरियां कुछ क़ीरात के लिए चराता था (क़ीरात बहुत छोटा-सा सिक्का होता था।)

९९०. हजरत अबूमूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है, हुजूर सल्ल० ने (एक दिन) इर्शाद फ़रमाया कि यहूद व नसारा और मुसलमानों की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख्स ने कुछ मजदूर सुबह से शाम तक काम करने के लिए मजदूरी पर मुकर्रर कर के रखे। मजदूरों ने आधे दिन तो काम किया, फिर कहने लगे हम मजदूरी नहीं लेना चाहते और जितना हम काम कर चुके वह मुफ्त हुआ। तुमने जो मजदूरी मुक़र्रर की, वह तुम्हीं रख लो। (हम जाते हैं,) वह शख्स बोला बाक़ी काम पूरा कर दो और मजदूरी पूरी-पूरी ले लो, मगर मजदूरों ने न माना और इंकार करके चल दिए, मालिक ने और मजदूर रख लिए और उन से कह दिया, बाक़ी दिन काम करो और जो मजदूरी मैंने पहले मजदूरों से ठहराई थी, वह सब की सब तुम को मिलेगी। मजदूरों ने अस्र तक काम किया, अस्र का वक़्त हुआ तो यह भी कहने लगे, हमने जितना काम किया वह मुफ्त हुआ और मजदूरी जो तुमने ठहराई थी वह तुम ही ले लो उसने बहुत कुछ कहा कि थोड़ा सा दिन बाक़ी रहा है काम पूरा कर के पूरे दिन की मजदूरी ले लो मगर उन्होंने इंकार कर दिया, आखिरकार उसने बक़िया दिन के लिए और मजदूर रख लिए इन मजदूरों ने दिन के बाक़ी हिस्से में काम किया और सूरज डूबने के बाद दोनों गिरोहों की पूरी-पूरी मजदूरी लेकर चलते हुए, यह है यहूद व नसारा और नूर (इस्लाम) कुबूल करने वालों की मिसाल।

९९१. हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि तीन आदमी (कहीं) जा रहे थे, रास्ते में बारिश ने आ दबाया। वह पनाह लेने के ख्याल से पहाड़ के एक ग़ार में चले गए। जब उस के अन्दर बैठ गए तो ग़ार के मुंह पर पहाड़ के ऊपर से एक पत्थर आ गिरा और क़ब्र की तरह बन्द कर दिया, उस वक़्त वह एक दूसरे से कहने लगे कि (भाई !) सोचो अगर खास खुदा के वास्ते तुमने कोई अमल किया हो, तो उसका वास्ता देकर दुआ मांगो क्योंकि उस के बग़ैर रिहाई नहीं मिल सकती, चुनांचे एक शख्स बोला, मेरे मां-बाप जिंदा थे और बहुत बूढ़े हो गए थे और मेरे छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जिनके

गुज़र-बसर का बोझ मेरे ऊपर था (मैं मेहनत मजदूरी) कर के जब शाम को घर आता था, तो जानवरों का दूध दूह कर पहले तो मां-बाप के पास जाता और बच्चों से पहले उन को पिलाया करता था। एक दिन मजदूरी के कारोबार में देर हो गई और रात गए तक मैं न आ सका। मां-बाप सो गए, मैंने घबरा कर दूध दूहा और वालिदैन के सिरहाने जाकर खड़ा हो गया। (दूध का) प्याला हाथ में था। बच्चे पांव पर लोटे फिरते थे मगर वालिदैन से पहले उन को पिलाना मुझे नागवार था और उन को जगाना भी ठीक न था। इसी हालत में सुबह हो गयी, इलाही अगर यह काम मैंने खास तेरे ही वास्ते किया हो तो ग़ार का मुंह इतना खोल दे कि हम को आसमान नज़र आने लगे, अल्लाह तआला ने इतना मुंह खोल दिया कि उन को आसमान नज़र आने लगा, इसके बाद दूसरे ने कहना शुरू किया, मेरी एक चचेरी बहन थी। मुझे उस से इतनी मुहब्बत थी जितनी ज़्यादा से ज़्यादा किसी शख़्स को औरत से हो सकती है, मैंने उससे विसाल की ख्वाहिश की मगर उसने इंकार कर दिया और कहा जब तक एक सौ बीस दीनार न देगा कामियाब न होगा, आखिर में मैंने उस को एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दे दिए कि वह मुझ से खिलवत करे। उसने कहना मान लिया, जब मुझे उस पर पूरी क़ुदरत हो गयी तो उसने कहा, मेरे नज़दीक यह बात हलाल नहीं कि बिना जायज़ तरीके (निकाह) के तू मुहर तोड़े। चुनांचे मुझे उस के साथ हम ख्वाबी कुछ अच्छी न मालूम हुई और इस के बावजूद कि उससे मुझे बेहद मुहब्बत थी मैं लौटकर चला आया। अशर्फ़ियां भी उसी के पास छोड़ दीं, इलाही अगर यह काम मैंने सिर्फ़ तेरी ख़ुशी के लिए किया है तो इस पत्थर को खोल दे। पत्थर खुल गया, मगर इतना न खुला कि यह लोग इस से निकल सकते। तीसरा शख्स कहने लगा मैंने किसी काम के लिए कुछ मजदूर रखे थे सब को मैंने मजदूरी दे दी, मगर एक शख्स अपनी मजदूरी छोड़ कर चला गया, उस की मजदूरी के दामों से मैंने तिजारत की और उस से खूब तरक़्क़ी की। मेरे पास माल बहुत हो गया। मुद्दत के बाद वह मेरे पास आया और कहा अल्लाह के बन्दे मेरी मजदूरी दे दे मैंने कहा यह सारे ऊंट, गाय, बकरियां और गुलाम जो तुझे नज़र आ रहे हैं तेरी ही मजदूरी के हैं, उसने कहा अल्लाह के बन्दे मुझ से हंसी मत कर (मेरी मज़दूरी दे दे।) मैंने कहा मैं तुझ से मज़ाक नहीं कर रहा हूं (यह तेरी ही मजदूरी के हैं इन को ले ले) वह लेकर चलता हुआ

और कुछ न छोड़ा, इलाही ! मैंने यह काम तेरी ही जात के लिए किया, तो जिस मुसीबत में हम मुब्तला हैं उस को दूर कर, पत्थर हट गया और यह लोग निकल आए।

९९२. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, कुछ सहाबी किसी सफ़र में गए (रास्ते में) अरब के किसी क़बीले के यहां उतरे और उन से मेहमानी के ख़्वाहिशमन्द हुए, मगर उन्होंने मेहमानी न की, इत्तिफ़ाक़ से उस क़बीले के सरदार को किसी ज़हरीले जानवर ने काट लिया। बहुत कुछ कोशिश की मगर किसी (इलाज) से फ़ायदा न हुआ आख़िरकार एक शख़्स बोला, उन आए हुए लोगों के पास शायद कोई इलाज हो। (चलो उन के पास चलें) चुनांचे वह लोग सहाबा रज़ि० के पास आए और कहने लगे हमारे सरदार को किसी ज़हरीले जानवर ने काट लिया है और हमने उस के इलाज में हर तरह की कोशिश की लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ, क्या तुम्हारे पास कोई इलाज है, एक सहाबी रज़ि० बोले, हां मैं मंत्र जानता हूं, मगर चूंकि हमने तुम से मेहमानी तलब की थी और तुमने इंकार कर दिया, इस लिए हम तुम्हारे लिए मंत्र न पढ़ेंगे, उस वक़्त तक कि तुम हमारी उजरत मुक़र्रर न कर दो। आख़िर में बकरियों के एक गल्ले पर तस्फ़िया हुआ, सहाबी अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन पढ़ते जाते थे और तुफ़-तुफ़ करते जाते थे (यह मंत्र पढ़ना था) कि उस को इस तरह आराम हो गया जैसे रस्सी की गांठ खुल गई वह चलने-फिरने लगा और कोई बेचैनी न रही, लोगों ने (मुआहदा के मुताबिक़) मज़दूरी दे दी। सहाबा रज़ि० आपस में कहने लगे इस को आपस में बांट लो, लेकिन मंत्र पढ़ने वाले ने कहा अभी न बांटो जब तक हम रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच कर इस वाक़िए का तज़किरा न कर लें और देखें कि हुज़ूर सल्ल० क्या हुक्म देते हैं चुनांचे जब रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वाक़िया अर्ज़ किया आपने फ़र्माया, तुम को किसने बताया कि यह मंत्र है, फिर फ़र्माया, तुमने ठीक किया बांट लो बल्कि अपने साथ मेरा भी हिस्सा मुक़र्रर कर लो यह फ़र्मा कर हुज़ूर सल्ल० हंस पड़े।

९९३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने नर को मादा पर डालने की उजरत लेने से मना फ़र्माया है।

बाब ३५

हवाले के बयान में

९९४. हजरत अबुहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुजूर सल्ल० ने फ़र्माया, मालदार का (क़र्ज़ अदा करने में) देर करना ज़ुल्म है। अगर तुम में से कोई शख्स किसी मालदार के पीछे लगा दिया जाए, (यह कह दिया जाए कि फ़्लां शख्स तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर देगा और वह शख्स भी मान ले) तो पीछे लग जाना चाहिए मान लेना चाहिए और असल क़र्ज़दार का पीछा छोड़ देना चाहिए।

९९५. हजरत सल्मा बिन अकवअ रज़ि० कहते हैं, हम नबी सल्ल० के पास बैठे हुए थे कि एक जनाज़ा लाया गया और आपसे अर्ज़ किया गया, उस की नमाज़ पढ़ दीजिए। आपने पूछा, इस पर कुछ क़र्ज़ तो नहीं है? फ़र्माया, कुछ छोड़ कर भी मरा है? अर्ज़ किया गया, नहीं। आपने उस पर नमाज़ पढ़ी, थोड़ी देर के बाद एक और जनाज़ा लाया गया और लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से नमाज़ पढ़ने को कहा, फ़र्माया इस पर कुछ क़र्ज़ तो नहीं है? अर्ज़ किया गया, हां है। फ़र्माया, यह कुछ छोड़ कर मरा है? अर्ज़ किया गया तीन दीनार। आपने उस की भी नमाज़ पढ़ी। फिर तीसरा जनाज़ा लाया गया और हुज़ूर सल्ल० से नमाज़ पढ़ने के लिए अर्ज़ किया गया, आपने पूछा क्या यह कुछ छोड़ कर मरा है? अर्ज़ किया गया नहीं। फ़र्माया इस पर कुछ क़र्ज़ है? अर्ज़ किया गया, तीन दीनार, फ़र्माया, तुम लोग अपने आदमी पर खुद नमाज़ पढ़ो (मैं नहीं पढ़ूंगा।) अबूक़तादा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इस पर जो कुछ क़र्ज़ है, वह मैं अपने ज़िम्मे लेता हूं, आप नमाज़ पढ़ें, तो आप ने उस की नमाज़ पढ़ी।

बाब ३६

किफ़ालत के बानय में

९९६. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से पूछा गया कि आप को रसूलुल्लाह सल्ल० की यह हदीस पहुंची है कि इस्लाम में मुआहदा (भाई-चारा) नहीं है ? फ़र्माया (है।) मेरे घर में बैठ कर हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरैश व अंसार में मुआहदा (भाईचारा) कराया था।

९९७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने मुझ से (वायदा) फ़र्माया है कि बहरैन से माल आ जाए, तो मैं तुझे इतना दूंगा, मगर हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के बाद बहरैन से माल आया, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एलान कराया कि अगर रसूलुल्लाह सल्ल० पर किसी का कुछ क़र्ज़ हो, तो वह हमारे पास आए, (हम पूरा करेंगे।) चुनांचे मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास जाकर कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इतना देने का वायदा फ़र्माया था, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने लप भर कर मुझे दिया और फ़र्माया शुमार कर, मैंने गिना तो पांच सौ (दिरहम) थे। आपने फ़र्माया, इतने-इतने दो जगह और ले ले।

बाब ३७

विकालत के बयान में

९९८. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० को तक़्सीम करने के लिए

मुझे कुछ बकरियां दीं। (मैंने तक़्सीम कर दीं।) एक बच्चा बाक़ी रह गया, मैंने उस का ज़िक्र हुज़ूर सल्ल० से किया, फ़र्माया, उस को तू ही ज़िब्ह कर ले।

९९९. हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि सुलअ नामी पहाड़ में लोगों की बकरियां चरती थीं। एक दिन हमारी एक बकरी मरने लगी। (चराने वाली) लौंडी ने जो यह देखा तो एक पत्थर तोड़ कर उस से बकरी को ज़िब्ह कर लिया। मैंने कहा, उस को अभी न खाओ, रसूलुल्लाह सल्ल० से जाकर ख़ुद मस्अला मालूम कर लें या किसी को भेज कर मालूम करा लें। लोगों ने मस्अला मालूम कराया, आपने खा लेने की इजाज़त दे दी।

१०००. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने लगा, और तक़ाज़ा करने में उसने सख़्ती की, सहाबा रज़ि० ने उस को मारने का इरादा किया आपने फ़र्माया, यह जो कुछ कहे, उस को कहने दो, क्योंकि हक़दार को कहने की गुंजाइश है, फिर फ़र्माया जैसा उस का नौजवान ऊंट था वैसा ही जवान ऊंट उस को दे दो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हमारे पास तो इस से बेहतर ऊंट मौजूद है, वैसा नहीं है। फ़र्माया वही दे दो, क्योंकि तुम में से बेहतर वह आदमी है जो क़र्ज़ अदा करने में बेहतर हो।

१००१. हज़रत मसवर रज़ि० मख़्ज़मा कहते हैं कि क़बीला हवाज़िन का वफ़्द हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और अपना माल और क़ैदी वापस मांगा। आप खड़े हो गए और फ़र्माया, सच्चाई मेरे नज़दीक अच्छी बात है, दोनों चीज़ों में से एक चीज़ अख़्तियार कर लो या क़ैदी ले लो या माल, मैं तो मुद्दत से तुम्हारा मुन्तज़िर था, (हुज़ूर सल्ल० जब से तायफ़ तशरीफ़ लाए थे, ग्यारह-बारह दिन से इन्तिज़ार कर रहे थे) जब वफ़्द को यक़ीन हो गया कि हुज़ूर सल्ल० दो में से सिर्फ़ एक चीज़ वापस करेंगे, तो अर्ज़ किया, हम क़ैदी मांगते हैं। इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने गिरोह इस्लाम में खड़े होकर पहले तो अल्लाह तआला की हम्द व सना की, फिर फ़र्माया सुनो, तुम्हारे यह भाई तौबा कर आए हैं, मैं उन को क़ैदी वापस देने का ख़्याल कर चुका हूं, इस लिए जो शख़्स (बिना बदले के) सिर्फ़ क़ैदी वापस करने से अपने नफ़्स को ख़ुश कर सकता है, वह करे और जो (बदले में) अपना हिस्सा क़ायम रखना चाहता है, तो मैं वायदा करता

हूं कि सब से पहले जो माले ग़नीमत आएगा, उस में से उस का हिस्सा दे दूंगा, सबने एक राय होकर कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्ल० की वजह से (बिना बदले के) क़ैदी उन को देना पसन्द करते हैं, आपने फ़र्माया, मुझे (अभी तक) मालूम न हो सका कि तुम में से किसने इजाज़त दी है और किसने नहीं दी, इस लिए तुम चले जाओ, और हर गिरोह का सरदार हमारे पास आकर हर शख़्स की दिली मर्ज़ी की इत्तिला दे। लोग चले गए और सरदारों ने उन से बात-चीत कर के हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, सब के सब वापस कर देने पर राज़ी हैं और सब ने इजाज़त दे दी है।

१००२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुझे सद्क़ा फ़ितर की हिफ़ाज़त पर मुक़र्रर फ़र्माया। (रात को) एक शख़्स ने आकर लप भर-भरकर अनाज उठाना शुरू कर दिया, मैंने उस को पकड़ लिया और कहा, तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले चलूंगा। उसने कहा मैं मुहताज हूं, बाल-बच्चों का मुझ पर बोझ है, सख़्त ज़रूरतमंद हूं। मैंने उस को छोड़ दिया, सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझ से फ़र्माया, अबूहुरैरह रज़ि० ! तुम्हारा रात वाला क़ैदी कहां गया, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने सख़्त मुह-ताजी और बाल-बच्चों का बोझ बयान किया, मैंने रहम खाकर उस को छोड़ दिया, आपने फ़र्माया, सुन लो वह झूठा है। दोबारा फिर आएगा, मुझे हुज़ूर सल्ल० के फ़र्माने से उस के दोबारा आने का यक़ीन हो गया और उस के इन्तिज़ार में रहा, चुनांचे वह फिर आया और ग़ल्ला लपों से भरने लगा, मैंने पकड़ लिया और कहा, वल्लाह ! मैं तुझे रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में ले चलूंगा। उस ने कहा मुझे छोड़ दो, मैं फ़क़ीर मुहताज हूं, मुझ पर बाल-बच्चों का बोझ है। अब फिर न आऊंगा, मैंने रहम खाकर, उस को फिर छोड़ दिया। सुबह हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अबूहुरैरह रज़ि० ! तुम्हारा रात का क़ैदी कहां गया, मैंने अर्ज़ किया कि उसने चूंकि सख़्त मुहताजी और बाल-बच्चों का बयान किया था, इस लिए मैंने उसको छोड़ दिया, फ़र्माया सुनो, उसने तुमसे झूठ कहा, फिर आएगा, मैं उस के इन्तिज़ार में ही था कि वह आया और आते ही अनाज लप भर-भर कर लेने लगा। मैंने पकड़ लिया और कहा यह तीसरी बार है तू हर बार कह देता है कि अब न आऊंगा और फिर आ जाता है ! अबको

बार तो तुझे जरूर रसूलुल्लाह सल्ल० की खिद्मत में पकड़ कर ले जाऊंगा, वह बोला, मुझे छोड़ दो मैं तुम को कुछ कलिमात बताता हूं जो तुम्हारे लिए मुफ़ीद होंगे। मैंने कहा, बता क्या बात है ? कहने लगा, जब तुम (सोने के लिए) बिस्तर पर लेटो तो आखिर तक आयतल कुर्सी पढ़ लिया करो। खुदा-ए-तआला की तरफ़ से एक मुहाफ़िज तुम्हारे लिए क़ायम रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे पास न आ सकेगा, मैंने उस को छोड़ दिया, सुबह को रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, अबूहुरैरह रज़ि० ! तुम्हारा रात वाला क़ैदी कहां है ? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने मुझ से कहा, मैं तुझे कुछ मुफ़ीद कलिमात सिखाता हूं इस लिए मैंने उसको छोड़ दिया। फ़र्माया वह क्या हैं ? मैंने अर्ज़ किया, उसने मुझ से कहा कि बिस्तर पर जिस वक्त सोने को लेटो, तो आयतल कुर्सी पढ़ लिया करो, खुदा की तरफ़ से एक मुहाफ़िज तुम्हारे लिए मुक़र्रर हो जाएगा कि सुबह तक कोई शैतान पास न आ सकेगा। फ़र्माया वह बड़ा झूठा तो है, मगर यह बात उस ने सच कही, क्या तुम्हें मालूम है कि तीन रातों से तुम किस से बात करते रहे ? मैंने अर्ज किया नहीं, फ़र्माया वह शैतान है।

१००३. हजरत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में बर्नी खजूरें (खजूरों की बढ़िया क़िस्म) लेकर हाज़िर हुए। आपने फ़र्माया, कहां से लाए ? बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया, मेरे पास कुछ रद्दी खजूरें थीं, उन के साअ देकर मैंने एक साअ ली हैं ताकि हुज़ूर सल्ल० नोश फ़र्माएं। (यह सुन कर) आपने फ़र्माया, तौबा तौबा. यह तो सूद जैसा है। ऐसा न किया करो, अगर खरीदना चाहो तो खजूरें दामों से फ़रोख्त किया करो और इन दामों से खरी खजूरें खरीद लिया करो।

१००४. हज़रत उक़्बा रज़ि० बिन हारिस कहते हैं कि नईमान या नुऐमान का लड़का शराब पिये हुए था कि पकड़ कर हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर किया गया, आपने हाज़िरीन मकान को हुक्म दिया कि मारो, मारने वाले लोगों में मैं भी था। हमने उस को जूतों और खजूरों की शाखों से मारा।

———

बाब ३८

खेती और उससे मुताल्लिक़ चीज़ों के बयान में

१००५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, मुसलमान जो पौधा लगाए या खेती बोए और फिर उस से परिन्दे, चौपाए या इंसान कुछ खा लें तो यह बोने वाले के लिए सद्क़ा होता है।

१००६. हज़रत अबू उमामा रज़ि० बाहुली ने काश्तकारी का कोई औज़ार देखा, तो फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को इर्शाद फ़र्माते सुना है कि जिस घर में यह हथियार होते हैं उस में ख़ुदा-ए-तआला इज़्ज़त दाखिल करता है।

१००७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि जो शख्स कुत्ता बांध कर रखता है, रोज़ाना उस के आमाल में से एक क़ीरात कम होता रहता है, मगर खेती और चौपायों की हिफ़ाज़त करने वाले कुत्तों को इस से छूट है। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० की दूसरी रिवायत में है कि खेती और बकरियों की हिफ़ाज़त करने वाले शिकारी कुत्ते इस से अलग हैं।

१००८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने (एक दिन) इर्शाद फ़र्माया, एक आदमी बैल पर सवार था, बैल ने उस की तरफ़ मुंह फेर कर कहा, मैं इस लिए नहीं पैदा हुआ हूं बल्कि काश्तकारी के लिए पैदा हुआ हूं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० इस की तस्दीक़ करते हैं। फिर फ़र्माया, एक भेड़या किसी बकरी को पकड़ कर ले चला। चरवाहा उस के पीछे चला, भेड़िया बोला, (अब तो छुड़ा लोगे लेकिन क़ियामत के क़रीब सिर्फ़ दरिंदे और चौपाए रह जाएंगे उसी ज़माने को यौम सबअ[1] कहते हैं

---

१. यौम सबअ में बकरी का मुहाफ़िज़ कौन होगा—

उस रोज़ तो सिवाए मेरे और कोई निगरानी करने वाला न होगा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० इसकी तस्दीक़ करते हैं। रावी कहता है, अबूबक्र रज़ि० और उमर रज़ि० वहां मौजूद भी न थे।

१००९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अंसार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, हमारे और हमारे भाई मुहाजिरीन के दर्मियान खजूर के बाग़ तक़्सीम कर दीजिए। फ़र्माया नहीं, (मजबूरन) अन्सार ने (मुहाजिरीन से) कहा कि तुम बार बरदारी में हमारा हाथ बटाओ, फलों में हम तुमको शरीक कर लेंगे, मुहाजिरीन बोले, (हां) इस को हम मानते हैं।

१०१०. हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० कहते हैं, हम काश्तकारी में अह्ले मदीना से ज़्यादा थे, मदीना के एक तरफ़ इस शर्त पर ज़मीन किराए पर दे देते थे कि (खेत का) एक तै किया हुआ कोना ज़मीन वाले का होगा (इत्तिफ़ाक़ ऐसा होता था) कि कभी तो इस गोशा में पैदावार कम होती थी और बाक़ी ज़मीन ठीक रहती थी और कभी बाक़ी ज़मीन में कुछ न पैदा होता था इसी कोने में पैदा होता था, मगर आख़िर में हम को इस से मना कर दिया गया, सोने-चांदी के बदले उस वक़्त ज़मीन का किराया नहीं होता था।

१०११. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ैबर के लोगों से आधी पैदावार पर मामला किया। पैदावार में चाहे फल हों या खेती (उस में से) हुज़ूर सल्ल० बीवियों को अस्सी वसक़ खजूरें और बीस वसक़ जौ (सालाना) दिया करते थे।

१०१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने ज़मीन किराए पर देने से मना नहीं फ़र्माया है। हां, यह ज़रूर फ़र्माया है कि किसी भाई को मुफ़्त ज़मीन देने से यह बेहतर है कि ज़मीन का कुछ हिस्सा (यानी उस की पैदावार) तै कर लिया जाए।

१०१३. हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माते थे कि अगर आख़िरी ज़माने के मुसलमान न होते, तो मैं जिस गांव को फ़त्ह करता वहां के बाशिंदों को वह तक़्सीम कर देता, जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर को तक़्सीम किया था।

१०१४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, जिस ने ग़ैर ममलूका ज़मीन आबाद की, वह उसी की हो गई।

१०१५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने यहूदियों और ईसाइयों को हिजाज़ की ज़मीन से बाहर कर दिया, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल० ने जब ख़ैबर पर क़ब्ज़ा कर लिया तो यहूदियों को वहां से निकालने का इरादा कर लिया था, लेकिन फ़त्ह पूरी होने के बाद जब ख़ैबर की ज़मीन रसूले ख़ुदा सल्ल० और मुसलमान की हो गई और हुज़ूर सल्ल० ने यहूदियों को निकालना चाहा, तो उन्होंने अर्ज़ किया, आप हमको यहां इस शर्त पर रहने दें कि सारा कारोबार तो हम करेंगे और पैदावार आधी हमारी और आधी हुज़ूर सल्ल० की होगी। आपने फ़र्माया, अच्छा हम जब तक चाहेंगे तुम को यहां रहने देंगे (जब चाहेंगे निकाल देंगे) चुनांचे यहूदी वहीं मुक़ीम रहे, हज़रत उमर रज़ि० ने (अपने ख़िलाफ़त के दौर में) उन को तीमार और अरीहा को भेज दिया।

१०१६. हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ि० कहते हैं कि मेरे चचा ज़ुहैर बिन राफ़ेअ रज़ि० कहते थे, रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमको एक फ़ायदे वाले काम से रोक दिया, मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्ल० का फ़र्मान नाहक़ नहीं हो सकता। ज़ुहैर बोले, मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने बुला कर पूछा कि तुम अपनी ज़मीन का क्या करते हो। अर्ज़ किया चौथाई हिस्सा ज़मीन की पैदावार और कुछ वसक़ खजूर व जौ के बदले किराए पर देता हूं, फ़र्माया ऐसा न किया करो, या तो उसमें ख़ुद काश्त करो या किसी से कराया करो या (ख़ाली) रोके रखो। राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं, मैंने (ज़ुहैर को) जवाब दिया, इस हुक्म को दिल व जान से मानता हूं।

१०१७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० अपनी ज़मीनें हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० के ख़िलाफ़त के दौर में और हज़रत मुआविया रज़ि० के शुरू की हुकूमत के ज़माने में किराए पर दे दिया करते थे लेकिन जब राफ़ेअ ख़दीज रज़ि० की रिवायत की हुई हदीस मालूम हुई कि हुज़ूर सल्ल० ने ज़मीनों को किराए पर देने से मना फ़र्माया है तो इब्ने उमर रज़ि० राफ़ेअ रज़ि० के पास गए और हदीस दर्याफ़्त की राफ़ेअ रज़ि० ने जवाब दिया कि नबी सल्ल० ने ज़मीन को किराए पर देने से (वाक़ई) मना फ़र्माया है, इब्ने उमर रज़ि० बोले मुझे याद है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अपनी

जमीनें कुछ [illegible] के और उस पैदावार के बदले जो राजभवन के किनारों पर पैदा होती थी किराए पर दे दिया करते थे।

१०१८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, मुझे इल्म था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ज़मीनें किराए पर दी जाती थीं मगर मुझे डर हुआ कि इस बारे में शायद नबी सल्ल० ने कोई नया हुक्म (मना करने का) दिया हो जिस की मुझे इत्तिला न हो, इस लिए मैंने किराए पर देना ख़त्म कर दिया।

१०१९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्ल० के पास एक बदवी बैठा हुआ था और हुज़ूर सल्ल० इर्शाद फ़र्मा रहे थे कि एक जन्नती आदमी ने अपने परवरदिगार से खेती की इजाज़त मांगी। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या अभी तेरी दिली ख़्वाहिशें पूरी नहीं हो चुकीं। उसने अर्ज़ किया, जी हां, (पूरी तो हो गयीं) लेकिन खेती करने से मुझे मुहब्बत है। (हुक्म हुआ, कर लो) उसने बीज बो दिया, तो पलक झपकने से पहले ही उसका उगना और बढ़ना और काटना हो जाएगा और उस के ढेर पहाड़ों के बराबर हो जाएंगे, इस पर अल्लाह तआला ने फ़र्माया ऐ इब्ने आदम ! तुझे कोई चीज़ सैर नहीं कर सकती। (यह सुन कर) वह बदवी बोला, ख़ुदा की क़सम ! वह क़ुरैशी या अन्सारी होगा, क्योंकि यही लोग काश्तकार हैं, हम तो खेती करते ही नहीं हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हंस पड़े।

बाब ३९

पीने के बयान में

१०२०. हज़रत सहल बिन सअद रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में (पानी का प्याला) पेश किया, आपने पानी पिया। आपके दाएं

तरफ़ एक बहुत छोटी उम्र का लड़का मौजूद था और बाएं तरफ़ कुछ उम्र रसीदा लोग थे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, लड़के क्या तेरी इजाज़त है कि मैं (यह बचा हुआ पानी) इन उम्र रसीदा लोगों को दे दूं (बोला हुज़ूर सल्ल० के बचे हुए पानी पीने के लिए, तो मैं अपने ऊपर किसी को तरजीह नहीं दूंगा। आपने यह पानी उसी को दे दिया।

१०२१. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के लिए घर की पली हुई बकरी का दूध दुहा और घर के कुंए का पानी उस में मिला कर प्याला हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया। आप के बाएं तरफ़ हज़रत अबूबक्र रज़ि० थे, और दाएं तरफ़ एक गांव वाला था, अपने दहन मुबारक से यह प्याला हटाया ही था कि हज़रत उमर रज़ि० ने इस ख्याल से कि कहीं हुज़ूर सल्ल० गांव वाले को बचा हुआ पानी न दे दें, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप के पास अबूबक्र रज़ि० मौजूद हैं, उनको बचा हुआ पानी दे दीजिए। लेकिन आपने गांव वाले ही को दे दिया और फ़र्माया दाएं हाथ को दिया करो।

१०२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया कि बचा हुआ पानी देने से मना न किया जाए, क्योंकि इस की वजह से कहीं सब्ज़ी पर असर न पड़े कि (अल्लाह तआला की तरफ़ से) इस की भी रोक हो जाए।

१०२३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख़्स किसी मुसलमान का माल मारने के लिए झूठी क़सम खाता है, जब वह अल्लाह तआला से मिलेगा, तो अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होगा। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्मायी, इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि अह्दिल्लाहि व ईमानिहिम समनन क़लीला (आख़िर तक) (वाक़िआ और नाज़िल होने की वजह यह थी कि) एक बार हज़रत अशअस रज़ि० ने फ़र्माया कि अबू अब्दुर्रहमान ने जो हदीस बयान की है, (यानी पिछली हदीस,) वह मेरे बारे में नाज़िल हुई है, क्योंकि चचाज़ाद भाई की ज़मीन में मेरा एक कुंआ था मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने इस का दावा किया तो आपने फ़र्माया, गवाह लाओ। मैंने अर्ज़ किया, गवाह तो नहीं है। तो फिर तेरे चचेरे भाई पर क़सम होगी। मैंने अर्ज़ किया तो वह क़सम खा लेगा, इस पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने ऊपर की हदीस सुनाई और ख़ुदा-ए-तआला ने अपने रसूल की तस्दीक़

में ऊपर की आयत नाज़िल फ़र्मायी।

१०२४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क़ियामत के दिन तीन शख्सों को दर्दनाक अज़ाब होगा, न अल्लाह तआला उन पर रहमत की नज़र फ़र्माएगा, न अज़ाब से बरी फ़र्माएगा। पहले वह शख्स जिस के पास रास्ते में ज़रूरत से बचा हुआ पानी था, मगर उसने मुसाफ़िर को न दिया, दूसरे वह शख्स जिसने अपने इमाम से बैअत सिर्फ़ दुनियावी मतलब से की कि अगर इमाम उस को माल देता रहा तो राज़ी रहा, वरना नाराज़ और गुस्सा हो गया, तीसरा वह शख्स जिसने अस्र की नमाज़ के बाद सौदागरी का माल सजाया और कहने लगा, अल्लाह मुझे इस माल के इतने-इतने रुपए मिलते हैं, किसी (सीधे) आदमी ने उसे सच्चा जान कर माल ख़रीद लिया, उसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़र्मायी, इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि अह्दिल्लाह (इला आख़िरिल् ही)

१०२५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, एक शख्स रास्ते में जा रहा था, उस को सख्त प्यास लगी। एक कुंए पर पहुंचा और पानी पीकर फिर चल दिया। इतने में देखा कि एक कुत्ता ज़ुबान निकाले प्यास की वजह से कीचड़ खा रहा है, यह कहने लगा, जितनी मुझे प्यास थी, उतनी ही उस को भी होगी, यह कह कर अपना मोज़ा उतार कर पानी से भर, कुत्ते के मुंह में डाला और कुत्ते को पानी पिलाया, अल्लाह तआला ने उसको अज्र अता फ़र्माया और उसके बदले उसको बख्श दिया, (यह सुनकर) लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या जानवरों से सुलूक करने का भी सवाब मिलता है? आपने फ़र्माया हर (जानदार) का सवाब मिलता है।

१०२६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, उस ख़ुदा की क़सम! जिस के कब्ज़े में मेरी जान है, जिस तरह (अजनबी) ऊंट जानवरों के पियाऊ से दूर किया जाता है उसी तरह मैं भी कुछ लोगों को हौज़े-कौसर से दफ़ा करूंगा।

१०२७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तीन आदमियों से न कलाम करेगा न उन पर रहमत की नज़र फ़र्माएगा, अव्वल वह शख्स जो माल बेचने के वक्त झूठी क़सम खाकर कहता है कि मुझे इस से ज़्यादा क़ीमत मिलती थी, (मगर तुमको मैं रियायत देता हूं,) हालांकि

वह झूठ बोलता है। दूसरे वह शख़्स जो किसी मुसलमान का माल मारने के लिए झूठी क़सम खाता हो, तीसरे वह शख़्स जो अपनी (ज़रूरत से) बचा हुआ (पानी) मुसाफ़िरों को नहीं देता था। क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उससे फ़र्माएगा कि जिस तरह तू अपनी ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ को रोक रखता था, हालांकि तूने वह बनाई भी न थी, इसी तरह मैं अपने फ़ज़्ल को तुझ से रोकता हूं।

१०२८. हज़रत सअब बिन जसामा रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला और रसूल के सिवा वाड़ा क़ायम करने का किसी को हक़ नहीं है, (यानी शरई हुदूद खुदा और रसूल के सिवा कोई नहीं बना सकता।)

१०२९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है, हुज़ूर सल्ल० ने (एक दिन) इर्शाद फ़र्माया कि (कुछ आदमियों के लिए) घोड़े अज्र व सवाब की वजह होते हैं, कुछ के लिए (फ़क्र व मुहताजी से) पर्दापोशी (की वजह) और कुछ के लिए वबाल और बोझ। अव्वल वे लोग हैं, जिन्होंने घोड़ों को (खुदा की राह में) काम लाने के लिए बांध छोड़ा है, लंबी रस्सी कर के किसी सब्ज़ाज़ार या मुर्ग़ज़ार में छोड़ दिया है तो जिस क़दर घास तक घोड़े बंधे-बंधे पहुंचेंगे, उस सब के बराबर उस शख़्स के लिए अज्र व सवाब लिखा जाएगा। अगर रस्सी तुड़ा कर मील दो मील घोड़े भाग गए तो जिस क़दर उनके क़दम पड़ेंगे और जिस क़दर उनकी लीद होगी, सब के बराबर मालिक के लिए नेकियां लिखी जाएंगी। फिर अगर किसी नहर पर पहुंच कर घोड़ों ने पानी पी लिया तो गो मालिक का इरादा पानी पिलाने का न हो तब पानी इतनी घूंटों के उस के लिए नेकियां लिखी जाएंगी। यह तो उन घोड़ों का तज़्किरा है, जो मालिक के लिए अज्र व सवाब का ज़रिया है। बाक़ी वे लोग जो (इज़्हारे) दौलतमंदी के लिए और इस लिए घोड़े पाल रखते हैं कि (ज़रूरत के वक़्त) किसी से मांगना न पड़े और खुदावंद तआला का हक़ घोड़ों से अदा करते हैं और अपनी ज़ात से तो ऐसे लोगों के लिए ये घोड़े (फ़क़ीरी व मुहताजी से) पर्दा बन जाते हैं, तीसरे वह लोग जिन्होंने महज़ दिखाने, इतराने और मुसलमानों की दुश्मनी के लिए घोड़े पाले हों, उन के लिए यह घोड़े वबाल व अज़ाब की वजह होंगे, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० से खच्चरों के बारे में पूछा गया, आपने फ़र्माया खच्चरों के बारे में मुझ पर (कोई मख़्सूस) वह्य इस आयत के

सिवा नहीं नाज़िल हुई कि फ़मंय्यग्रमल मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन ख़ैरंय्यरह। (आख़िर तक)

१०३०. हज़रत अली बिन अबूतालिब रज़ि० कहते हैं कि जंग-बद्र की ग़नीमत में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ मुझे एक नव-जवान ऊंटनी मिली थी और एक नवजवान ऊंटनी और हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इनायत फ़र्मायी थी। मैंने दोनों को ले जाकर एक अंसारी के दरवाज़े पर बिठा दिया, ख़्याल था कि इन पर अज़ख़र (घास) लाद कर बेचने के लिए ले जाऊंगा और उस से हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के वलीमे में मदद लूंगा, मेरे साथ उस वक़्त क़बीला क़ैनुक़ाअ का एक सुनार भी था और हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब उस मकान के अन्दर एक गाने वाली औरत के साथ शराबनोशी में मशग़ूल थे। औरत ने जब मिसरा गाया कि 'अला या हम्ज़ु लिश्शर फ़िन्नवा' तो हम्ज़ा रज़ि० तलवार लेकर उठ खड़े हुए और बाहर आकर दोनों ऊंटनियों के कोहान काट कर पहलू चाक कर दिए और जिगर निकाल कर ले गए। मैं यह मन्ज़र देख कर घबरा गया और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस को इत्तिला दी, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास ज़ैद बिन हारिसा बैठे हुए थे। आप उन को साथ लेकर चल निकले। मैं भी साथ था। आपने हम्ज़ा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले जाकर उन पर कुछ ग़ुस्सा किया, हम्ज़ा रज़ि० ने नज़र उठा कर देखा, बोले तुम सब मेरे बाप-दादा के ख़िद्मतगार हो। हुज़ूर सल्ल० यह (सुन कर) उल्टे पांव लौट आए। यह वाक़िया शराब की हुरमत से पहले का है।

१०३१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (अंसार) को बहरैन में कुछ जागीर देनी चाही, अंसार ने अर्ज़ किया, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० हम को जागीर अता फ़र्मा रहे हैं जब तक ऐसी जागीर हमारे भाई मुहाजिरीन को न अता फ़र्माएंगे (हम न लेंगे।) आपने फ़र्माया तुम जल्द ही मेरे बाद के ज़माने में ख़ुदग़र्ज़ी देखोगे मगर मुझ से मिलने तक (यानी क़ियामत तक) सब्र करना।

१०३२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़र्माते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को इर्शाद फ़र्माते सुना कि अगर कोई शख़्स खजूर के दरख़्त क़लम लग जाने के बाद बेच दे तो (मौजूदा) फल बाए के हैं, हां अगर मुश्तरी शर्त करे (तो फिर मुश्तरी ले ले) इसी तरह अगर कोई ग़ुलाम फ़रोख़्त

किया और गुलाम के पास कुछ माल मौजूद था तो यह बाए का है, मगर मुश्तरी अगर इस माल की भी शर्त कर ले (तो मुश्तरी का है।)

बाब ४०

क़र्ज़ के बयान में

१०३३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जो शख्स लोगों से क़र्ज़ अदा करने का इरादा कर के लेता है, उस को खुदा अदा कर देता है और जो माल मारने के इरादे से लेता है, खुदा उस को तबाह कर देता है।

१०३४. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने उहुद के पहाड़ को देख कर फ़र्माया, अगर यह पहाड़ सोने का हो जाए तब भी मुझे पसन्द नहीं कि उस में से एक दीनार भी मेरे पास तीन दिन से ज्यादा बाक़ी रहे। हां, वे दीनार इस से अलग हैं, जिन को क़र्ज़ अदा करने के लिए रख छोड़ूं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, ज्यादा दौलतमंद (आम तौर से) सवाब में कम होते हैं। हां, जो लोग माल को इधर-उधर खर्च करते हैं (वे सवाब में ज्यादा होते हैं,) मगर ऐसे लोग कम हैं फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अबूज़र रज़ि० यहीं ठहरे रहो और आप कुछ दूर आगे बढ़ गए, अबूज़र रज़ि० कहते हैं (कुछ देर के बाद) मैंने एक आवाज़ सुनी और इरादा किया कि हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंच जाऊं, मगर हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद को याद कर के ठहरा रहा, इतने में हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले आए। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह आवाज़ कैसी थी ? फ़र्माया क्या तूने कुछ आवाज़ सुनी ? मैंने अर्ज़ किया जी हां, फ़र्माया, मेरे पास जिब्रील अलै० आए थे और कहा था तुम्हारी उम्मत में से अगर कोई शख्स शिर्क किए बिना मर जाए, वह जन्नती है, मैंने अर्ज़ किया, अग-

रचे उसमें ऐसा-ऐसा किया भी हो, फ़र्माया हां।

१०३५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, चाश्त के वक़्त मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ, आप मस्जिद में थे, मुझ से फ़र्माया दो रक्अत नमाज़ पढ़, (मैंने नमाज़ पढ़ी।) मेरा आप पर कुछ क़र्ज़ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा क़र्ज़ ज़्यादती समेत अदा किया।

१०३६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, मैं दुनिया व दीन में हर मुसलमान का सब से ज़्यादा वली और सब से बढ़ कर क़रीबी ताल्लुक़ वाला हूं, अगर चाहो तो (यह आयत) पढ़ लो।

इस लिए जो मुसलमान मर जाए तो उस की मीरास के वारिस उस के वारिस होंगे और अगर कुछ क़र्ज़ या औलाद छोड़ कर मरे तो मेरे पास आना चाहिए, क्योंकि मैं उस का वली हूं।

१०३७. हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबा रज़ि० कहते हैं, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मां की नाफ़र्मानी और बेटियों को ज़िंदा दफ़न करने को हराम ठहरा दिया है और किसी के हक़ छीनने या नाहक़ (माल) लेने से मना फ़र्माया है। एक रिवायत में है कि ज़्यादा सवाल करने और माल बर्बाद करने को भी मना फ़र्माया है।

१०३८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक शख़्स को एक आयत पढ़ते सुना कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस के ख़िलाफ़ (तरीक़े से) पढ़ते थे। मैं उस का हाथ पकड़ कर हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में ले गया, आपने फ़र्माया, तुम दोनों हक़ पर हो, इख़्तिलाफ़ न करो, क्योंकि तुम से पहले लोग इख़्तिलाफ़ करने से ही बर्बाद हो गए।

१०३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, दो आदमी आपस में झगड़ा कर रहे थे। एक मुसलमान था दूसरा यहूदी। मुसलमान बोला, उस ख़ुदा की क़सम जिस ने मुहम्मद सल्ल० को सारी दुनिया पर बुज़ुर्गी अता फ़र्मायी, यहूदी बोला, उस ख़ुदा की क़सम! जिस ने मूसा अलै० को सारी दुनिया से बरतर (अच्छा) बनाया। मुसलमान ने खींच कर यहूदी के मुंह पर एक थप्पड़ मारा, यहूदी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर वाक़िया अर्ज़ कर दिया। आपने इर्शाद फ़र्माया, मुझे मूसा अलै० पर फ़ज़ी-

लत मत दो, क्योंकि क़ियामत के दिन जब और लोग बेहोश होंगे मैं भी बेहोश हो जाऊंगा, फिर सब से पहले मुझे ही होश होगा (और आंख उठा कर देखूं गा) तो मूसा अलै० को अर्श का पाया पकड़े हुए पाऊं गा। मालूम नहीं कि मुझ से पहले उन को होश आ जाएगा या (बेहोश होने से) बचे हुए लोगों में होंगे।

१०४०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों में (रख कर) कुचल दिया, लड़की से पूछा गया कि यह काम किसने किया, फ़्लां ने, फ़्लां ने, या फ़्लां ने ? आख़िरकार यहूदी के नाम पर उस लड़की ने सर से इशारा किया कि हां, यहूदी पकड़ा गया और जुर्म को मान लिया, हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि इस का सर भी दो पत्थरों में रख कर कुचला जाए चुनांचे हुक्म की तामील की गई।

१०४१. हज़रत उबई बिन कअब रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक थैली पायी, जिस में सौ दीनार थे। मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, (और कैफ़ियत अर्ज़ की) फ़र्माया, एक साल तक उसकी शोहरत कर। मैंने एक साल तक बराबर मशहूर किया, लेकिन कोई पहचानने वाला न मिला, दोबारा ख़िदमते-अक़्दस में हाज़िर होकर अर्ज़ कर दिया, फ़र्माया एक साल और इश्तिहार दे। मैंने एक साल और शोहरत दी। मगर पहचान करने वाला न मिला, मजबूर होकर तीसरी बार ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फ़र्माया अशर्फ़ियों की थैली गिनती कर, और डाट महफ़ूज़ रख, अगर असल मालिक आ जाए तो ख़ैर, वरना ख़ुद अपने ख़र्च में लाना।

१०४२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माते थे, मैं अपने घर जाकर बिस्तर पर कोई खजूर पड़ी पाता हूं तो खाने के लिए उठा लेता हूं, मगर इस डर से कि मुमकिन है यह सदक़ा की हो, फिर फेंक देता हूं।

बाब ४१

ज़ुल्मों के बयान में

१०४३. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया कि ईमानदारों को जब दोज़ख़ से छुटकारा मिल जाएगा तो एक पुल पर सब को ले जाकर रोक दिया जाएगा, जो जन्नत व दोज़ख़ के बीच होगा, वहां पहुंच कर सब एक दूसरे पर दुनियावी हुक़ूक़ का तक़ाज़ा करेंगे और जब पाक-साफ़ हो जाएंगे तो उस वक़्त जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त मिल जाएगी। उस ख़ुदा की क़सम! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, हर जन्नती आदमी जन्नत में अपना-अपना मकान दुनिया के मकान के मुक़ाबले में ज़्यादा जानता होगा।

१०४४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़र्माते हुए सुना कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला मोमिन को अपने पास बुला कर उस की मदद फ़र्माएगा। पहले उस को (हश्र के मैदान के) लोगों से छिपा लेगा, फिर फ़र्माएगा, तुझे याद है कि फ़्लां फ़्लां गुनाह तूने किए थे। वह अर्ज़ करेगा जी हां, गुनाह का इक़रार करने के बाद जब उस की हलाकत यक़ीनी हो जाएगी, तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा, मैंने तेरे इन गुनाहों पर दुनिया में पर्दा डाला था, आज माफ़ करता हूं। इसके बाद उस को नेकियों की किताब दे दी जाएगी, बाक़ी काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर गवाह गवाही देंगे। उन्होंने ही अल्लाह तआला पर बुहतान बांधा था, ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत।

१०४५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है, हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, मुसलमान मुसलमान का भाई है, इस लिए न कोई दूसरे पर ज़ुल्म करे और न उस को तबाही में डाले, जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने के लिए तैयार होगा,

अल्लाह तआला उस का मक़सद पूरा करने के लिए तैयार रहेगा, जो शख़्स किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करेगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस की मुसीबतों को दूर कर देगा, जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसकी पर्दापोशी करेगा।

१०४६. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शादे मुबारक है, अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम। अर्ज़ किया गया, ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० ! मज़लूम होने पर तो हम उस की मदद कर सकते हैं, ज़ालिम होने के वक़्त किस तरह मदद करें, फ़र्माया, उस के हाथ पकड़ लो (ज़ुल्म न करने दो।)

१०४७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, क़ियामत के दिन ज़ुल्म की वजह से ज़ालिम पर मुख़्तलिफ़ तारीकियां छा जाएंगी।

१०४८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया, जिसने किसी मुसलमान को ज़ुल्म के तौर पर बे-इज़्ज़त किया हो या कोई और ज़ुल्म किया हो, वह आज ही उससे माफ़ करा ले, ऐसा न हो कि वह दिन आ जाए कि न रुपया हो न पैसा और ज़ुल्म के बदले उस की नेकियां ले ली जाएं, नेकियां न हों तो मज़लूम (जिस पर ज़ुल्म किया जाए) के गुनाह उस के नामा-ए-आमाल में लिख दिए जाएं।

१०४९. हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं, मैंने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़र्माते हुए सुना कि जिस शख़्स ने कुछ ज़मीन ज़ुल्म से ले ली, उस को साल-दर-साल ज़मीनों का तौक़ पहनाया जाएगा।

१०५०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिसने थोड़ी-सी ज़मीन भी ज़ुल्म से ले ली, उसको क़ियामत के दिन सातों ज़मीन तक धंसाया जाएगा।

१०५१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कुछ लोगों की तरफ़ से गुज़रे, जो खजूरें खा रहे थे। आपने दो-दो खजूरें मिला कर खाने से मना फ़र्माया, उस वक़्त तक कि एक शख़्स दूसरे को इजाज़त न दे।

१०५२. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं, ख़ुदा के नज़दीक सब से बड़ा ग़ज़ब वाला वह आदमी है जो बहुत झगड़ता रहता हो।

१०५३. उम्मुल मोमिनीन हज़रत सलमा रज़ि० फ़र्माती हैं कि रसू-

लुल्लाह सल्ल० ने (एक दिन) मुबारक हुजरे के दरवाज़े पर कुछ झगड़ा (होता) सुना। आप बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़र्माया, मेरे पास मुक़दमा करने वाले लोग आते हैं और मुम्किन है कि कुछ आदमी दूसरे के मुक़ाबले में ज्यादा ज़ुबान चलाने वाले हों, चूंकि मैं भी इंसान हूं इस लिए (उसकी साफ़-सुथरी ज़ुबान देख कर) शायद मैं उसको सच्चा जानने लगूं और उस के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दूं, इस लिए (मैं कह देता हूं कि अगर) किसी मुसलमान के हक़ में डिग्री कर दूं, तो उस को आग का टुकड़ा समझना चाहिए, चाहे ले ले चाहे छोड़ दे।

१०५४. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुज़ूर सल्ल० हम को सद्क़ा (वसूल करने के लिए) कहीं भेजते हैं तो कभी हमारा ठहरना ऐसे लोगों में भी होता है जो हमारी मेहमानदारी नहीं करते, (हमको क्या करना चाहिए?) हुज़ूर सल्ल० इस बारे में क्या इर्शाद फ़र्माते हैं? आप ने फ़र्माया, अगर तुम लोग कहीं ठहरो और तुम को खाना या उसकी मुनासिब क़ीमत दे दें तो तुम उस को क़ुबूल कर लो, वरना मेहमानी का हक़ ज़बरदस्ती वसूल करो।

१०५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, कोई पड़ोसी अपने पड़ोसी को दीवार में लकड़ी (खूंटा वग़ैरह) गाड़ने से मना न करे।

१०५६. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया, रास्ते में बैठने से परहेज़ रखो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम तो इस पर मजबूर हैं कि नशिस्तगाहें नहीं जिन में बैठ कर बातचीत करें। फ़र्माया अगर तुम रास्ते में बैठना ही ज़रूर समझते हो तो रास्ते का हक़ पूरा किया करो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, रास्ते का क्या हक़ है ? फ़र्माया, आंख नीची रखना, तक्लीफ़ देने वाली चीज़ों को दूर करना, सवाल का जवाब देना और भलाई का हुक्म करना और नाजायज़ बात से मना करना।

१०५७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जब लोगों में आम रास्ते के बारे में झगड़ा हो तो रास्ता सात गज़ होना चाहिए। (यानी सात गज़ से कम न होना चाहिए।)

१०५८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (रास्ते वगैरह) लूटने और (आदमी को) बूचा बनाने से मना फ़र्माया है।

१०५६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जो माल की हिफ़ाज़त करने के लिए मारा गया, वह शहीद है।

१०६०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) नबी सल्ल० किसी बीवी के पास थे कि किसी दूसरी बीवी ने प्याले में कुछ खाना हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में भेजा। (साहबे ख़ाना) बीवी ने हाथ मार कर प्याला तोड़ दिया, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने टूटे प्याले के जोड़ मिला कर उस में खाना खाया, और फ़र्माया खाओ, क़ासिद और प्याले को उतनी देर तक रोके रखा, जब खाने से फ़ारिग़ हो गए तो टूटा हुआ प्याला रख लिया और उस के बदले में पूरा प्याला दे दिया।

बाब ४२

खाने की शिर्कत के बयान में

१०६१. हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० कहते हैं, (एक बार) लोगों के पास (खाने-पीने का सामान) कम हो गया, और (बेचारे) ग़रीब हो गए, इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और ऊंटों को ज़िब्ह कर लेने के बारे में सवाल किया। हुज़ूर सल्ल० ने उनको इजाज़त दे दी। लेकिन जब हज़रत उमर रज़ि० की उनसे मुलाक़ात हुई तो आपने फ़र्माया, ऊंटों को ज़िब्ह करने के बाद तुम्हारी बक़ा का और क्या ज़रिया है? लोग कुछ जवाब न दे सके, हज़रत उमर रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के

रसूल सल्ल० ! ऊंटों के बाद लोगों को ज़िंदगी बाक़ी रखने का क्या ज़रिया है। फ़र्माया, लोगों में मुनादी करा दो कि अपना-अपना बक़िया खाने-पीने का सामान लेकर मेरे पास हाज़िर हों। इस के बाद एक दस्तरख्वान बिछा दिया गया और सारा सामान दस्तरख्वान पर डाल दिया गया, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने खड़े होकर बरकत की दुआ की, इस के बाद सब के बरतन मंगवाए और लोग लपों से भर-भर कर ले गए। जब सब फ़ारिग़ हो गए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं उस का रसूल हूं।

१०६२. हज़रत मूसा अश्अरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि जब अश्अरी क़बीले वालों का जिहाद में खाना ख़त्म हो जाता या मदीना में उन के अह्ल व अयाल के पास खाना कम हो जाता, तो सब लोग अपना-अपना मौजूदा खाना मिला कर एक कपड़े में इकट्ठा कर लेते थे, फिर उस को एक बर्तन से बराबर बांट लेते थे। (यह उन की बराबरीव इंसाफ़ की हालत थी) इस लिए वह मुझसे हैं और मैं उनसे (मैं और वह एक ही हैं।)

१०६३. हज़रत राफ़ेअ बिन खदीज रज़ि० कहते हैं कि हम ज़ुल-हुलैफ़ा में हुज़ूर सल्ल० के साथ थे कि लोगों को भूख लगी और जो कुछ ऊंट, बकरियां मिलीं, उन्होंने जल्दी से ज़िब्ह करके हांडियां चढ़ा दीं, हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० चूंकि सब से पीछे लोगों में थे, (इस लिए आप को इत्तिला न हुई।) जब मालूम हुआ तो हुक्म देकर हांडियां उलटवा दीं और फिर सब को बराबर तक़्सीम किए। एक-एक ऊंट के मुक़ाबले में दस-दस बकरियां दीं। इत्तिफ़ाक़ से एक ऊंट भाग गया। लोग पकड़ने चले, मगर थक गए (ऊंट हाथ न आया।) घोड़े थोड़े थे (इस लिए सब सवार होकर ऊंट को पकड़ न सकते थे।) एक शख़्स ने मजबूरन ऊंट को तीर मारने का इरादा किया। इस की वजह से ऊंट रुक गया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, वहशी जंगली जानवरों की तरह यह चौपाए भी वहशत पसन्द हैं, इस लिए जो चौपाया तुम्हारे क़ाबू में न आए, उस के साथ ऐसा ही करो, राफ़ेअ रज़ि० कहते हैं, मैंने अर्ज़ किया, रसूलुल्लाह सल्ल० ! कल को दुश्मन के मिल जाने का ख्याल होता है और हमारे पास छुरियां नहीं हैं, (अगर ज़रूरत पड़ी) तो क्या हम बांस की खपच्चियों से ज़िब्ह कर सकते हैं। फ़र्माया जिस चीज़ से ख़ून बह जाए और ख़ुदा का नाम उस पर ज़िक्र

कर दिया गया हो, उसको खाओ, मगर दांत और नाखून (का जिब्ह किया हुआ न खाओ) इस की वजह मैं बता देता हूं कि दांत तो एक हड्डी[1] है और नाखून हब्श के काफ़िरों की छुरी है (इससे जिब्ह करने से काफ़िरों से मिलता-जुलता अमल होगा।)

१०६४. हजरत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं, हुजूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर किसी ने अपने ग़ुलाम का कुछ हिस्सा आजाद किया तो ग़ुलाम पर लाजिम है बक़िया रुपया अदा करे। मगर आगे उसके पास माल न हो, तो ग़ुलाम की क़ीमत इंसाफ़ के साथ अंकवाई जाए और (आधी क़ीमत) ग़ुलाम से कमवा कर अदा कर दी जाए लेकिन इतनी हो कि उस पर सख्त मेहनत न पड़े।

१०६५. हजरत नुअमान बिन बशीर रजि० कहते हैं, हुजूर सल्ल० ने फ़र्माया कि खुदा की हदों पर क़ायम रहने वालों और शरीअत के क़ानून की नाफ़र्मानी करने वालों की मिसाल उस गिरोह की तरह है जिन्होंने जहाज में अपनी नशिस्तगाह मुक़र्रर करने के लिए क़ुरआ डाला, कुछ का नाम ऊपर के हिस्से में आया और कुछ का नीचे के हिस्से में, नीचे के लोग जब पानी लेने ऊपर गए तो ऊपर वालों को नागवार गुजरा, इस लिए नीचे के तब्क़े वाले कहने लगे कि अगर हम नीचे सूराख कर लेंगे (तो हमें पानी भी मिल जाएगा और) ऊपर वालों को भी तक्लीफ़ न होगी अब अगर ऊपर वाले उन के हाथ (सूराख करने से) पकड़ लेंगे तो सब बच जायेंगे वरना सब के सब हलाक हो जाएंगे.

१०६६. हजरत अब्दुल्लाह रजि० कहते हैं, मैं छोटा बच्चा था कि मेरी वालिदा जैनब बिन्त हुमैद मुझे हुजूर सल्ल० की खिद्मत में ले गयीं और अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसकी बैअत ले लीजिए, आपने फ़र्माया यह छोटा है इस के बाद हुजूर सल्ल० ने मेरे सर पर अपना मुबारक हाथ फेरा और मेरे लिए दुआ की

१०६७. हजरत अब्दुल्लाह बिन हिशाम रजि० अगर कभी ग़ल्ला खरीदने बाज़ार जाते और रास्ते में इब्ने उमर रजि०, इब्ने जुबैर रजि० मिल जाते तो उन से कहते कि तुम्हारे लिए हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने बरकत की दुआ की है, इस लिए हम को (ग़ल्ले की खरीद में) शरीक करो,

---

१. हड्डी से जिब्ह करना दुरुस्त नहीं।

इब्ने हिशाम शरीक कर लेते और अक्सर पूरी-पूरी ऊंटनी (दुगला की सी हुई) नफ़ा में मिल जाती और मकान को भिजवा देते थे।

बाब ४३

रेहन व हिबा के बयान में

१०६८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर कोई जानवर रेहन रखा हो तो उसके ख़र्च के बदले में इस पर सवार होना जायज़ है और अगर दूध वाला जानवर गिरवी रखा हो तो उस के ख़र्च के बदले उस के थनों का दूध पीना जायज़ है, सवार होने वाले और दूध पीने वाले पर जानवर के ख़र्चे हैं।

१०६९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने यह फ़ैसला फ़र्मा दिया है कि जिसपर दावा किया जाए उस पर क़सम है (दावा करने वालों के लिए क़सम खानी ज़रूरी नहीं है।)

१०७०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) इर्शाद फ़र्माया, ऐ मुसलमान औरतो ! कोई पड़ोसी दूसरे पड़ोसी को हक़ीर न जाने। अगरचे वह (अपनी ग़रीबी की वजह से) बकरी के खुर का गोश्त ही तोहफ़े में पेश कर दे।

१०७१. हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत उर्वा रज़ि० से फ़र्माया, भाजे हम तीन-तीन चांद देख लेते यानी दो-दो माह बीत जाते थे और रसूलुल्लाह सल्ल० के घरों में आग तक न जलती थी उर्वा रज़ि० बोले तो ख़ाला तुम ज़िंदा कैसे रहती थीं ? फ़र्माया, दो चीज़ों से, खजूर और पानी, हां, पड़ोस में कुछ अंसारी रहते थे, उनके पास कुछ ऊंटनियां और बकरियां थीं, जिनका दूध रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में (कभी-कभी) भेज देते

थे, आप भी उस को पी लेते थे और हम भी।

१०७२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, अगर मुझे (बकरी वग़ैरह के) दस्त व पा ही खिलाने के लिए बुलाया जाए तो मैं उसको भी क़ुबूल कर लूंगा, और अगर दस्त व पा ही मुझे हदिया के तौर पर दे दिए जाएं तो ले लूं।

१०७३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मर्रज़्ज़हरान में हमने एक खरगोश देखा (और उसका पीछा किया)। वह भागा, लोगों ने उसको पकड़ने की कोशिश की लेकिन आजिज़ होकर (बैठ रहे) मैंने पहुंच कर पकड़ लिया और अबूतल्हा रज़ि० के पास ले आया, अबूतल्हा रज़ि० ने उसे ज़िब्ह किया और हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दोनों रानें, पांव, सुरीन (का गोश्त) भेजा आपने क़ुबूल कर लिया। एक रिवायत में है कि आपने उस को खाया भी।

१०७४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मेरी ख़ाला उम्मे हुफ़ैद ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में कुछ पनीर, घी और गोह का गोश्त भेजा, आपने पनीर और घी तो किसी क़दर खाया, और गोह (का गोश्त) कराहियत कर के छोड़ दिया।

हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के दस्तरख़्वान पर गोह (का गोश्त) खाया गया। अगर हराम होता तो आपके दस्तरख़्वान पर न खाया जाता।

१०७५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में (कहीं से) कोई खाने की चीज़ लायी जाती तो फ़र्माते यह सद्क़ा है या हद्या अगर सद्क़ा होता तो ख़ुद न खाते, सहाबा रज़ि० से कह देते कि तुम खा लो और, हद्या होता तो ख़ुद हाथ बढ़ा कर खाने लगते।

१०७६. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं, (एक बार) कुछ गोश्त हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में पेश किया गया और अर्ज़ कर दिया गया कि हज़रत बरीरा रज़ि० को यह सद्क़ा में मिला था, फ़र्माया उस के लिए सद्क़ा है और हमारे लिए हद्या।

१०७७. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की बीवियों के दो गिरोह थे। एक में आइशा रज़ि० हफ़्सा रज़ि०, सफ़िया रज़ि० और सौदा रज़ि० दूसरे में उम्मे सलमा रज़ि०, और हुज़ूर सल्ल०

की बाक़ी बीवियां थीं। हुज़ूर सल्ल० को हज़रत आइशा रज़ि० से जो मुहब्बत थी मुसलमान उसे जानते थे इस लिए अगर किसी को हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में कुछ तोहफ़ा भेजना होता तो इंतिज़ार में रहता कि जब हुज़ूर सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० के घर में हों, तो उस वक़्त भेजना। (एक बार) हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के गिरोह ने मश्विरा करके हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से कहा तुम रसूलुल्लाह सल्ल० से कह दो कि हुज़ूर सल्ल० लोगों को हुक्म दे दें कि जो शख़्स आप को हदया भेजना चाहे वह भेज दे चाहे आप बीवियों में से किसी के घर हों, चुनांचे उम्मे सलमा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से इसके बारे में अर्ज़ किया, आपने उन को कोई जवाब न दिया, उम्मे सलमा रज़ि० वापस आ गयीं, बीवियों ने कहा दोबारा अर्ज़ करो शायद कुछ जवाब दें, उम्मे सलमा रज़ि० ने दोबारा अर्ज़ किया। आपने फ़र्माया, आइशा रज़ि० के बारे में मुझे तक्लीफ़ न दो, क्योंकि आइशा रज़ि० के अलावा अगर मैं किसी और बीवी के मकान में होता हूं तो मेरे पास वह्य नहीं आती, उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा, हुज़ूर को तक्लीफ़ देने से मैं तौबा करती हूं, इस के बाद बीवियों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत सैयिदा फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया और उनको हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह कहने भेजा कि आपकी बीवियां आप को ख़ुदा की क़सम देती हैं कि आप आइशा रज़ि० के बारे में इंसाफ़ से काम लें, आपने फ़र्माया, बेटी, क्या जिस से मुझे मुहब्बत है तुझे उस से मुहब्बत नहीं है, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया, जी, है क्यों नहीं ? यह कह कर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० के इर्शाद की इत्तिला दे दी, बीवियों ने दोबारा जाने को कहा, मगर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने इंकार कर दिया, मजबूर होकर बीवियों ने ज़ैनब बिन्त जहश रज़ि० को भेजा। ज़ैनब रज़ि० ने आकर कुछ सख़्ती से कहा कि आप की बीवियां आप को ख़ुदा की क़सम देती हैं और कहती हैं कि आइशा रज़ि० बिन्त अबूक़हाफ़ा (अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०) के बारे में आप इंसाफ़ से काम लें, ज़ैनब रज़ि० ने चूंकि ऊंची आवाज़ से कहा था इस लिए हज़रत आइशा रज़ि० ने सुन लिया, आप वहीं (क़रीब) बैठी हुई थीं उन ही के मुंह पर उन को कुछ बुरा भला कहा, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० की तरफ़ देख कर कहा, कुछ जवाब दे सकती हो,

हज़रत आइशा रज़ि० ने (इजाज़त पाकर) ज़ैनब रज़ि० को जवाब देना शुरू किया यहां तक कि उन को खामोश कर दिया, हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० की तरफ़ देख कर फ़र्माया, आखिर वह अबूबक रज़ि० की बेटी हैं।

१०७८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० खुश्बू वापस नहीं किया करते थे।

१०७९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, हुज़ूर सल्ल० हदया क़ुबूल फ़र्माते थे और उस का बदला (भी) देते थे।

१०८०. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि मेरे बाप ने मुझे कुछ तोहफ़ा दिया (मेरी वालिदा) उमरा बिन्त रवाहा ने कहा कि मैं तो उस वक़्त खुश होंगी कि तुम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को इस पर गवाह बना लोगे, मेरे बाप हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपने बेटे को जो मेरी बीवी उमरा बिन्त रवाहा के बतन से है कुछ तोहफ़ा दिया था कि उमरा ने कहा कि मैं उस वक़्त खुशी को ज़ाहिर करूंगी कि तुम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को इस का गवाह बना लोगे, आपने फ़र्माया, क्या तुमने अपने सब बच्चों को इतना ही इतना दिया है, मेरे बाप ने जवाब दिया, नहीं। फ़र्माया खुदा से डरो और औलाद के बीच इंसाफ़ से काम लो (यह सुन कर) मेरे बाप लौट आए और भेंट वापस कर दिया।

१०८१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है कि हिबा की हुई चीज़ को वापस कर लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो क़ै करके उसको वापस (निगल जाता है।)

१०८२. उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की इजाज़त के बग़ैर एक लौंडी आज़ाद कर दी, मेरी बारी का दिन हुआ तो हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए। मैंने अर्ज़ किया, क्या आपको खबर है मैंने अपनी लौंडी आज़ाद कर दी आपने फ़र्माया क्या (वाक़ई) तुमने ऐसा किया है, मैंने अर्ज़ किया, जी हां, फ़र्माया सुनो, अगर वह लौंडी अपने मामूं को दे देतीं तो तुम्हारा अज्र और ज़्यादा होता।

१०८३. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० का जब सफ़र का इरादा होता तो सभी बीवियों के नाम क़ुरआ डालते, जिस का

नाम निकल आता, उस को साथ ले जाते और हुज़ूर सल्ल० ने (सफ़र के अलावा) हर औरत की एक बारी मुक़र्रर कर दी थी। चुनांचे एक रात दिन उस का होता था मगर सौदा रज़ि० की कोई बारी न थी, क्योंकि उन्होंने अपनी तारीख़ सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० के मिज़ाज की ख़ुशी हासिल करने के लिए मुझे दे दी थी।

१०८४. हज़रत मस्वर बिन मख़्ज़मा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने (एक दिन) चुग़े बांटे, मगर मख़्ज़मा रज़ि० को कोई चुग़ा नहीं दिया मख़्ज़मा ने (मुझ से) कहा बेटे! मुझे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के पास ले चल, चुनांचे मैं उन को ले गया (नबी सल्ल० के घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो) मख़्ज़मा रज़ि० ने कहा, अन्दर जाकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को बुला लाओ, मैंने (अन्दर जाकर) हुज़ूर सल्ल० को आने की तकलीफ़ दी, आप फ़ौरन बाहर तशरीफ़ ले आए, उस वक़्त आप के ऊपर इन ही चोग़ों में का एक चोग़ा पड़ा था (बाहर आकर) फ़र्माया, हमने तुम्हारे लिए यह चोग़ा (अलग) रख छोड़ा, इसके बाद फ़र्माया, मख़्ज़मा अब राज़ी हो गए।

१०८५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि (एक दिन) हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले गए मगर बाहर ही से चले आए अन्दर दाख़िल न हुए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उन से हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने इस का ज़िक्र किया। हज़रत अली रज़ि० ने आकर हुज़ूर सल्ल० से वाक़िया अर्ज़ किया, आपने फ़र्माया फ़ातिमा रज़ि० के दरवाज़े पर रंगीन धारियों का एक पर्दा था मैंने देखा तो कहा, मुझसे और दुनिया से क्या ताल्लुक़ (इस लिए मैं लौट आया)। यह सुन कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सय्यिदा के पास तशरीफ़ ले आए और कैफ़ियत बयान कर दी, सय्यिदा ने फ़र्माया कि (अच्छा) पर्दा के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० जो हुक्म दें (मैं उस की तामील करूंगी) चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि फ़लां घर वालों को पर्दा भेज दो क्योंकि उन को ज़रूरत है (हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने भेज दिया।)

१०८६. हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरे पास एक रेशमी जोड़ा तोहफ़ा भेजा, मैं पहन कर (हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में) गया लेकिन जब हुज़ूर सल्ल०

के चेहरे पर गुस्से के आसार देखे तो फाड़ कर औरतों को बांट दिया।

१०८७. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) हम कुल (१३०) आदमी हुज़ूर सल्ल० के साथ थे। आपने फ़र्माया तुम में से किसी के पास खाना है, इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त एक शख़्स के पास (सिर्फ़) लगभग तीन सेर गेहूं का आटा था (हुज़ूर सल्ल० ने लेकर उसको गूंधने का हुक्म दिया) आटा गूंध लिया गया, इतने में एक लम्बा-चौड़ा मुश्रिक शख़्स अपनी बकरियां हांकता हुआ आया, आपने उस से फ़र्माया, बेचने का इरादा है या हदया देने का, उसने कहा बेचने का। आपने एक बकरी ख़रीद कर तैयार कराई और कलेजी को भूनने का हुक्म दिया, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि एक सौ तीस आदमियों में से कोई भी नहीं बचा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको कलेजी का कोई टुकड़ा न दिया हो, जो कोई मौजूद था उस को तो (उसी वक़्त) दे दिया जो मौजूद न था उसके लिए उठा रखा, फिर आपने बकरी का शोरबा (दो बड़े) बर्तनों में किया, जिस को सभी लोगों ने जी भर कर खाया और दो प्याले बच रहे जिन को हम ने ऊंट पर रख लिया।

१०८८. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहती हैं कि (एक बार) हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में मेरी वालिदा शिर्क की हालत में मेरे पास आयीं, मैंने हुज़ूर सल्ल० से मस्अला पूछा कि मेरी वालिदा आयी हैं और मुझ से (मेल रखने की) ख़्वाहिश रखती हैं क्या मैं उन से ताल्लुक़ात बनाए रखूं, फ़र्माया हां, अपनी मां से रिश्ता क़ायम रखो और सुलूक करो।

१०८९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू सुहैब के लिए मरवान के सामने जाकर गवाही दी कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत सुहैब रज़ि० को दो कोठरियां और एक हुजरा अता किया था आप की गवाही पर मरवान ने बनू सुहैब रज़ि० को दोनों कोठरियां और हुजरा दे दिया।

१०९०. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, जिस शख़्स को मकान भेंट में दिया जाए वह उम्र भर के लिए उस का हो जाता है।

१०९१. हज़रत आइशा रज़ि० (एक बार) यमनी या सूती चादर ओढ़े हुए थीं जिसकी क़ीमत पांच दिरहम थी, इतने में हज़रत ऐमन आए।

हज़रत ने फ़र्माया, ज़रा नज़र उठा कर मेरी इस लौंडी को तो देखो, घर में भी यह इस चादर को ओढ़ने से नाक चढ़ाती है, हालांकि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में मेरे पास ऐसी चादर थी और मदीना की कोई औरत न थी जो सिंगार के वक़्त इस को आरियतन न मंगाती हो।

१०६२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि जब मुहाजिरीन मक्का से मदीना आए थे तो उन के पास कुछ न था और अन्सारी लोगों के पास ज़मीनें और जायदादें थीं अन्सार और मुहाजिरीन के बीच यह शर्त क़रार पाई कि अन्सार तो अपने माल की पैदावार मुहाजिरीन को सालाना देते रहेंगे और मुहाजिर सारे कारोबार और भार उठाने के ज़िम्मेदार होंगे। मेरी मां ने जिन को उम्मे सुलैम रज़ि० भी कहते हैं और वह अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा रज़ि० की भी वालिदा थीं, अपने पेड़ों की खजूरें हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को दी थीं, हुज़ूर सल्ल० ने वह खजूरें अपनी आज़ाद की हुई बांदी उम्मे ऐमन रज़ि० यानी उसामा बिन ज़ैद की वालिदा को दे दीं, ख़ैर कुछ दिनों के बाद जब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर की लड़ाई से फ़ारिग़ होकर मदीना तशरीफ़ लाए, तो मुहाजिरीन ने अन्सार के वह सारे दिए हुए (पेड़) वापस कर दिए जिन के फल अंसार ने मुहाजिरीन को दे रखे थे चुनांचे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उम्मे ऐमन रज़ि० को अपने बाग़ में से और पेड़ अता कर दिए (और पहले दरख़्त वापस करा दिए।)

१०६३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि चालीस ख़स्लतें अच्छी हैं, जिन में एक पर भी, अगर आदमी सवाब की उम्मीद से अमल करे और वायदा किए गए बदले को दिल से सच जाने तो अल्लाह तआला उस को ज़रूर जन्नत में दाख़िल फ़र्माएगा, इन ख़स्लतों में सब से आला दर्जे की ख़स्लत यह है कि आदमी दूध पीने के लिए (किसी को) बकरी दे।

यहां रिवायत करने वाला कहता है कि हमने बकरी मेनजा को छोड़ कर और बातों को शुमार करना चाहा, उन में से सलाम का जवाब देना, रास्ते से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ों को हटा देना वग़ैरह, मगर हम पंद्रह बातें भी शुमार न कर सके।

बाब ४४

गवाही के बयान में

१०९४. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मेरे ज़माने के लोग बेहतरीन हैं फिर वह लोग बेहतर हैं जिन का ज़माना उन के ज़माने से मिला हुआ हो, और फिर वह लोग बेहतर हैं जिन का ज़माना आख़िरी ज़माने वालों के क़रीब है। इस के बाद ऐसे लोग आएंगे कि उनकी गवाही उन की क़समों से पहले होगी और उन के क़समें उन की गवाही से पहले होंगी।

१०९५. इब्ने अबूबक्र रज़ि० अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मैं तुम को तीन बड़े गुनाह बताऊं, लोगों ने अर्ज़ किया, हां ज़रूर फ़र्माइए। पहला ख़ुदा का शरीक बनाना, दूसरे वालिदैन की नाफ़र्मानी करना, फिर आप तकिया लगाए हुए बैठ गए और फ़र्माया कि होश के साथ सुनो, तीसरा गुनाह झूठ बोलना, आपने उस को कई बार लौटाया यहां तक कि हम लोगों ने आरज़ू की कि काश आप चुप हो जाएं तो बेहतर था।

१०९६. हज़रत आइशा रज़ि० फ़र्माती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शख़्स को देखा कि वह मस्जिद में क़ुरआन की तिलावत कर रहा है फ़र्माया कि अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहम करे उसने मुझ को फ़्लां फ़्लां आयत फ़्लां फ़्लां सूर: याद दिलाई जिनको मैं भूल गया था।

१०९७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे घर में तहज्जुद की नमाज़ अदा की, तो आपने सुना कि उबाद बिन बशीर रज़ि० मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं, फ़र्माया, आइशा रज़ि० ! क्या यह उबाद रज़ि० की आवाज़ है ? मैंने अर्ज़ किया, जी हां, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि उबाद पर अल्लाह

तआला रहम करे।

१०६८. हजरत आइशा रजि० कहती हैं कि जब हजरत मुहम्मद रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो अपनी बीवियों में कुरआ डाला करते थे, जिस का नाम निकल आता उस को अपने साथ ले जाते। एक बार आप लड़ाई (जिहाद) में तशरीफ़ ले जा रहे थे तो आपने कुरआ डाला उस में मेरा नाम निकल आया, इस लिए आपने मुझ को साथ ले लिया और यह वह वक़्त था कि पर्दा का हुक्म नाज़िल हो चुका था, इस वजह से मैं कजावह में सवार की जाती थी और जहां मक़ाम किया जाता तो मैं उसी में उतारी जाती थी, जब हुज़ूर सल्ल० जिहाद से फ़ारिग़ हो गए और वापस होकर मदीना के क़रीब पहुंच कर ठहरे फिर उस मक़ाम से कूच का हुक्म दिया तो मैं क़ज़ाए हाजत के लिए अपने मक़ाम से बहुत दूर चली गई। जरूरत पूरी होने के बाद लौट कर जब अपने कजावह के पास आयी और अपने सीने पर हाथ फेरा, तो मालूम हुआ कि अज़फ़ार का हार जो मेरे गले में पड़ा हुआ था गुम हो गया था (टूट गया) इस लिए फिर क़ज़ाए हाजत की जगह पर पहुंची और उस को ढूंढना शुरू किया और उसकी खोज में मुझ को बहुत देर हो गई, इधर लोगों ने मेरी सवारी के कजावा को उठा कर ऊंट पर कस दिया। क्योंकि उन का यह ख्याल था कि मैं कजावे में मौजूद हों, क्योंकि उस वक़्त औरतें हल्की-फुल्की होती थीं, भारी और वज़नी नहीं होती थी क्योंकि कम खाने की वजह से भारी-भरकम नहीं हो सकती थीं। इसी वजह से हौदज उठाते वक़्त लोगों को मालूम न हुआ और उस को उठा कर ऊंट पर रख दिया, और दूसरे यह बात भी थी कि मैं उस वक़्त नव उम्र बच्ची थी, जब वह कजावे कस चुके तो ऊंट को हंका दिया और कूच कर चले। जब लोग चले गए तो मुझ को हार मिला, मैं लौट कर क़ाफ़िले की जगह पर आई, देखा कि सब चले गए हैं और उस जगह पर कोई भी बाक़ी नहीं रहा, मजबूर होकर मैं अपनी असली जगह पर ठहर गई और यह सोचा कि जब लोग मुझ को कजावे में नहीं पाएंगे, तो ला मुहाला वापस लौट कर इधर ही को आएंगे, फिर मैं बैठे-बैठे सो गई, और सफ़वान बिन मुअत्तल सलमी जिस को ज़कवानी भी कहते हैं लश्कर के पीछे रहा करता था, जब वह सुबह के वक़्त मेरे नज़दीक पहुंचा और उसने आदमी की शबाहत मालूम की तो मेरे हुक्म से क़रीब पहुंचा और मुझ को पहचान गया क्योंकि वह मुझ को

पहले देख चुका था, उसने आयत इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ी, मैं उस की आवाज़ से जाग उठी और उसने ऊंटनी बिठा कर अपना हाथ उस के पैर पर रखा उसके ज़रिए से मैं चढ़ गई, फिर हम वहां से चल दिए और लश्कर तक पहुंच गए, क्योंकि उस वक़्त गर्मी की वजह से लश्कर ठहरा हुआ था, इतने अर्से में जिस को बुहतान बांधने का मक़सद था, उसने बांध लिया और अपने ज़ेहनों में मस्विदा बना लिया और इस बुहतान का बानी अब्दुल्लाह बिन उबई था, जबकि हम सब लोग मदीना में आ गए, तो मैं वहां पहुंच कर बीमार हो गयी और एक माह तक बीमार रही और लोग बुहतान वालों के बारे में आपस में बात-चीत कर रहे थे और मुझ को भी इस वजह से शक होता था कि मैं बीमारी की हालत में हज़रत को देखती थी कि आप की वह मेहरबानी जो पहले थी मुझ पर नहीं रही थी बस इतना था कि आप जब दाखिल होते तो इतना फ़र्माते कि तुम कैसी हो और सलाम अलैक कराया करते थे, उस वक़्त मैं बहुत कमज़ोर थी मुझ को जब क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत होती तो मैं और उम्मे मिसतह मनासेह के मक़ाम की तरफ़ चले जाया करते थे क्योंकि यह हमारे क़ज़ाए हाजत की जगह थी और उस जगह पर हम क़ज़ाए हाजत करने के बाद दूसरी रात तक के लिए फ़ारिग़ हो जाया करते थे और यह उस ज़माने का वाक़िया है कि पाख़ाने घरों में नहीं बनते थे और हमारा क़ायदा था पहले अरबों की तरह कि क़ज़ाए हाजत और तहारत के लिए जंगल को जाते थे, जब हम क़ज़ाए हाजत से लौट कर चले तो रास्ते में उम्मे मिसतह चादर में उलझ कर गिर पड़ी और कहने लगी कि ख़ुदा मिसतह का बुरा करे। मैंने उस के जवाब में कहा कि तुमने यह बहुत बुरी बात कही क्योंकि यह बद्र की लड़ाई में शरीक हुए हैं, ऐसे शख़्स के बारे में बुरा नहीं कहना चाहिए। उम्मे मिसतह ने कहा कि तुम को उस की बातों की ख़बर है कि उसने क्या कहा है और फिर सारा क़िस्सा बुहतान का मेरे सामने दुहराया मुझ को यह सुन कर मर्ज़ पर मर्ज़ पड़ गया। जब घर पहुंची तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाए और सलाम किया और फ़र्माया कि तुम कैसी हो? मैंने अर्ज़ किया, मुझे मेरे मां-बाप के यहां चले जाने की इजाज़त दीजिए। आइशा रज़ि० कहती हैं कि मेरा यह इरादा था कि अपने वालिदैन के यहां जाकर उस की सच्चाई मालूम करूं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

जाने की इजाज़त दे दी। जब मैं मैके आ गई तो मैंने अपने मां-बाप से पूछा कि लोग क्या बातें करते हैं? तो उन्होंने जवाब दिया कि तुम अपनी हालत को सही रखो, यह क़ायदा है कि जब किसी शख़्स की कोई बीबी ख़ूबसूरत हो और उस की सौतें भी मौजूद हों और वह शख़्स अपनी उस बीवी से मुहब्बत रखता हो तो वह औरतें ज़रूर उस के ऐब निकालती हैं, मैंने कहा सुब्हानल्लाह लोग ऐसी-ऐसी बातें आपस में करते हैं, हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रात मुझ पर ऐसी गुज़री कि न मैं सोई और न मेरे आंसू रुके और इसी हालत में सुबह हो गई। इधर हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० और उसामा बिन ज़ैद रज़ि० को बुलाया, ताकि अपनी बीवी के बारे में मश्विरा लें, क्योंकि वह्य में देर हो गई थी तो उसामा रज़ि० ने आप को अपनी बीवी की तरफ़ मुहब्बत देखते हुए मश्विरा दिया जो मुना-सिब था और यों अर्ज़ किया कि ऐ हज़रत सल्ल० ! वह आपकी घर वाली हैं, और हमारा जहां तक ख़्याल है उनकी तरफ़ नेक ही है, उन में हमको कोई बुराई नहीं मालूम होती, बाक़ी रहे हज़रत अली रज़ि० तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० अल्लाह तआला ने आपपर तंगी नहीं की है, इन के अलावा आप को बहुत औरतें मिल सकती हैं, आप उन की लौंडी (बरीरा रज़ि०) को बुला कर पूछ लीजिए, वह आप से सच-सच कहेंगी, हज़रत सल्ल० ने बरीरा रज़ि० को बुलाया और फ़रमाया, बरीरा क्या तुमने आइशा रज़ि० में कोई ऐसी बात देखी है जो शक पैदा करने वाली हो, बरीरा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम ! जिसने आप को सच्चा रसूल भेजा है, मैंने उनमें कोई ऐब नहीं देखा, इतनी बात ज़रूर है कि आटा छोड़ कर बचपन की वजह से सो जाती हैं और बकरी आकर खा लेती है, इस को सुन कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि उस शख़्स की तरफ़ से मुझे कौन मजबूर समझेगा या मेरी मदद करेगा, जिसने मेरी बीवी पर बुहतान लगा करके मुझे तकलीफ़ दी है, ख़ुदा की क़सम ! अपनी बीवी में किसी क़िस्म की बुराई नहीं देखी है, उस शख़्स के बुहतान का ताल्लुक़ ऐसे शख़्स से क़रार दिया कि मेरी इजाज़त के बग़ैर मेरे घर में कभी नहीं गया और न जा सकता है। यह सुन कर साद बिन मुआज़ रज़ि० ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह सल्ल० ! आपको उसकी तरफ़ से मजबूर जानता हूं आप फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स औस क़बीले से हो तो हम उसको मार डालने के लिए

तैयार हैं और खजरज क़बीले से कोई हमारा भाई हो तो जो हुक्म आप हम को दें उस के मुताबिक़ काम करेंगे, इस को सुन कर साद बिन उबादा खड़े हुए, क्योंकि वह खजरज क़बीले के सरदार थे और निहायत सालेह शख्स थे लेकिन उस वक़्त उन को क़बीले की हमदर्दी ने उभारा और कहने लगे कि तुम न तो क़त्ल कर सकते हो और न तुम ऐसे काम पर क़ादिर हो सकते हो। यह सुन कर उसैद बिन हुजैर खड़े हो गए और कहा, ऐ इब्ने उबादा रजि० ! तुम झूठे हो बल्कि हम ऐसे शख्स को जरूर क़त्ल करेंगे और मालूम हुआ कि तुम जरूर मुनाफ़िक़ हो कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी में लड़ते हो (इसी बात-चीत से) औस व खजरज क़बीले में लड़ाई की नौबत पहुंची और क़िताल का अंदेशा होने लगा। रसूले मक़बूल सल्ल० उस वक़्त मेंबर पर तशरीफ़ रखते थे, यह देख कर उतरे और उन लोगों को खामोश कर दिया। मैं उस रोज़ सारे दिन रोती रही, मेरा एक मिनट को भी आंसू न थमा और न मुझ को नींद आई। सुबह के वक़्त मेरे वालिदैन तशरीफ़ लाए और मुझ को दो रातें और एक दिन रोते हुए गुजरा था और उस से मुझे यह ख्याल पैदा हो गया था कि मेरा दिल फट जाएगा, हज़रत आइशा रजि० कहती हैं कि मेरे वालिदैन मेरे पास बैठे हुए थे कि एक अंसारी औरत ने अन्दर आने की इजाज़त चाही और आकर मेरे साथ रोने लगी हम इसी हालत में थे कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ ले आए और मेरे पास बैठ गए, बुहतान लगने के वक़्त से लेकर अब तक आप मेरे नजदीक कभी नहीं बैठे थे, और इस बात को एक महीने का अर्सा गुजर चुका था इस अर्से में आप पर कोई वह्य भी नाज़िल नहीं हुई, यही हजरत आइशा रजि० कहती हैं कि उस दिन हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने तशह्हुद पढ़ा, फिर खिताब कर के फ़र्माया कि ऐ आइशा रजि० मुझ को तुम्हारे बारे में फ़्लां फ़्लां बात मालूम हुई है, इस लिए अगर तुम उस से बची हुई हो और यह बातें झूठी हैं तो जल्द ही अल्लाह तआला वह्य के जरिए तुम्हारी बरात कर देगा और अगर तुमने ऐसे काम का इरादा किया है तो खुदा से पनाह मांगो और तौबा करो, क्योंकि जब कोई बन्दा खुदा से तौबा करता है और बख्शिश चाहता है तो अल्लाह तआला उस के गुनाह माफ़ कर देता है, जब खुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह बात खत्म कर चुके तो मेरे आंसू फ़ौरन ही बन्द हो गए और बिल्कुल ही असर न रहा और मैंने अपने वालिद से कहा कि आप मेरी तरफ़ से

हज़रत सल्ल० को जवाब दें, लेकिन उन्होंने कहा कि मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या जवाब दूं, इसके बाद मैंने वालिदा से कहा कि आप कुछ जवाब दें, तो उन्होंने भी यही कहा कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि मैं क्या जवाब दूं, आइशा रज़ि० कहती हैं, मैं चूंकि कमसिन लड़की थी और क़ुर-आन भी बहुत नहीं पढ़े हुए थी लेकिन इस पर भी मैंने जवाब दिया कि लोगों की बातें आपने खूब सुन ली हैं और आप के दिल में खूब घर कर गई हैं और उन का यक़ीन भी कर चुके हैं, तो मैं अगर आप से कहूं भी कि मैं बरी हूं, और खुदा खूब जानता है कि मैं बरी हूं तो आप मेरी बात का यक़ीन नहीं करेंगे, तो मैं अगर आप के सामने किसी बात का इक़रार कर लूं (और खुदा खूब जानता है कि मैं उस से बरी हूं) तो आप उस का फ़ौरन यक़ीन कर लेंगे, खुदा की क़सम मुझ को अपनी और तुम्हारी मिसाल इस वक़्त यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद याक़ूब अलै० की तरह मालूम होती है जिस वक़्त कि तक्लीफ़ की वजह से उन्होंने कहा था, फ़-सबरुन जमीलुन वल्लाहुल्मुस्तआनु अलामा त सिफ़ून मेरा काम तो सब्रे जमील है और अल्लाह तआला मदद देने वाला है उसपर जिसको तुम कहते हो यह कह कर मैं अपने बिस्तर पर गई लेकिन मुझे इस की उम्मीद थी कि अल्लाह तआला मेरी बराअत का हुक्म ज़रूर नाज़िल करेगा, हां इसका ज़रूर ख्याल था कि मेरे बारे में ऐसी वह्य नाज़िल नहीं होगी जिस की तिलावत की जाएगी क्योंकि मैं अपने आप को उससे हक़ीर समझती थी कि क़ुरआन में मेरे बारे में कोई आयत बयान की जाए बल्कि यह ख्याल था कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० कोई ख्वाब देखेंगे जिस से मेरी बराअत आप पर ज़ाहिर हो जाएगी। मैं इसी ख्याल में थी कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह पर वह्य नाज़िल होनी शुरू हुई, आप कहती हैं कि हज़रत रसू-लुल्लाह सल्ल० अपनी जगह से उठे न थे और हर शख़्स अपनी-अपनी जगह पर बैठा हुआ था कि वह्य नाज़िल होनी शुरू हुई और आप पसीने में तर-ब-तर होना शुरू हुए और पसीने की बूंदें ऊपर से मोतियों की तरह टपकने लगीं, इसके बावजूद कि सर्दी का दिन था फिर जब आपकी यह हालत जाती रही तो आपने हंसते हुए फ़रमाया कि आइशा रज़ि० ! तुम अल्लाह तआला की हम्द करो क्योंकि तुमको उसने बरी कर दिया, इसके बाद मेरी वालिदा ने कहा, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने खड़े होकर आप का

शुक्रिया अदा करो उस के जवाब में मैंने कहा कि खुदा की क़सम ! मैं हर-गिज़ आप के सामने नहीं खड़ी हूंगी और अल्लाह के सिवा किसी की हम्द नहीं करूंगी और उस के सिवा किसी दूसरे की तारीफ़ नहीं करूंगी उस वक्त में अल्लाह तआला ने यह आयतें नाज़िल फ़र्मायीं इन्नलज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि (आखिर तक) तो जब मेरे बारे में यह आयतें नाज़िल हो चुकीं तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अब मैं मिस्तह पर कभी कोई चीज़ खर्च नहीं करूंगा, उस वक्त खुदा ने यह आयत नाज़िल फ़र्मायी कि वला या तलि ऊ लुल फ़ज़्ल मिन्कुम (आखिर तक) यानी तुम में से बुज़ुर्गी वाले और वुसअत वाले अपने अज़ीज़ों के साथ सुलूक करने से बाज़ न आये (आखिर तक) यह सुन कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा मुझे अपनी बख्शिश मंज़ूर है और मिसतह का खर्च पहले की तरह जारी कर दिया और उस के पास गए, इधर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० से पूछा, ऐ ज़ैनब ! तुम आइशा रज़ि० के बारे में क्या कहती हो। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने आइशा रज़ि० में अच्छाई के सिवा कोई बुराई नहीं देखी, हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि यह वही बीबी थीं कि जो मेरी बराबरी का दावा रखती थीं लेकिन अल्लाह तआला ने तक़वा की वजह से उन को इफ़्तरापरदाज़ी से महफ़ूज़ रखा।

१०९८. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने दूसरे की तारीफ़ की तो आपने फ़र्माया, तुझ पर बड़ा अफ़सोस है कि तूने अपने ममदूह की गर्दन काट दी और यह भी कई बार फ़र्माया, उस के बाद फ़र्माया कि जिस वक्त किसी की तारीफ़ करना मक़सद हो तो यों कहना चाहिए कि मैं उस को ऐसा जानता हूं और अल्लाह तआला सही इल्म रखता है। खुदा ऐसों के सिवा दूसरे की ततहीर नहीं करता। यह भी उस वक्त कहे जबकि उस शख्स की जानकारी में यह औसाफ़ उस में मौजूद हों।

१०९९. इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मुझको उहद की जंग के दिन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिद्मत में पेश किया गया उस वक्त मेरी उम्र १४ साल की थी। आपने मुझ को इजाज़त नहीं दी। फिर मुझ को खन्दक़ की लड़ाई में पेश किया गया, उस वक्त मैं पन्द्रह साल का था तो आपने मुझ को जंग में शरीक होने की इजाज़त दे दी।

११००. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक क़ौम को क़सम खाने के लिए फ़र्माया, तो हर एक शख़्स क़सम खाने में जल्दी करने लगा। तो आपने हुक्म दिया कि उन में क़ुरआ डालो जिस का नाम आए, वही क़सम खाए।

११०१. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, हर शख़्स क़सम खाना चाहे तो ख़ुदा की क़सम खाये वरना ख़ामोश रहे।

बाब ४५

सुलह के बयान में

११०२. हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त उक़बा रज़ियल्लाहु तआला ने कहा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० फ़र्माते थे कि जो आदमी लोगों का सुधार करने की सच्ची ख़्वाहिश रखता हो, वह बेहतर झूठ बयान करे।

११०३. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि क़ुबा के लोगों ने आपस में लड़ाई और फ़साद किया, यहां तक कि आपस में पत्थरों से लड़े, यह ख़बर हज़रत को हुई तो आपने फ़र्माया कि हम को ले चलो, हम सुलह करा देंगे।

११०४. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ज़ीक़ादा के महीने में उमरा अदा किया तो मक्का वालों ने आप को मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया, आख़िरकार हुज़ूर सल्ल० ने इस बात पर सुलह कर ली कि आप वहां तीन दिन और ठहरें, फिर जब इन लोगों ने सुलहनामा लिखा तो उस में यह लिखा कि यह सुलहनामा वह है

जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने सुलह की है। कुफ़्फ़ार ने कहा, हम इस को पसन्द नहीं कर सकते, क्योंकि अगर हम आप को खुदा का रसूल जानते तो आप को मक्का में आने से रोकते ही क्यों, लेकिन हम आप को मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह जानते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूं, और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० भी। ऐ अली! हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मिटा दो। हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, खुदा की क़सम! मैं नहीं मिटाऊंगा, तो आपने वह सुलह-नामा ले लिया और लिख दिया यह वह सुलहनामा है, जिस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने सुलह की है कि मक्का में हथियार के साथ दाखिल न होंगे और अगर मक्का के रहने वालों में से कोई आदमी आपके साथ जाना चाहेगा तो उस को अपने साथ नहीं ले जाएंगे और अगर आप के सहाबा रज़ि० में कोई शख्स मक्का में ठहरना चाहेगा तो उस को मना नहीं करेंगे, इस लिए जब आप मक्का में तशरीफ़ लाए और मुक़र्रर की हुई मीयाद खत्म हो गयी तो मक्का वालों ने हज़रत अली रज़ि० से आकर कहा कि आप अपने साथी से कह दीजिए कि मीयाद पूरी हो चुकी, अब मक्का खाली कर दो। आखिरकार हज़रत वहां से चल दिए, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की बेटी पीछे-पीछे दौड़ीं और चचा-चाची कह कर आवाज़ दी। हज़रत अली रज़ि० ने पकड़ कर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के सुपुर्द कर दिया कि अपने चचा की बेटी को संभालो और (अपने साथ सवार कर लो)। रिवायत करने वाला कहता है कि मदीना में पहुंच कर हज़रत अली रज़ि० और ज़ैद रज़ि० और जाफ़र रज़ि० का उस लड़की के बारे में झगड़ा हुआ, हज़रत अली रज़ि० ने कहा कि मैं इसका हक़दार हूं क्योंकि यह मेरे चचा की बेटी है और मेरी बीवी इस की खाला भी होती है। ज़ैद रज़ि० ने कहा कि मेरी भतीजी है, लेकिन खुदा के रसूल ने खाला के बारे में फ़ैसला किया और फ़रमाया कि खाला, मां के बराबर है और हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि तुम मुझ से और मैं तुम से हूं, और जाफ़र रज़ि० से फ़रमाया कि तुम मेरी आदत और खलक़त हर दो में मुझ से मिलते-जुलते हो, और ज़ैद रज़ि० से फ़रमाया तुम हमारे भाई हो और दोस्त हो।

११०५. हज़रत अबूबक्रा रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि खुदा के रसूल सल्ल० मेंबर पर तशरीफ़ रखते हैं और हसन बिन अली रज़ि० आप के पहलू में तशरीफ़ रखते हैं और हज़रत कभी तो हज़रत हसन रज़ि० की

तरफ़ ध्यान देते हैं और कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माते हैं कि मेरा बेटा सरदार है और अल्लाह तआला इस के ज़रिए से दो बड़े-बड़े गिरोहों में सुलह कराएगा।

११०६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि (एक बार) ख़ुदा के रसूल ने सुना कि दो आदमी दरवाज़े के बाहर बड़े ज़ोर-शोर से लड़ रहे हैं और ज़ोरदार आवाज़ में एक दूसरे को डांट रहे हैं, इनमें से एक यह चाहता था कि दूसरा कुछ क़र्ज़ में कमी कर दे और नर्मी करे और दूसरा यह कहता था कि मैं हर्गिज़ कमी न करूंगा और क़सम खाता था (यह सुन कर) हज़रत बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि वह आदमी कहां है जो ख़ुदा की क़सम खा रहा था और कहता था कि मैं अच्छाई न करूंगा। उस आदमी ने कहा, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ! मैं हूं, आप को क्या बात पसन्द है और प्यारी है (मैं ख़ुश हूं।)

बाब ४६

शर्त के बयान में

११०७. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जो शर्तें पूरी करने की ज़्यादा हक़दार है, वह वही हैं, जिन के ज़रिए से तुमने शर्मगाहों को हलाल किया है (यानी निकाह की शर्तें।)

११०८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि एक देहाती हज़रत की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! आप को ख़ुदा की क़सम देता हूं कि आप मेरा फ़ैसला अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ कीजिए। इस के मुक़ाबले वाले ने

कहा और वह समझदार भी था कि हां, ऐ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! खुदा की किताब के मुवाफ़िक़ ही फ़ैसला कीजिए। आपने फ़र्माया अच्छा कहो ! उसने कहा कि मेरा बेटा उस का मज़दूर था, उसने इस की बीवी के साथ ज़िना किया, मुझ को यह मालूम हुआ कि वह पत्थर मारने के क़ाबिल हो गया, इस लिए मैंने इस को एक सौ बकरियां और एक बांदी अपने बेटे के फ़िद्ये में दे दी, इस के बाद मैंने आलिमों से पूछा, तो उन्होंने कहा कि तेरे लड़के पर सौ कोड़े और एक साल के लिए शहर से निकलना ज़रूरी है। आपने फ़र्माया कि मुझ को उस ज़ात की क़सम है जिस की क़ुदरत के क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं तुम दोनों में खुदा की किताब से ही फ़ैसला करूंगा, इस लिए लौंडी और बकरियां तुझ को वापस मिलनी चाहिएं और तेरे लड़के पर सौ कोड़े और एक साल के लिए देश निकाला ज़रूरी है।

ऐ अनीस, जाओ अगर इस की बीवी इक़रार करे तो उसको पत्थरों से मार डालना, हुक्म के मुताबिक़ जब अनीस गए तो उसने इक़रार किया और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के हुक्म के मुताबिक़ उसको पत्थर मारा गया।

११०६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि जिस वक़्त अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के खैबर वालों ने हाथ पांव तोड़ दिए तो हज़रत उमर रज़ि० खुत्बे के लिए खड़े हुए और फ़र्माया कि हम उन को इस मामले में उस वक़्त तक बरक़रार रखेंगे, जिस वक़्त तक खुदा उन को बरक़रार रखे और अब्दुल्लाह बिन उमर खैबर को अपने माल के लिए गये थे, वहां के लोगों ने उन के हाथ-पांव तोड़ दिए और उन पर ज़्यादती की और वहां उन के सिवा हम लोगों का कोई दुश्मन नहीं और न कोई दूसरा तोहमत लगाने के क़ाबिल है, और मैंने इन को देश निकाला देने का इरादा कर लिया है। हज़रत उमर रज़ि० उन को देश निकालने पर तुल गए तो बनुल हुक़ीक़ में से एक शख्स आप के पास आया और यों अर्ज़ की, अमीरुल मोमिनीन ! क्या आप हम को मुल्क से निकालना चाहते हैं, हालांकि खुदा के रसूल सल्ल० ने हम को अपने मालों पर क़ायम रखा था और इन ही मालों पर हम से मामला किया था और इसी को हमारे लिए शर्त ठहराया था। हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब दिया कि तू क्या समझता है कि हुज़ूर सल्ल० का यह फ़र्मान मैं भूल गया हूं, उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जिस

वक़्त तू खैबर से निकाला जाएगा और तेरी सवारी की ऊंटनी भागमभाग रातों रातों जा रही होगी। उसने कहा, यह तो अबुल क़ासिम की बकवास थी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि ख़ुदा के दुश्मन! तू झूठा है, फिर आपने फलों, काठियों और रस्सियों की क़ीमत देकर इनको देश से निकाला दिया।

१११०. हज़रत मसवर बिन मख़्रमा रज़ि० और मरवान कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद ख़ुदा के रसूल सल्ल० जिस वक़्त हुदैबिया के सफ़र को रवाना हुए और कुछ रास्ता तै कर लिया तो आपने फ़र्माया कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ग़ुमैम नामी जगह में क़ुरैश के लश्कर का मुक़द्दमतुल जैश है इस लिए तुम को भी उसी तरफ़ चलना चाहिए। ख़ालिद रज़ि० को ख़ुदा की क़सम! आपकी ख़बर भी न थी सिर्फ़ एक काला गर्द व ग़ुबार देख कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के आने के ख़बर देकर क़ुरैश को डरा दिया और हुज़ूर नबी सल्ल० बराबर तशरीफ़ ले जा रहे थे, यहां तक कि जब आप सनिया नामी जगह में पहुंचे कि जहां से लोग उतरते थे तो आप की ऊंटनी बैठ गयी, लोगों ने उस को उठाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं उठी, लोगों ने कहा कि हज़रत ऊंटनी क़सवा बड़ी ढीठ हो गयी है। फ़र्माया क़सवा हर्गिज़ ऐसी नहीं हो सकती और न इस की यह आदत है, बल्कि उस को हाथियों के रोकने वाले ने रोक दिया है और मैं उस ख़ुदा की क़सम खाता हूं जिस की क़ुदरत के क़ब्ज़े में मेरी जान है, कि काफ़िर मुझ से अगर ऐसी बात चाहेंगे जिस में अल्लाह तआला की हुरमत की बड़ाई हो तो मैं उस को ज़रूर मंज़ूर कर लूंगा, फिर आपने ऊंटनी को डांटा तो वह कूद पड़ी और चल दी। रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का की तरफ़ से फिर कर उस जगह में जो हुदैबिया के आख़िरी सिरे में है, पहुंच गए और वहां आप ठहरे। इस जगह पानी की कमी थी, इसी वजह से लोग वहां से बहुत थोड़ा पानी लेते थे मगर फिर भी यहां तक नौबत पहुंची कि पानी इधर निकला उधर लोगों ने निकाल लिया और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से प्यास की शिकायत करते थे। इस शिकायत को सुन कर हज़रत ने अपने तरकश से एक तीर निकाला और लोगों को हुक्म दिया कि उस को उस पानी में डाल दें (रिवायत करने वाला कहता है) मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि उस में से इतना पानी जोश मार कर निकलने लगा कि सब लोग

उस से सेराब हो गए। इसी हालत में बुदैल बिन वरक़ा अख़ज़ाअ़ी अपने क़बीले के कुछ आदमी लिए हुए आ पहुंचा और (यह हुज़ूर की भलाई चाहने वाले तहामा के लोगों में से थे) और आकर कहने लगा कि मैंने काब बिन लुवी और आमिर बिन लुवी को हुदैबिया की ऐसे जगह पर छोड़ा है कि वहां पानी ज़्यादा है और उन के साथ दूध देने वाली और बच्चे वाली ऊंटनी भी है (और मेरा ख्याल यह है) कि वह लोग आप से मुक़ा-बले का इरादा कर के आए हैं और ख़ाना काबा को जाने से रोकेंगे (यह सुन कर) हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं, हम तो सिर्फ़ उमरा अदा करने के इरादे से आये हैं, क़ुरैश को इन ही लड़ाइयों ने कमज़ोर कर दिया है और इसी की वजह से उन को नुक़्सान भी पहुंचा है अगर वह लोग यह चाहते हैं कि मैं कुछ मुद्दत मुक़र्रर कर दूं ताकि वह लोग रास्ता वग़ैरह ख़ाली कर दें (तो बेहतर है) अगर मैं उन पर ग़ालिब आ जाऊं तो उन को अख्तियार है चाहे वह इस में दाखिल हो जाएं, जिस में और लोग दाखिल हैं वरना वह लड़ाई-झगड़े से तो आराम में हो जाएंगे और अगर वह इस में से किसी बात को न मानें तो मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिस की क़ुदरत के क़ब्ज़े में मेरी जान है। मैं उनसे इस हद तक लड़ूंगा कि मेरी गर्दन अलग हो जाए या अल्लाह तआला अपना हुक्म जारी फ़र्माए। बुदैल ने कहा जो कुछ आपने फ़र्माया, मैं अभी उन लोगों तक पहुंचाता हूं। यह कह कर वह गया और क़ुरैश से कहने लगा कि मैं उस आदमी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास से आया हूं और उन की एक बात नक़ल करता हूं, शर्त यह है कि तुम को मंज़ूर हो, तो उन में कुछ बेवक़ूफ़ों ने कहा कि हमको उस के सुनने की कुछ ज़रूरत नहीं और जो लोग होशियार थे, उन्होंने कहा कि तुमने जो कुछ सुना हो बयान करो, बुदैल ने कहा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़्लां-फ़्लां बात कही और जो कुछ आपने फ़र्माया था सब उन के सामने नक़ल किया, यह सुन कर उरवह बिन मसऊद कहने लगे कि क़ौम वालो सुनो, क्या मैं तुम्हारे बाप की जगह पर नहीं हूं, सबने जवाब दिया कि बेशक, फिर कहा कि क्या तुम मेरी औलाद की जगह नहीं हो, उन्होंने जवाब दिया कि हां, फिर कहने लगे क्या तुम मुझको किसी तोहमत से मुत्तहिम करते हो। क़ौम ने जवाब दिया नहीं, फिर कहा यह भी तुम को मालूम है कि लड़ाई में तुम्हारी मदद के लिए उकाज़ के घर वालों ने इंकार किया तो मैं अपनी--

बीवी-बच्चे और उस से ताल्लुक़ रखने वालों को लेकर तुम्हारे पास चला आया। उन लोगों ने भी इस का इक़रार किया वह इस के बाद कहने लगे, उस शख्स (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक सीधा और साफ़ रास्ता बताया है तुमको चाहिए कि उस पर राजी हो और मुझ को उस के पास जाने दो, क़ौम ने कहा, जाओ (जब उन को इजाज़त मिल गयी) तो वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से बात-चीत शुरू की। आपने क़रीब-क़रीब यही बातचीत की जो बुदैल से की थी। उस वक़्त उरवह ने कहा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर आप अरब क़ौम का इस्तीसाल कर देंगे तो क्या आपने सुना है कि किसी ने अपनी क़ौम की बीख़कुनी की हो और कहीं उल्टी बात पड़ गयी तो ख़ुदा की क़सम मुझे यहां ऐसे लोग नज़र आ रहे हैं कि जो तुम को छोड़ कर भाग जाएंगे, यह सुन कर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कहा, जा अपने माबूद लात की शर्मगाह को चूस, क्या हम ऐसे हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को छोड़ कर भाग जाएंगे, उरवह ने यह सुन कर पूछा, यह कौन आदमी हैं ? लोगों ने कहा अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० हैं, उरवह ने कहा ख़ुदा की क़सम अगर मुझ पर तेरे पहले एहसान न होते तो मैं तुझको इस का ज़रूर जवाब देता (रिवायत करने वाला कहता है) कि फिर हुज़ूर सल्ल० से बातें करने लगा और बातचीत के बीच में आप की दाढ़ी को हाथ लगाता था। मुग़ीरा बिन शुअबा हुज़ूर सल्ल० के पीछे खड़े हुए थे, हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ूद (लोहे की टोपी) रखा हुआ था जब तक उरवह ने यह सिलसिला जारी रखा तो हर बार मुग़ीरह रज़ि० तलवार का हत्था उस के हाथ पर मार देते थे और फ़र्माते कि तू (अपना हाथ) हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की दाढ़ी से अलग रख, उस को देख कर उरवा ने अपना सर उठाया और पूछा कि यह कौन आदमी है ? लोगों ने जवाब दिया कि मुग़ीरह बिन शोबा हैं (उरवा बोला कि ऐ धोखेबाज़ ! क्या मैं तेरी ग़द्दारी के शर के बचाने में कोशिश करने वाला न था, मुग़ीरा रज़ि० का वाक़िया यह हुआ था कि जाहिलियत के ज़माने में मुग़ीरा रज़ि० एक गिरोह के दोस्त बन गए थे, जब फ़ुर्सत का मौक़ा देखा तो उन का माल लेकर भाग गए और उन को क़त्ल कर दिया और उस के बाद आकर मुसलमान हो गए, मुसलमान होते वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, कि भाई मुसलमान तो मैं कर लूंगा, और

तुम्हारे इस्लाम को भी जायज़ समझूंगा, लेकिन ग़द्दारी के माल में शरीक नहीं हूंगा (यह वाक़िया मुग़ीरह का था अब असल वाक़िया की तरफ़ रुजूअ की जाती है) इस बातचीत में उरवह जब किसी तरफ़ देखता इस के सिवा कुछ दिखाई न पड़ता कि अगर हुज़ूर सल्ल० थूकते तो फ़ौरन लोग हाथों में लेकर अपने मुंहों पर मल लेते और अगर कोई हुक्म आप किसी को देते तो वह हुक्म देने से पहले उस को पूरा करने के लिए तैयार हो जाता और आप वुज़ू करते तो वुज़ू के इस्तेमाल किए पानी के लिए लड़ाई करते और हर एक चाहता कि मैं तबर्रुक के तौर पर उसे ले लूं। और आपकी बात-चीत के वक़्त बिल्कुल चुप रहते और आप की तरफ़ ताज़ीम के लिहाज से नज़र उठा कर न देखते (यह सारी बातें) देख कर उरवह अपने साथियों के पास पहुंचा और उन से कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं हब्श भी गया हूं और रूम व फ़ारस के बादशाहों के पास भी गया हूं लेकिन मैंने किसी बादशाह को ऐसा नहीं देखा कि उस के लोग उस की ऐसी ताज़ीम करते हों, जिस तरह मुहम्मद सल्ल० की ताज़ीम उन के लोग करते हैं, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि जब वह थूकते हैं तो वह किसी न किसी सहाबी के हाथ में ही गिरता है और वह इस को फ़ौरन अपने बदन और चेहरे पर मल लेता है और अगर वह वुज़ू करते हैं तो इस्तेमाल किए हुए पानी पर झगड़ा करते और हुक्म देने से पहले पूरा करने की तैयारी करते हैं, और अगर वह किसी तरह की बात करते हैं तो सब के सब ख़ामोश हो जाते हैं और कोई नज़र उठा कर नहीं देखता है (मेरी राय अगर मानो) उसने तुम्हारे लिए एक बहुत ही मुनासिब बात सोची है तुम को मान लेनी चाहिए। (यह सुन कर) बनू कनाना का एक आदमी बोला कि अच्छा अब मुझे जाने दो, क़ौम के लोगों ने कहा कि जाओ (तुम भी देखो,) जब यह आदमी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० और आप के सहाबियों के पास पहुंचा, आपने फ़रमाया कि यह शख़्स उस क़ौम का जो क़ुर्बानी के जान-वरों की बहुत ताज़ीम करते हैं इस लिए उस के सामने क़ुर्बानी के जानवरों को चलाओ, चुनांचे क़ुर्बानी के जानवर उस के सामने चलाए गए और लोगों ने चिल्ला कर लब्बैक कहना शुरू किया जब उस आदमी ने यह मंज़र देखा तो कहने लगा सुब्हानल्लाह, ऐसे लोगों को ख़ाना काबा से न रोकना चाहिए और यहीं से लौट गया जब अपने साथियों में पहुंचा तो कहने लगा कि मैंने क़ुर्बानी के जानवरों को देखा कि उनके गले में पट्टे पड़

हुए हैं और उन के कोहान निशानी के लिए चीर दिए गए हैं। मेरा ख्याल यह है कि उन को खाना काबा से न रोका जाय, यह सुन कर एक आदमी जाने के लिए तैयार हुआ और कहा कि अब मैं जाता हूं। लोगों ने कहा कि अच्छा जाओ जब वह रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने पहुंचा तो आपने फ़रमाया कि यह कए बेहूदा शख्स है। इसी बीच में सुहैल बिन उमर रज़ि० आए। आपने उन के आने से अच्छा शगुन हासिल कर के फ़र्माया कि अब तुम्हारा मामला ठीक हो जाएगा। चुनांचे सुहैल रज़ि० ने आते ही कहा कि लाओ तुम्हारे और अपने बीच एक सुलहनामा लिखें, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने कातिब को बुलाया और फ़र्माया लिखो, बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम, सुहैल बोला कि रहमान को तो हम जानते नहीं कि कौन है, हां यों लिखो 'बि इस्मिक-ल्लाहुम-म' जिस तरह कि तुम पहले लिखा करते थे, मुसलमान बोले कि खुदा की क़सम हम तो इसी तरह लिखेंगे, बिना बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के सुलहनामा नहीं लिखेंगे। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अच्छा यों ही लिखो 'बि इस्मि क अल्ला हुम-म' फिर फ़र्माया यह वह सुलहनामा है जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ैसला किया है। सुहैल बोला खुदा की क़सम अगर हम आप को अल्लाह का रसूल जानते तो खाना काबा से तुमको क्यों रोकते और न तुम से मुक़ाबला करते, और तुम यों लिखो कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि खुदा की क़सम मैं खुदा का बेशक रसूल हूं अगरचे तुम लोग मुझ को झूठा समझते हो (खैर) मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ही लिखो, इस के बाद आपने फ़र्माया कि यह इस शर्त पर कि तुम खाना काबा को हमारे लिए खाली कर दो ताकि हम इसका तवाफ़ कर लें, सुहैल ने जवाब दिया कि हम इस वक़्त यह नहीं कर सकते, क्योंकि लोग हम को कहेंगे कि यह दब गए, अलबत्ता अगले साल के लिए रोक रखो। चुनांचे यह ही लिखा गया। फिर सुहैल ने कहा कि एक शर्त लिखो कि जब हम लोगों में से कोई तुम्हारे पास आए अगरचे वह तुम्हारे ही दीन पर हो, लेकिन उस को हमारे पास लौटा दिया जाएगा।

मुसलमानों ने जवाब दिया, सुब्हानल्लाह जो शख्स मुसलमान होकर आएगा हम उस को काफ़िरों में कैसे लौटा देंगे, यह ही बात हो रही थी कि अबूजुंदल बिन सुहैल बिन उमर बेड़ियां पहने हुए धीरे-धीरे मक्का की

तरफ़ से आता हुआ मालूम हुआ यहां तक कि वह मुसलमानों की जमाअत में पहुंच गया। सुहैल यह देखकर बोला कि ऐ मुहम्मद सल्ल० सब से पहली यही बात है जिस पर मैं तुम से सुलह कर रहा हूं कि अबू जुंदल को मुझे वापस दे दो। आप ने कहा अभी तो सुलहनामा पूरा भी नहीं हुआ है। उसने जवाब दिया इस के अलावा हम किसी पर सुलह ही न करेंगे, आपने फ़र्माया, भाई इस की इजाज़त दे दो। सुहैल बोला मैं उसकी तुम को इजाज़त नहीं दे सकता, आपने फ़र्माया नहीं, इस की इजाज़त दे दो उसने फिर इंकार किया। इधर यह बातचीत हो रही थी, उधर अबू जुंदल ने कहा कि ऐ मुसलमानो ! क्या मैं मुसलमान होने के बाद भी अब काफ़िरों की तरफ़ फेर दिया जाऊंगा, क्या तुम को यह नहीं मालूम कि मैंने खुदा का दीन अख्तियार करने में क्या-क्या तक्लीफ़ें उठायी हैं और मुझे कैसा-कैसा सख्त अज़ाब दिया गया है।

उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप सच्चे नबी नहीं हैं ? आपने फ़र्माया हूं। फिर मैंने अर्ज़ किया कि आप सच्चाई पर और हमारे दुश्मन झूठ पर नहीं हैं ? आपने फ़र्माया कि हैं। तो मैंने अर्ज़ किया कि हम अपने दीन में खराबी दाखिल नहीं करना चाहते, आपने फ़र्माया कि मैं खुदा का नबी हूं और उस का ना-फ़र्मान नहीं हूं और खुदा मेरी मदद करने वाला है फिर आप से अर्ज़ किया कि आपने यह नहीं फ़र्माया था कि हम खाना काबा में दाखिल होकर तवाफ़ करेंगे। आपने फ़र्माया कि हां मैंने कहा था लेकिन क्या यह भी कहा था कि इसी साल दाखिल होंगे ? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं (यह तो नहीं कहा जाता) आपने फ़र्माया कि तुम दाखिल होकर तवाफ़ करोगे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि फिर मैं हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास आया और उन से कहा कि ऐ अबूबक्र रज़ि० क्या यह अल्लाह के सच्चे नबी नहीं हैं, उन्होंने कहा कि हां, तो मैंने कहा कि हम हक़ पर और हमारे दुश्मन झूठ पर नहीं ? उन्होंने कहा कि हैं, तो मैंने कहा कि फिर हम दीन में नक्स क्यों दाखिल करें, उन्होंने जवाब दिया कि भाई वह खुदा के रसूल हैं, अपने खुदा की नाफ़र्मानी नहीं करते और वह ही उन का मददगार भी है इस लिए उन के हुक्म को मानो, क्योंकि आप खुदा की क़सम सच्चे हैं इस के बाद मैंने कहा क्या उन्होंने यह नहीं कहा था कि हम खाना काबा में दाखिल हो कर तवाफ़ करेंगे, अबूबक्र रज़ि० ने

फ़र्माया, हां, यह तो ठीक है मगर क्या हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़र्माया कि इसी साल दाख़िल होंगे और तवाफ़ करेंगे। मैंने कहा कि यह नहीं फ़र्माया था। सिद्दीक़ अक्बर रज़ि० ने कहा फिर तुम जरूर दाख़िल होंगे और ख़ाना काबा का तवाफ़ करोगे। हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल० का कहना न सुनने पर माफ़ी के लिए बहुत से अच्छे काम किए। रिवायत करने वाला कहता है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० सुलहनामा की लिखावट से फ़ारिग़ हुए तो आपने सहाबा रज़ि० से मुख़ातब होकर फ़र्माया कि उठो और सर मुंडवा कर हलाल हो जाओ और क़ुर्बानियां बाक़ायदा करो लेकिन ख़ुदा की क़सम कोई भी खड़ा न हुआ तो आप उम्मे सलमा रज़ि० के पास तश-रीफ़ ले गए और उन से सहाबा का सारा वाक़िया बयान किया। उन्होंने कहा कि अगर आप यह चाहते हैं कि यह सब आप के फ़र्मान के मुताबिक़ करें तो चुपचाप जाकर पहले अपने जानवर ज़िब्ह कीजिए और सर मुंड़-वाइए और सर मुंड़वाने वालों को बुलाइए, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए और किसी से बातचीत न की और सारा काम पूरा किया, जानवर को ज़िब्ह किया और नाई को बुला-कर सर भी मुंड़वाया, जब सहाबा रज़ि० ने यह देखा तो सब तैयार हो गए और अपने-अपने जानवर ज़िब्ह करना शुरू किए और सर भी मुंड़वाना शुरू किए यहां तक कि इतनी भीड़ हो गई कि एक दूसरे को दबाए देता था फिर कुछ औरतें मुस-लमान होकर आईं उस वक़्त यह आयतें उतरीं या अय्यहुल्लज़ी-न आमनू इज़ा जा कुमुल मोमिनात मुहाजिरात फ़म्तहिनू हुन-न हत्ता व ल-ग़ बिइस-क मल कवाफ़िर (आख़िर तक)

हज़रत उमर रज़ि० ने उस दिन अपनी दो बीवियों को तलाक़ दी जो उस वक़्त तक मुश्रिका थीं उन में से एक के साथ तो मुआविया बिन सफ़िया अबी सुफ़ियान ने निकाह कर लिया और दूसरी के साथ सफ़वान बिन उमय्या ने, उस के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना को वापस हुए तो क़ुरैश में का एक शख़्स जिसका नाम अबुल बसीर था, हुज़ूर सल्ल० के पास आया और मुसलमान हो गया। क़ुरैश ने उस के लिए दो आदमी रवाना किए और यह कहला भेजा कि अपने अह्द के मुताबिक़ उस को वापस कर दीजिए, आपने अबुल बसीर को इन दोनों शख़्सों के हवाले किया, वह दोनों उसको लेकर चले, जब ज़ुलहुलैफ़ा के क़रीब पहुंचे

तो वहां ठहर कर खजूरें खाने लगे। अबू बसीर रज़ि० ने एक से कहा कि तुम्हारी तलवार बहुत बढ़िया मालूम होती है, दूसरे ने उस को म्यान से निकाल कर कहा कि हां, बेशक बहुत अच्छी है। मैंने उस को कई बार आज़माया है। अबू बसीर रज़ि० बोले मुझे भी दिखाओ, ज़रा मैं भी देख लूं, उसने वह तलवार उन को दे दी। अबू बसीर रज़ि० ने मौक़ा पाकर एक काफ़िर की गर्दन उड़ा दी वह ठंडा हो गया और दूसरा भाग कर मदीना में वापस आ गया और दौड़ता हुआ मस्जिद नबवी में पहुंचा। खुदा के रसूल ने उस को देख कर फ़र्माया कि यह डर गया है जब वह आप के क़रीब पहुंचा तो बोला, खुदा की क़सम मेरा एक साथी तो मारा गया और मैं भी मारा जाऊंगा (अगर आपने अबू बसीर रज़ि० को न पकड़ा) इतने में अबू बसीर भी आ गए और अर्ज़ किया, ऐ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ! खुदा की क़सम अल्लाह तआला ने आप के ज़िम्मे को पूरा कर दिया क्योंकि आप मुझे इन के सुपुर्द कर चुके लेकिन फिर खुदा तआला ने मुझे उन से छुटकारा दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अफ़सोस यह लड़ाई का भड़काने वाला है, अगर मक़्तूल का कोई भी मददगार हो जाए (तो लड़ाई तैयार रखी है) जब अबू बसीर रज़ि० ने यह सुना तो समझ लिया कि फिर आप मुझ को कुफ़्फ़ार की तरफ़ वापस कर देंगे तो वहां से साहिल के मक़ाम पर आ गया। रिवायत करने वाले ने कहा कि कुफ़्फ़ारों में से अबू जुन्दल बिन सुहैल भी निकल आए और अबू बसीर रज़ि० के साथ शामिल हो गए और नौबत यहां तक पहुंची कि जो कोई काफ़िर मुसलमान होकर मक्का से निकल कर आता वह अबू बसीर रज़ि० के साथ शामिल हो जाता। इसी तरह एक पूरी जमाअत हो गई इस के बाद खुदा की क़सम क़ुरैश के किसी क़ाफ़िले की भी खबर अगर यह सुन पाते थे तो फ़ौरन उस को रोक लेते और उस का माल लूट लेते थे (जब यह सूरत हुई) तो क़ुरैश ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा और रिश्तेदारी की क़सम देकर कहला भेजा कि आप अबू बसीर रज़ि० के पास हुक्म कहला भेजिए कि वह क़ुरैश को तक्लीफ़ देने के रवैये से बाज़ आए और जो शख़्स आप के पास मक्का से पहुंचे हम उस को वापस नहीं लेंगे और वह वापसी से बे-परवाह हैं, तब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बसीर रज़ि० की जमाअत की तरफ़ यह पैग़ाम रवाना कर दिया, अल्लाह तआला ने यह

आयत उसी वाक़िए में उतारी हुवल्लज़ी कफ़रू ग्रैदी हिम (आख़िर तक) काफ़िरों की यह ज़िद थी कि ग्राप के ख़ुदा के नबी होने को नहीं मानते थे ग्रौर न बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम उन्होंने लिखने की इजाज़त दी थी ग्रौर हुज़ूरे अक़्दस को काबा जाने से रोक दिया था।

१११९. अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि अल्लाह तग्राला के निन्नानवे नाम हैं यानी एक कम सौ। जो शख़्स इनको याद करेगा जन्नत में दाख़िल होगा

बाब ४७

वसीयत के बयान में

१११२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया किसी मुसलमान को यह जायज़ नहीं कि वसीयत की चीज़ मौजूद हो ग्रौर वह वसीयत लिखे बिना दो रातें गुज़ार दे।

१११३. हज़रत अम्र बिन हारिस रज़ि० जो हुज़ूर सल्ल० के साले थे, कहते हैं कि हुज़ूर ने वफ़ात के वक़्त रुपया, अशर्फ़ी कुछ न छोड़ा ग्रौर न कोई ग़ुलाम ग्रौर न कोई लौंडी, न कोई ग्रौर चीज़, एक सफ़ेद खच्चरी ग्रौर हथियार ग्रौर ज़मीन के सिवा जिन को सदक़ा कर दिया था (जग्रलहा)

१११४. अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ा रज़ि० से पूछा गया, क्या हुज़ूर ने वसीयत फ़र्मायी थी ? उन्होंने कहा नहीं। सवाल करने वाले ने कहा कि लोगों पर कैसे वसीयत फ़र्ज़ थी ग्रौर किस चीज़ पर अमल फ़र्ज़ था। जवाब दिया अल्लाह की किताब पर अमल करने की वसीयत की थी। (क़ाल वस्सा बिकिताबिल्लाह

१११५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक शख़्स

ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन सा सद्क़ा बेहतर है ? आपने फ़र्माया वह सद्क़ा बेहतर है कि तू तन्दुरुस्ती की हालत में अदा करे और तुझको मालदारी की ख्वाहिश भी हो और फ़िक्ने से डरता हो और बहुत जल्दी अदा करे, ऐसा न हो कि जब मौत की हालत का वक़्त तेरा आ पहुंचे 'ओला तम्हिल हत्ता इज़ा बलग़तिल्हुल्क़ूम' (बुखारी स० ३८४) तो वसीयत करे कि फ़ुलां को इतना माल देना और फ़ुलां को इतना, यहां तक कि वह इस का असर ले।

१११६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं जिस वक़्त आयत 'अंज़िर अशीर-त-कलअक़र बै न' हुज़ूर पर उतरी तो आपने फ़र्माया कि ऐ क़ुरैश ! तुम अपने नफ़्सों को खरीद लो, क्योंकि मैं खुदा का अज़ाब ज़रा भी तुम से दूर नहीं कर सकता। ऐ बनू अब्द नमुाफ़ मैं तुम से खुदा का अज़ाब ज़रा सा भी दफ़ा नहीं कर सकता। ऐ अब्बास बिन अब्दुल मत्तालिब मैं तुम से भी खुदा का अज़ाब ज़रा सा भी दूर नहीं कर सकता। ऐ सफ़िया ! (रसूलुल्लाह सल्ल० की फुफी) मैं तुझ से खुदा का अज़ाब बिल्कुल दूर नहीं कर सकता। ऐ फ़ातिमा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की बेटी ! मेरे माल से जो चाहो ले लो लेकिन खुदा के अज़ाब को नहीं रोक सकता। (बुखारी, सफ़हा ३८५)

१११७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मेरे वालिद ने हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में अपनी जायदाद का आठवां हिस्सा और खजूरों का बाग़ खैरात करना चाहा, इस लिए हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! मेरे पास कुछ माल है जिसको मैं नफ़ीस ख्याल करता हूं और मैं यह चाहता हूं कि इसको खैरात कर दूं। फ़र्माया कि असल माल को वक़्फ़ कर दो कि न यह बेचा जा सके और न इस का हिबा हो सके और न इस में विरासत जारी हो। हज़रत उमर ने वक़्फ़ कर दिया। फ़ारूक़ आज़म का यह वक़्फ़ मुजाहिदीन के खर्च, गुलामों की आज़ादी, ग़रीबों और मेहमानों के और मुसाफ़िरों के और रिश्तेदारों के काम में खर्च होता था और जो उस का मुतवल्ली होता तो उस को वक़्फ़ के दस्तूर के मुताबिक़ खुद खाने या अपने ग़रीब दोस्तों को खिलाने में कोई मनाही नहीं थी।

१११८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्ल० ने फ़रमाया सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो, सहाबा रज़ि. ने अर्ज़ किया हुज़ूर सल्ल० वह सात चीज़ें कौन सी हैं ? फ़रमाया कि (१) ख़ुदा का शरीक बनाना, (२) जादू करना, (३) किसी को ज़ुल्म के तौर पर क़त्ल कर देना, क्योंकि ख़ुदा ने क़त्ल ज़ालिमाना तौर पर हराम कर दिया है, (४) सूद खाना, (५) यतीम का माल खाना, (६) जिहाद में पीठ दिखाकर भागना, (७) मुसलमान पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाना ।

१११९. अबूहुरैरह रज़ि० कहते है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरा कोई वारिस नहीं हो सकता, छोड़ा हुआ माल मेरी बीवियों के खर्च और कारिंदों की तनख्वाहों के बाद जो बाक़ी रहे वह ख़ुदा की राह में ख़ैरात है ।

११२० हज़रत उस्मान रज़ि० जिस वक़्त घेर लिए गये तो वह ऊंचाई पर चढ़ कर बाग़ियों के सामने आए और कहा कि मैं ख़ुदा की क़सम, सिर्फ़ सहाबा किराम रज़ि० को देता हूं कि तुम्हें यह मालूम नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया था कि जो शख़्स रूमा कुंआ खुदवाए वह जन्नती है, मैंने ही उसको खुदवाया, और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि जो आदमी जैशुल उसरा (तबूक की लड़ाई) का सामान ठीक करे वह जन्नती है, सो मैंने सामान दुरुस्त किया था, सो उन्होंने उसको सच बताया ।

११२१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि क़बीला बनी सह्म का एक आदमी तमीमदारी और अदी बिन बदार के साथ (सफ़र) को निकला, और वह आदमी ऐसे जगह पर मर गया जहां मुसलमान कोई न था, जब यह लोग उसका छोड़ा हुआ माल लेकर वापस आए तो उसके वारिसों ने एक चांदी का कटोरा जिस पर सोने का मुलम्मा किया हुआ था, उसमें नहीं देखा । इस वजह से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दोनों को क़सम दी फिर वह कटोरा मक्का में मिला । उनसे मालूम किया गया कि कहां से आया तो मक्का वालों ने कहा कि तमीम और अदी से ख़रीदा है तो मरने वाले के वारिसों में दो शख़्सों ने यह क़सम खायी कि हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से सच्ची है कि यह कटोरा हमारे मुतवफ़्फ़ी (मरने वाले) का है ।

बाब ४८

जिहाद के बयान में

११२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा कि हुज़ूर ! मुझको ऐसा काम बताइए जो (सवाब में) जिहाद के बराबर हो मुझको ऐसा कोई काम मालूम नहीं। फ़रमाया क्या तू इतना कर सकता है कि जब मुजाहिद निकले तो मस्जिद में जा कर नमाज़ पढ़े, इस तरीक़े पर कि कोई उसमें कमी न हो और रोज़ा बराबर रखे, इफ़्तार कभी न करे, उसने अर्ज़ किया कि इसको कौन ताक़त रख सकता है।

११२३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जब मुजाहिद का घोड़ा अपनी रस्सी में बंधा हुआ चरने के लिए चलता फिरता है, तो उसके हर क़दम पर मुजाहिद के लिए नेकियां लिखी जाती हैं। फ़युक्तबु लहू हसनात

११२४. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं हुज़ूर सल्ल० से किसी ने अर्ज़ किया कौन सा आदमी बेहतर है ? फ़रमाया कि वह मोमिन जो अपनी जान व माल से खुदा के रास्ते में जिहाद करे, उसने अर्ज़ किया फिर कौन ? फ़रमाया कि वह मोमिन जो किसी घाटी में रह कर खुदा की इबादत करे और दूसरे लोग उस की शरारत से बचे रहें।

११२५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु कहते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि खुदा के लिए जिहाद करने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे रोज़ेदार और नफ़्लें पढ़ने वाला और (इस हालत में) खुदा तआला उसके लिए जन्नत का सहारा हो जाता है।

११२५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाया हो, नमाज़ पढ़ता हो और

रमजान के रोजे रखता हो तो अल्लाह के जिम्मे है कि उसको जन्नत में दाखिल करे, अल्लाह के लिए उसने जिहाद किया हो या अपने वतन में बैठा रहा हो, लोगों ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल हम लोगों को उसकी खुशखबरी सुना दें। फ़रमाया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं और उनको अल्लाह तआला ने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो खुदा के लिए जिहाद करते हैं और उनमें से दो दर्जों के बीच इतनी दूरी है जितना कि आसमान और जमीन के दर्मियान है। जब तुम अल्लाह से जन्नत मांगो तो फ़िरदौस मांगो, क्योंकि वह ऊंचे दर्जे की जन्नत है (रिवायत करने वाले कहते हैं) कि मेरा ख्याल है कि आपने फ़रमाया कि उस के ऊपर रहमान का अर्श है और इसी फ़िरदौस से जन्नत की नहरें जारी होती हैं।

११२७. हजरत अनस बिन मालिक रजि० कहते हैं कि हुजूरे अक्रम सल्ल० ने फ़रमाया कि दिन के पहले या आखिरी हिस्से में खुदा की राह में चलना, दुनिया और उससे तमाम चीजों से बेहतर है।

११२८. हजरत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं हुजूरे अक्दस ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में कमान बराबर जगह मौजूदा दुनिया से बेहतर है और फ़रमाया कि दोपहर से पहले किसी वक़्त जिहाद के लिए चलना उन सारी चीजों से बेहतर है, जिन पर सूरज का निकलना व डूबना होता है।

११२९. हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह ने बनू सुलैम के सत्तर आदमियों को क़बीला बनू आमिर की ओर इस्लाम की तब्लीग़ करने के लिए रवाना किया, जब ये लोग (बेर मऊना) पहुंचे, तो उन से मेरे मामूं (हराम बिन लम्हान अंसारी ने कहा) कि मैं तुम में पहले जाता हूं। अगर उन लोगों ने मुझको अम्न दे दिया, उस वक़्त तक कि मैं उनको हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का पैग़ाम पहुंचाऊं, तो बहुत बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही 'चुनांचे वे आगे हो गए और उन लोगोंने उनको अम्न भी दे दिया और उन्होंने हुजूर सल्ल० की तरफ़ से इस्लाम पहुंचाना शुरू किया, लेकिन उन लोगों ने लापरवाह पाकर एक शख्स को इशारा किया। उसने पीछे से ऐसा नेजा मारा कि पार हो गया। उस वक़्त उन के मुंह से निकला अल्लाहु अक्बर खुदा की क़सम! मैं अपने मक़सद को पहुंच गया, फिर बनू आमिर उनके साथियों की तरफ़ बढ़े और उन शख्सों को भी क़त्ल कर डाला, सिर्फ़ एक लंगड़ा आदमी (काब बिन यजीद) बाक़ी रहा, क्योंकि वह पहाड़ पर चढ़

गया था। इधर हज़रत जिब्रील अलै० ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी कि वे हज़रत अपने रब से मिल गए, ख़ुदा उनसे ख़ुश हुआ और वे ख़ुदा से।

११३०. हज़रत जुन्दुब बिन सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी जिहाद के लिए तशरीफ़ ले गए थे, वहां आपकी मुबारक उंगली ज़ख़्मी होकर ख़ून से तर हो गयी, आपने उंगली को मुख़ातब होकर फ़रमाया, तू एक उंगली ही है जो ख़ून से तर हो गयी है और तक्लीफ़ तुझको पहुंची है वह ख़ुदा के रास्ते में ही पहुंची है।

११३१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, मैं उस ज़ात की क़सम खाकर कहता हूं कि जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जो शख़्स ख़ुदा के रास्ते में ज़ख़्मी हुआ, उसकी हालत को ख़ुदा अच्छी तरह जानता है। जब वह शख़्स क़ियामत के दिन आएगा तो उसके ज़ख़्मों से ख़ून बहता होगा, उसकी रंगत लाल होगी और उसमें ख़ुश्बू, मुश्क की सी होगी।

११३२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेरे चचा अनस बिन नज़्र रज़ियल्लाहु अन्हु किसी वजह से बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि ए अल्लाह के रसूल ! मैं उस लड़ाई में जो पहले मुश्रिकों से हुई, शरीक न हो सका लेकिन अब अगर अल्लाह तआला ने मुझ को तौफ़ीक़ अता फ़रमायी और मुश्रिकों से किसी लड़ाई का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो ख़ुदा तआला देख लेगा कि मैं क्या करता हूं, चुनांचे उहुद की लड़ाई का दिन आया और मुसलमान मैदान से भागे तो उन्होंने कहा ऐ अल्लाह ! मेरे साथियों ने जो काम किया है, मैं उसमें बेक़सूर हूं, यह कह कर आगे बढ़े, इतने में साद भागे हुए आये उन्हों ने साद रज़ि० से कहा कि साद ! भागते क्यों हो ? नज़्र रज़ि० के रब की क़सम! जन्नत बहुत क़रीब है और मुझे उसकी ख़ुश्बू उहुद की पहाड़ी की ओर से आ रही है। साद रज़ि० कहते हैं कि जो कुछ नज़्र रज़ि० ने किया मैं न कर सका। अनस रज़ि० का कहना है कि हमने उनके बदन पर अस्सी से कुछ ऊंचे ज़ख़्म देखे जिनमें कुछ तलवारों के थे और कुछ नेज़ों के और मक़्तूल होने के बाद जब उनको हम लोगों ने देखा तो काफ़िरों ने उनके नाक कान वग़ैरह काट डाले थे

और ऐसी हालत कर दी थी कि सिर्फ़ उंगली के जरिए पहचाने गए थे वह भी उनको उनकी बहन ने पहचाना। हमारा ख्याल यह है कि ये आयतें उनके और उन जैसे लोगों के बारे में उतरीं रिजालुन सदक़ू मा आहिदुल्लाह (आखिर तक) अनस रजि० कहते हैं कि अनस बिन नज़्र की बहन जिनका नाम रबीअ था, उन्हों ने किसी औरत का दांत तोड़ दिया था और हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने बदला लेने का हुक्म दिया था तो अनस रजि० ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ! उस खुदा की क़सम जिसने आपको सच्चाई के साथ भेजा है। रबीअ का दांत न तोड़ा जाएगा (इसके बाद) क़िसास वाले लोग तावान लेने पर मान गए और क़िसास को माफ़ कर दिया, यह देख कर हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया कि खुदा के कुछ बंदे ऐसे भी हैं कि अगर किसी बात पर खुदा की क़सम खालें तो अल्लाह तआला उसको पूरा कर देता है।

११३३. हजरत जैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं क़ुरआन शरीफ़ इकट्ठा लिखा करता था, एक दिन मुझको सूरः अह्जाब की एक आयत न मिली, जिसको मैं हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सलम से सुना करता था और आप उसको पढ़ा करते थे। बहुत खोज के बाद वह आयत हजरत खुज़ैमा अंसारी रजि० के पास मिली (यह वह शख्स है कि उनकी एक गवाही) हुजूर सल्ल० ने दो के बराबर कही थी और वह आयत यह थी- 'मिनल मुअमि नी-न रिजालुन, सदक़ू मा आहिदुल्लाह अलैहि'

११३४. हजरत बरा रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक शख्स हथियारों में लदा हुआ आया और अर्ज़ किया कि मैं पहले मुसलमान हो जाऊं या पहले जिहाद करूं और बाद को मुसलमान हो जाऊं ? आपने फ़रमाया कि पहले मुसलमान हो जा और बाद को जिहाद करना। वह आदमी मुसलमान हो गया और फिर जिहाद में शरीक होकर शहीद हो गया। आपने फ़रमाया कि उस आदमी ने अमल तो थोड़ा सा किया लेकिन ज्यादा अज्र पाया। अमल क़लीलनव अजरन कसीर (आखिर तक)

११३५. हजरत अनस बिन मालिक रजि० कहते हैं कि उम्मे रबीअ बिन्त बराने जो हारिसा बिन सुराक़ा रजि० की मां थीं नबी सल्ल० की खिदमत में हाजिर हो कर अर्ज किया कि ए रसूलुल्लाह सल्ल० ! मुझे

हारिसा रज़ि० का कुछ हाल बताइए जिनको बद्र की लड़ाई में तीर लग गया था और शहीद हो गये थे, अगर वह जन्नत में हैं तो मैं सब्र करूं, वरना दिल भर खून रोऊं। आपने फ़रमाया कि ऐ हारिसा की मां ? जन्नत के बहुत से दर्जे हैं और तुम्हारा बेटा उन सब दर्जों में से जो ऊंचे दर्जे की जन्नतुल फ़िर्दौस है, उस में है (तुम फ़िक्र न करो) व इन्नहू-ल असाबल फ़िर्दौसल आला।

११३६. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और अर्ज़ किया, ए अल्लाह के रसूल! (लड़ने वाले कई तरह के हैं) कुछ वह हैं जो माल हासिल करने के लिए लड़ते हैं और कुछ वह हैं जो नाम पैदा करने के लिए लड़ते हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपनी बहादुरी दिखाने के लिए लड़ते हैं। लेकिन उनमें से वह कौन है जिस को 'मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला) कहा जाए। आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स इसलिए जंग करे कि खुदा का बोल बाला हो तो वह मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह कहलाएगा।

११३७. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० खन्दक़ की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए और अपने हथियार खोल कर गुस्ल कर चुके, तो हज़रत जिब्रील तशरीफ़ लाए। उस वक़्त उन का सर गर्द से भरा हुआ था और कहने लगे, आपने तो हथियार उतार कर रख दिए, लेकिन मैंने अभी तक अलग नहीं किए। आपने फ़र्माया कि (अब) कहां का इरादा है ? हज़रत जिब्रील ने बनी क़ुरैज़ा की तरफ़ इशारा कर के कहा कि इधर। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर सल्ल० फिर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ तशरीफ़ ले गए।

११३८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला दो शख़्सों की हालत पर खुश्नूदी ज़ाहिर करता है, वह दोनों आपस में लड़ते हैं एक 'फ़ी सबीलिल्लाह' लड़ कर शहीद हो जाता है और दूसरा बाद को तौबा कर के और (मुसलमान होकर) शहीद हो जाता है।

११३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में खैबर की जीत के बाद हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मुझे कुछ दीजिए। (उस वक़्त) आस के बेटे ने कहा कि हज़रत उन्हें न दीजिए।

मैंने कहा यह इब्न नोफ़ुल का क़ातिल है (उसको सुन कर) साद बिन आस के बेटे ने कहा कि बड़े ताज्जुब की बात है कि बिबर यानी ऐसा शख्स जो ह्र को बकरी के बालों की तरह लिपटा रहता है और जान की किसी पहाड़ी की घाटी में से निकल आया है हम पर ऐसे मुसलमान मर्द के क़त्ल का ऐब लगाता है जिस को खुदा ने मेरे हाथों से इज्जत दी और मुझे उस के हाथों से बे-इज्जत नहीं कराया।

११४०. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अबू तल्हा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में जिहाद की वजह से रोज़ा नहीं रखते थे और हुज़ूर सल्ल० के ज़माने के बाद हमने देखा कि आप इदुलफ़ित्र और इदुल अज़्हा के सिवा नाग़ा ही नहीं करते थे।

११४१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, शहीद पांच तरह के होते हैं, (१) जो मुसलमान ताऊन से मरता है, (२) और जो शख्स पेट के मर्ज़ में मर जाए, (३) और जो डूब कर मर जाए, (४) और जो दब कर मर जाए, (५) और जो खुदा की राह में शहीद हो जाए।

११४२. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्माते थे कि एक बार हुज़ूर सल्ल० मुझ को यह आयत लिखा रहे थे 'ला यस्तविल्क़ाअिदू-न मिनल मुअ्मिनीन' (आख़िर तक) कि अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अगर जिहाद करने की ताक़त रखता तो ज़रूर जिहाद करता। यह (अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम) अंधे थे और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० की रान मेरी रान पर रखी हुई थी फ़ौरन ही इतना बोझ मेरी रान पर हो गया कि मुझे यह डर होने लगा कि मेरी रान कहीं फट न जाए, लेकिन थोड़ी देर के बाद यह हालत जाती रही और यह आयत उतरी (ग़ैर-उलिज़्ज़रर)

११४३. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० खंदक़ के दिनों में (मुलाहज़ा) के लिए तशरीफ़ ले गए, और मुहाजिरीन अंसार को देखा कि सुबह के ठंडे वक़्त में खोदने में लगे हुए हैं क्योंकि उस ज़माने में उन के पास ग़ुलाम न थे कि वह उनके बजाए काम करते, आपने यह मेहनत और तकलीफ़ उन लोगों की देख कर फ़र्माया कि ऐ खुदा ! ज़िंदगी आख़िरत ही की ज़िंदगी है, तू अंसार और मुहाजिरीन को बख्श

दे। इस पर उन लोगों ने जवाब दिया कि वह हम लोग हैं जिन्होंने मुहम्मद की बैअत इस शर्त पर की है कि जब तक ज़िंदा रहेंगे, जिहाद करेंगे, नहनुल्लज़ी-न बा य ऊ मुहम्म-द अल ल जिहादि मा यक़ीनन अबदा।

११४४. हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने देखा अह्ज़ाब के दिनों में हुज़ूर सल्ल० मिट्टी उठाते जाते थे, जिस से शिक़म मुबारक गर्द से भर गया था और यह फ़र्माते जाते थे।

ऐ ख़ुदा ! तेरी मदद न होती तो हम हिदायत न पाते और न सद्क़ा देते और न नमाज़ पढ़ते, हम पर सुकून और अम्न नाज़िल फ़र्मा और दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त हमारे क़दम साबित रख, यक़ीनी तौर पर इन काफ़िरों ने हम पर ज़ुल्म किया है, जब ये किसी बुराई का इरादा करते हैं, तो हम इस को दूर करते हैं।

११४५. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत एक बार किसी लड़ाई के लिए सफ़र कर रहे थे, तो आपने फ़र्माया कि कुछ लोग ऐसे हैं जो शामिल होने से रह गए हैं। लेकिन जब हम किसी घाटी या किसी जंगल में गुज़रते हैं (और मेहनत करते हैं) इस के सवाब में वह लोग भी हमारे शरीक होते हैं क्योंकि वह मजबूरी की वजह से रुक गए हैं।

११४६. हज़रत अबी सईद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माते हैं, जो शख़्स ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए रोज़ा रखता है उस को अल्लाह तआला आग से सत्तर साल के रास्ते पर दूर कर देगा।

११४७. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया जिसने मुजाहिद को (जिहाद के लिए) सामान दिया तो गोया उसने जिहाद किया और जो शख़्स ग़ाज़ी का ख़लीफ़ा बना तो गोया उसने ख़ुद भी जिहाद किया।

११४८. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में किसी के घर में न जाते थे मगर या तो उम्मे सुलैम रज़ि० के घर में या अपनी बीवियों के घर में, आप से इस की वजह पूछी गयी तो आपने फ़र्माया कि मैं उस पर रहम करता हूं क्योंकि उस का भाई मेरे साथ क़त्ल हो चुका है।

११४९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैं यमामा के दिन साबित बिन क़ैस रज़ि० के पास आया। साबित रज़ि० अपनी दोनों रानें खोले

हुए सवारी पर खुश्बू लगा रहे थे। मैंने कहा, चचा लड़ाई में शरीक होने से आप को क्या मजबूरी है, फ़र्माया भतीजे! चलता हूं। इस के बाद आप खुश्बू फिर लगाने लगे और आकर बैठ गए, फिर लोगों के भागने का ज़िक्र करने लगे और कहने लगे कि हमारे सामने कुफ़्फ़ार इसी तरीक़े से होते थे यहां तक कि हमारी जमाअत उन से लड़ती थी। हम ऐसा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ न करते थे, तुम्हारे लोगों ने तुम को बिगाड़ दिया।

११५०. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अह्ज़ाब की लड़ाई के दिन फ़र्माया, काफ़िरों की ख़बर मुझ को कौन ला के देगा, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० बोले, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! 'मैं'। फिर आपने यही फ़र्माया हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने फिर कहा कि मैं, उस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हर नबी का एक मुख्लिस मददगार होता है और मेरा मददगार ज़ुबैर रज़ि० है।

११५१. हज़रत उरवह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि घोड़ों की पेशानियों में क़ियामत तक के लिए बेहतरी ज़रूरी कर दी गयी, एक अज्र, दूसरे ग़नीमत (लूटा हुआ माल)।

११५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि जिसने जिहाद की तैयारी के लिए घोड़ा बांध रखा, शर्त यह है कि ख़ुदा पर और उसके वायदे पर ईमान लाया हो, तो उस घोड़े का पेट भरना और पानी से सेराब होना और उस की लीद और पेशाब क़ियामत के दिन तराज़ू में तुलेंगे (यानी नेकियों में गिनेजाएंगे।)

११५३. हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हमारे बाग़ में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक घोड़ा था जिस का नाम लख़ीफ़ था।

११५४. हज़रत मुआज रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के पीछे गधे पर सवार था, जिसका नाम उफ़ैर था, आपने फ़र्माया, मुआज (रज़ि० !) तुम को मालूम है कि ख़ुदा का बन्दों पर क्या हक़ है ? और फिर पहली हदीस बयान फ़र्मायी कि अल्लाह

का हक़ बन्दों पर यह है कि उस की इबादत करें और उस के साथ किसी को शरीक न करें और बन्दों का हक़ अल्लाह पर यह है कि जो शख्स उस के साथ किसी को शरीक न करता हो उस को अज़ाब न करे। (आखिर तक)

११५५. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीने में कोई खटका मालूम हुआ तो आपने हमारा घोड़ा जिस का नाम मंदूब था, मांगा (और जब सवार होकर तलाश कर चुके) तो फ़र्माया कि हम को कोई बात मालूम न हुई, यह घोड़ा दरिया की तरह हल्का और तेज़ रफ़्तार है।

११५६. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अगर नहूसत होती, तो तीन चीज़ों में होती, घोड़ा, औरत और मकान।

११५७. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घोड़े के लिए दो हिस्से और सवार के लिए एक (ग़नीमत के माल में) तै फ़रमाया था।

११५८. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि मुझ से एक आदमी ने कहा, क्या तुम हुनैन के दिन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को छोड़ कर भाग गए थे, हुज़ूर वाला तो नहीं भागे थे। बात यह थी कि हवाज़िन क़ौम बड़ी तीरन्दाज़ थी। जब हमने उन पर हमला किया और हार गए तो मुसलमानों ने ग़नीमत का माल लूटना शुरू किया, उन लोगों ने तीरों से हमारा सामना किया लेकिन मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को देखता रहा कि आप अपनी सफ़ेद खच्चरी पर सवार हैं और अबू सुफ़ियान उस की लगाम पकड़े हुए हैं, और हुज़ूर सल्ल० यह फ़र्माते जाते हैं, झूठा नबी नहीं हूं, मैं अब्दुल मत्तलिब का बेटा हूं।

११५९. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक ऊंटनी थी जिस का नाम अज़बा था, कभी पीछे न रहती थी। इत्तिफ़ाक़ से एक देहाती एक जवान ऊंट पर आया और आपकी ऊंटनी से आगे निकल गया, सहाबा रज़ि० को यह बहुत नागवार गुज़रा और इस नागवारी को हुज़ूर सल्ल० भी समझ गए और आपने फ़र्माया कि अल्लाह को यह हक़ है कि दुनिया की जो चीज़ बुलन्द हो उस को कभी नीचा कर दे।

११६०. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्माते हैं कि एक बार मैंने मदीना की औरतों को चादरें बांटीं और एक अच्छी चादर बाक़ी रह गयी, एक आदमी ने मुझ से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यह अपनी बीवी यानी रसूलुल्लाह सल्ल० की बेटी (नवासी) उम्मे कुलसूम को दीजिए। यह हज़रत अली रज़ि० की बेटी थीं। यह सुन कर मैंने जवाब दिया उम्मे सुलैत रज़ि० उन से ज़्यादा की हक़दार हैं और उम्मे सुलैत अंसारिया रज़ि० नहीं, उन्हों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से बैअत की थी और उहुद की लड़ाई में हम लोगों के लिए पानी का मश-कीज़ा लिए फिरती थीं।

११६१. रुबीअ बिन्त मुअव्वज़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहती हैं कि हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद किया करते थे, (वह यह कि) अपनी क़ौम को पानी पिलाते थे और उन की ख़िदमत करते थे और शहीदों और ज़ख़्मियों को मदीना वापस लाते थे।

११६२. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु कहती हैं कि एक रात नबी सल्ल० जागते रहे, जब मदीना में तशरीफ़ लाए तो आपने फ़र्माया कि हमारे सहाबा रज़ि० में से आज की रात कोई मेरी पासबानी करता। इस के बाद हमने हथियारों की (झन-झन) की आवाज़ सुनी, फ़र्माया कौन शख़्स है ? जवाब मिला कि साद बिन वक़्क़ास रज़ि० हूं। आप की हिफ़ा-ज़त करने आया हूं, इस के बाद आप सो गए।

११६३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, दिरहम व दीनार और लिबास के चाहने वाले ख़ुदा करे हलाक हो जाएं, क्योंकि (ये ऐसे लोग हैं) कि अगर इन को मिल जाए तो ख़ुश होते हैं और अगर न मिले तो नाराज़ हैं। ख़ुदा करे यह हलाक हों और औंधे गिर पड़ें। अगर कांटा लग जाए तो कोई न निकाले और उन लोगों के लिए ख़ुशी है जिन्हों ने जिहाद के घोड़े की बाग पकड़ी है। उन का सर परागन्दा और पांव (चलने की वजह से) मिट्टी से भरा हुआ है। अगर उन को लश्कर का मुक़द्दमतुल जैश बना दिया गया है तो वह ही बने रहे और मुअख़्ख़िरुल जैश बनाया गया तो उसी के हो रहे (इस हद तक कि) अगर कहीं जाने की इजाज़त मांगें तो न मिले और अगर किसी की सिफ़ारिश करें तो क़ुबूल न की जाए।

११६४. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं नबी सल्ल० के साथ ख़ैबर को हुज़ूर सल्ल० का ख़ादिम बन कर गया, जब आप वहां से लौट कर आए और उहद का पहाड़ दिखाई दिया तो आपने फ़र्माया कि यह वह पहाड़ है कि हम इसको दोस्त रखते हैं और यह हमको दोस्त रखता है।

११६५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हम एक सफ़र में नबी सल्ल० के साथ थे और हम लोगों में से साए में वही शख़्स था, जिसने अपनी चादर का साया कर लिया था और कुछ लोग रोज़ेदार भी थे तो जो लोग रोज़ेदार थे उन से कोई काम न हो सका और जो बिना रोज़े वाले थे उन्होंने सारे काम ऊंटों और रोज़ेदारों के पूरे किए, इस को देख कर हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि आज ग़ैर रोज़ेदारों से सवाब में बढ़ गए।

११६६. हज़रत सुहैल बिन साद अस्साइदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि किसी शख़्स का ख़ुदा की राह में पासबानी करना दुनिया और उस में जो कुछ है, उस से बेहतर है और जो शख़्स ख़ुदा के लिए सुबह व शाम रास्ता चले वह दुनिया व उस की चीज़ों से बेहतर है।

११६७. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम्हारी जो कुछ मदद की जाती है या तुम को अल्लाह तआला रिज़्क़ देता है वह तुम को कमज़ोर लोगों के तुफ़ैल मिलता है।

११६८. हज़रत अबूसईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि लोग आपस में जिहाद करेंगे और उन से पूछा जाएगा कि तुम में से कोई रसूलुल्लाह सल्ल० की सोहबत वाला है उस को जवाब दिया जाएगा कि है तो, उस के ज़रिए से दुआ मांगी जाएगी तो उस की जीत होगी, फिर एक और ज़माना आएगा कि उस में पूछा जाएगा कि तुम में कोई ऐसा शख़्स भी है जिसने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के सहाबा की सोहबत हासिल की हो, जवाब दिया जाएगा कि है तो उसके हाथ पर फ़तह होगी, फिर एक ज़माना आएगा कि उस में पूछा जाएगा तुम में से कोई ऐसा शख़्स है जिसने सहाबा रज़ि० के देखने वालों को भी देखा हो, जवाब दिया जाएगा कि है, तो उस के तुफ़ैल में फ़तह होगी।

११६९. हज़रत अबुल वलीद रज़ि० कहते हैं कि बद्र के दिन जब हम कुफ़्फ़ार के सामने सफ़बंदी कर रहे थे और वह हमारे सामने थे, तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब ये लोग तुम्हारे नज़दीक आ जाएं तो उन पर तीर बरसाना।

११७०. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि बनू नज़ीर का माल उन मालों में से था जिस को अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिए ग़नीमत क़रार दिया था और घोड़ों और ऊंटों के बग़ैर पामाल किए हुए हासिल हुआ था, इस लिए यह माल हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ास था, आप उस में से अपने घर वालों को एक साल का ख़र्च देते थे और जो कुछ बचता तो उस से घोड़े और हथियार ख़रीद कर जिहाद के लिए सामान की तैयारी करते।

११७१. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने साद रज़ि० के अलावा किसी को नहीं देखा कि उस पर हुज़ूर सल्ल० ने अपने मां-बाप क़ुर्बान किए हों, उन ही से आप फ़रमाते थे कि साद रज़ि० तीर मार, मुझ पर मेरे मां-बाप क़ुर्बान हों।

११७२. हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० ने बहुत सी फ़ुतूहात कीं, लेकिन किसी की तलवार पर सोना या चांदी का मुलम्मा न था, बल्कि उन का ज़ेवर सिर्फ़ रांगा या सीसा और लोहा होता था।

११७३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि (एक बार) हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में यह फ़रमाते थे कि ऐ ख़ुदा। मैं तुझे तेरे अह्द और वायदे की क़सम देता हूं, ऐ ख़ुदा ! अगर तेरी यही मर्ज़ी है कि आज के बाद तेरी इबादत न हो कि, इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हाथ पकड़ कर अर्ज़ किया बस, ए अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको यही काफ़ी है कि आपने अपने ख़ुदा से गिड़गिड़ा कर दुआ की। आंहज़रत सल्ल० ज़िरह पहने हुए थे और कहते हुए बाहर निकले कि जल्द ही (कुफ़्फ़ार) की जमाअत की हार होगी, और पीछे को भाग जायेंगे, फिर उनके लिए तै की हुई धमकी क़ियामत के दिन आएगी और क़ियामत का अज़ाब बहुत तल्ख़ और सख़्त है और एक रिवायत में है कि यह वाक़िया बद्र की जंग का है।

११७४. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु और ज़ुबेर रज़ियल्लाहु अन्हु को खारिश की वजह से रेशम की क़मीज़ की इजाज़त दे दी थी।

११७५. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उन ही दोनों लोगों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से जूओं की शिकायत की तो आपने उनको रेशम की (क़मीज़ वग़ैरह) की इजाज़त दे दी थी।

११७६. हज़रत उम्मे हराम रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने फ़रमाया, मेरी उम्मत में से जो शख्स दरियाई जिहाद करेगा, तो अपने लिए जन्नत वाजिब कर लेगा, (यह सुनकर) मैंने अर्ज़ किया ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० मैं भी उन ही लोगों में से हूं ? फ़रमाया कि हां तुम भी हो। फिर आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत का जो लश्कर क़ैसर से जिहाद करेगा उन को बख्श दिया जाएगा। मैंने अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! मैं भी उनमें शरीक हो जाऊंगी ? फ़रमाया नहीं।

११७७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारी लड़ाई यहूदियों से इस तरह होगी कि अगर कोई यहूदी पत्थर के पीछे छिपा होगा तो वह पत्थर तुमको बता देगा कि ऐ खुदा के बंदे ! यह यहूदी यहां छिपा हुआ है उसको क़त्ल कर दे और एक रिवायत में है कि क़ियामत उस वक़्त ही क़ायम होगी जब तुम यहूदी से लड़ोगे।

११७८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त होगी जिस वक़्त तुम्हारी तुर्कों से जंग होगी, जिनकी छोटी छोटी आंखें होंगी, लाल चेहरे होंगे, नाकें बैठी हुई होंगी, गोया उन के चेहरे ढालों जैसे होंगे और क़िया- मत ऐसे वक़्त क़ायम होगी कि जब तुम ऐसे लोगों से लड़ो, जिनके जूते बालों के होंगे।

११७९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ऊफ़ी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अह्ज़ाब की लड़ाई में मुश्रिकों के लिए बद-दुआ की और फ़रमाया कि ऐ किताब नाज़िल करने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले, कुफ़्फ़ार को शिकस्त देने वाले खुदा ! इनको शिकस्त दे और मैदान से उनके पांव उखाड़ दे।

११८०. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि नबी की ख़िदमत में यहूदियों ने हाज़िर होकर कहा अस्सलामु अलैक। मैंने यह सुनकर लानत की। आपने फ़रमाया आइशा रज़ि०! यह क्या हरकत है, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! आपने नहीं सुना उन्होंने क्या कहा आपने फ़रमाया (आइशा रज़ि०!) तूने मेरा जवाब नहीं सुना कि मैंने क्या जवाब दिया, मैंने भी अलैकुम कह दिया।

११८१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि तुफ़ैल बिन उमर और उस के साथी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इस क़ौम ने नाफ़रमानी भी की और ईमान लाने से इन्कार किया। आप उनके लिए बद दुआ कीजिए। एक आदमी बोला ख़ुदा करे दौस तबाह हों। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ ख़ुदा! क़ौम दौस को हिदायत कर और सच्चाई की तरफ़ ला।

११८२. हज़रत सुहैल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ैबर के दिन सुना, हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते थे कि आज मैं झंडा ऐसे शख़्स को दूंगा जिसके हाथ पर ख़ुदा फ़तह कर देगा। (इसको सुनकर) सारे सहाबा रज़ि० इन्तिज़ार में थे कि देखिए किस को झंडा दिया जाए। जब सुबह को हाज़िर हुए, हर एक की यही ख़्वाहिश थी कि हमको मिले। इतने में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अली कहां हैं? लोगों ने अर्ज़ किया कि उनकी आंखें दुखने की शिकायत है। हुक्म के मुताबिक़ हज़रत अली रज़ि० को बुलाया गया। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को आंखों में लुआब मुबारक लगाया फ़ौरन आंखें ऐसी अच्छी हो गयीं कि कभी दुखी ही नहीं थीं, (इसके बाद) हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया कि क्या ख़ैबर के लोगों से इतना लड़ूं कि वह हमारी तरह हो जाए? रसूले मक़्बूल सल्ल० ने फ़रमाया कि ज़रा ठहरो, जिस वक़्त तुम उन के सामने मैदान में पहुंचो, तो पहले उनको इस्लाम की दावत दो और सभी वाजिब बातों की ख़बर कर दो कि तुम पर फ़्लां फ़्लां बात करनी ज़रूरी है, क्योंकि ख़ुदा की क़सम! उनमें सिर्फ़ एक शख़्स का तुम्हारी बातों की वजह से हिदायत पाना तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।

११८३. हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० अलैहि व सल्लम जब किसी सफ़र का इरादा करते, तो जुमेरात के अलावा दूसरे दिनों में कम तश्रीफ़ ले जाया करते हैं।

११८४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने (एक बार) हम को किसी लश्कर में रवाना किया और हमसे फ़रमाया जब तुम क़ुरैश के फ़्लां फ़्लां आदमियों को पाओ तो उनको आग से जला देना। अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि फिर हम लोग विदा होने के वक़्त हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उस वक़्त आपने फ़रमाया, मैंने तुम से कहा था कि अगर फ़्लां शख़्स तुमको मिले तो आग से जला न देना क्योंकि आग से अज़ाब देना ख़ुदा के सिवा दूसरे के लिए जायज़ नहीं (इस वजह से) उनको क़त्ल कर देना।

११८५. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत रसूलुल्लाहु सल्ल० ने फ़रमाया, हाकिम के हुक्म को सुनकर उस पर अमल करना वाजिब है, शर्त यह है किसी गुनाह का हुक्म न हो और अगर किसी गुनाह का हुक्म दिया जाए तो न उसका सुनना जायज़ और न इता-अत ज़रूरी है।

११८६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हम हैं तो बाद वाले लेकिन (क़ियामत के दिन) सबसे आगे होंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने मेरी इताअत की, उसने ख़ुदा की इताअत की और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की, उसने ख़ुदा की नाफ़रमानी की और जो शख़्स अपने हाकिम की ताबेदारी करता है वह मेरा हुक्म मानता है और जो शख़्स हाकिम की नाफ़रमानी करता है वह मेरी नाफ़रमानी करता है, क्योंकि हाकिम एक ढाल है उस के साए में लड़ा जाता और इसकी वजह से बचत होती है। अगर वह ख़ुदा से डरने का हुक्म दे और इंसाफ़ के साथ हुक्म करे तो उस को सवाब मिलेगा और अगर उसने नाफ़रमानी का हुक्म दिया तो उसका वबाल उसकी गरदन पर होगा।

११८७. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब अगले साल उस पेड़ की जगह पर आए जहां हम से बैअत ली गयी थी, तो उसको कोई न नुक़सान पहुंचा सका (वह ग़ायब हो गया) और उसका ग़ायब हो जाना एक रहमत का। हम से पूछा गया कि किस चीज़ के बारे

में बैअत की गयी थी ? क्या मौत के बारे में ? मैंने कहा कि नहीं बल्कि जिहाद में जमे रहने पर।

११८८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जैद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब हुर्रा की लड़ाई का मौक़ा आया तो मेरे पास एक शख्स आया और उसने कहा कि इब्ने हन्ज़ला लोगों से मौत की बैअत ले रहा है। मैंने जवाब दिया कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह के बाद मौत पर मैं किसी से बैअत नहीं करूंगा।

११८९. हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० रिवायत करते हैं कि मैंने नबी से बैअत की और फिर एक पेड़ के साए में गया, यहां तक कि जब लोगों की भीड़ कुछ कम हो गयी तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया, इब्ने अक्वअ तुम बैअत नहीं करोगे ? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं तो कर चुका। फ़र्माया फिर कर लो। मैंने दोबारा बैअत कर ली। सलमा रज़ि० से पूछा गया कि इस वक़्त तुम किस चीज़ पर बैअत कर रहे थे, जवाब दिया मौत पर।

११९०. हज़रत मुजाशेअ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं और मेरा भाई हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए और हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! हम से हिजरत पर बैअत ले लीजिए। फ़र्माया हिजरत का ज़माना गुज़र चुका। हमने अर्ज़ किया कि फिर किस चीज़ पर बैअत लेंगे, फ़र्माया इस्लाम और जिहाद पर।

११९१. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार मुझ से एक शख्स ने आकर सवाल किया कि मैं उस के जवाब से लाजवाब हो गया। उसने पूछा क्या एक हाकिम हथियारबंद हमारे साथ खुशी-खुशी जिहाद को निकले और हम पर ऐसी बातों में सख्ती करे जिस की हम ताक़त नहीं रखते हैं (तो क्या हम उस की इताअत करें ?) मैंने कहा खुदा की क़सम तेरी बात का जवाब मुझ से कुछ नहीं बन आता, इस के सिवा कि जब हम लोग हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ किसी जिहाद में जाते तो आप हम को एक बार हुक्म फ़र्माते जिस को हम सुन लिया करते थे और तुम में से वह शख्स बेहतरी पर होगा जो खुदा तआला से डरता है और अगर उस के दिल में किसी बात का खटका पैदा हो तो किसी दूसरे से पूछ लिया करे ताकि वह शख्स उस को इत्मीनान बख्श जवाब दे दे लेकिन तुम को ऐसा शख्स नहीं मिलेगा खुदा की क़सम !

दुनिया का बस उतना हिस्सा बाक़ी रह गया जिस तरह उस तालाब का पानी जो साफ़ था पी गया और गदला बाक़ी रह गया।

११६२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उफ़ी रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला कर रहे थे और इतनी देर हो गयी थी कि सूरज ढल गया और फिर खड़े होकर आप ने फ़र्माया कि दुश्मन से मुक़ाबला करते में तुम लोग जल्दी न करो, बल्कि अल्लाह तआला से आफ़ियत मांगो और मुक़ाबले के वक़्त सब्र से काम लो, क्योंकि जन्नत तलवारों के साए के नीचे है।

११६३. हज़रत याली बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने एक मज़दूर रखा, उसने एक और शख़्स से लड़ाई की और उसके हाथ में काट लिया। उसने अपना हाथ उस के मुंह से निकाल कर झटका दिया, जिस से उस के दांत टूट गए। यह मज़दूर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने उस के दांतों को बिल्कुल बदला न दिलवाया और फ़र्माया कि क्या वह अपना हाथ तेरे मुंह में रहने देता कि तू उस को ऊंट की तरह चबा लेता।

११६४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से कहा कि तुमको हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने उस जगह पर झंडा गाड़ने का हुक्म दिया था।

११६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मुझ को कलाम और मुकम्मल अख़्लाक़ अता किए गए हैं और रौब व जलाल देकर मेरी मदद की गई है। एक बार जबकि मैं सो रहा था, सारी ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां मेरे हाथ में रख दी गयीं। अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो तशरीफ़ ले गए लेकिन तुम लोग इसी को चाहते हो।

११६६. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जिस वक़्त नबी सल्ल० ने मदीना की हिजरत का इरादा किया तो मैंने आप को सफ़र के लिए खाना तैयार किया। उस के बांधने के लिए मुझको कोई चीज़ नहीं मिली, सिर्फ़ मेरा एक कमरबंद था। मैंने सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० से अर्ज़ किया कि खाना बांधने की कोई चीज मुझ को नहीं मिली अपने कमरबंद के सिवा। फ़र्माया, उस के दो टुकड़े कर डालो, एक

में खाना बांध दो और दूसरे से पानी का मश्कीज़ा बांध दो। इसी वजह से हज़रत अस्मा का 'ज़ूनताक़तैन' हो गया (यानी दो कमरबंद वाली) हो गया।

११९७. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक गधे पर सवार हुए, जिस की पीठ पर काठी खिंची हुई थी और उस काठी पर एक चादर थी और अपने पीछे मुझ को बिठला दिया था।

११९८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की जीत के दिन मक्का के ऊपरी तरफ़ से तशरीफ़ लाए। उस वक़्त आपके पीछे सवारी पर उसामा बिन ज़ैद सवार थे और साथ में बिलाल रज़ि० और उस्मान बिन तलहा रज़ि० काबा के दरबानों में से थे। आप की सवारी मस्जिद में बिठायी गयी और आपने हुक्म किया कि मक्का की कुंजियां लाओ, फिर उस को खोल कर अन्दर दाखिल हुए और बाक़ी हदीस आ चुकी।

११९९. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरआन मजीद को साथ लेकर दुश्मन की ज़मीन में ले जाने से मना फ़रमाया।

११२०. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि हम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके साथ थे जब किसी ऊंची जगह पर चढ़ते तो ऊंची आवाज़ के साथ ला इला-ह इल्लल्लाहु और अल्लाहु अक्बर कहते। आपने सुन कर फ़रमाया कि लोगो! धीरे से कहो, क्योंकि तुम किसी बहरे को नहीं पुकारते हो और न किसी ग़ायब को, बल्कि सुनने वाला तुम्हारे साथ है और तुम से क़रीब है।

१२०१. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जब हम किसी ऊंची जगह पर चढ़ते तो तक्बीर कहते और किसी जगह से उतरते तो तस्बीह पढ़ते।

१२०२ हज़रत अबूमूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई बंदा मरीज़ होता है या सफ़र में जाता है तो उस के अच्छे आमाल उसी तरह लिखे जाते हैं, जिस तरह हालते सेहत और किसी जगह ठहरने के वक़्त किया करता था।

१२०३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि अगर कोई सवार अकेला चलने के (नुक़सान) को जानता, जो मैं जानता हूं तो कभी रात में अकेले सफ़र न करना।

१२०४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने आकर नबी सल्ल० से जिहाद की इजाज़त चाही। आपने फ़र्माया कि क्या तुम्हारे मां-बाप ज़िंदा हैं। उसने अर्ज़ किया, जी हां। फ़र्माया, उन ही की ख़िद्मत की तक्लीफ़ बर्दाश्त करो।

१२०५. हज़रत अबू बशीर अंसारी रज़ि० कहते हैं कि मैं किसी सफ़र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ था, लोग रात गुज़ारने में लगे थे कि आपने एक क़ासिद इस लिए रवाना किया कि किसी ऊंट की गर्दन में तांत का हार बाक़ी न रहे, सब को तोड़ देना चाहिए।

१२०६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, कोई ग़ैर-महरम मर्द और औरत एक जगह अकेले न हों और औरत को बिना महरम के सफ़र नहीं करना चाहिए, (यह सुन कर) एक शख़्स खड़ा हुआ और अर्ज़ किया कि ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरा फ़लां फ़लां जिहाद में नाम लिखा हुआ है और मेरी बीवी हज के लिए जाने का इरादा कर रही है। फ़र्माया, तू अपनी बीवी के साथ जाकर हज कर।

१२०७. हज़रत साब बिन जुसामा रज़ि० कहते कि मैं अबवा नामी जगह या वद्दान नामी जगह में था कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का उधर से गुज़र हुआ। हुज़ूर सल्ल० से पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अगर कुफ़्फ़ार पर शब ख़ून मारा जाए और उन की बीवी-बच्चे क़त्ल हो जाएं तो यह क्या गुनाह है? फ़र्माया, इस हालत में उन ही में से हैं काफ़िरों के बच्चे भी। इस के बाद फ़र्माया कि अहाता (चारागाह) ख़ुदा और उस के रसूल हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के लिए है।

१२०८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि किसी जिहाद में एक औरत क़त्ल की हुई पाई गयी तो आपने औरतों और बच्चों का क़त्ल करना मुनासिब ख़्याल नहीं फ़र्माया।

१२०९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को जब यह ख़बर पहुंची कि हज़रत अली रज़ि० ने किसी क़ौम को आग से जलाया है तो आपने फ़र्माया कि अगर मैं उन की जगह होता तो आग से अज़ाब न देता, इस लिए कि

नबी सल्ल० ने फ़र्माया है कि ख़ुदा का ख़ास अज़ाब किसी को न दो बल्कि मैं उन को क़त्ल कर देता। रसूलुल्लाह सल्ल० के फ़र्मान के मुताबिक़ अगर कोई शख़्स अपने दीन को बदल दे तो उस को क़त्ल कर डालो।

१२१०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि किसी नबी को एक चूंटी ने काट लिया था। उन्होंने चूंटियों का एक दल का दल जला दिया। अल्लाह तआला ने वह्य भेजी कि तुमको चूंटी ने काट ही लिया लेकिन तुमने चूंटियों का एक जत्था जला दिया जो हमारी तस्बीह बयान करता था।

१२११. हज़रत जरीर रज़ि० कहते हैं कि मुझ से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम ज़ुलख़ुलैफ़ा की जगह को गिरा करके मुझे इत्मीनान दिलाओ तो बेहतर है। यह असल में ख़स्अम क़बीले का एक मकान था जिस का नाम काबा यमानिया था। जरीर रज़ि० कहते हैं कि मैं एक सौ पचास सवार क़बीला अहमस के लेकर चल दिया। ये लोग घोड़ों पर सवार होने के मश्शाक़ थे और मैं घोड़े पर ठहर नहीं सकता था। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे सीने पर इस ज़ोर से हाथ मारा कि आपकी उंगलियों के निशान मेरे सीने पर बन गए और फ़र्माया इलाही, इस को क़ायम रख और हिदायत पाया हुआ रहबर बना, इस के बाद हम लोग चल दिए और ज़ुलख़ुलैफ़ा को जाकर तोड़ डाला और यह ख़बर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास भेज दी। क़ासिद ने जाकर अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम, जिसने आपको सच्चा रसूल बना कर भेजा है, मैं आप के पास उस वक़्त तक नहीं आया, जब तक ज़ुल ख़ुलैफ़ा को ख़ारिशी ऊंट की तरह न कर दिया। रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर आपने अहमस क़बीले के घोड़ों और सवारों के लिए पांच बार बरकत की दुआ फ़र्मायी।

१२१२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि किसरा मर जाएगा तो इस के बाद दूसरा किसरा न होगा, और क़ैसर हलाक होगा तो इस के बाद दूसरा क़ैसर न होगा और दोनों के ख़ज़ाने फ़क़ीरों को बांट दिए जाएंगे।

१२१३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर नबी अक्रम सल्ल० ने लड़ाई का नाम 'ख़ुदअ:' (धोखेबाज़ी) रखा है।

१२१४. हज़रत इब्ने आज़िब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद

रसूलुल्लाह सल्ल० ने उहद की लड़ाई के दिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को पचास प्यादों पर (अफ़सर बनाया) और फ़रमाया कि अगर तुम हमको देखो कि हम शिकस्त खा गए, तब भी तुम अपनी जगह से न हिलना, जब तक मैं तुमको इजाज़त न दूं, और अगर तुम देखो कि हमने उनको शिकस्त दी और हरा दिया तो भी न हरकत करना, उस वक़्त तक कि मैं तुमको हुक्म न भेजूं, चुनांचे लोगों ने कुफ़्फ़ार को शिकस्त दे दी और मैंने देखा कि कुफ़्फ़ार की औरतें दामन उठाए भाग रही हैं और उनके कड़े और पिंडुलियां चमक रही हैं। यह देखकर ज़ुबैर रज़ि० के साथियों ने कहा, ए क़ौम ! ग़नीमत का माल और तुम्हारे साथी ग़ालिब आ गए अब क्या इन्तिज़ार कर रहे हो ? अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने उनसे कहा कि क्या तुमको हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का क़ौल याद नहीं है। उन्होंने जवाब दिया कि ख़ुदा की क़सम ! हम अपने साथियों में पहुंच कर ज़रूर ग़नीमत का माल लूटेंगे, चुनांचे ये लोग उनके पास पहुंचे तो पीठ फेर कर भागना पड़ा और ये सब लोग शिकस्त खाकर भाग निकले, उस वक़्त हुज़ूरे वाला लोगों को आख़िरी लाइन में खड़े पुकार रहे थे। आपके साथ सिर्फ़ बारह आदमी रह गए थे और कुफ़्फ़ार ने हमारे सत्तर आदमी पकड़े थे और मुसलमान बद्र के दिन एक सौ चालीस आदमियों पर क़ाबिज़ हुए थे, जिन में सत्तर क़ैदी थे और सत्तर मक़्तूल हो गए थे। इस वाक़ए के बाद अबूसुफ़ियान बोला कि क्या लोगो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाक़ी हैं। आपने जवाब देना मुनासिब न ख़्याल किया, फिर उसने कहा, लोगों में इब्ने अबी क़हाफ़ा हैं, तब भी कोई जवाब न दिया गया, फिर उसने कहा कि लोगों में इब्ने ख़त्ताब हैं ? तीन तीन बार इसी तरह कहा। इसके बाद वापस चला गया और वहां जाकर कहने लगा कि यह तीनों तो क़त्ल हो गए। इस बात को सुनकर हज़रत उमर रज़ि० क़ाबू में न रहे और बोल उठे कि ख़ुदा की क़सम, ए ख़ुदा के दुश्मन ! तू झूठा है जिस चीज़ को तू बुरा जानता है वह मौजूद है। अबूसुफ़ियान ने कहा कि लड़ाई डोल की तरह है और तुमको जल्द मालूम होगा कि उनके नाक-कान कटे हुए होंगे लेकिन मैंने उसका हुक्म नहीं किया है। हां, अलबत्ता मुझको इसका कोई ग़म भी न होगा, फिर कहने लगा, ऐ हुबल (बुत)! बुलंद हो। यह सुनकर नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम लोग इसका जवाब नहीं देते। सहाबा रज़ि०

ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या जवाब दें ? फ़रमाया कहो खुदा बुज़ुर्ग व बरतर है, फिर उसने कहा, हमारे लिए माबूद उज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारे लिए कोई इज़्ज़त नहीं ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम इसको जवाब नहीं देते सहाबा रज़ि० ने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या जवाब दें ? फ़रमाया कि हमारा मालिक खुदा है और तुम्हारा कोई मालिक नहीं है। अल्लाहु मौलाना व ला मौला लकुम।

१२१५. हज़रत सलमा रज़ि० कहते हैं कि मैं मदीना तय्यिबा की तरफ़ से ग़ाबा की तरफ़ चला, यहां तक कि जब मैं ग़ाबा के टीले पर पहुंचा तो मुझे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का गुलाम मिला। मैंने उससे पूछा अरे, तेरा यह क्या हाल है ? उस ने कहा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी पकड़ ली गयी। मैंने पूछा कि किसने पकड़ी ? उसने कहा कि ग़तफ़ानी ने, तो मैंने तीन चीखें मारीं और कहा कि ऐ क़ौम ! दुश्मन आ पहुंचा और यह कहता हुआ दौड़ा यहां तक कि ग़तफ़ानी आदमियों तक पहुंच गया और उन के तीर मारना शुरू किए और यह कहता जाता था मैं अक्वअ का बेटा हूं और दुश्मन की हलाकत का दिन है आखिर में मैंने उससे ऊंटनी छीन ली। उससे पहले कि वे लोग पानी पियें फिर मैं ऊंटनी को हांकता लाया। इतने में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई। मैंने अर्ज़ किया ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! वे लोग प्यासे हैं और मैं ऊंटनी को लेकर जल्दी से वापस आ गया हूं, इसलिए आप उन लोगों के पीछे एक दस्ता रवाना कर दीजिए, फ़रमाया इतने अक्वअ तुमने ऊंटनी ले ली, उनको जाने दो, क्योंकि उन लोगों की उनही की क़ौम में मेहमानदारी होगी।

१२१६. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया, क़ैदी को रिहा कराओ और भूखे को खाना खिलाओ और मरीज़ की इयादत करो।

१२१७. हज़रत अबूहुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि आप के पास अल्लाह की किताब के अलावा कोई वह्य का और हुक्म भी है ? फ़रमाया नहीं, खुदा की क़सम मुझको कोई हुक्म इन इन अह्काम के अलावा मालूम नहीं। हां, क़ुरआन समझने की एक समझ अता हुई है और जो कुछ इस सहीफ़े में है, मैंने कहा कि इस सहीफ़े में क्या

है ? फ़रमाया कि दियत (के अहकाम) और क़ैदियों को रिहा करने के बयान और यह कि कोई मुसलमान काफ़िर के बदले न क़त्ल किया जाय।

१२१८. हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक कहते हैं कि अंसार के कुछ मर्दों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख्वास्त की कि ऐ अल्लाह के रसूल ! हमको इजाज़त दीजिए कि हम अपने भांजे अब्बास के बदले में फ़िदया माफ़ कर दें। फ़रमाया कि उससे एक दिरहम भी न छोड़ो।

१२१९. हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक सफ़र में थे कि मुश्रिकों का एक जासूस आया और सहाबा रज़ि० से बातें करने लगा और इसके बाद उठ कर चला गया। आपने फ़रमाया इस को खोज कर क़त्ल कर डालो चुनांचे उसको क़त्ल कर दिया गया और उसका सामान हुज़ूर सल्ल०' ने उसके क़ातिल को दिला दिया।

१२२०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार फ़रमाया, आह ! जुमेरात का दिन और जुमेरात का दिन कैसा था, इतना कह कर आप खूब रोए कि आंसुओं से बोरिया तर हो गया, फिर आपने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी जुमेरात ही के दिन तेज़ी पर हुई थी, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि मेरे पास कलम व दावात लाओ ताकि मैं तुम्हारे लिए एक तहरीर लिख दूं कि इसके बाद कभी गुमराह न हो, यह सुनकर लोग आपस में तकरार करने लगे, हालांकि किसी नबी के पास तकरार करनी अच्छी नहीं। (इसको सुनकर)आपने फ़रमाया कि मुझ को (इस हालत पर) छोड़ दो क्योंकि मुझ को, तुम जिस बात की तरफ़ बुला रहे हो इस से यही हालत बेहतर है जिस में इस वक्त हूं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने तीन बातों की वसीयत की, (१) मुश्रिकों को अरब के जज़ीरे से निकाल दो, (२) वफ़्द की इसी तरह ख़ातिर करना, जिस तरह मैं करता रहा, (३) तीसरी बात मैं भूल गया।

१२२१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि एकबार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने लोगों में खड़े होकर तक़रीर करनी शुरू की। पहले अल्लाह तआला की सना फिर दज्जाल का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि तुम को मैं उससे डराता हूं और हर नबी ने उससे डराया है, यहां

तक कि नूह अलै० ने भी अपनी क़ौम को इससे डराया था लेकिन मैं तुम को इसके बारे में ऐसी बात बताता हूं कि किसी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं बतलाई। देखो दज्जाल काना होगा और अल्लाह तआला काना नहीं है।

१२२२. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझ को इन लोगों के नाम लिख दो, जो इस्लाम क़ुबूल कर चुके हैं, इसलिए हम ने एक हज़ार पांच सौ आदमियों के नाम लिख दिए और अर्ज़ किया कि क्या हम अब भी डरें हालांकि एक हज़ार पांच सौ आदमियों की (तायदाद) है, फिर हम ने देखा कि हमारा इम्तिहान लिया गया, इसी सूरत से कि हर आदमी हमारी नमाज़ डरते हुए अदा करता था।

१२२३. हज़रत अबूतल्हा रज़ि० कहते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी क़ौम पर ग़ालिब आ जाते तो (उसी मैदान में) तीन रात तक ठहरे रहते।

१२२४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि मेरा एक घोड़ा भाग गया था और उसके दुश्मन ने पकड़ लिया था, फिर जब मुसलमान (कुफ़्फ़ार पर) ग़ालिब आ गए तो वह वापस कर दिया गया और मेरा एक ग़ुलाम भाग गया था और रूम में चला गया था तो जब मुसलमान रूम पर ग़ालिब हुए तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने वह मुझ को वापस कर दिया (यह रसूलुल्लाह सल्ल० के) बाद का वाक़िया है और पहले हुज़ूर सल्ल० के ज़माने का है।

१२२५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि (ख़ंदक़ के दिन) मैंने अर्ज़ किया ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल०! मैंने एक भेड़ का बच्चा ज़िब्ह किया है और एक साअ जौ की रोटी पकाने को कह दिया है, इसलिए आप और दो चार आदमी तशरीफ़ ले चलिए! (यह सुन कर) हुज़ूर सल्ल० ने [illegible] दी कि ऐ ख़ंदक़ वालो! जाबिर रज़ि० ने तुम्हारे लिए खाना तैयार किया है, इसलिए सबके सब चलो।

१२२६. उम्मे ख़ालिद बिन्त ख़ालिद बिन सईद रज़ि० कहती हैं कि मैं एक बार अपने वालिद के साथ हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पीले रंग का कुर्ता पहने हुए हाज़िर हुई। आपने फ़रमाया कि बड़ा ही ख़ूबसूरत है। इस के बाद मैं आप की नुबूवत की मुहर से खेलने लगी,

मेरे वालिद ने मुझ को डांटा तो आपने मना कर दिया और फ़रमाया कि तुझ पर पुराई हो, तुझ पर पुराई हो, तुझ पर पुराई हो (तीन बार दुआ दी)

१२२७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्ल० ने हमारे सामने खियानत का जिक्र फ़रमाया और ज़ोरदार लफ़्ज़ों में इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मैं तुम को इस हाल में न देखूं कि किसी गर्दन पर बकरी चिल्लाती हो और मुझ से कहता हो कि मेरी फ़र्याद को पहुंचिए और मैं जवाब दूं कि अब मैं तेरी मदद नहीं कर सकता मैं तुझ को पहले ही से तब्लीग़ कर चुका या घोड़ा हिनहिनाता हो और मैं यही जवाब दूं या उस की गर्दन पर ऊंट बलबलाता हो और वह कहे ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी फ़र्याद कर दीजिए और मैं जवाब दूं कि मैं तेरी मग़फ़रत का मालिक नहीं, मैंने तुम को तब्लीग़ कर दी थी या उसकी गर्दन पर (चांदी सोना) हो और वह कहे कि ए अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी फ़र्यादरसी कीजिए और मैं कहूं कि मैं तेरी मग़फ़िरत पर क़ादिर नहीं। मैंने तुझ को तब्लीग़ कर दी थी या उसकी गर्दन पर कपड़ों के टुकड़े हिल रहे हों और वह कहे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरी फ़र्यादरसी कीजिए और मैं वही जवाब दूं मैं तेरी मग़फ़रत पर क़ादिर नहीं मैं तो पहले ही तब्लीग़ कर चुका।

१२२८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामानों पर एक हिफ़ाज़त करने वाला था जिसका नाम किरकिरा था, जब वह मर गया तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस को दोज़ख में समझो। लोग उसका मुंह देखने लगे। आखिरकार मालूम हुआ कि उसने एक जुब्बा की खियानत की थी।

१२२९. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने इब्ने जाफ़र रज़ि० से कहा कि मुझ को याद है जब मैं और तुम और इब्ने अब्बास रज़ि० हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात के लिए गये। उन्होंने कहा कि हां हमको सवार किया था और तुमको छोड़ दिया था।

१२३०. हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि हम लोग मय बच्चों के हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

इस्तिक़बाल को सनीयतुल विदा तक गए थे।

१२३१. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हम लोग अस्फ़ान से लौट कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ आ रहे थे और आप एक ऊंटनी पर सवार थे और आप के पीछे सफ़ीया बिन्त हुयी सवार थीं। (इत्तिफ़ाक़ से) आप की ऊंटनी का पैर फिसल गया, और दोनों गिर पड़े (यह देख कर) अपने ऊंट पर से कूद पड़े और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! खुदा मुझ को आप पर से कुर्बान करे। आपने फ़रमाया पहले औरत की तरफ़ ख्याल करो तब अबूतल्हा रज़ि० अपने मुंह को कपड़े से छिपाकर हज़रत सफ़ीया के क़रीब आ गए और वह कपड़ा उन के ऊपर डाल दिया और उनके लिए उनकी सवारी तैयार की फिर दोनों सवार हो गए और जब मदीना के क़रीब पहुंच गए तो आपने फ़रमाया आइबू-न ताइबू-न हामिदू-न लरब्बिना आबिदून यही फ़रमाते हुए मदीना में दाखिल हो गए।

१२३२. हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि जब कभी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० सफ़र से चाश्त के वक़्त वापस आते, बैठने से पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नफ़्ल की नमाज़ पढ़ लेते।

१२३३. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हमारा कोई वारिस नहीं जो कुछ हम छोड़ जायें वह सबका है और आप अपने घर वालों को उस माल में जिस को अल्लाह तआला ने खुसूसियत से आप के साथ आपके लिए ग़नीमत बना दिया था एक साल का खर्च दे दिया करते थे और जो कुछ बाक़ी रह जाता उसको खुदा की माल के जगह खर्च कर देते। इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ने मौजूद लोगों से फ़रमाया मैंने जो हदीस बयान की है तुमको खुदा की क़सम देता हूं क्या तुम को इसका इल्म है ? सहाबा रज़ि० ने कहा हां, हमको मालूम है, उस वक़्त अली रज़ि० और अब्बास रज़ि०, उस्मान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और ज़ुबैर रज़ि० और साद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु सब मौजूद थे।

१२३४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, मैंने सहाबा रज़ि० को दो पुरानी जूतियां फ़ीतों वाली निकाल कर दिखायीं और कहा कि ये हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैं।

१२३५. हज़रत आइशा रज़ि० ने एक पेवंद लगी हुई चादर दिख-

लाई और कहा कि हज़रत की रूहे मुबारक उस में निकली थी और एक रिवायत में यह है कि उन्होंने एक मोटा तहबंद और एक चादर निकाल कर दिखाई।

१२३६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्याला टूट गया तो उसको चांदी के तार से बांध लिया था।

१२३७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि अंसार में से किसी शख़्स के यहां लड़का पैदा हुआ और उसने उस का नाम अबुल क़ासिम रखा (अंसार को जब मालूम हुआ) तो उन्होंने कहा कि हम लोग तुझको अबुल क़ासिम नाम न रखने देंगे और तेरी आंखें यह नाम रख कर ठंडी नहीं होने देंगे। वह शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे यहां लड़का पैदा हुआ है और मैंने उस का नाम अबुल क़ासिम रखा है अंसार कहते हैं कि अबुल क़ासिम कुन्नियत न रखने देंगे और (इस नाम से) तेरे दिल को ठंडा नहीं होने देंगे फ़र्माया अंसार ने बहुत अच्छा किया। मेरी कुन्नियत किसी दूसरे की मुक़र्रर न करो, हां मेरे नाम पर दूसरे का नाम रख लिया करे।

१२३८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि न मैं तुम को देता हूं, न रोकता हूं, बल्कि जहां का हुक्म होता है वहां माल रख देता हूं।

१२३९. हज़रत ख़ौला अंसारिया रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि किसी नबी ने जिहाद का इरादा किया और अपनी क़ौम से कहा कि हमारे साथ वह शख़्स न जाए जिसने नई शादी की हो और ख़लवत न की हो बल्कि ख़लवत का इरादा कर रहा हो। वह शख़्स जाए जिसने मकान बनाया हो और उसने छत ऊंची न की हो और वह शख़्स भी न जाए जिसने हामिला बकरियां, या ऊंटनियां ख़रीदी हों और उनके हमल पूरे होने के इन्तिज़ार में हो (यह कह कर वह) जिहाद के लिए चले और अस्र की नमाज़ के क़रीब किसी गांव के नज़दीक पहुंचे और सूरज से कहा कि तू भी हुक्म मानने वाला है और मैं भी। ऐ ख़ुदा, हमारे लिए इस सूरज को रोक दे चुनांचे सूरज रोक दिया गया यहां तक कि ख़ुदा तआला ने उनको जीत दे दी सो आग उन को खाने के लिए आयी लोगों ने नबी से अर्ज़ किया, नबी ने

फ़र्माया कि तुम लोगों में ख़ियानत है इस लिए मुझ से एक-एक शख़्स हर क़बीला का बैअ़त करे जब सबने बैअ़त शुरू की तो एक आदमी का हाथ नबी के हाथ से चिमट गया, नबी ने कहा कि तेरे ही क़बीले में से किसी ने ख़ियानत की है इस लिए तेरे क़बीले का हर एक आदमी मुझ से बैअ़त करे (जब सबने बैअ़त की) तो नबी सल्ल० के हाथ से दो-तीन आदमियों का हाथ चिमट गया, फ़र्माया कि तुम ही लोग चोर हो इस लिए वह पकड़े गये, सर के बराबर सोना लाए और उस को ग़नीमत के माल में रखा, वह आग आई और सबको खा गई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने ग़नीमत (लूटा हुआ माल) का माल हलाल कर दिया है और सिर्फ़ हमारी कमज़ोरी और आजिज़ी देख कर हलाल किया है।

१२४०. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दस्ता नज्द की तरफ़ रवाना किया, जिस में इब्ने उमर रज़ि० भी थे, वहां ग़नीमत के माल में बहुत से ऊंट हाथ आए और हर एक के हिस्से में ग्यारह-ग्यारह ऊंट आए और एक-एक ऊंट ज्यादा दिया गया।

१२४१. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि जिस वक़्त हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० जाराना नाम की जगह में ग़नीमत का माल बांट रहे थे, एक शख़्स कहने लगा, इंसाफ़ से बांटिए, तो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया अगर मैं इंसाफ़ से न बांटूं तो बद-बख़्त हो जाऊं। (अआज़हुल्लाहु)

१२४२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० को हुनैन के क़ैदियों में से दो लौंडियां मिलीं, आपने उन को किसी के घर भिजवा दिया, इतने में हुज़ूर सल्ल० ने उन क़ैदियों पर एहसान किया (यानी उन को आज़ाद कर दिया) और वह लोग गली-कूचों में फिरने लगे। हज़रत उमर रज़ि० ने यह देख कर फ़र्माया अब्दुल्लाह रज़ि०, ज़रा देखो यह क्या बात है? मैंने कहा हुज़ूर सल्ल० ने हुनैन के क़ैदियों पर एहसान कर के उन को आज़ाद कर दिया, आपने फ़र्माया उन की लौंडियों को भी आज़ाद कर दो।

१२४३. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन जंग की सफ़ में खड़ा हुआ था और दो नयी उम्र के लड़के और भी खड़े थे। उन में से एक ने मुझ से इशारे से पूछा कि चचा! क्या तुम

अबू जह्ल को जानते हो ? मैंने कहा, भतीजे, हां, तुम्हें उस की क्या जरूरत है ? उसने कहा मैंने सुना है कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० को गालियां देता है, उस खुदा की क़सम जिसके क़ब्जे में मेरी जान है अगर मैंने उसको देख लिया तो मेरा जिस्म उस के जिस्मसे उस वक़्त तक अलग न होगा जब तक कि जिस की मौत पहले आई है, वह न मर जाए (यानी जब तक हम दोनों में से एक खत्म नहीं होगा उस वक़्त तक अलग नहीं होंगे) मुझे यह सुन कर बहुत ही ताज्जुब हुआ। इतनेमें दूसरे लड़के ने भी आकर वही बातें कीं जो पहले ने की थीं। थोड़ी ही देर हुई थी कि मैंने अबूजह्ल को लोगों में घूमता हुआ देखा, मैंने फ़ौरन आवाज दी कि (ऐ लड़को !) होशियार हो जाओ, जिस को तुम खोज रहे हो वह है। दोनों लड़के अपनी तलवारें संभाल कर उस पर लपके और उसको क़त्ल कर डाला। और फिर हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में वापस आकर खुशखबरी सुनायी, और अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने अबूजह्ल को क़त्ल कर दिया। फ़र्माया तुम दोनों में से किसने क़त्ल किया हर एक ने कहा, मैंने। आपने फ़र्माया कि क्या तुम दोनों ने अपनी तलवारें साफ़ कर डालीं ? उन दोनों ने कहा, नहीं, तो आपने दोनों की तलवार देख कर फ़र्माया कि तुम दोनों ने क़त्ल किया है। हुजूर सल्ल० ने इस का सामान मुआज बिन जमूअ को दिया। अबूजह्ल के क़ातिलों के नाम ये हैं— (मुआज़ बिन अफ़र रजि० और मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह रजि०)

१२४४. हजरत अनस रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मैं क़ुरैश को माल, उन के दिल झुकाने के लिए देता रहता हूं क्योंकि ये नव मुस्लिम हैं।

१२४५. हजरत अनस रजि० कहते हैं कि जिस वक़्त हवाजिन का माल आया और हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश को उस में से सौ ऊंट दिए तो अंसार के कुछ लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, क़ुरैश को तो देते हैं और हम को छोड़ते है हालांकि हमारी तलवारें अब तक खून से सनी हुई हैं। यह बात रसूलुल्लाह सल्ल० को मालूम हुई, आपने सब को एक चमड़े का खेमा खड़ा कर बुलाया और फिर आप उन के पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मुझ को तुम्हारी तरफ़ से क्या-क्या बातें पहुंचती हैं ? उन में से जो अक़्लमंद थे, उन्होंने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने तो

कुछ नहीं कहा।

१२४६. हजरत जुबैर बिन मुतश्रिम रजि० कहते हैं कि हुनैन से वापस होते वक़्त मैं भी हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ था, बीच रास्ते में देहाती रसूलुल्लाह सल्ल० को लिपट गए और अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम को भी कुछ दीजिए और यहां तक तंग किया कि हुजूर सल्ल० केकर के एक पेड़ तक दबते हुए चले गए और आखिरकार हुजूर सल्ल० की चादर खींच ली। आप ठहर गए और फ़र्माया कि मेरी चादर दे दो, अगर मेरे पास पेड़ों की मिक़दार में चौपाए होते तो वह भी तुम में ही बांटा करता (तुम मुझे आजमा लो) इन्शा-अल्लाह तुम मुझ को कंजूस, झूठा और बुजदिल नहीं पाओगे।

१२४७. हजरत अनस बिन मालिक रजि० कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जा रहा था, उस वक़्त आप के जिस्म पर नजरान की मोटी चादर थी जिसके चारों तरफ़ किनारा था, रास्ते में आप को एक देहाती मिला और चादर पकड़ कर उसने खींची कि किनारे के निशान आप की मुबारक गर्दन में पड़ गए इस के बाद कहने लगा कि अल्लाह का माल जो आप के पास है इस में से मुझे भी देने का हुक्म फ़र्माइए, आपने उस की तरफ़ मुंह फेरा और हंसे और फिर देने का हुक्म दिया।

१२४८. हजरत अब्दुल्लाह रजि० कहते हैं कि जब हुनैन का दिन आया तो हुजूर सल्ल० ने बांटने में कुछ लोगों को चुना, चुनांचे अक़रा बिन जाबिस को सौ ऊंट और हजरत ऐनिया को सौ ऊंट और अरब के दूसरे सरदारों को भी कुछ-कुछ दिए। एक शख्स बोला इस बांटने में इंसाफ़ न हुआ या यह कहा कि इस बांट में खुदा की रजामंदी मक़्सूद नहीं। मैंने यह सुन कर कहा कि खुदा की क़सम मैं इस की खबर रसूलुल्लाह सल्ल० को जरूर पहुंचाऊंगा। चुनांचे मैं आप की खिद्मत में हाज़िर हुआ और आप को इसकी जानकारी दी। आपने फ़र्माया जब खुदा और खुदा का रसूल इंसाफ़ नहीं करेगा तो दूसरा कौन कर सकता है। अल्लाह तआला मूसा अलै० पर रहम फ़र्माए उन को इस से ज्यादा तक्लीफ़ दी गयी थी मगर उन्होंने सब्र अख्तियार किया।

१२४९. हजरत इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि जिहाद में हम को अंगूर और शहद भी मिला करता था तो हम खा लेते थे और उस को न

रखते थे।

१२५०. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने अपने इन्तिक़ाल से एक साल पहले बसरा के लोगों को लिखा कि मजूसी जितना भी आपस में कम व बेश का ताल्लुक़ रखने वाले हों, उन का निकाह फ़स्ख करा कर अलग करो। हज़रत उमर रज़ि० मजूस से जिज़िया नहीं लिया करते थे इस के बाद अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने गवाही दी कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजर के मजूस से जिज़िया लिया था।

१२५१. हज़रत अम्र बिन औफ़ अंसारी रज़ि० कहते हैं कि मैं बनू आमिर बिन लुवी का हलीफ़ था और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू उबैदा बिन जर्राह को बहरैन की तरफ़ रवाना किया ताकि वहां का जिज़िया वसूल कर के लाएं क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने बहरैन वालों से सुलह की थी और उन पर अला बिन खज़रमी रज़ि० को मुक़र्रर किया था, जब अबू उबैदा रज़ि० बहरैन का माल लेकर वापस हुए तो अंसार रज़ि० को अबू उबैदा रज़ि० के आने की खबर हुई सब के सब सुबह के वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास पहुंच गए, जब आप नमाज़ पढ़ा चुके, अंसारी आप के सामने आ गए हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० अंसार को देख कर हंसे और फ़र्माया कि मेरा ख्याल है कि अबू उबैदा रज़ि० के माल लाने की खबर तुम को मालूम हो गयी है। उन्होंने कहा कि हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०, फ़र्माया (अच्छा खुश हो और खुशी की आइन्दा उम्मीद रखो) खुदा की क़सम मैं तुम्हारी तंगदस्ती से इतना नहीं डरता कि तुम्हारी वुसते दुनियवी से मुझ को इतना डर है जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़राखी की गयी और फिर उन्होंने ख्वाहिश की यहां तक कि (इस ख्वाहिश की वजह से) वह हलाक हो गए इसी तरह कहीं तुम लोग ख्वाहिश करने लगो और फिर हलाक हो जाओ।

१२५२. हज़रत उमर रज़ि० ने मुसलमानों को मदाइन के चारों तरफ़ मुश्रिकों से जिहाद करने के लिए रवाना किया, वहां हरमुज़ान और रुस्तम मुसलमान हो गये। फ़ारूक़ आज़म रज़ि० ने फ़र्माया मैं तुमसे कुछ लड़ाइयों के बारे में राय लेता हूं। हरमुज़ान ने अर्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन ! यह ज़मीन और इस के वह बाशिंदे जो मुसलमानों के दुश्मन हैं उन की ऐसी मिसाल है जैसा कि एक परिंदा जिस के एक सर और दो बाज़ू

और दो पांव हों जब उस का एक बाज़ू टूट जाता है तो दोनों पांव और सर और बाज़ू बाक़ी रहता है और जब दूसरा बाज़ू भी टूट जाता है तो दो पांव और सर बाक़ी रहते हैं और अगर सर टूट जाता है तो दोनों पांव और दोनों बाज़ू और सर सब के सब मादूम हो जाते हैं । (इस मिसाल के बाद कहने लगा कि) सर किसरा है और बाज़ू क़ैसर और दूसरा बाज़ू फ़ारस, इस लिए मुसलमानों को हुक्म दीजिए कि पहले किसरा की तरफ़ ध्यान दें, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने (उसके मुताबिक़) एक जमाअत को बुलाया और उन का अफ़सर नोमान बिन मुक़रिन को मुक़र्रर किया जब ये लोग दुश्मन की ज़मीन में दाखिल हुए तो कसरा का सिपहसालार चालीस हज़ार फ़ौज लेकर मुक़ाबले में आया और एक तर्जुमान को खड़ा करके मुसलमानों से कहा तुम लोगों में से एक शख़्स खड़ा होकर बात चीत कर ले। हज़रत मुग़ीरा रज़ि० ने फ़रमाया, जो चाहो पूछो। उसने कहा कि तुम लोग कौन हो ? मुग़ीरा रज़ि० ने जवाब दिया, हम अरब लोग हैं हम सख़्त तंग दस्ती में थे, भूख की वजह से चमड़े और गुठलियां चूसते और ऊन और बालों का लिबास पहनते थे और पेड़ों पत्थरों की इबादत करते थे इसी हालत में ज़मीन और आसमानों के मालिक ने हम लोगों में से एक नबी भेजा जिसके मां बाप को हम अच्छी तरह पहचानते हैं और उस नबी ने हम को तुम से लड़ने का हुक्म दिया ताकि या तो तुम एक सच्चे ख़ुदा की इबादत करो या जिज़िया देना मंज़ूर करो और उसने यह भी हमारे परवरदिगार के हुक्म के मुआफ़िक़ हम को इत्तिला दी कि जो शख़्स मुसलमानों में से शहीद होगा वह जन्नत में दाखिल होगा और जन्नत एक फ़क़ीदुल मिसाल चीज़ है और जो ज़िन्दा रहेंगे, वह कुफ़्फ़ार की गर्दनों के मालिक होंगे (इस के बाद) नोमान रज़ि० ने मुग़ीरा रज़ि० से कहा कि तुम को ज़्यादातर ख़ुदा तआला ने जिहाद में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ बहुत बार शरीक होने का मौक़ा दिया है लेकिन मैं भी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ लड़ा हूं, जब आप दिन के शुरू हिस्से में लड़ाई शुरू न करते तो इतना, ठहरते कि हवाएं चलने लगतीं और नमाज़ के वक़्त आ जाते।

१२५३. हज़रत अबूहुमैद साइदी रज़ि० कहते हैं कि हमने नबी सल्ल० के साथ तबूक के मक़ाम में जिहाद किया । एला के बादशाह ने आप को हदिया के तौर पर एक सफ़ेद खच्चर पेश किया, आपने एक

चादर इनायत फ़रमायी और उसका मुल्क उसके लिए छोड़ देना लिख दिया।

१२५४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने मुआहदा करने वाले को क़त्ल करेगा उसको जन्नत की बू भी नहीं पहुंचेगी हालांकि जन्नत की बू चालीस साल की दूरी तक पहुंचती है।

१२५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जब ख़ैबर की जीत हुई तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में ज़हर से भरा हुआ बकरी का गोश्त हाज़िर किया गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उस जगह पर जितने यहूदी हैं सबको मेरे पास लाओ (आप के हुक्म के मुताबिक़) सबको जमा किया गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम से एक बात पूछता हूं, क्या तुम सच बोलोगे ? उन्होंने कहा हां, फ़र-माया यह तुम्हारा बाप फ़्लां शख़्स है, यहूद ने कहा आपने सच फ़रमाया फिर आपने कहा अगर अब तुम से कोई बात पूछूं तो तुम सच बोलोगे उन्होंने कहा ज़रूर, अगर हम झूठ बोलेंगे तो आप पहचान लेंगे, जिस तरह कि हमारे बाप के बारे में आप को मालूम हो गया। आपने फ़रमाया बताओ दोज़ख़ी कौन लोग हैं ? उन्होंने जवाब दिया कि हम थोड़ी मुद्दत तक रह कर (निकल आयेंगे) इसके बाद हमारे क़ायममक़ाम आप लोग होंगे फ़रमाया कि चलते बनो, ख़ुदा की क़सम हम कभी दोज़ख़ में न जायेंगे फिर आपने फ़रमाया (अच्छा) तुम मुझे एक और बात का सच्चा जवाब दोगे ; उन्होंने अर्ज़ किया हां। फ़रमाया तुमने इस बकरी में ज़हर डाला है ? उन्होंने कहा जी हां। फ़रमाया तुमने ऐसा क्यों किया ? यहूदियों ने कहा हमारा यह ख़्याल था कि अगर आप झूठे हैं तो आपकी तरफ़ से हम-को आराम मिल जायेगा और अगर सच्चे हैं तो आपको कोई नुक़सान न पहुंचेगा।

१२५६. हज़रत सुहैल बिन हस्मा रज़ि० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन सह्ल रज़ि० और मुहैसा बिन मसऊद बिन ज़ैद, सुलह के ज़माने में ख़ैबर तशरीफ़ ले गए और वहां जाकर दोनों अलग हो गए फिर जब मुहैसा बिन मसऊद अब्दुल्लाह बिन सह्ल रज़ि० के पास आए तो देखा कि वह क़त्ल हुए पड़े हैं और ख़ून में लथड़े हुए हैं, इसलिए मुहैसा ने अब्दुल्लाह रज़ि० को दफ़न किया और मदीना वापस आ गए और अब्दुर-

हमान बिन सह्ल और मुहैसा और हुवैसा मसऊद के दोनों बेटे नबी सल्ल० की खिदमत में आए और अब्दुर्रहमान रज़ि० ने बात शुरू की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि बड़े की बड़ाई ख्याल कर पहले बड़े को बोलने दो (क्योंकि यह नव उम्र थे, अब्दुर्रहमान चुप हो गए) फिर उन दोनों ने बोलना शुरू किया। आपने फ़रमाया क्या तुम क़सम खाते हो ताकि अपने क़ातिल के खून के हक़दार हो जाओ। उन्होंने कहा हम कैसे क़सम खा सकते हैं हम मौजूद न थे और न हमने देखा। फ़रमाया अच्छा यहूदियों के पचास आदमी क़समें खाकर बरात ज़ाहिर कर सकते हैं। इन हज़रात ने अर्ज़ किया कि हमको कुफ़्फ़ार की क़समों का क्या भरोसा है (यह सुनकर आपने मक़्तूलों की दियत अपने पास से अदा की)

१२५७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० पर किसी ने जादू कर दिया था। आपकी यह हालत हो गयी थी कि बिना किए हुए काम को आप यह ख्याल फ़रमाने लगे थे कि कि इसको कर चुका हूं।

१२५८. हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि तबूक की लड़ाई के ज़माने में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप चमड़े के एक खेमे में तशरीफ़ रखते थे। आपने फ़रमाया कि क़ियामत के पहले छः बातें गिन लेना, (१) मेरी वफ़ात, (२) बैतुलमक़्दिस की जीत, (३) बकरियों की तरह तुम में ताऊन का शुरू होना, (४) फिर माल ज़्यादा होने की अगर किसी को सौ अशर्फ़ियां दी जायें तो वह उनको देखकर नाखुश हो, (५) फिर ऐसे फ़ित्ने का होना कि जिससे अरब का कोई घर खाली न रहेगा, हर घर में वह फ़ित्ना पहुंचेगा, (६) फिर वह सुलह जो तुम्हारे और बनी असग़र के बीच होगी फिर वह अह्द तोड़ेंगे और अस्सी झंडों के नीचे तुम्हारे मुक़ाबले के लिए आएंगे और हर झंडे के नीचे बारह हज़ार जवानों का (लश्कर होगा)।

१२५९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जिस वक़्त तुम को अशर्फ़ी या खिराज का रूपया न ले सकोगे, आप से किसी ने कहा क्या आप को इसके वजूद का ख्याल है? आप ने कहा, हां खुदा की क़सम यह उस शख़्स का क़ौल है जो सच्चा और मसदूक़ है। फिर लोगों ने कहा कि इसकी क्या वजह होगी? फ़र-

माया खुदा और उसके रसूल सल्ल० के हुक्म के खिलाफ़ किया जाएगा और अल्लाह तआला जजिया देने वाले के दिलों को सख़्त कर देगा इस वजह से वह उस ख़िराज को रोक लेंगे जो उनके क़ब्ज़े में होगा।

१२६०. हज़रत अब्दुल्लाह और अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया अहद को तोड़ने वाला का क़ियामत में एक झंडा होगा, एक कहते थे कि लगाया जाएगा और दूसरे का बयान है कि क़ियामत के दिन देखा जाएगा और उससे पहचाना जाएगा।

बाब ४९

पैदाइश की इब्तिदा के बयान में

१२६१. हज़रत इमरान बिन हुसेन रज़ि० कहते हैं कि लोग बनी तमीम क़बीले के कुछ लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बनू तमीम! ख़ुशख़बरी तो दे दी कुछ माल भी तो अदा कीजिए। यह सुनकर हुज़ूर का चेहरा फ़िक्रमंद हो गया। थोड़ी देर के बाद यमन के लोग हाज़िर हुए, आपने कहा ऐ यमन वालो! ख़ुशख़बरी क़ुबूल करो क्योंकि बनी तमीम ने ख़ुशख़बरी क़ुबूल नहीं की। उन लोगों ने अर्ज़ किया हम ने क़ुबूल की फिर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने दुनिया और आसमान की पैदाइश कीइब्तिदा बयान किया। इतने में एक और आदमी आया और उसने कहा, ऐ इमरान! तेरी ऊंटनी बिदक गयी (इमरान रज़ि० कहते हैं कि) काश (उस मजलिस से) न उठता।

१२६२. हज़रत इमरान रज़ि०, यही इमरान बिन हुसेन कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला था, उसके सिवा कोई चीज़ न थी और उसका अर्श पानी पर था और उसने लौह महफ़ूज़ में हर चीज़ को लिख दिया और

आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया। इतने में एक शख़्स ने आवाज़ दी कि ए इब्ने हुसैन! तुम्हारी ऊंटनी चली गई जब मैं बाहर आया तो देखा कि वह इतनी दूर चली गई कि नज़र भी नहीं आती, ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि मुझे यह पसन्द था कि मैं उसको छोड़ दूं।

१२६३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इब्ने आदम मुझ को गाली देता है हालांकि यह उस के लिए जायज़ नहीं और मुझ को झुठलाता है, हालांकि यह भी उसके लिए जायज़ नहीं। उसको गाली देना यह है कि मेरे लिए विलादत साबित करता है और उस का झुठलाना यह है कि वह कहता है कि ख़ुदा मुझ को दोबारा ज़िंदा न करेगा जिस तरह मुझे पैदा किया था।

१२६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि जब ख़ुदा तआला ने मख़्लूक़ात पैदा फ़र्मा दी तो उसने अपनी किताब में यह भी लिख दिया कि मेरी रहमत की सिफ़त मेरे ग़ुस्से की सिफ़त पर ग़ालिब है। इन्न रहमती ग़लबत ग़ज़बी।

१२६५. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि ज़माना अब उसी हैयत पर लौट आया जिस हैयत पर आसमान व ज़मीन को पैदा करने के वक़्त था। साल बारह महीने का होता है जिन में चार महीनों में लड़ाई हराम है। (इन चारमें से) तीन ऐसे हैं जो आपस में मिले हैं—ज़ीक़ादा, ज़िल्हिज्जा और [illegible]म और क़बीला मुज़र [illegible] रजब जो जुमादस्सानी और शाबान के बीच है।

१२६६. हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने सूरज डूबने के वक़्त फ़र्माया तुम जानते हो कि यह कहां जाता है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उस का रसूल ज़्यादा जानते हैं। फ़र्माया कि यह अर्श के नीचे जाकर सज्दा करता है और उगने की इजाज़त चाहता है तो उसको इजाज़त दी जाती है और क़ियामत के क़रीब जब वह सज्दा करेगा तो उस का सज्दा क़ुबूल न किया जाएगा और इजाज़त चाहेगा तो इजाज़त पूरब की तरफ़ उगने की न दी जाएगी। यही मतलब ख़ुदा के इस क़ौल का है—वश्शम्सु तजरीलिमुस्त क़र्रिल लहा

ख़ालिका तक़दीरुल अज़ीज़िल अलीम।

१२६७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, चांद और सूरज क़ियामत के दिन लपेट दिए जाएंगे।

१२६८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आसमान पर बादल देख लेते तो बेचैनी से आप की हालत ऐसी हो जाती थी कि कभी आगे को आते और कभी पीछे को जाते और कभी अन्दर आते और कभी बाहर निकलते और आप के चेहरे का रंग बदल जाता लेकिन जब बादल बरस जाता था तो आप की यह हालत जाती रहती थी। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने आप से इस की वजह पूछी, फ़र्माया मुझे मालूम है, शायद वैसा बादल हो जैसा कि क़ौम (आद) ने कहा था—फ़लम्मा रऔहु आरिज़न मुस्तक़्बिल औदियतुहुम (आख़िर तक)

१२६९. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया और आप सादिक़ व मस्दूक़ हैं कि तुम में से हर एक का माद्दा पैदाइश अपनी मां के पेट में जमा रहता है फिर चालीस दिन गाढ़ा ख़ून रहता है फिर चालीस दिन लोथड़ा रहता है, फिर अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजता है और उसको चार बातें लिखने का हुक्म देता है और फ़र्माता है कि इस का अमल और रिज़्क़ व उम्र और बदबख़्त और नेक बख़्त होना लिख कर इस में रूह फूंकी जाती है इस लिए आदमी अमल करता रहता है यहां तक कि उस के और जन्नत के बीच सिर्फ़ एक हाथ की दूरी रह जाती है, फिर उस पर उस की बुराई ग़ालिब आ जाती है तो दोज़ख़ियों के-से अमल करना शुरू कर देता है, यहां तक कि उसके और दोज़ख़ के दर्मियान एक हाथ का फ़ासला बाक़ी रह जाता है, फिर उस पर उस की तक़्दीर ग़ालिब आ जाती है तो वह जन्नत के अमल करने वालों की तरह अमल करने लगता है।

१२७०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला किसी शख़्स को दोस्त रखता है तो जिब्रील अलै० से फ़र्माता है कि ऐ जिब्रील, मैं फ़्लां बंदे को दोस्त रखता हूं तू भी दोस्त रख तो जिब्रील भी उसे दोस्त रखते हैं, फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम आसमान में

आवाज़ देते हैं। अल्लाह तआला फ़्लां बंदा को दोस्त रखता है इस लिए तुम भी दोस्त रखो तो आसमान वाले भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं फिर ज़मीन में उस की मक़्बूलियत नाज़िल की जाती है जिस की वजह से वह लोगों में मक़्बूल हो जाता है।

१२७१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं और जिन बातों का आसमान में फ़ैसला हो चुका होता है उस के बारे में आपस में बातचीत करते हैं, शैतान उस को चोरी से सुन लेते हैं और फिर काहिनों से कह देते हैं कि एक के साथ सौ अपनी तरफ़ से जादूगर लोग लगा लेते हैं।

१२७२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी ने फ़र्माया जब जुमे का दिन आता है (और नमाज़ का वक़्त आता है) तो फ़रिश्ते एक मस्जिद के दरवाज़े पर आ जाते हैं और जो शख़्स नमाज़ के लिए आता है उस का नाम लिखते हैं। जब इमाम ख़ुत्बे को खड़ा हो जाता है तो वह अपने सहीफ़े लपेट लेते हैं और अन्दर आकर ख़ुत्बा सुनने लगते हैं।

१२७३. हज़रत बरा कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हस्सान बिन साबित रज़ि० से फ़र्माया तुम कुफ़्फ़ार की बुराई करो जिब्रील अलै० तुम्हारे मददगार हैं।

१२७४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि ऐ आइशा ! यह जिब्रील हैं और तुम को सलाम कहते हैं मैंने कहा व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू हुज़ूर सल्ल०, आप जो चीज़ें देखते हैं मैं नहीं देख सकती।

१२७५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील से फ़र्माया आप जितनी बार मेरे पास आते हैं उस से ज़्यादा क्यों नहीं आया करते, रिवायत करने वाले कहते हैं उस वक़्त यह आयत उतरी—वमा नतनज़्ज़लु इल्ला बि अम्रि रब्बिक लहू मा बै न ऐदीना वमा ख़ल्फ़ना।

१२७६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिब्रील अलै० ने मुझ को क़ुरआन एक क़िरात में पढ़ाया, मैं उन से और ज़्यादा की ख़्वाहिश करता रहा तो उन्होंने सात लहजों तक इन्तिहा की, सात लुग़ात (क़िरात)

तक इन्तिहा की।

१२७७. हज़रत यअ्ली रज़ि० कहते हैं कि मैंने सुना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मेंबर पर फ़र्मा रहे थे—व न दौ या मआल।[1]

१२७८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने नबी सल्ल० से पूछा कि आप पर कोई दिन उहुद की लड़ाई से भी ज़्यादा सख़्त गुज़रा है। फ़रमाया, तेरी क़ौम से जो तक्लीफ़ें पायीं वह पायीं सब में ज़्यादा सख़्त जो तक्लीफ़ उठाई, उक़्बा का दिन था जिस वक़्त मैंने अपने आपको इब्ने अब्द यिल्लैल बिन अब्द कलाल के सामने पेश किया था और उसने मेरी दावत मंज़ूर न की थी, इसलिए मैं वापस चला और मेरे चेहरे से ग़म के निशान ज़ाहिर हो रहे थे। ग़म क़र्न सआलिब[2] नामी जगह में आकर कम हुआ। वहां पहुंच कर मैंने आंख खोलकर देखा और सर उठाया तो मुझे एक बादल नज़र आया जिसने मुझ पर साया कर लिया था। मैंने ध्यान से जो देखा तो उसमें जिब्रील अलैहिस्सलाम को पाया। उन्होंने मुझ को पुकारा और कहा कि जो कुछ आपकी क़ौम ने आप से कहा और जो कुछ आपने जवाब दिया सब अल्लाह तआला को मालूम है कि अल्लाह तआला ने पहाड़ों के फ़रिश्तों को भेजा है ताकि आप उनको जिस तरह का हुक्म चाहें दें। इतने में उस फ़रिश्ते ने जो पहाड़ों का मालिक था मुझको पुकार कर सलाम किया और कहा ऐ मुहम्मद सल्ल० ! जिब्रील अलै० का क़ौल सही है। अब आप क्या चाहते हैं ? अगर आप चाहें तो इन दोनों पहाड़ों अबूक़ैस और क़ीक़ान को उन लोगों पर गिरा दूं। मैंने कहा कि नहीं बल्कि मुझे इसकी उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनकी नस्ल से ऐसा गिरोह पैदा फ़रमाएगा जो एक ख़ुदा की इबादत करे और उसके साथ किसी को शरीक न बनाए।

१२७९. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं यह आयत उतरते वक़्त फ़का-न-क़ा-ब क़ौसैनि औ अदना फ़औहा इला अब्दिहीमा औहा, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि जिब्रील अलै० के छ सौ पर हैं।

१२८०. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० नीचे लिखी आयत की तफ़्सीर

---

१. मालिक या मआल जहन्नम के दारोग़ा का नाम है,

२. मदीना के क़रीब एक जगह है उस को क़र्न मनाज़िल भी कहते हैं।

में कहते हैं लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुबरा कि आपने एक रफ़रफ़ (एक चीज़ हरे रंग की) बिछी हुई देखी जिसने आसमान के किनारे बंद कर दिए थे।

१२८१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं जो शख़्स कहता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा को देखा उसने एक बुरी बात कही। हां, आपने अच्छी तरह से जिब्रील को अपनी सूरत में खल्क़ी हालत में देखा जो चारों तरफ़ आसमान को बंद किए हुए है।

१२८२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस औरत को उस का शौहर अपने बिस्तर पर बुलाए और वह इन्कार करे और शौहर सुबह तक ग़ुस्से की हालत में रहे तो सुबह तक फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं।

१२८३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मेराज की रात मैंने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा कि उनके बाल घुंघराले थे, गेहुंआ रंग था और क़द बड़ा था गोया शनूह क़बीले के एक आदमी थे और ईसा अलैहिस्सलाम को देखा कि वह छोटे क़द और लाली लिए हुए सफ़ेद, दर्मियानी अंगों वाले लंबे बाल वाले थे और दोज़ख़ के मालिक और दज्जाल को देखा उन निशानियों के साथ जो ख़ुदा ने दिखायीं।

१२८४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया तुम में से जब कोई शख़्स मर जाता है तो उसको उसकी जगह, सुबह व शाम दोनों वक़्त दिखायी जाती है। अगर वह जन्नतियों में से होता है तो उसको जन्नतियों का मक़ाम दिखाया जाता है और अगर दोज़ख़ियों में से होता है तो उसको दोज़ख़ियों का मक़ाम दिखाया जाता है।

१२८५. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि नबी ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत में झांक कर देखा तो वहां के अक्सर रहने वाले फ़क़ीर लोग देखे और दोज़ख़ में झांक कर देखा तो उस के बाशिंदों में अक्सर औरतें देखीं।

१२८६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे, आप ने फ़रमाया कि एक दिन मैं सो रहा था। मैंने देखा कि मैं जन्नत में हूं और एक औरत को देखा कि एक

महल की तरफ़ बैठी वुज़ू कर रही है। मैंने पूछा यह महल किसका है? लोगों ने अर्ज़ किया उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का है मुझको उमर रज़ि० की ग़ैरत याद आ गयी और मैं वापस लौट आया। (यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि०रोने लगे और अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल०) क्या आप से भी मैं ग़ैरत करता हूं।

१२८७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो गिरोह पहले जन्नत में जाएगा, उसके चेहरे चौदहवीं रात के चांद की तरह होंगे। लोग जन्नत में न थूकेंगे न नाक साफ़ करेंगे और न उनको पाख़ाने की ज़रूरत होगी, उनके बरतन सोने के होंगे, और उन की कंघियां भी सोने-चांदी की होंगी, अंगूठियां ऊद की होंगी और उनका पसीना मुश्क का होगा और उनके लिए बीवियां ऐसी होंगी जिनकी पिंडुलियों का मग़ज़ गोश्त के बाहर से दिखाई देगा। जन्नतियों में मुख़ालफ़त न होगी न आपस में बुग़्ज़ व हसद। सब के दिल एक शख़्स के दिल की तरह होंगे और वह सुबह, शाम ख़ुदा की पाकी बयान करेंगे।

और इन ही से एक रिवायत यह भी है कि वह लोग जो उनके बाद दाख़िल होंगे वह बड़े चमकने वाले सितारे की तरह चमकते होंगे, उन सब के दिल एक शख़्स के दिल की तरह मुत्तफ़िक़ होंगे और उन में कोई मुख़ा-लफ़त न होगी, न आपस में बुग़्ज़ व हसद होगा, उन में से हर एक शख़्स की दो बीवियां होंगी (इस क़दर ख़ूबसूरत) कि उन की पिंडुली का मग़्ज़ गोश्त बाहर से नज़र आएगा। सुबह व शाम ख़ुदा की तस्बीह पढ़ते रहेंगे। न वहां बीमार होंगे और न नाक साफ़ करने की ज़रूरत होगी।

१२८८. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० ज़िक्र करते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार सात लाख आदमी जन्नत में दाख़िल होंगे, उनमें से पहले दाख़िल होने वाले उस वक़्त दाख़िल न होंगे जब तक पिछले दाख़िल न हो जाएं और दाख़िल होने वालों के चेहरे चौदहवीं रात की तरह चमकते होंगे।

१२८९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलु-ल्लाह सल्ल० के पास रेशमी कपड़े का चोग़ा हदिए के तौर पर ले आया, चूंकि आप रेशम के पहनने से मना फ़र्माया करते थे, इस वजह से लोगों को ताज्जुब हुआ। आपने फ़र्माया, उस ख़ुदा की क़सम है जिसके की क़ुदरत

के क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्ल० की जान है कि साद बिन मुआज़ रज़ि० के रूमाल जन्नत में इस से बेहतर होंगे।

१२६०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि सवार अगर उस के साए में सौ बरस भी चले तो उस को ख़त्म नहीं कर सकता।

१२६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० ने भी इसी तरह की रिवायत बयान की है और सबूत में फ़र्माया है कि अगर चाहो तो क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत पढ़ो—'व ज़िल्लिम मम्दूद।'

१२६२. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि जन्नत के लोग बालाख़ाना वालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह लोग चमकता हुआ सितारा आसमान के किनारे पूरब या पच्छिम में देखते हैं क्योंकि आपस में मर्तबे के फ़र्क़ ज़रूर होंगे, लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! नबियों के मर्तबे पर तो कोई नहीं पहुंच सकेगा ? आपने फ़र्माया, पहुंचेंगे क्यों नहीं ? उस ख़ुदा की क़सम है जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और उस के रसूलों की तस्दीक़ की है (वे नबियों के मर्तबे हासिल करेंगे।)

१२६३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, बुख़ार जहन्नम की गर्मी से होता है, इस लिए उस को पानी से ठंडा कर दिया करो (ग़ुस्ल कर लिया करो।)

१२६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, तुम्हारी दुनिया की आग से जहन्नम की आग सत्तर हिस्सा ज़्यादा है और यह आग उस के सत्तर हिस्सों का एक हिस्सा है। अर्ज़ किया गया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० यही दुनिया की आग काफ़ी है। आपने फ़र्माया कि वह इस से निन्नावे हिस्से ज़्यादा है और हर हिस्सा उस आग के बराबर गर्म है।

१२६५. हज़रत उसामा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और उस को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा तो उस की आंतें निकल पड़ेंगी और वह इस तरह घूमता फिरेगा, जिस तरह गधा चक्की को लेकर घूमता है। (इस को देख कर) लोग कहेंगे कि ऐ शख़्स ! तुम को क्या हुआ, तू हम को नेक काम बतलाया करता था और बुरे कामों से रोकता था। वह

जवाब देगा, मैं तुम को ही नेक काम करने को कहता था और खुद नहीं करता था और तुम को बुरे कामों से मना करता था, लेकिन खुद करता था।

१२९६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किसी ने जादू कर दिया तो आप की यह हालत हो गयी कि न किए हुए काम को ख्याल फ़र्माते कि मैं कर चुका हूं कि एक दिन आप ने दोबारा, तीन बार दुआ फ़र्मायी और फिर फ़र्माया कि आइशा, तुम को मालूम है कि अल्लाह तआला ने आज मुझ को ऐसी चीज़ बतलायी कि जिस में मेरी शिफ़ा है यानी मेरे पास दो शख्स आए, एक पायताने बैठ गया और एक सिरहाने। एक ने दूसरे से कहा, उस शख्स को क्या मर्ज़ है, दूसरे ने कहा उस पर जादू कर दिया गया है। पहले ने कहा किसने जादू किया है, उसने जवाब दिया लुबैद बिन आसिम यहूदी ने। पहला बोला, किस चीज़ में किया है ? दूसरे ने कहा, कंघी में और रूई के गालों में और तर खजूर के छिलके पर। पहले ने कहा, कहां है ? दूसरे ने कहा ज़रवान के कूएं में है। इस के बाद हुज़ूर सल्ल० कूएं के पास तशरीफ़ लाए और जब वापस होकर आ गए, फ़र्माया, मैंने देखा कि वहां की खजूरें ऐसी हैं जैसे शैतानों के सर। मैंने अर्ज़ किया कि आपने जादू की भी चीज़ निकलवायी ? फ़र्माया नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला ने, मुझ को शिफ़ा बख्श दी, मैंने यह ख्याल कर के कि कोई और बुराई पैदा न हो इस कुएं को बन्द कर दिया।

१२९७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद खुदा के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, लोगों में से कुछ शख्सों के पास शैतान आता है और यह कहता है कि यह किसने पैदा किया ? यह किसने पैदा किया ? यहां तक कि यह सवाल करने लगता है कि खुदा को किसने पैदा किया ? (नऊज़ु बिल्लाह) तो जब शैतान इस सवाल पर पहुंचे तो इंसान को चाहिए कि खुदा से पनाह मांगे और इस कुरेद को छोड़ दे।

१२९८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मग़्रिब की तरफ़ इशारा कर के फ़र्माते थे कि होशियार हो जाओ, फ़ित्ना इधर से शुरू होगा, दो बार फ़र्माया और फ़र्माया, उधर से शैतान का सींग पैदा होगा।

१२९९. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया,

जिस वक़्त रात शुरू हो तो अपने बच्चों को बाहर निकलने से रोको क्यों कि उस वक़्त शैतान फैल जाते हैं, फिर शाम का कुछ हिस्सा गुज़र जाए तो उन को छोड़ दो और बिस्मिल्लाह कह कर दरवाज़ा बन्द कर दो, फिर बिस्मिल्लाह पढ़ कर मश्कीज़े का मुंह बांध दो, और ख़ुदा का नाम लेकर बर्तनों को ढांक दो, अगर बंद करने की कोई चीज़ न मिले, तो उस के बदले में ही कुछ चीज रख दो।

१३००. हज़रत सुलेमान बिन सर्द रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ था कि दो शख़्सों को आपस में गाली-गलौज करते देखा, उन में एक का चेहरा लाल हो गया था और गले की रगें फूल गयी थीं। हज़रत मुहम्मद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया, मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं कि अगर यह शख़्स इस को पढ़ ले, तो इस का ग़ुस्सा फ़ौरन जाता रहे यानी अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ ले वह शख़्स बोला, क्या मुझे जुनून है।

१३०१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जुम्हाई शैतान की हरकतों में से है अगर तुम में से किसी को जुम्हाई आ जाए तो जहां तक हो सके इसे रोक ले क्योंकि जब तुम में से कोई जुम्हाई लेता है तो शैतान हंसता है।

१३०२. हज़रत अबूक़तादा रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, अच्छा ख़्वाब ख़ुदा की तरफ़ से होता है और परेशान ख़्वाब शैतान की तरफ़ से। अगर तुम लोगों में से कोई शख़्स परेशान ख़्वाब देखे तो अपनी बायीं तरफ़ थूक दे और ख़ुदा की पनाह मांगे, तो यह ख़्वाब उस को नुक़सान न देगा।

१३०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स सो कर उठे और वुज़ू करना चाहे तो तीन बार नाक साफ़ कर लिया करे, क्योंकि उस की नाक में शैतान रात गुज़ारता है।

१३०४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर ख़ुत्बा फ़र्मा रहे थे, तो आप ने फ़र्माया कि सांपों को मार डालना, ख़ास कर वह सांप कि जो दो धारी वाला हो और बालिश्त के बराबर हो या बे-दुम हो या छोटी दुम हो, क्यों कि यह दोनों अंधा कर देते हैं और हमल गिरा देते हैं। अब्दुल्लाह रज़ि०

कहते हैं कि मैं एक सांप मारने की ताक में था कि मुझ से अबूलबाबा यह बोले कि आपने बाद को उन सांपों को मारने से मना किया है, जो घरों में रहते हैं।

१३०५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कुफ़्र का सिरा पूरब की तरफ़ है और फ़ख़्र व तकब्बुर घोड़े और ऊंट वालों में है और चरवाहों में, जो जंगल के रहने वाले और ऊंट के बालों से घर बनाने वाले हैं और बकरी वालों में नर्मी होती है।

१३०६. हज़रत उक़्बा बिन उमर रज़ि०कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने हाथ से यमन की तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया कि ईमान यमन वालों में से है, मगर दिल की सख़्ती ऊंट वालों में है, जो कि ऊंटों के पास उस मुल्क में रहते हैं, जहां से शैतान के दोनों सींग निकलेंगे यानी क़बीला मुज़र और रबीआ।

१३०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस वक़्त तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह से बेहतरी की दुआ करो, क्योंकि वह फ़रिश्ते को देखता है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से ख़ुदा के ज़रिए पनाह मांगो, क्योंकि वह शैतान को देखता है।

१३०८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जब तुम में से किसी के पीने की चीज़ में मक्खी गिर पड़े तो चाहिए कि उस को निकाल कर फेंक दो, क्योंकि उस के एक पर में बीमारी है और दूसरे में शिफ़ा है।

१३०९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक ज़िना करने वाली औरत अपने कुत्ते की वजह से बख़्श दी गई, वह कुत्ता कुएं के किनारे पर था, प्यास की वजह से ज़ुबान निकाल रहा था और मरने के क़रीब था, उस औरत ने अपना मोज़ा निकाला और अपना दुपट्टा बांध कर उस को पिलाया जिस की वजह से वह बख़्श दी गई।

बाब ५०

नबियों की पैदाइश के बयान में

१३१०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया तो आप का क़द साठ हाथ का था, फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जाओ उन फ़रिश्तों को सलाम करो, जो वह तुमको जवाब दें वही जवाब तुम्हारी औलाद और ज़ुर्रियत का है। आप तशरीफ़ ले गए और अस्सलामु अलैकुम कहा। फ़रिश्तों ने जवाब दिया व अलैकस्सलाम व रहमतुल्लाह फ़रिश्तों ने रहमतुल्लाह बढ़ा दिया सो जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा आदम अलैहिस्सलाम की सूरत में होगा, फिर मख़लूक़ का क़द कम होते-होते यहां तक पहुंचा।

१३११. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब अब्दुल्लाह बिन सलाम को नबी सल्ल० के मदीना में तशरीफ़ लाने की ख़बर पहुंची तो आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, मैं आपसे तीन बातें पूछता हूं जो नबी के सिवा कोई नहीं जानता, (१) पहली यह कि क़ियामत की निशानियों में से पहली निशानी क्या है? (२) और वह पहला खाना जिसको जन्नती खायेंगे क्या है? (३) और किस वजह से बच्चे अपने ददिहाल के मुशाबह होते हैं और किस वजह से ननिहाल के मुशाबह होते हैं? तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझको इसका जवाब अभी जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया है। अब्दुल्लाह ने कहा कि यह फ़रिश्ता यहूदियों का दुश्मन है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत की पहली निशानी वह आग है जो सारे लोगों को हांक कर पूरब से पच्छिम को ले जाएगी, और पहला खाना जिसको

जन्नती खायेंगे मछली के जिगर की नोक[1] होगी और बच्चे की मुशाबहत की वजह यह है कि मर्द जब औरत से सोहबत करता है तो अगर मर्द का पानी औरत के पानी पर ग़ालिब आता है मर्द के जैसा बच्चा होता है और अगर औरत का पानी मर्द के पानी पर भारी पड़ता है तो औरत के जैसा बच्चा पैदा होता है। इब्ने सलाम फ़ौरन बोल उठे मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं। उनसे आप कोई सवाल करें वह मुझे झूठा कर देंगे, इसलिए मुनासिब है कि हुज़ूर सल्ल० पहले मेरी हालत उनसे मालूम करें, चुनांचे यहूदी हाज़िर हुए तो अब्दुल्लाह घर के अन्दर हो गए और हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा कि तुम लोगों में अब्दुल्लाह बिन सलाम कैसे हैं ? उन्होंने जवाब दिया कि वह हम में सब से बड़े आलिम और बड़े आलिम के बेटे हैं और सभी लोगों से बेहतर और बेहतरीन बाप की औलाद हैं। आप ने फ़रमाया, अगर वह मुसलमान हो जायें (तो फिर क्या होगा) यहूदियों ने कहा, ख़ुदा उनको पनाह में रखे। यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़ौरन घर से निकल आए और कहा, अश्हदुअल ला-इला ह इल्लल्लाहु व अश्हदुअन न मुहम्मदर्रं रसूलुल्लाह। (यहूदी कहने लगे) यह हम सब में ज़्यादा बदनसीब का बेटा है और उनकी बुराइयां शुरू कर दीं।

१३१२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर बनी इस्राईल न होते तो गोश्त न सड़ा करता, और हज़रत हव्वा न होतीं तो कोई औरत अपने शौहर की ख़ियानत न करती।

१३१३. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह तआला उस दोज़ख़ी से जो सब में हल्के अज़ाब वाला होगा, फ़रमाएगा कि अगर ज़मीन की सारी चीज़ें तेरी होतीं तो तू उनको अज़ाब से छुटकारे के लिए दे देता। वह अर्ज़ करेगा कि हां। परवरदिगार का उस वक़्त फ़रमान होगा कि मैंने उससे बहुत कम चीज़ तुझ से मांगी जिस वक़्त तू आदम की पुश्त में था, मैंने कहा था कि मेरा किसी को शरीक न बनाओ लेकिन तूने शिर्क को छोड़ा नहीं।

१३१४. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स ज़ुल्म

---

१. एक टुकड़ा जो जिगर के साथ ताल्लुक़ रखता है। (बुख़ारी, ३१३)

से क़त्ल किया जाता है उसकी परेशानी आदम के पहले बेटे पर ज़रूर होती है क्योंकि पहले उसी शख़्स ने क़त्ल का तरीक़ा जारी किया है।

१२१५. हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे घर घबराए हुए आए और यह फ़रमाते हुए तशरीफ़ लाए अफ़सोस ! आज याजूज और माजूज की दीवार में इतना छेद खुल गया है, हुज़ूर सल्ल० ने अपने अंगूठे और शहादत की उंगली से घेरा बना कर दिखाया। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या हम लोग हलाक हो जायेंगे हालांकि हम लोगों में नेक भी हैं। फ़रमाया, हां, जब ज़िना और सूदख़ोरी ज़्यादा हो जाएगी (तो सब हलाक हो जायेंगे)

१३१६. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला आदम अलै० को बुलाएगा, आदम आएंगे। आदम अलै० अर्ज़ करेंगे लब्बैक व सादैक यानी मैं हाज़िर हूं और सारी बेहतरी तेरे ही क़ब्ज़े में है। फिर हुक्म होगा कि दोज़ख़ियों को निकाल। आदम अलै० अर्ज़ करेंगे कितनी मिक़्दार में ? जवाब दिया जाएगा एक हज़ार नौ सौ निन्नानवे, सुनते ही बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और लोग नशे में मस्त दिखाई पड़ेंगे हालांकि वह नशे में न होंगे बल्कि ख़ुदा का अज़ाब सख़्त होगा। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! वह एक शख़्स कौन होगा ? फ़रमाया ख़ुश हो जाओ क्योंकि तुम में से एक ही होगा और याजूज व माजूज में से एक हज़ार, फिर फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम है जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, मुझे उम्मीद है कि जन्नत के लोगों का चौथाई तुम ही लोग हो (यह सुनकर) हमने अल्लाहु अक्बर कहा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि तुम उनमें से एक तिहाई हो गए। हमने फिर अल्लाहु अक्बर कहा। फ़रमाया मुझे उम्मीद है कि तुम जन्नत के लोगों में आधे हो गए, हमने फिर अल्लाहु अक्बर कहा। आपने फ़रमाया कि तुम सबके सब दुनिया भर के लोगों में इतने हो गए जिस तरह सफ़ेद बैल के चमड़े में काले बाल हों या काले बैल के चमड़े में सफ़ेद बाल हों।

१३१७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम (क़ियामत के दिन) सर से पांव तक नंगे उठाए जाओगे, फिर यह आयत पढ़ी, कमा

बदाना अव्वल खलक़िन नुईदुहू वअदन अलैना इन्ना कुन्ना फ़ाइलीन और क़ियामत के दिन सबसे पहले जिस को कपड़ा पहनाया जाएगा वह इब्राहीम अलै० होंगे और मेरे लोगों में से कुछ लोगों को बायीं तरफ़ ले जाने का हुक्म होगा तो मैं अर्ज़ करूंगा कि ये तो मेरे लोग हैं। जवाब दिया जाएगा कि जब से आप इनसे अलग हुए हैं ये लोग इस्लाम से फिर गए थे तो मैं वही कहूंगा जो एक नेक बंदे ईसा अलै० ने कहा था—व कु न त अलैहिम शहीदा मा दुम्तु फ़ीहिम।

१३१८. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उनके बाप आज़र से मुलाक़ात होगी। इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहेंगे कि क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरी नाफ़रमानी मत करो तो उनके बाप कहेंगे कि अच्छा आज मैं तुम्हारी फ़रमांबरदारी करता हूं सो इब्राहीम अलैहिस्सलाम दरख़्वास्त करेंगे कि ए परवरदिगार, तूने मुझ से वायदा फ़रमाया था कि क़ियामत को तू मुझे रुसवा न करेगा और कौन सी रुसवाई इससे बड़ी होगी कि मेरा बाप रहमत से दूर है, उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाएगा, मैंने जन्नत क़ाफ़िरों पर हराम कर दी है। फिर फ़रमान होगा कि ऐ इब्राहीम, तुम्हारे पांव के नीचे क्या चीज़ है ? हज़रत इब्राहीम नीचे देखेंगे तो एक बिज्जू (कुफ़्फ़ार) ख़ून से लथड़ा हुआ नज़र आएगा सो उसके चारों पांव पकड़ कर उसे दोज़ख़ में डाला जाएगा।

१३१९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि किसी ने हुज़ूर सल्ल० से सवाल किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! सारे लोगों में इज़्ज़त वाला कौन शख़्स है ? फ़रमाया जो शख़्स ज़ुह्द और तक़वा वाला हो। लोगों ने अर्ज़ किया कि हमारा यह सवाल नहीं। फ़रमाया तुम सबसे इज़्ज़त वाले युसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि नबी भी हैं और नबी सल्ल० के बेटे भी हैं और नबी के पोते भी और नबी के पड़पोते भी। लोगों ने अर्ज़ किया कि हमारा यह मतलब नहीं। फ़रमाया तो क्या अरब के क़बीलों के बारे में सवाल करते हो ? क़बीलों में जो जाहिलियत के वक़्त में बेहतर था, वही इस्लाम के वक़्त में भी बेहतर होगा, शर्त यह है कि दीन का फ़क़ीह हो जाए (दीन की बातों को अच्छी तरह समझने लगे)

१३२०. हज़रत समुरा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल०

ने फ़रमाया कि आज रात मेरे पास दो शख़्स आए (जिब्रील और मीका-ईल अलै०) फिर हम सब इकट्ठा होकर एक लम्बे क़द के बुज़ुर्ग के पास गए जिनका सर बड़ा था और वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे।

१३२१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखना चाहो तो अपने नबी को देख लो, रहे मूसा अलैहिस्सलाम तो वह एक गठे हुए गेहुंए रंग के आदमी थे, लाल रंग के ऊंट पर सवार थे जिस की नकेल खजूर के पट्ठों की बटी हुई रस्सी की थी, गोया मैं उनको देख रहा हूं कि वह इस जंगल में तक्बीर कहते हुए उतर रहे हैं।

१३२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि इब्राहीम अलै० ने अस्सी बरस की उम्र में अपना ख़त्ना क़दूम नाम की जगह में किया था।

१३२३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तीन बार के अलावा कभी झूठ नहीं बोला, १. एक उनका यह कहना कि मैं बीमार हूं, २. यह कि इन बुतों में से बड़े बुत ने किया है (इसके बाद) फ़रमाया कि एक दिन हज़रत इब्राहीम अलै० और हज़रत सारा अलै० आ रही थीं तो एक ज़ालिम बादशाह की तरफ़ से गुज़रता हुआ उस बादशाह से लोगों ने कहा कि यहां एक शख़्स आया है और उसके साथ एक बहुत ख़ूबसूरत औरत है। बादशाह ने उनके पास किसी को भेजा और उन से पूछा गया कि यह तुम्हारी कौन है? आपने जवाब दिया, मेरी बहन है। इसके बाद आप सारा अलै० के पास तशरीफ़ लाए।

१३२४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि औरतों ने जो कमर का पटका बांधना सीखा है तो हज़रत इस्माईल अलै० की मां से क्योंकि सब से पहले उन्होंने ही कमर का पटका बांधा था। इब्राहीम अलै० उन को मय अपने बेटे के लाए थे, हज़रत हाजरा अलै० उस वक़्त उनको दूध पिलाती थीं और इन दोनों को ख़ाना काबा के पास एक बड़े पेड़ के नीचे ज़मज़म के चाह पर मस्जिद-हराम की जगह छोड़ दिया, मक्का में उस वक़्त इन दोनों के सिवा कोई न था और पानी भी न था। हज़रत इब्राहिम अलै० ने उन दोनों को वहां छोड़ दिया और एक चमड़े का तोशादान जिसमें कुछ खजूरें थीं और एक पानी का मश्कीज़ा उनके पास छोड़ दिया

और वहां से वापस हुए। इस्माईल अलै० की मां आपके पीछे दौड़ी और कहने लगीं आप हमको ऐसे जंगल में कि जहां न कोई इंसान है न कोई और चीज़ है, छोड़ कर कहां जाते हैं? कई बार इस्माईल अलै० की मां ने यही कहा लेकिन इब्राहीम अलै० ने उनको कोई जवाब न दिया और उनकी तरफ़ ध्यान न दिया। उस वक़्त इस्माईल अलै० की वालिदा ने उन से कहा कि क्या यह हुक्म आपको अल्लाह तआला ने दिया है? इब्राहीम अलै० ने कहा, हां। इस्माईल अलै० की मां ने कहा तो अब अल्लाह तआला हम को तबाह नहीं करेगा और लौट आयीं। इब्राहीम अलै० तशरीफ़ ले गए और जब सनीया के मक़ाम में पहुंचे और हज़रत इस्माइल की वालिदा की नज़र से ग़ायब हो गए तो उस वक़्त आप ने काबा की तरफ़ मुंह किया और इन कलमों से दुआ की और अपने हाथ उठाए कि ऐ परवरदिगार, मैंने अपनी औलाद ऐसे जंगल में तेरे घर में बसायी है जहां बिल्कुल हरियाली नहीं है और इस्माईल अलै० की वालिदा इस्माईल अलै० को दूध पिलातीं और पानी जो उनके पास मौजूद था उस में से पी लेतीं यहां तक कि जब मश्कीज़ा का पानी ख़त्म हो गया तो आप ख़ुद भी प्यासी हुईं और हज़रत इब्राहीम अलै० भी। हज़रत हाजरा अलै० ने देखा कि हज़रत इस्माईल प्यास की सख़्ती के वजह से मुर्झाए जाते हैं और ज़मीन पर मचल रहे हैं तो (पानी की खोज में) चलीं और सफ़ा पहाड़ को और पहाड़ों के मुक़ाबले में नज़दीक पाया, इस वजह से उस पर खड़ी हो गयीं और जंगल की तरफ़ नज़र की कि (शायद) कोई आदमी नज़र आ जाए लेकिन कोई दिखाई न पड़ा। (मजबूर होकर) सफ़ा के नीचे उतरीं और मैदान में पहुंचीं अपने कुर्ते को उठाकर बहुत तेज़ी से साथ दौड़ीं जैसे कोई बहादुर आदमी दौड़ता है और उस मैदान को पार कर लिया और मरवा पहाड़ी पर चढ़ गयीं और उस पर खड़े होकर देखा कि कोई दिखाई पड़े लेकिन वहां भी कोई नज़र न आया इसी तरह सात बार आयीं और गयीं। इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि इसी वजह से मुसलमानों को सफ़ा व मरवा के दर्मियान दौड़ने का हुक्म हुआ है फिर जब आप मरवा से उतर रही थीं कि एक आवाज़ सुनी जिसे वह ख़ामोशी के साथ कान लगाकर सुनने लगीं फिर एक आवाज़ सुनाई दी तो उसके बाद कहने लगीं तूने आवाज़ तो दी लेकिन अगर तेरे पास फ़र्याद करने की कोई सूरत मुमकिन हो तो मेरी फ़र्याद रसी कर

(यह कह कर नज़र उठा कर) देखा तो ज़मज़म की जगह एक फ़रिश्ता देखा जिसने अपनी एड़ी से ज़मीन खोदी या अपने पर से, फ़ौरन पानी निकल कर बहने लगा। हज़रत हाजरा उसकी मेड़ें अपने हाथों से बना कर एक हौज़ की शक्ल बनाने लगीं। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने हाथों से बनाकर दिखाया और फ़रमाया इसी तरह बनाती थीं कि पानी बह न जाए और अपना मश्कीज़ा उससे भरना शुरू किया लेकिन वह जितना भरती थीं उतना ही पानी बहता था। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ुदा इस्माईल अलै० की वालिदा पर रहम फ़रमाए अगर वह ज़मज़म को इसी तरह जारी रहने देतीं और उसमें से चुल्लू के ज़रिए से पानी न लेतीं तो ज़मज़म एक चश्मा हो जाता जो हमेशा जारी रहता। रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर हाजरा अलै० ने पिया और अपने बच्चे इस्माईल अलै० को दूध भी पिलाया इसके बाद फ़रिश्ते ने कहा जान का ख़ौफ़ न करो क्योंकि यहाँ ख़ुदा का एक घर है जिसको यह लड़का और उसके बाप बनाएंगे। अल्लाह अपने लोगों को हलाक नहीं करता है। उस वक़्त ख़ाना काबा ज़मीन से कुछ उठा हुआ था। जब पानी के नाले उधर बह कर आते तो दायें बायें होकर पानी बह जाता (एक अर्से तक) यही हाल रहा कि इत्तिफ़ाक़ से उधर से एक जरहुम के क़बीले का गुज़र हुआ या जरहुम के रहने वालों में से कुछ लोग कदा नाम की जगह से आ रहे थे वह मक्का की मैदानी ज़मीन में ठहर गये। उनको वहां एक परिंदा नज़र आया और उन्होंने यह पहचान लिया कि यह परिंदा ज़रूर पानी पर घूम रहा है जो हमारे क़रीब है हालांकि उस ज़माने में वहां पानी न था, उन लोगों ने एक क़ासिद उधर को रवाना किया, क़ासिद आगे बढ़ा और हज़रत इस्माईल अलै० की वालिदा को पानी के पास पाकर पूछा कि हम को अपने पास ठहरने की इजाज़त आप देती हैं ? आपने फ़रमाया क्या हरज है, लेकिन पानी में तुम्हारा कोई हक़ नहीं. ये बोले कि हां कोई हक़ नहीं। रिवायत करने वाले कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि उस क़बीले ने हज़रत इस्माईल अलै० की वालिदा को मुहब्बत करने वाला पाया इस वजह से उन्होंने अपने घर वालों को बुलाकर रहना अख़्तियार कर लिया यहां तक कि जब उन लोगों के वहां कुछ मकान हो गए और लड़का भी जवान हो गया और उन से अरबी ज़बान सीख ली और उन लोगों के नज़दीक इस्माईल

एक अच्छे अख़लाक़ वाले आदमी साबित हुए और पूरे तरीक़े से जवान भी हो गए तो उन लोगों ने अपने यहां की एक लड़की से विवाह कर दिया। जब इस्माईल अलै० की मां का इन्तिक़ाल हो गया तो इब्राहीम अलै० अपनी छोड़ी हुई चीज़ों को देखने आए, लेकिन उस वक़्त इस्माईल अलै० नहीं थे। इब्राहीम अलै० ने उनकी बीवी से पूछा कि इस्माईल अलै० कहां गये ? उन्होंने जवाब दिया हमारे लिए रोज़ी की तलाश में गए हैं फिर आपने उनकी ज़िन्दगी और हालात के बारे में पूछा तो बीवी ने कहा कि हम सख़्त मुसीबत और तकलीफ़ में हैं और आप से (तरह तरह की शिकायतें कीं) यह सुनकर आपने फ़रमाया कि जब तुम्हारे शौहर आ जायें तो उनसे मेरा सलाम कह देना और कह देना कि अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें चुनांचे जब इस्माईल अलैहिस्सलाम आए तो उनको अपने बाप की बू आ गयी इसलिए आपने फ़रमाया कि क्या तुम्हारे पास कोई आया था ? उन्होंने कहा कि हां एक तरह के बूढ़े आए थे और उन्होंने आप के बारे में मुझ से पूछा था मैंने उनको आपकी इत्तला दी थी फिर उन्होंने ज़िन्दगी के हालत के बारे में सवाल किया तो मैंने कहा तंगी और मुसीबत में गुज़र होती है। हज़रत इस्माईल अलै० ने फ़रमाया कि क्या तुमको कोई वसीयत भी कर गए हैं। उन्होंने कहा कि हां यह कि मैं उनका सलाम आप से कह दूं और यह कि आप अपने दरवाज़े की चौखट बदल दें। हज़रत इस्माईल अलै० ने कहा कि वह मेरे वालिद थे और उन्होंने हुक्म किया है कि मैं तुम को तलाक़ दे दूं इसलिए तुम अपने घरवालों के यहां चली जाओ। (यह कह कर) उस को तलाक़ दे दी। फिर उसी क़बीले की दूसरी औरत से निकाह कर लिया, फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यहां से वापस होकर जब तक ख़ुदा ने चाहा ग़ायब रहे (और कुछ मुद्दत के बाद) फिर इस्माईल अलै० के यहां तशरीफ़ लाए लेकिन मकान पर फिर कोई न पाया, तो उनकी बीवी से मालूम किया। उन्हों ने कहा हमारे लिए रोज़ी के सामान की तलाश में गए हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारी कैसी गुज़र होती है और उनको रोज़ी के ज़रिए और हालात के बारे में सवाल किए तो उन्होंने जवाब में कहा कि हम फ़राख़ दस्ती और वुसत के साथ गुज़र करते हैं और अल्लाह तआला की हम्द व सना की तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा कि तुम क्या खाती हो ? तो उन्होंने जवाब दिया कि गोश्त फिर पूछा कि क्या चीज़ पीती हो

उन्होंने कहा कि पानी। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ ख़ुदा इन लोगों के गोश्त और पानी में बरकत दे। नबी सल्ल० फ़रमाते हैं कि उन लोगों के लिए गल्ला व अनाज वग़ैरह मयस्सर न था, अगर होता तो आप उसमें बरकत की जरूर दुआ फ़रमाते और आपने फ़रमाया कि मक्का के अलावा जो शख़्स इन मदावमत करेगा उसको यह दो चीजें मुवाफ़िक़ नहीं आयेंगी। इब्राहीम अलै० ने फ़रमाया कि जब तुम्हारे शौहर आ जायं तो उन से मेरा सलाम कहना और यह कहना कि अपने दरवाजे की चौखट को बाक़ी रखना। जब इस्माईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया तुम्हारे पास कोई आया था? बीबी ने कहा हां, हमारे पास एक बूढ़े आदमी आए थे जिनकी शक्ल ख़ूबसूरत थी और उनकी ख़ूब तारीफ़ की, फिर उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा मैंने बतला दिया फ़्लां काम को गए हैं फिर उन्होंने मुझसे जिंदगी गुजर होने के बारे में सवाल किया तो मैंने उनसे अर्ज़ किया कि अच्छी तरह गुजर बसर करते हैं। इस्माईल अलैहिस्सलाम ने पूछा क्या उन्होंने तुझको वसीयत भी की है? बीबी ने जवाब दिया कि हां, उन्होंने तुम को सलाम कहा है और यह हुक्म दिया है कि अपने दरवाज़े की चौखट क़ायम रखना। आपने फ़रमाया कि वह मेरे वालिद थे और तू चौखट है। मुझे मेरे बाप ने हुक्म दिया है कि तुझको निकाह में बाक़ी रखूं, फिर इब्राहीम अलै० जितना ख़ुदा ने चाहा ग़ायब रहे उसके बाद फिर तशरीफ़ लाए उस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम एक बड़े पेड़ के नीचे अपना तीर ठीक कर रहे थे और ज़मज़म के क़रीब बैठे हुए थे, जब अपने वालिद को देखा तो इज़्ज़त के लिए उठ खड़े हुए और वह काम किए जो औलाद बाप के साथ और बाप औलाद के साथ करता है। हज़रत इब्राहीम अलै० ने फ़रमाया कि ऐ इस्माईल अलै०! अल्लाह तआला ने मुझ को एक काम का हुक्म दिया है। आपने अर्ज़ किया कि जो कुछ आपको आप के परवरदिगार ने हुक्म दिया है वह कीजिए। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरी इआनत करोगे उन्होंने अर्ज किया कि जरूर इआनत करूंगा, फ़रमाया मुझे अल्लाह तआला ने यह हुक्म दिया है कि यहां एक मकान बनाऊं और एक टीले की तरफ़ इशारा किया जो अपने आसपास की चीजों से बड़ा और ऊंचा था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि उस वक़्त दोनों ने बैतुल्लाह जादल्लाह शरफ़न के स्तून ऊंचे किए। इस्माईल अलै० तो पत्थर लाते थे और इब्रा-

हीम अलैहिस्सलाम तामीर करते थे यहां तक कि जब इमारत ऊंची हो गयी तो उस पत्थर को जिसे मक़ामे इब्राहीम कहते हैं लाए और उसको उस जगह रख दिया, चुनांचे इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस पर खड़े हो कर बनाते जाते थे और इस्माईल अलैहिस्सलाम उनको पत्थर देते जाते थे और दोनों कहते जाते थे कि ऐ परवरदिगार, हमसे क़ुबूल फ़रमा, तू सुनने वाला और जानने वाला है। रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्न-क अन्तस्स-मीउल्अलीम।

१३२५- हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! ज़मीन पर पहले कौन सी मस्जिद बनायी गयी है? फ़रमाया मस्जिद-हराम। मैंने अर्ज़ किया इसके बाद? फ़रमाया बैतुलमक़्दिस की मस्जिद। मैंने अर्ज़ किया दोनों में कितनी मुद्दत का फ़र्क़ होगा। फ़रमाया चालीस साल का और जहां तुझको नमाज़ का वक़्त हो वहीं नमाज़ पढ़ ले, क्योंकि उस वक़्त फ़ज़ीलत इसी में है।

१३२६. हज़रत अबूहुमैद साइदी रज़ि० कहते हैं कि लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम आप पर दरूद शरीफ़ कैसे पढ़ें? फ़रमाया इस तरह पढ़ो—अल्ला हुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अज़वाजिही व ज़ुर्रियतिही कमा सल्लै-त अला इब्राहीम व बारिक अला मुहम्मदिंव व अज़वाजिही व ज़ुर्रियतिही कमा बारक-त अला इब्राहीम इन्न-क हमीदुम्मजीद।

१३२७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० नीचे के कलमे हज़रत हसन अलै० और हुसैन अलै० पर पढ़ कर फूंकते जाते थे और यह फ़रमाते थे कि तुम्हारे बाप हज़रत इब्राहीम अलै० और इस्मा-ईल अलै०, इसहाक़ अलैहिस्सलाम पर भी यही पढ़कर फूंकते थे—अऊज़ु बिल्लाहि बिकलिमातित्ताम्मति-मिन कुल्लि शैतानिंव व हाम्मतिंव व मिन कुल्लि ऐनिल्लाम्मति।

१३२८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते थे कि नबी सल्ल० ने फ़र-माया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम से ज़्यादा मैं इस क़ौल का-हक़दार था—इज़ क़ा-ल इब्राहीम रब्बि अरिनी कैफ़ तुह्यिल मौता और ख़ुदा तआला लूत अलै० पर रहम फ़रमाए कि उन्होंने रुक्ने शदीद की तरफ़ अपना मक़ाम बनाया था और अगर मैं युसूफ़ अलैहिस्सलाम की तरह क़ैदख़ाने में जितने ज़माने तक वह रहे रहता तो बुलाने वाले के बुलाने पर ज़रूर

चला जाता।

१३२९. हज़रत सलमा बिन अकवम रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० का क़बीला-इस्म की तरफ़ गुज़र हुआ वहां लोग तीरन्दाज़ी कर रहे थे। आप ने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्माईल, तीरंदाज़ी करो, क्योंकि तुम्हारे बाप (इस्माईल अलै०) भी तीरंदाज़ थे और मैं भी उनमें एक फ़रीक़ की तरफ़ हुआ जाता हूं (यह सुन कर) दूसरे क़बीले ने हाथ रोक दिए रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क्यों तीरंदाज़ी नहीं करते ? उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम कैसे तीरंदाज़ी करें हालांकि आप उनके साथ हैं। फ़रमाया कि तीरंदाज़ी करो मैं सबके साथ हूं

१३३०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तबूक के रास्ते में हज्र के मक़ाम में पहुंचे तो आपने हुक्म दिया कि यहां के कूवों का पानी पियें और न बरतनों में भरें। लोगों ने अर्ज़ किया कि हम तो इससे आटे गूंध चुके हैं और बर्तनों में भर चुके हैं तो आपने उनको हुक्म दिया कि अपने बर्तनों का पानी गिरा दो और आटे को फेंक दो।

१३३१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया करीम, करीम का बेटा, करीम का पोता, करीम का पड़पोता यूसुफ़ बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम हैं।

१३३२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि खिज्र अलैहिस्सलाम का यह नाम इसलिए रखा गया कि वह एक बार एक सफ़ेद ज़मीन पर बैठे तो वह उनके बैठने से हरी-भरी हो गयी।

१३३३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि (एक बार) हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ पीलू के पेड़ के फल चुन रहे थे और रसूलुल्लाह सल्ल० यह फ़रमाते जाते थे कि काला फल खोजो, क्योंकि वह अच्छा होता है, लोगों ने आप से पूछा कि आप ने बकरियां चरायी हैं? फ़रमाया, कोई नबी ऐसा नहीं कि जिसने बकरियां न चरायी हों।

१३३४. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि मर्दों में से तो बहुत मर्द पूरे हो चुके और औरतों में से उन औरतों के सिवा कोई पूरी न हुई, आसिया रज़ि० (बीवी फ़िरऔन) हज़रत मरयम बिन्त इमरान और आइशा रज़ि० की सरीद

(शोरबे में भिगोई हुई रोटी) की फ़ज़ीलत और खानों पर।

१३३५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, किसी शख़्स के लिए यह जायज़ नहीं कि यह कहे कि मैं युनूस बिन मती अलै० से बेहतर हूं और उन के बाप की तरफ़ निस्बत करे।

१३३६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर आसान कर दी गई थी, आप जिस वक़्त अपने घोड़ों पर ज़ीन कसने का हुक्म करते तो ज़ीन के कसे जाने से पहले ज़बूर ख़त्म कर लिया करते थे और अपने हाथ की मज़दूरी से खाते थे।

१३३७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी और दूसरे लोगों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई आदमी आग जलाए और उस में परवाने मच्छर और जो परिंदे आग में गिरने वाले हैं, गिरने लगें और फ़रमाया, दो औरतें थीं, जिन के दो बेटे भी थे, उन के साथ एक भेड़िया आया और उन दोनों में से एक का लड़का उठाकर ले गया, तो एक ने दूसरी साथी से कहा कि तेरा बेटा ले गया। दूसरी बोली कि तेरा बेटा ले गया, फिर दोनों दाऊद अलै० के पास मुक़दमा ले गयीं। दाउद अलैहिस्सलाम ने बड़ी के लिए फ़ैसला किया, तो फिर दोनों सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास फ़ैसला ले गयीं और उनको वाक़िए की ख़बर दी। उन्होंने फ़रमाया कि एक छुरी लाओ, बच्चे को चीर कर दोनों को दिए देता हूं। छोटी बोली, ख़ुदा आप पर रहम करे, ऐसा न कीजिए यह इसी को दे दीजिए, तब सुलेमान अलैहिस्सलाम ने वह लड़का छोटी को दे दिया।

१३३८. हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि मरयम बिन्त इमरान अपने ज़माने की औरतों में बेहतर हैं और हज़रत ख़दीजा रज़ि० अपने ज़माने की औरतों में बेहतर हैं।

१३३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ुरैश की औरतें उन सभी औरतों से बेहतर हैं जो ऊंट पर सवार होती हैं, क्योंकि यह औरतें सब औरतों से बच्चों को ज़्यादा मुहब्बत करती हैं।

१३४०. हज़रत उबादा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने

फ़रमाया, जिस शख़्स ने यह कहा कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (इबादत के क़ाबिल) नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, मुहम्मद सल्ल० उस के बंदे और रसूल हैं और ईसा अलै० भी अल्लाह के बंदे और रसूल हैं और ख़ुदा का वह हुक्म हैं, जो हज़रत मरयम अलै० की तरफ़ ख़ुदा ने भेजा था, और जन्नत व दोज़ख़ हक़ हैं तो अल्लाह तआला उसको, उसके अमलों के मुताबिक़ जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

१३४१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, गोद में सिर्फ़ तीन शख़्सों ने बात किया, पहले ईसा अलै० ने, दूसरे बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिसका नाम जुरैह था, वह नमाज़ पढ़ रहा था कि उसकी मां ने उसको आवाज़ दी। उसने अपने दिल में कहा कि नमाज़ पढ़ूं या मां को जवाब दूं, (लेकिन) उसने वालिदा को जवाब न दिया। इस वजह से वालिदा ने बद-दुआ की कि ऐ ख़ुदा! इसको उस वक़्त तक मौत न आए, जब तक यह ज़िना करने वाली औरतों का मुंह न देख ले, चुनांचे जुरैह एक बार अपने इबादतख़ाने में था कि एक औरत उसके सामने आयी और ज़िना के बारे में बात करने लगी। जुरैह ने इंकार कर दिया, फिर वह एक चरवाहे के पास आयी और उससे ज़िना कराया, जिससे एक लड़का पैदा हुआ, उस औरत ने तोहमत लगाने के लिए कह दिया कि यह लड़का जुरैह का है, लोग जुरैह के पास आए और उसके इबादतख़ाने को तोड़ डाला और बेइज़्ज़ती की, गालियां वग़ैरह दीं। जुरैह ने वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी, फिर लड़के के पास आकर कहा, तेरा बाप कौन है? उसने कहा कि चरवाहा। (यह सुनकर) लोगों ने कहा कि तेरा इबादत ख़ाना सोने का बनवा दें। उसने कहा कि मिट्टी ही का बना दो। तीसरे बनी इस्राईल की एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी कि उसके पास से एक सरदार ख़ूबसूरत बढ़िया कपड़े पहने हुए गुज़रा। उस औरत ने दुआ की कि ऐ ख़ुदा, मेरे बेटे को भी ऐसा ख़ूबसूरत और मालदार कर दे। लड़के ने कहा, ऐ ख़ुदा! मुझे इसकी तरह न कर, फिर वह औरत की छाती में चुस्की लगाने की तरफ़ लग गया। अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि गोया मैं रसूलुल्लाह सल्ल० को देख रहा हूं कि वह अपना मुबारक अंगूठा चूस रहे हैं, फिर उस औरत के पास से एक लौंडी गुज़री तो औरत ने कहा कि ऐ ख़ुदा मेरे लड़के को इसकी तरह न करना। लड़के ने दूध छोड़कर कहा कि ऐ ख़ुदा! इसकी तरह कर देना, तब उस

औरत ने कहा, यह क्यों ? लड़के ने कहा कि सवार ज़ालिमों में से एक ज़ालिम है और इस लौंडी पर इल्ज़ाम है, क्योंकि लोग इसको कहते हैं कि तूने ज़िना किया है, चोरी की है, हालांकि उस बेचारी ने कुछ भी नहीं किया।

१३४२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि मैंने ईसा अलै० और मूसा अलै० और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा ईसा अलै० तो सुर्ख़ रंग वाले गठे हुए बदन और चौड़े सीने के आदमी थे और मूसा अलै० गेहुंए रंग के, जिस्म और क़द वाले, और जवान थे, गोया कि ज़त्त क़बीले के रहने वाले लोगों में से थे।

१३४३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने आज रात देखा कि मैं ख़ाना काबा के नज़दीक हूं और एक शख़्स को देखा जो ऐसे गेहुंए रंग का था कि गेहुंए रंग वालों में उससे बेहतर नहीं होता है, उसके बाल कान की लौ के नीचे लटके हुए मोढ़ों के बीच पड़े थे और बाल घूंघर वाले नहीं बल्कि सीधे थे, उनके सर से पानी टपक रहा था और दो शख़्सों के कंधों पर हाथ रखे हुए काबे का तवाफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौन लोग हैं ? लोगों ने कहा कि यह मसीह बिन मरियम अलै० हैं, फिर मैंने उनके पीछे एक और आदमी देखा, जिसके बाल बहुत घुंघराले थे। और दायीं आंख से काना था और इब्ने क़ुत्न से मिलता-जुलता था और अपने दोनों हाथ एक आदमी के कंधे पर रखे हुए तवाफ़ कर रहा था, मैंने कहा कि यह कौन है ? लोगों ने कहा मसीहुद्दज्जाल है।

१३४४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० दूसरी रिवायत में कहते हैं, ख़ुदा की क़सम ! रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत ईसा अलै० के बारे में लफ़्ज़ 'सुर्ख़' का इस्तेमाल नहीं किया बल्कि यह फ़रमाया कि जब मैं तवाफ़ कर रहा था, तो मैंने एक शख़्स गेहुंए रंग का जिसके सर के बाल सीधे थे और सर से पानी टपक रहा था, दो आदमियों पर सहारा दिए हुये था, देखा। मैंने पूछा कि यह कौन है ? लोगों ने जवाब दिया मसीह बिन मरियम अलै० हैं। मैं मुड़कर देखने लगा तो एक और शख़्स को देखा जो सुर्ख़ था और लंबा-चौड़ा था, बाल घुंघराले थे। मैंने पूछा, यह कौन है ? लोगों ने कहा कि यह दज्जाल है और वह दायीं आंख से काना था। उसकी आंख अंगूर की तरह बिल्कुल बाहर निकली हुई थी और इब्ने क़ुत्न जैसा था।

१३४५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने

फ़रमाया, मैं इब्ने मरियम से बहुत क़रीब हूं और सारे पैग़म्बर सौतेले भाई हैं। मेरे और इब्ने मरियम के बीच में कोई नबी नहीं।

१३४६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, मैं सारे लोगों के मुक़ाबले में हज़रत ईसा अलै० से क़रीब हूं और सभी पैग़म्बर सौतेले भाई हैं, क्योंकि उनकी माएं मुख़्तलिफ़ और दीन सब का एक ही है।

१३४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ईसा बिन मरयम अलै० ने एक शख़्स को चोरी करते देखा। फिर उससे फ़रमाया क्या तूने चोरी की है? उसने कहा हरगिज़ नहीं। आप ने फ़रमाया कि उस ख़ुदा की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि मैं ख़ुदा पर ईमान लाया हूं और अपनी आंख को झूठा बनाता हूं।

१३४८. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी तारीफ़ बढ़ा-चढ़ा कर न करो, जिस तरह ईसाइयों ने इब्ने मरयम की तारीफ़ में बढ़ा-चढ़ा कर की, क्योंकि मैं उसका बंदा हूं, यों कहा करो कि ख़ुदा के बंदे और उसके रसूल सल्ल०।

१३४९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जिस वक़्त तुम लोगों में हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० उतरेंगे और इमाम तुम्हारा तुम ही लोगों में से होगा।

१३५०. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस वक़्त दज्जाल निकलेगा, तो उसके साथ आग और पानी होगा, जिसको लोग आग ख़्याल करेंगे, वह तो ठंडा पानी होगा और जिसको लोग ठंडा पानी ख़्याल करेंगे वह आग होगी, जो जला देगी, इसलिए तुममें से जो शख़्स उस से मुलाक़ात करे तो आग को अख़्तियार कर ले, क्योंकि यह मीठा और ठंडा पानी होगा।

१३५१. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, एक शख़्स जब मरने के क़रीब हुआ और उसकी ज़िंदगी की उम्मीद न रही, तो अपने घर वालों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊं तो मेरे लिए बहुत सी लकड़ियां इकट्ठा करना और फिर उनमें आग लगा कर मुझको जला देना और जब आग मेरा गोश्त जला कर हड्डियों को जलाना शुरू करे और वह भी जल चुके, तो उनको पीसा, फिर आंधी के

वक़्त के इख्तियार में रहना, जब सख्त आंधी चले तो उस आटे को हवा में उड़ा देना, चुनांचे उन सबने यही किया। अल्लाह तआला ने उसके सभी हिस्से इकट्ठे करके फ़रमाया कि तूने यह क्यों किया ? उसने अर्ज़ किया कि तेरे खौफ़ से अल्लाह तआला ने उसको बख्श दिया।

१३५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल के हालात को पैगम्बर ठीक करते रहते थे। जब किसी नबी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उसकी जगह पर कोई दूसरा हो जाता था और मेरे बाद कोई नबी नहीं, हां, खलीफ़ा ज़रूर होंगे और ज़्यादा होंगे। लोगों ने अर्ज़ किया, फिर आप हमें क्या हुक्म फ़रमाते हैं ? आपने फ़रमाया उनकी ताबेदारी करना और उनके हक़ अदा करना, क्योंकि उन से अल्लाह तआला रियाया के मामले में सवाल करेगा।

१३५३. हज़रत अबूसईद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया तुम (ऐ मेरी उम्मत !) पहले लोगों की ज़रूर पैरवी करोगे, यहां तक कि कोई फ़र्क़ नहीं रहेगा, अगर वे गोह के सूराख में जाएंगे तो तुम भी उनके पीछे जाओगे। हमने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या पहले लोगों से मुराद यहूदी और ईसाई हैं ? आपने फ़रमाया कि वह नहीं तो फिर कौन ?

१३५४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से तब्लीग़ करो, चाहे एक ही आयत की हो और बनी इस्राईल के वाक़िए बयान करो, क्योंकि उसमें कोई नुक़सान नहीं और जिसने मेरी तरफ़ झूठी हदीस जोड़ी, उसने अपना ठिकाना दोज़ख में तैयार किया।

१३५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, यहूदी और ईसाई अपनी दाढ़ियां नहीं रंगते, इसलिए (उनकी मुखालफ़त के लिए) तुम उनकी मुखालफ़त करो (यानी मेंहदी का खिज़ाब लगाओ।)

१३५६. हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, पहले ज़माने में एक शख्स था, जिसके एक ज़ख्म था, तो वह बहुत लोटा, पीटा, चिल्लाया आखिरकार छुरी लेकर अपना हाथ काट डाला, जिससे खून बंद न हुआ और मर गया, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरा बंदा अपनी जान को हलाक करने में मुझ से आगे बढ़

गया, मैंने उस पर जन्नत हराम कर दी ।

१३५७. हज़रत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, बनी इस्राईल के ज़माने में तीन शख्स थे अंधा, गंजा कोढ़ी । अल्लाह तआला का इरादा हुआ कि उनको आज़माए । चुनांचे उनके पास एक फ़रिश्ता आया, पहले कोढ़ी के पास आया और कहा कि तुझे क्या चीज़ पसंद है ? उसने कहा कि अच्छा रंग और ख़ूबसूरत जिस्म क्योंकि लोग मुझ से घिन खाते हैं । चुनांचे फ़रिश्ते ने उस पर अपना हाथ फेर दिया, वह अच्छा हो गया और अच्छा रंग और अच्छा जिस्म उसको दे दिया गया, फिर फ़रिश्ते ने कहा कि कौन सा माल तुझ को पसन्द है ? उसने कहा कि ऊंट इसलिए उसको एक हामिला ऊंटनी दे दी गयी, फिर फ़रिश्ते ने कहा कि तुझे इसमें बरकत होगी, फिर गंजे के पास आया और कहा कि तुझको क्या चीज़ प्यारी है ? उसने कहा अच्छे बाल और गंजेपन का दूर हो जाना, क्योंकि इसकी वजह से लोग मुझ से घिन खाते हैं । फ़रिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा तो उसका गंजापन जाता रहा और अच्छे बाल भी दे दिए गये । फिर उससे पूछा कि तुझ को कौन सा माल पसंद है ? उसने कहा कि गाय, फ़रिश्ते ने एक हामिला गाय उसको दे दी और कहा कि खुदा तुझे इसमें बरकत देगा । फिर अंधे के पास आया और उससे कहा कि तुझे क्या चीज़ पसंद है ? उसने कहा कि अल्लाह तआला मुझे मेरी आंख वापस दे दे ताकि मैं लोगों को देखने लगूं । रिवायत करने वाले ने कहा कि फ़रिश्ते ने उसके मुंह पर हाथ फेरा, तो अल्लाह तआला ने उसका अंधापन दूर कर दिया, फिर फ़रिश्ते ने कहा कि तुझको कौन सा माल पसंद है ? उस ने कहा कि बकरियां, तो उस को हामिला बकरी दे दी ।

इसके बाद उन तीनों जानवरों की नस्ल पैदा हुई तो पहले के पास एक ऊंटों का जंगल भर गया और दूसरे का एक गायों का जंगल और तीसरे का बकरियों का ।

फिर वह फ़रिश्ता एक अर्से के बाद अपनी पहली सूरत और शक्ल में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं एक ग़रीब आदमी हूं कि सफ़र में मेरे सारे वसीले ख़त्म हो गए, इसलिए अब खुदा ही मुझ को वतन पहुंचा सकता है और मैं तुझ से उस दिन का वसीला देकर जिसने तुझ को अच्छा रंग और ख़ूबसूरत जिस्म दिया और माल भी दिया, यह सवाल करता हूं

कि मुझ को एक ऊंट दे दे जिसके जरिए से मैं अपना सफ़र तै कर के मंज़िल को पहुंच जाऊं। उसने कहा कि मैं नहीं दे सकता, तब फ़रिश्ते ने कहा कि शायद मैं तुझ को पहचानता हूं, क्या तू पहले कोढ़ी न था कि लोग तुझ से घिन खाते थे और क्या तू मुहताज न था कि अल्लाह तआला ने माल दिया ? उसने कहा कि नहीं, यह माल तो मेरी पीढ़ियों से ही चला आया है। फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तू झूठा हो तो अल्लाह तआला तुझ को वैसा ही कर दे जैसा कि तू पहले था।

फिर वह फ़रिश्ता अपनी सूरत में गंजे के पास आया और उससे भी वही कहा जो पहले कहा था। उसने भी वही जवाब दिया जो पहले ने दिया था। फ़रिश्ते ने कहा कि अल्लाह तआला तुझ को वैसा ही कर दे जैसा तू पहले था।

फिर अंधे के पास अपनी पहली शक्ल और सूरत में नज़र आया और उससे कहा कि एक ग़रीब आदमी हूं, मुसाफ़िर हूं, सफ़र में सारे जरिए ख़त्म हो चुके हैं इसलिए मंज़िल तक पहुंचना अल्लाह तआला के ही जरिए से है उसके बाद तेरे जरिए से है, मैं तुझ से उस ज़ात का वास्ता देकर जिसने तुझे आंख वापस की है, एक बकरी मांगता हूं जिसके जरिए से मैं अपना सफ़र करके मन्ज़िल को पहुंच जाऊं। उसने जवाब दिया कि बेशक मैं पहले अंधा था उसने मेरी आंख वापस दे दी और मैं फ़क़ीर व मुहताज था, अल्लाह तआला ने मुझ को मालदार बना दिया, इसलिए तू जो चाहे ले जाये, तुझे किसी चीज़ से न रोकूंगा। फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि अच्छा माल रख ले। अल्लाह तआला ने तुम तीनों की आज़माइश की थी, तुझ से अल्लाह तआला ख़ुश हुआ और तेरे साथियों से नाख़ुश।

१३५८. हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल में एक शख़्स था, उसने निन्नानवे आदमियों का ख़ून किया था, फिर मस्अला पूछने के लिए निकला और राहिब के पास आया, पूछा कि मेरी तौबा क़ुबूल हो जाएगी ? राहिब ने कहा, नहीं। उस शख़्स ने उस राहिब को भी क़त्ल कर डाला। फिर (लोगों से) मस्अला पूछने लगा, किसी ने उससे कहा कि फ़्लां गांव में जाओ। (जब वह उस गांव की तरफ़ चला) तो रास्ते में मौत आ गयी तो मौत के क़रीब होने के वक़्त भी उस गांव की तरफ़ सरका लेकिन उस का दम निकल गया।

अज़ाब और रहमत के फ़रिश्ते आपस में झगड़ने लगे तो अल्लाह तआला ने उस तरफ़ की ज़मीन को हुक्म दिया कि क़रीब हो जा वह क़रीब हो गयी और इस तरफ़ की ज़मीन को हुक्म दिया कि दूर हो जा वह दूर हो गयी। उसी वक़्त अल्लाह तआला का फ़रमान हुआ कि ऐ फ़रिश्तो! ज़मीन को नापो, चुनांचे नापा गया तो वह आलिम के गांव की तरफ़ क़रीब निकला, इस वजह से अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।

१३५९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने दूसरे से ज़मीन। ख़रीदी (जब ख़रीद चुका) तो ख़रीदार ने उस ज़मीन में एक गढ़ा पाया जिसमें सोना भरा हुआ था, बेचने वाले से कहने लगा कि भाई, अपना सोना मुझ से ले ले क्योंकि मैंने तुझ से सिर्फ़ ज़मीन ली थी, सोना तुझ से नहीं ख़रीदा था। जिसकी ज़मीन थी वह कहने लगा कि मैंने ज़मीन और जो कुछ उसमें है वह सब तेरे हाथ बेच डाला है। सो वे दोनों एक शख़्स के पास फ़ैसले के लिए गये। उसने कहा कि तुम दोनों की औलाद भी है, तो उसमें से एक ने कहा कि मेरा लड़का है और दूसरे ने कहा, मेरी लड़की है। उसने हुक्म दिया कि लड़के और लड़की की आपस में शादी कर दो और उस माल को इन दोनों पर ख़र्च कर दो और (बाक़ी का) सदक़ा कर दो।

१३६०. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० से पूछा गया कि तुम ने रसूलुल्लाह सल्ल० से कुछ ताऊन के बारे में भी सुना है, जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि ताऊन एक अज़ाब है जो बनी इस्राईल की एक जमाअत पर भेजा गया था, इसलिए अगर तुमको मालूम हो कि किस जगह है वहां मत जाओ और अगर तुम्हारी जगह शुरू हो तो वहां से भागो मत।

१३६१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ताऊन के बारे में पूछा, तो आपने फ़रमाया कि यह ख़ुदा का अज़ाब है। अल्लाह तआला जिस पर चाहता है, उस पर भेज देता है, लेकिन उसको अल्लाह तआला ने मोमिनों के लिए रहमत बनाया है। कोई शख़्स ऐसा नहीं कि उसके शहर में ताऊन आए और वह सब्र व नेकनीयती से वहां बैठा रहे और यक़ीन करे कि वह ही चीज़ मुझ को पहुंचेगी जो तक़्दीर में है और इसी हालत में वह मर जाय तो उसको शहीद का सवाब मिलता है।

१३६२. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि गोया मैं नबी को देख रहा हूं कि आप नबियों में से किसी नबी का क़िस्सा फ़रमा रहे हैं और इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि एक नबी की क़ौम ने उसको इतना मारा कि ख़ून से लथपथ कर दिया तो वह अपने चेहरे से ख़ून पोंछते जाते थे और कहते जाते थे कि ऐ ख़ुदा ! मेरी क़ौम को हिदायत कर, क्योंकि यह लोग जाहिल हैं।

१३६३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, एक शख़्स तहबंद फ़ख़्र के साथ ज़मीन पर घसीटता चलता था, तो अल्लाह तआला ने उस को ज़मीन में धंसा दिया और वह क़ियामत तक ज़मीन में धंसा रहेगा।

बाब ५१

क़ुरैश की तारीफ़ के बयान में

१३६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि लोग खानों की तरह हैं, जो लोग जाहिलियत के ज़माने में बेहतर थे, वही इस्लाम के ज़माने में बेहतर हैं, शर्त यह है कि दीन की बातें समझने लगें और इनमें जो इमारत और ख़िलाफ़त से ज़्यादा परहेज़ करेगा उसको तुम सब से बेहतर पाओगे और सबसे शरीर उस शख़्स को पाओगे जो मुनाफ़िक़ हो, जो उनके पास एक मुंह से आता हो और दूसरे मुंह से औरों के पास जाता हो।

१३६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि लोग (इमारत और ख़िलाफ़त में) क़ुरैश की ताबेदारी करेंगे। उनमें से एक मुसलमान क़ुरैश की पैरवी करेगा और जो काफ़िर होगा वह काफ़िरों की और लोग खानों की तरह हैं जो जाहिलियत में बेहतर था वही इस्लाम के ज़माने में बेहतर है, बस शर्त यह है कि दीन की समझ हासिल कर ले और बेहतर आ-

दमी उसी को समझो जो ख़िलाफ़त को नागवार समझे और उसी में फंस जाए।

१३६६. हज़रत मुआविया रज़ि० को इत्तिला मिली कि अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० यह हदीस बयान करते हैं कि क़हतान क़बीले में एक बादशाह होगा। यह सुन कर हज़रत मुआविया रज़ि० नाराज़ हुए और खड़े होकर पहले अल्लाह तआला की हम्द-व सना की, फिर फ़रमाया कि मुझ को यह मालूम हुआ है कि तुम में कुछ लोग ऐसी हदीसें बयान करते हैं जो अल्लाह की किताब में नहीं हैं, और न रसूलुल्लाह सल्ल० से नक़ल है, इसलिए यही लोग तुम में जाहिल हैं, अपने आप को ऐसे लोगों से बचाओ। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि आपने फ़रमाया था कि ख़िलाफ़त क़ुरैश में रहेगी, उन से जो कोई दुश्मनी करेगा, अल्लाह तआला उसको औंधे मुंह गिरा देगा, जिस वक़्त तक क़ुरैश दीन को क़ायम रखेंगे -मा अक़ामुद दीन (बुख़ारी)

१३६७. हज़रत अबूहुरैरह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया क़ुरैश और अंसार और जहीनिया और मज़रमइना और असलम और अश्जा और गिफ़ार मेरे दोस्त हैं और उनका ख़ुदा और रसूल सल्ल० के सिवा कोई दोस्त नहीं है।

१३६८. इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि ख़िलाफ़त का काम जब तक क़ुरैश में है (वह भी दीनदार बाक़ी रहेंगे) उन ही में रहेगा।

१३६९. हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ि० कहते हैं कि मैं और उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में गए, हज़रत उस्मान रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुज़ूर सल्ल० ने मुत्तलिब क़बीले को माल दिया और हमको छोड़ दिया और हालांकि हम लोग और वह आप के नज़दीक एक ही मर्तबे में हैं। फ़रमाया बनूमुत्तलिब और बनू हाशिम एक ही मर्तबे में हैं।

१३७०. हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने अपने बाप के सिवा किसी और की तरफ़ निस्बत की, हालांकि उसको मालूम है तो वह काफ़िर है और जो शख़्स अपने आप को ऐसी क़ौम का बतलाए जिसमें उसका नसब न हो तो उसको चाहिए कि अपनी जगह दोज़ख़ में तैयार कर ले।

१३७१. हज़रत वासला बिन अश्क़ा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सबसे बड़ा बुहतान यह है कि तू अपने बाप के अलावा किसी और को बाप बनाए या झूठा ख्वाब बयान करे या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका ताल्लुक करे जो आप ने न फ़रमाया हो।

१३७२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया ग़िफ़ार क़बीले की खुदा मग़फ़िरत करे और असलम क़बीले को खुदा सही सलामत रखे और असीया क़बीले ने खुदा और उसके रसूल सल्ल० की नाफ़रमानी की।

१३७३. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि अक़रा बिन हाबिस ने रसूलुल्लाह सल्ल० से यह लफ़्ज़ कहे, हाजियों के माल चुराने वाले असलम, ग़िफ़ार और मुरैना क़बीले हैं (हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं) कि मेरा ख्याल यह है कि शायद जहनिया क़बीले को भी कहा। नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे यह बताओ कि अगर असलम, ग़िफ़ार मुरैना और जहनिया क़बीले, बनी तमीम और आमिर और असद क़बीले और ग़त-फ़ान क़बीले से बेहतर हो जायें तो बनी तमीम वग़ैरह क़बीले घाटे में होंगे अक़रा ने अर्ज़ किया, ज़रूर। फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, पहले क़बीले दूसरों से बहुत बेहतर हैं।

१३७४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, असलम क़बीले और ग़िफ़ार और मुरैना यह सब अल्लाह के नज़दीक बेहतर हैं या फ़रमाया, क़ियामत के दिन बेहतर होंगे असद और तमीम, हवाज़िन और ग़तफ़ान क़बीले से।

बाब ५२

नबी सल्ल० की नुबूवत और मेराज के बयान में

१३७५. हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मत्तालिब बिन हाशिम बिन मुनाफ़ बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुवी बिन

ग़ालिब बिन मुहः बिन मालिक बिन नस्र बिन कनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरका बिन इलियास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन अदनान।

१३७६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि चालीस साल की उम्र में रसूलुल्लाह सल्ल० पर वह्य उतरी, उसके बाद आप मक्का में तेरह साल रहे, उसके बाद आपको हिजरत का हुक्म किया गया, तो आप ने मदीना को हिजरत की और दस साल तक रहे। इसके बाद आप ने इन्तिक़ाल फ़रमाया।

१३७७. हज़रत इब्ने अम्र बिनआस रज़ि० कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्ल० काबा के परनाले के क़रीब नमाज़ पढ़ रहे थे, इतने में उक़्बा बिन अबी मुईत आया और अपना कपड़ा आपकी गर्दन में डालकर गला घोंटना शुरू किया, इसी बीच में हज़रत अबूबक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए और उसके दोनों कंधे पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्ल० के क़रीब से हटा दिया और फ़रमाया कि आदमी को सिर्फ़ इस वजह से क़त्ल करते हो कि वह कहता है मेरा रब ख़ुदा है, आख़िर तक।

१३७८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से पूछा गया कि जिस दिन जिन्नों ने क़ुरआन सुना था, उस दिन की जिन्नों की ख़बर हुज़ूर सल्ल० को कैसे हुई? फ़रमाया एक पेड़ ने दे दी थी।

१३७९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० के वुज़ू और इस्तिंजे का पानी आप के साथ लिए रहता था। यह हदीस आ चुकी है। इस रिवायत में इतना और ज़्यादा है कि हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह तआला से जिन्नों के लिए दुआ की थी, जिस हड्डी या गोबर से गुज़रें तो उन को खाने की कोई चीज़ वहां मिले।

१३८०. हज़रत उम्मे ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैं बचपन के दिनों में हब्शा से आई तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझको एक चादर दी जिसमें नक़्श थे और उसके नक़्श पर हाथ फेर कर फ़रमाते जाते थे कि अच्छी है, अच्छी है।

१३८१. हज़रत अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब रज़ि० कहते हैं कि मैंने ख़िदमते मुबारक में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हुज़ूर सल्ल० ने अपने चचा को क्या फ़ायदा पहुंचाया, क्योंकि वह आप की हिफ़ाज़त करते थे और कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में आप की हिमायत करते थे। फ़रमाया कि वह टख़्नों तक आग में न होंगे और अगर मैं न

होता तो वह आग के सब से नीचे हिस्से में होते।

१३८२. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आप के चचा के बारे में सवाल किया गया था तो मैंने सुना कि आप फ़रमाते हैं शायद मेरी शफ़ाअत उन को कुछ फ़ायदा दे और अल्लाह तआला उन को सिर्फ़ पिंडुलियों तक आग में रखे, उन के गट्टे आग में डूबे हुए होंगे और इसकी वजह से उन का दिमाग़ जोश मारता होगा।

१३८३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, जब क़ुरैश ने मुझको झूठा ठहराया तो मैं हिज्र की जगह में खड़ा हो गया और वहां अल्लाह तआला ने मेरे सामने बैतुल मक़्दिस कर दिया और मैं उसको देख कर उसकी निशानियां बतलाता रहा, और उसको देखता रहा।

१३८४. हज़रत इब्न सअसआ रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल०ने मेराज की रात लोगों से बयान फ़रमाया कि मैं हुजरे में लेटा हुआ था, एक शख्स मेरे पास आया और उसने यहां से यहां तक यानी जिस्म पर गर्दन से लेकर नीचे तक (यह रिवायत करने वाले का क़ौल है) चीरा लगाया और मेरे दिल को निकाल लिया, इसके बाद एक सोने की तश्तरी मेरे क़रीब लायी गयी, जिसमें ईमान भरा हुआ था और मेरे दिल को धो कर और सीने में रखकर पहले जैसा कर दिया। इसके बाद मेरे पास एक जानवर लाया गया जो खच्चर से छोटा और गधे से बड़ा था, जिसको बर्राक़ कहते हैं। जहां तक नज़र जाती थी, उस फ़ासले तक उसका एक क़दम जाता था और मुझको उस पर सवार किया गया और मुझको जिब्रील अलै० लेकर चले, यहां तक कि मैं दुनिया के आसमान के क़रीब पहुंचा और दरवाज़ा खुलवाना चाहा, तो आवाज़ आई कौन है? जिब्रील अलै० ने कहा, जिब्रील! आवाज़ आई, आपके साथ कौन है? जवाब दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। पूछा गया कि उनकी तरफ़ भेजे गए थे? जिब्रील अलै० ने कहा, हां, आवाज़ आई, अच्छा तशरीफ़ लाइए क्या मुबारक आना है कि उनको नसीब हुआ और दरवाज़ा खुल गया, जब मैं पहुंचा तो देखता हूं कि हज़रत आदम अलै० मौजूद हैं; जिब्रील अलै० ने कहा, यह आप के बाप आदम हैं, इन को सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया। उन्होंने जवाब में 'खुशआमदीद' कहा, ऐ नेक

बेटे और ऐ नेक नबी सल्ल० ।

फिर मुझे उससे और ऊपर लेकर चढ़े और दूसरे आसमान पर पहुंचे और दरवाज़ा खुलवाने की कोशिश की, आवाज़ आई कौन है ? जवाब मिला जिब्रील । सवाल हुआ तुम्हारे साथ कौन है ? जवाब दिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम । आवाज़ आई क्या भेजे गए थे ? जवाब दिया हां । आवाज़ आई, तशरीफ़ लाइए क्या अच्छा आना है, जो नसीब हुआ और दरवाज़ा खुल गया, जब मैं ऊपर पहुंचा तो क्या देखता हूं कि यह्या अले० और ईसा अले० दोनों खाला ज़ाद भाई वहां मौजूद हैं । जिब्रील अलै० ने कहा, यह यह्या अलै० और ईसा अलै० हैं, उनको सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया और इसके बाद कहा कि आइए, अच्छे भाई और नेक नबी, खुश आमदीद । इसके बाद मुझको तीसरे आसमान पर ले कर चढ़े और दरवाज़ा खुलवाने की इजाज़त चाही, आवाज़ आई कौन है ? जवाब दिया जिब्रील अलै० हैं । सवाल किया गया, आपके साथ कौन है ? जवाब दिया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम । सवाल हुआ क्या भेजे गये थे? जवाब दिया, हां, आवाज़ आई, तशरीफ़ लाइए आप को अच्छा आना हासिल हुआ और दरवाज़ा खुल गया, मैं दाखिल हुआ । अचानक युसुफ़ अलैहिस्सलाम नज़र आए, जिब्रील अलै० ने कहा कि यह युसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं, इनको सलाम करो । मैंने उनको सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया और फ़रमाया, ए नेक भाई और नेक नबी, खुश आमदीद ।

इसके बाद मुझे लेकर ऊपर चढ़े और चौथे आसमान पर पहुंचे और दरवाज़ा खुलवाना चाहा । आवाज़ आई कौन है ? जवाब दिया जिब्रील । फिर पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है ? जवाब दिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), फिर कहा गया कि क्या भेजे गये थे ? उन्होंने जवाब दिया, हां । आवाज़ आई, आजाइए, और दरवाज़ा खुल गया, जब अन्दर दाखिल हुआ तो क्या देखता हूं कि इद्रीस अलै० हैं, इन को मैंने सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया और फ़रमाया कि आइए अच्छे नेक भाई, और नेक नबी । इसके बाद मुझ को और ऊपर ले गए और पांचवें आसमान पर पहुंचे और दरवाज़ा खोलने का सवाल किया, पूछा गया कौन है ? जवाब दिया जिब्रील, फिर कहा गया, तुम्हारे साथ कौन है? जवाब मिला (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सवाल किया गया, तशरीफ़ लाना मुबारक है जो उनको नसीब हुआ । अन्दर दाखिल हुआ तो

हारून अलै० नज़र आए। जिब्रील अलै० ने कहा कि यह हारून अलै० हैं इनको सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया और फ़रमाया कि खुश आमदीद, ऐ नेक भाई और नेक नबी सल्ल०।

इसके बाद मुझ को ऊपर ले गए और छठें आसमान पर पहुंचे और दरवाज़ा खुलवाने का सवाल किया। अन्दर से आवाज़ आई कौन हैं? जवाब दिया, जिब्रील, फिर पूछा गया, तुम्हारे साथ कौन हैं? उन्होंने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूछा गया क्या इन को लेने के लिए भेजे गए थे? उन्होंने कहा, हां। आवाज़ आई तशरीफ़ लाइए और बड़ा मुबारक आना है जो नसीब हुआ है। इसके बाद दरवाज़ा खुल गया मैं अन्दर दाखिल हुआ तो मुझ को मूसा अलैहिस्सलाम नज़र आए। जिब्रील अलै० ने कहा कि यह मूसा अलै० हैं, इनको सलाम कीजिए, मैंने सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया और कहा कि खुश आमदीद नेक भाई और नेक नबी।

इसके बाद मैं आगे बढ़ने लगा तो मूसा अलै० रोने लगे, किसी ने पूछा कि आप क्यों रोने लगे? जवाब दिया मुझ को यह ख्याल आया कि मेरे बाद एक लड़का नबी सल्ल० हो गया, और जन्नत में जितने लोग मेरी उम्मत के जाएंगे, उनसे ज़्यादा उसकी उम्मत के जाएंगे। इसके बाद मुझे सातवें आसमान पर ले गए और जिब्रील अलै० ने दरवाज़ा खोलने की फ़रमाइश की, आवाज़ आई कौन है? जवाब दिया जिब्रील अलै०। सवाल किया कि तुम्हारे साथ कौन हैं? जवाब दिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आवाज़ आई क्या उनके लेने के लिए भेजे गए थे? जिब्रील अलै० ने कहा, हां। आवाज़ आई, अंदर तशरीफ़ लाइए, क्या मुबारक आना नसीब हुआ है और दरवाज़ा खुल गया। जब मैं अन्दर दाखिल हुआ, इब्राहीम अलैहिस्सलाम नज़र आए। जिब्रील अलै० ने कहा यह तुम्हारे वालिद इब्राहीम अलै० हैं, इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया, इब्राहीम अलै० ने जवाब दिया और फ़रमाया खुश आमदीद नेक बेटे और नेक नबी।

इसके बाद जिब्रील अलै०, मुहम्मद सल० को सिदरतुलमुनतहा पर ले गए, मैंने देखा कि उसके पत्ते ऐसे हैं जैसे हाथी के कान और उस के फल मुश्कों की तरह। जिब्रील अलै० ने कहा कि यह सिदरतुलमुनतहा है वहां चार नहरें दिखाई दीं, दो अन्दर थीं, और दो बाहर थीं। मैंने पूछा ये कैसी

हैं ? जिब्रील अलै० ने कहा कि यह जो अन्दर की हैं यह वह हैं जो जन्नत में जाती हैं और दो बाहर की जो हैं उनमें से एक नील है और दूसरी फ़रात। इसके बाद मुझ को बैतुलमामूर की तरफ़ ले चले, मालूम हुआ कि इसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते (नए) दाखिल होते हैं। उसके मेरे पास दो बरतन लाए गये, एक दूध का और एक खालिस शहद का, मैंने दूध वाला लिया। जिब्रील अलै० ने कहा कि यह हिदायत है जिस पर आप की उम्मत रहेगी।

फिर मुझ पर हर दिन पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं और मैं वापस होकर मूसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रा। मूसा अलै० ने मुझ से पूछा क्या फ़र्ज़ हुआ ? मैंने कहा पचास नमाज़ें रोज़ाना। मूसा अलै० ने कहा कि तुम्हारी उम्मत से पचास नमाज़ें अदा न हो सकेंगी, क्योंकि इस से पहले मैं तजुर्बा कर चुका हूं और बनी इस्राईल पर पूरे तौर से आज़माइश कर ली है, इसलिए अपने रब के पास फिर जाओ और अपनी उम्मत के लिए कमी की दरख्वास्त करो, चुनांचे मैं लौटा तो मुझे दस नमाज़ें माफ़ हुईं फिर मूसा अलै० के पास आया तो उन्होंने फिर वही कहा, मैं फिर लौट गया और दस माफ़ हुईं, फिर मैं लौट कर मूसा अलै० के पास आया तो उन्होंने वही कहा, चुनांचे मैं वापस हुआ तो दस और माफ़ हुईं और रोज़ाना दस नमाज़ों का हुक्म बाक़ी रहा और मैं लौट कर फिर मूसा तक आया तो उन्होंने फिर वही कहा, मैं फिर वापस गया तो रोज़ाना मुझ को पांच नमाज़ों का हुक्म हुआ और मूसा अलै० के पास आया तो उन्होंने कहा कि अब क्या फ़र्ज़ हुआ ? मैंने कहा रोज़ाना पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं। मूसा अलै० ने कहा तुम्हारी उम्मत पांच भी अदा न कर सकेगी क्योंकि तुम से पहले मैं लोगों का तजुर्बा कर चुका हूं और बनी इस्राईल पर इसकी आज़माइश पूरे तरीक़े पर कर ली है, इसलिए फिर जाओ और अपनी उम्मत के लिए कमी की दरख्वास्त करो। मैंने जवाब दिया कि मैंने अपने रब से इतनी दरख्वास्तें कीं कि अब मुझ को शर्म आने लगी, बस अब खुश हूं और मानता हूं, फिर मैं जब आगे बढ़ गया तो किसी ने आवाज़ दी कि हमने अपना फ़र्ज़ जारी कर दिया (यानी पांच में से पचास का सवाब देंगे) और अपने बंदों पर कमी कर दी।

१३८५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० अल्लाह तआला के इस क़ौल की तफ़्सीर में 'वमाजअलनर्रुअ्यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित्नतल

लिबास' की तफ़्सीर' में कहते हैं यानी हम ने तुम को जो यह नज़ारा दिखाया था, सो इसी को लोगों की आज़माइश बनाया है, फ़रमाया कि यह आंख का नज़ारा था, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिखाया गया था और फ़रमाया कि लानत वाले पेड़ से मुराद क़ुरआन में सेंठे का पेड़ है।

१३८६ हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुझ से निकाह किया तो उस वक़्त मेरी उम्र छः साल की थी, फिर जब हम लोग मदीना में चले आए और बनू हारिस बिन ख़ज़रज के मकान में ठहरे, तो उस वक़्त मुझ को बुख़ार आने लगा था और मेरे बाल उतर कर छुदरे हो गए थे। (इसके बाद जब मेरा बुख़ार ठीक हो गया था) तो कंधों से नीचे तक बाल ज़्यादा हो गए थे। मेरे पास मेरी वालिदा उम्मे रूमान रज़ि० आयीं, उस वक़्त मैं अपनी सहेलियों के साथ झूले में थी कि उन्होंने आकर मुझ को आवाज़ दी, मैं उनके पास हाज़िर हुई और मुझ को यह मालूम न था कि उनका मुझ से क्या मक़सद था। जब मैं उनके क़रीब पहुंची, तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर घर के दरवाज़े पर खड़ा कर दिया, चूंकि मैं बहुत थक गई थी, इस वजह से हांफ रही थी, जब मेरी सांस कुछ ठहरी तो मेरी वालिदा ने पानी लेकर मेरा मुंह और सर धोया और घर में ले गयीं, जब मैं घर में पहुंची, तो मैंने अंसारी औरतों को देखा। औरतें मुझ को देख कर बोलीं कि नेक फ़ाल और भलाई व बरकत के साथ आओ। मेरी वालिदा ने मुझ को इन औरतों के सिपुर्द कर दिया, उन्होंने मेरी जिस्मानी हालत ठीक की, लेकिन इसके बाद कोई वाक़िया उस वक़्त न हुआ, इसके सिवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाश्त के वक़्त तशरीफ़ लाए और इन औरतों ने मुझ को आपके हवाले कर दिया। उस वक़्त मैं नौ बरस की थी।

१३८७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम मुझे दो बार ख़्वाब में नज़र आयीं, मैंने देखा कि तुम रेशम के टुकड़े में हो और मुझ से कोई कहता है कि यह तुम्हारी बीवी हैं, खोल कर देखा तो वह तुम ही थीं, दिल में कहता था कि अगर यह ख़्वाब ख़ुदा की तरफ़ से है तो ख़ुदा इसको ज़रूर पूरा करेगा।

बाब ५३

हुज़ूर सल्ल० की बीमारी और वफ़ात

१३८८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मर्ज़ में हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया और उनके कान में कोई बात चुपके से कही, जिसको सुनकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० रो पड़ीं, इसके बाद दोबारा और कोई बात चुपके से कही, जिसको सुनकर आप हंस पड़ीं। हम लोगों ने पूछा कि आप से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुपके से क्या फ़रमाया, कहने लगीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि इस मर्ज़ में इंतिक़ाल कर जाऊंगा, इसको सुन कर मैं रोने लगी। इसके बाद फ़रमाया कि मेरे सारे लोगों में मुझ से पहले मुलाक़ात जिसकी होगी वह तुम हो, सुन कर मैं खुश हुई और हंस दी।

१३८९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैं सुना करती थी कि कोई नबी उस वक़्त तक इन्तिक़ाल नहीं करेगा जब तक उसको दुनिया और आख़िरत को पसन्द करने का अख़्तियार न दे दिया जाए तो मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी मौत के मर्ज़ में यह फ़रमाते सुना, म अल्लज़ीन अन अमल्लाहु अलैहिम। उस वक़्त आप की सांस पर भी ज़ोर था, मैं समझ गई कि आप आख़िरत को दुनिया पर पसन्द फ़रमा रहे हैं।

१३९०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि सेहत की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे कि हर नबी को उसके इन्तिक़ाल से पहले जन्नत में उस की जगह दिखला दी जाती है, चुनांचे जब आप मरीज़ हुए तो हुज़ूर सल्ल० का मुबारक सर मेरे ज़ानू पर था। आप को ख़ुशी हुई फिर कभी हो गयी तो छत की तरफ़ देखा और फ़रमाया अल्ला हुम्मर्र फ़ीक़ल आला (यानी) आख़िरत को पसंद किया।

उस वक़्त मैंने अर्ज़ किया कि क्या हमारे साथ रहना पसंद नहीं करते। अब मुझे तस्दीक़ हो गयी जो आप हम से फ़रमाया करते थे।

१३६१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मरीज़ होते तो अपने हाथ पर क़ुल अअ़ूज़ु बि रब्बिल फ़लक़ और क़ुल अअ़ूज़ु बिरब्बिन्नास पढ़ कर फूंक लेते फिर उसको सारे बदन पर फेर लेते और मौत के मर्ज़ में मैं आपके हाथ पर पढ़ कर फूंक देती और उसको आपके मुबारक जिस्म पर फेर देती थी।

१३६२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि वफ़ात के वक़्त मुबारक पीठ का सहारा मुझ पर लगा हुआ था। उस वक़्त मैंने कान लगा कर सुना तो आप यह फ़रमा रहे थे अल्ला हुम-म-ग़्फ़िरली व र्हम्नी वलहिक़्नी बिर्रफ़ीक़ि-ल आला (ऐ अल्लाह! मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रहम कर और आला रफ़ीक़ के साथ मिला दे।)

१३६३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जिस वक़्त नबी सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्तिक़ाल फ़रमाया है उस वक़्त सर मेरे सीने पर था और आप की मौत की सख़्ती के बाद मुझे किसी की सख़्ती बड़ी मालूम नहीं होती।

१३६४ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अली रज़ि० मौत के मर्ज़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से बाहर तशरीफ़ लाए तो लोगों ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल० का मिज़ाज कैसा है? फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है, अच्छे हैं। उस वक़्त अब्बास बिन अब्दुल मत्तलिब रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० का हाथ पकड़ कर कहा कि मेरा अंदाज़ा यह है कि तीन दिन के बाद तुम लाठी के ग़ुलाम हो जाओगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी मर्ज़ में इन्ति-क़ाल करेंगे, क्योंकि मैं बनी अब्दुल मत्तलिब के चेहरे से इंतिक़ाल के आसार मालूम कर लेता हूं। हमारे साथ चलो ताकि चल कर यह पूछें कि (ख़िलाफ़त का काम) किसके सुपुर्द होगा। अगर हम लोगों में होगा तो मालूम ही हो जाएगा और दूसरों में होगा तब भी मालूम हो जाएगा। यह सुन कर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! अगर हमने हज़रत से ख़िलाफ़त का सवाल किया और आपने इंकार कर दिया तो आपके बाद लोग हम को ख़िलाफ़त न देंगे, मैं तो इस वक़्त ख़ुदा की क़सम! हुज़ूर सल्ल० से न पूछूंगा।

१३९५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि खुदा का मुझ पर बड़ा फ़ज़्ल हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे घर में ही इन्तिक़ाल फ़रमाया और मेरी बारी का दिन भी था। मेरे ही सीने और गर्दन के बीच हुज़ूर सल्ल० सहारा लगाए हुए थे। मेरे और आप के लुआबे दहन को अल्लाह तआला ने उस दिन इकट्ठा कर दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ से तकिया लगाए हुए थे कि मेरे पास अब्दुर्रहमान आए, उनके हाथ में मिस्वाक थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी तरफ़ इस तरह से देखा कि जिससे मालूम हुआ कि आप मिस्वाक उस वक़्त चाहते हैं और महबूब है। मैं समझ गई और अर्ज़ किया कि आप के लिए ले लूं। आप ने इशारे से फ़रमाया कि हां। मैंने आपको लेकर दे दी मगर आप को मिस्वाक करना मुश्किल हो गया, क्योंकि मर्ज़ तरक़्क़ी पर हो गया था। मैंने अर्ज़ किया कि इस को आप के लिए नर्म कर दूं। इशारे से फ़रमाया हां। मैंने नर्म भी कर दिया और आपके मुबारक दांत पर उसको फेरा, उस वक़्त आप के पास एक चमड़े का बरतन भी रखा हुआ था, जिस में पानी भरा हुआ था, आप उस में हाथ डुबो कर चेहरे पर फेरते थे और फ़रमाते 'ला इला ह इल्लल्लाह' वाक़ई सकरात हक़ है और फिर हाथ उठा कर फरमाया 'अल्ला हुम-म बिर्रफ़ी क़िल आला' इसी हालत में आपने वफ़ात पायी और मुबारक हाथ नीचे झुक गया।

१३९६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मौत के मर्ज़ में हमने हुज़ूर सल्ल० के मुबारक हल्क़ में दवा डाली, आपने इशारे से दवा डालने को मना कर दिया। हमने यह ख्याल किया कि शायद बुरा मालूम होने की वजह से मना फ़रमाते हैं, जिस तरह कि बीमार को दवा बुरी मालूम हुआ करती है, लेकिन जब कमी हुई तो आप ने फ़रमाया क्या मैंने तुम को दवा डालने से मना नहीं किया था ? हमने अर्ज़ किया, हम को ख्याल हुआ कि बीमारों की तरह दवा बुरी मालूम होने की वजह से आप मना फ़रमाते हैं। फ़रमाया, मैंने सब को देखा कि ज़बरदस्ती दवा पिलाते थे लेकिन सिर्फ़ अब्बास रज़ि० नहीं थे।

१३९७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबियत कुछ ज़्यादा ख़राब हो गयी और आप पर बेहोशी तारी हो गयी, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० बोलीं कि हाय !

बाप को मुसीबत। उस वक़्त आपने फ़रमाया कि इस के बाद तुम्हारे बाप पर कोई मुसीबत न होगी।

१३९८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तिरसठ साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया।

१३९९. हज़रत अबूसईद बिन मअला रज़ि० कहते हैं कि एक बार मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ को आवाज़ दी लेकिन मैंने आप को जवाब न दिया। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं नमाज़ पढ़ रहा था, इस वजह से जवाब न दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया क्या ख़ुदा ने यह नहीं कहा है—इस्तजीबुल्लाह वर्र सूल इज़ा दआ कुम। यानी ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल सल्ल० को बुलाते वक़्त जवाब दो। फ़रमाया मैं तुम को ऐसी सूर: बताऊंगा जो सारे क़ुरआन में बड़े मर्तबे की है, इसके बाद मेरा हाथ पकड़ कर मस्जिद से बाहर तश्रीफ़ ले जाने लगे। मैंने अर्ज़ किया, आपने फ़रमाया था कि मैं तुझ को मस्जिद से निकलने से पहले एक बड़ी शान वाली सूर: बताऊंगा। फ़रमाया कि वह अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, सबउल मसानी है। यही वह क़ुर-आन है जो अल्लाह तआला ने मुझको दिया है इसमें यह अफ़ज़ल है।

१४००. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि सब से बड़ा गुनाह क्या है ? फ़र्माया ख़ुदा का शरीक बनाना। मैंने अर्ज़ किया उस के बाद ? फ़र्माया, अपने बच्चे को इस डर से क़त्ल करना कि वह खाने में मेरा शरीक हो जाएगा और ख़र्च ज़्यादा हो जाएगा। मैंने अर्ज़ किया, इस के बाद कौन सा ? फ़र्माया, पड़ोसी की औरत से ज़िना करना।

१४०१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जब बनी इस्राईल को ख़ुदा का यह फ़र्मान हुआ कि तुम दरवाज़े में झुकते हुए और यह कहते हुए जाओ कि ऐ ख़ुदा ! हम को बख़्श दे, तो उन्होंने इस के बजाए यह हरकत की कि सुरीन के बल घिसटते हुए गये और बख़्शिश मांगने के बजाए कहने लगे कि हम को गेहुओं की बालियों में लगे हुए थे और जौ के दाने अता कर।

१४०२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० फ़र्माने लगे कि हम सब लोगों में उम्दा क़ारी उबई हैं और अच्छा

फ़ैसला करने वाले हज़रत अली रज़ि० हैं, लेकिन इस के बावजूद हम हज़रत उबई रज़ि० के उस क़ौल को क़ुबूल नहीं करते जो उन्होंने कहा है कि मैं ख़ुदा के किसी क़ौल को जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना हो, नहीं छोड़ता, वजह यह है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है मा नन्सख मिन आयतिन औ नुनसिहा नाति बिख़ैरिम मिनहा।

१४०३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया अल्लाह तआला इस आयत के बारे में, 'वक़ालुत्त खज़ल्लाहु व-लद न सुब्हानहू' फ़र्माता है कि मेरे बंदे ने मुझ को झुठलाया, हालांकि उसको यह मुनासिब न था, उसने मुझको गाली दी और यह भी उस को मुनासिब न था, उस का झुठलाना तो यह है कि मुझ को दोबारा इस तरह ख़ुदा पैदा नहीं कर सकता और उस को गाली देना यह है कि कहता है कि ख़ुदा की औलाद है, हालांकि मैं बीवी-बच्चों से पाक हूं।

१४०४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया कि ख़ुदावंद तआला ने मेरी मुवाफ़क़त तीन चीज़ों में की या यह फ़र्माया कि मैंने ख़ुदा की मुवाफ़क़त तीन चीज़ों में की। मैंने आप से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अगर आप इब्राहीम के मक़ाम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लें तो बेहतर है और चूंकि आप के पास भले और बुरे हर क़िस्म के आदमी आते हैं, तो बेहतर यह है कि आप उम्मुल मोमिनीन को पर्दे का हुक्म दे दें तो पर्दे की आयत उतरी। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० को यह मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी किसी बीवी से नाराज़ हैं तो आप उन को समझाने लगे और एक बीवी से, कहा कि तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० को नाराज़ न करो, वरना ख़ुदा तुम से अच्छी इन को दे देगा। वह बोलीं कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बीवियों को नसीहत नहीं कर सकते, जो तुम नसीहत करने को आए? उस वक़्त ख़ुदा तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्मायी, असा रब्बहू इन तल्लक़ कुन्न अंय्युबद्दलहु अज़वाजन ख़ैरम मिन कुन-न मुसलिमात।

१४०५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अह्ले किताब तौरात को पढ़ते तो इबरानी ज़ुबान में थे और मुसलमानों के सामने उसका तर्जुमा अरबी ज़ुबान में करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम

लोगों से फ़रमाया कि अह्ले किताब की न तुम तस्दीक़ करो और न झुठलाओ बल्कि यों कहो कि आमन्ना बिल्लाहि व मा नज़्ज़लल किताबि (आख़िर तक)

१४०६. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन हज़रत नूह अलै० को बुलाया जाएगा और ख़ुदा का फ़रमान होगा कि तुम ने अपनी क़ौम को तब्लीग़ कर दी थी? वह अर्ज़ करेंगे, जी हां, तो उनकी क़ौम से पूछा जाएगा वह जवाब देगी कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया, उस वक़्त फिर नूह अलै० से पूछा जाएगा कि तुम्हारा कोई गवाह भी है? हज़रत नूह अलै० कहेंगे कि हां, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी उम्मत मेरी गवाही देगी कि मैंने तब्लीग़ कर दी है. चुनांचे ये लोग गवाही देंगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी गवाही देनी होगी, यही मतलब इस आयत का है, व कज़ालिक जअलना कुम उम्मत व व-स-तल्लितकूनू शुहदाअ अलन्नासि।

१४०७. हज़रत ज़ुबैर बिन अब्बास रज़ि० ने कहा कि मैं जवान था, जिस वक़्त का यह क़िस्सा है। मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा, इस आयत का क्या मतलब है? मैं तो यह समझता हूं कि अगर सफ़ा और मरवा में सई न करे, तो कुछ हर्ज नहीं। उन्होंने फ़रमाया कि यह माने होते तो आयत यों होती, अफ़ला जुनाह अलैहि अल-ला यतूफ़ु बिहिमा (यानी कुछ हर्ज नहीं अगर सई न करे) फिर फ़रमाया, पहले अंसार उस बुत (जिस का नाम मनात था और क़दीद के बराबर रखा था) के पास जाकर लब्बैक व सादैक कहा करते थे, वह सफ़ा व मरवा में सई करने को गुनाह समझते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई—इन्नस्सफ़ा वलमरवत मिन शआइरिल्लाहि (आख़िर तक)

१४०८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० हमेशा यों दुआ फ़रमाया करते थे—अल्ला हुम-म रब्बना आतिना फ़िद्दुनया हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव वक़िना अज़ाबन्नारि।

१४०९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स मिस्कीन नहीं होता कि एक खजूर या दो खजूरें या एक लुक़्मा या दो लुक़्में का लालच उसको जगह-जगह लिए फिरे मिस्कीन वह शख़्स है, जो सवाल न करे (और उसकी

हालत नाज़ुक हो) अगर चाहो एक यह आयत पढ़ लो, वला यस्अलूनन्न-स इल्हाफ़ा।

१४१०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत तिलावत की, हुवल्लज़ी अन्ज़ ल इलैकल किता-ब मिनहु आयातुम मुह्कमात व मा यज्ज़क्करु इल्ला उलुल अलबाब। इसके बाद फ़रमाया, जब लोगों को मुतशाबहात पर आया देखो तो समझ लो कि वही लोग हैं जिन के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया है और ऐसे लोगों से बचो।

१४११. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के पास दो औरतें मुक़दमा लेकर आयीं और ये अपने घर में जूते सिला करती थीं। उन दोनों में से एक के हाथ में जूते सीने का आला घुस गया था, उसने दूसरी पर दावा किया। इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर सिर्फ़ दावे पर ही मुक़दमे का फ़ैसला कर दिया जाए तो बहुत से लोगों के ख़ून और माल बेकार हो जायें, बल्कि उस औरत को यह आयत पढ़ कर सुनायी इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि अह्दिल्लाहि व ईमानिहिम समनन क़लीला, चुनांचे लोगों ने उस औरत को ख़ौफ़ दिलाया तो उसने इक़रार कर लिया और इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा जिस पर दावा किया जाए, उस पर क़सम है।

१४१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा हमारे लिए काफ़ी है और बेहतरीन ज़िम्मेदार है। यही लफ़्ज़, हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील! इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आग में गिरते वक़्त कहे थे और जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लोगों ने कहा था कि इन्नन्ना-स क़द जमऊ-लकुम फ़ख़्शौहुम उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी यही लफ़्ज़ फ़रमाए थे।

१४१३. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, बद्र की लड़ाई से पहले बनी हारिस बिन ख़ुज़ाआ में साद बिन उबादा रज़ि० की इयादत के लिए तश्रीफ़ लिए जा रहे थे। एक गधे पर चादर बिछा कर मुझ को भी अपने पीछे सवार कर लिया था, तो आप का एक मज्लिस पर गुज़रा हुआ, उस मज्लिस में तरह-तरह के लोग मौजूद थे। मुसलमान भी, बुत को पूजने वाले भी, यहूदी भी, और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० भी, इतने में आप के

खच्चर की गर्द अब्दुल्लाह बिन उबई की नाक में पहुंची और उसने अपनी नाक छिपा ली और बोला हम पर गर्द न उड़ाओ। आप ने वहां पहुंचकर लोगों को सलाम किया और इस्लाम की दावत दी और कुरआन पढ़कर सुनाया। अब्दुल्लाह बिन उबई कहने लगा कि अगर यह सच्चा है तो तुम इसको मकान पर जाकर सुनाना। हमारी मज्लिसों में न पढ़ो। यह सुन-कर अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! हमको यह अच्छा मालूम होता है। आप ज़रूर इसको हमारी मज्लिसों में पढ़कर सुनाया कीजिए। इसी बीच में मुसलमानों और यहूदियों, मुश्रिकों में गाली-गलौज की नौबत आ गयी और रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोश कर रहे थे। मतलब यह कि वे लोग सब लोग चुप हो गए और आप खच्चर पर सवार होकर साद बिन उबादा रज़ि० के यहां तशरीफ़ लाए, और फ़रमाया कि साद रज़ि० ! तुमने कुछ और भी सुना, अबू हुब्बाब यानी अब्दुल्लाह बिन उबई ने क्या कहा? उसने ऐसी बातें कीं। साद रज़ि० बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। उस को माफ़ कीजिए। उस खुदा की क़सम, जिसने आप पर किताब उतारी है, इस ज़मीन के लोगों ने यह सलाह की थी कि उसके सर पर ताज रखें, लेकिन वह खुदा को नापसन्द था। खुदा ने आप को ग़ालिब किया। इसी वजह से जो कुछ उस ने कहा, वह कहा, यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने माफ़ कर दिया, और आप का क़ायदा था कि मुश्रिकों के तक्लीफ़ देने पर सब्र किया करते थे और उनसे बचते रहते और इसके बाद आपको उन से जिहाद की इजाज़त दे दी गयी थी, फिर जब आप ने बद्र की लड़ाई में मुश्रिकों के बड़े-बड़े सरदारों को क़त्ल कर दिया तो उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन उबई सलोल ने अपनी क़ौम से कहा कि यह काम इस्लाम का अब जारी हो चला, इसलिए इस्लाम ले आना चाहिए, चुनांचे सब मुस-लमान हो गए।

१४१४. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे थे कि जब आप किसी जिहाद में तशरीफ़ ले जाते तो वे लोग रह जाते और अपने रह जाने पर बहुत खुश होते और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस तशरीफ़ ले जाते तो मजबूरी पर माफ़ी मांगते और चाहते कि इस काम पर उनकी तारीफ़ की जाए, उस वक़्त यह आयत, वला तह्सबन्नल्लज़ी-न

युफ़रिहून बिमा अतू (आख़िर तक) उतरी।

१४१५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से किसी ने कहा कि अगर ऐसे शख़्सों को अज़ाब दिया गया कि जो उनके पास है, उस पर वह ख़ुश होते हैं और न किए हुए काम पर तारीफ़ कराना पसन्द करते हैं, तो हम सब उस अज़ाब से बच नहीं सकते। फ़रमाया, तुम को इस आयत से क्या मतलब है। यह आयत तो उन यहूदियों के बारे में है कि उन को हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुलाया और उनसे कोई बात पूछी तो उन्होंने असल बात छिपा रखी और आप के सामने झूठ बता दिया और इस काम पर फिर तारीफ़ की, ख़्वाहिश की और इसको बहुत अच्छा समझा अल्लाह तआला फ़रमाता है-इन ख़िफ़तुम अल्ला तुक़सितू फ़ीलयतामा (आख़िर तक)

१४१६. हज़रत आइशा रज़ि० से 'अल्ला तुक़सितू फ़िलयतामा' के बारे में उरवह ने सवाल किया कि यह किसके बारे में नाज़िल हुई थी? उम्मुलमोमिनीन रज़ि० ने जवाब दिया कि भतीजे! यह उस यतीम लड़की के बारे में है जो किसी शख़्स की परवरिश में हो और उसका माल और जमाल, परवरिश करने वाले को अच्छा मालूम होता हो और वह ख़्वाहिश रखता हो कि उसका मह्र मुक़र्रर न करे और कम मह्र पर निकाह करे तो ऐसे शख़्स को इस आयत में यह हिदायत की गयी है कि ऐसे यतीमों के अलावा जिसको चाहें निकाह में ले आयें, लेकिन उन के साथ निकाह न करें, अगर उनसे निकाह करें तो पूरा मह्र अदा करें।

१४१७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि इनख़िफ़तुम से अल्ला तुक़सितू (आख़िर तक) के बाद लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से फ़त्वा मांगा, तो यह आयत नाज़िल हुई व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा (आख़िर तक) हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि इस दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है कि व तरग़बू-न अन तन्किहू हुन-न इस से मुराद वह यतीम लड़की है जिस से निकाह की तुमको ख़्वाहिश हो और वह कम माल व ख़ूबसूरती वाली हो, फिर कहती हैं कि उन लड़कियों से निकाह को मना किया गया है जिनकी ख़्वाहिश उनके माल और ख़ूबसूरती की वजह से हो वरना नाजायज़ नहीं और मना करने की वजह यह है कि जब यतीम लड़कियां ख़ूबसूरती और माल में कम होंगी तो उन से लोग बचेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम (आख़िर तक)

१४१८. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि मेरे मरीज़ होने की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० मेरी इयादत के लिए तशरीफ़ लाए। उस वक़्त मैं बेहोश था, आप ने थोड़ा सा पानी मांगा और उस से वुज़ू करके मुझ पर छिड़का जिससे मुझ को होश आ गया। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे माल के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं? उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम कौलुल्लाहि तआला इन्नल्लाहु ला यज़लमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन।

१४१९. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि कुछ आदमियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हम क़ियामत में क्या अल्लाह तआला को देखेंगे? इसके बाद अबूसईद रज़ि० ने पूरी हदीस ज़िक्र की हुई बयान की, फिर कहा कि जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी आवाज़ देगा कि हर क़ौम अपने माबूदों के साथ हाज़िर हो, सारी क़ौमें अपने बुतों वग़ैरह की इबादत करने वाली हाज़िर होकर दोज़ख़ में डाल दी जाएंगी और सिर्फ़ वही लोग बाक़ी रहेंगे, जो ख़ुदा की इबादत किया करते थे, उसमें कुछ नेक होंगे और कुछ बुरे होंगे और कुछ यहूदी व ईसाई बाक़ी रहेंगे। उनमें से यहूदियों को बुलाया जाएगा और उनसे सवाल किया जाएगा कि तुम किसकी इबादत करते थे? वह कहेंगे कि उज़ैर की इबादत करते थे, क्योंकि वह ख़ुदा के बेटे हैं। उस वक़्त उनको जवाब मिलेगा कि तुम झूठे हो, ख़ुदा को न कोई बीवी है, न कोई बच्चा, फिर उनसे पूछा जाएगा कि अब तुम क्या चाहते हो? वह कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको पानी पिला दे, हम प्यासे हैं। उस वक़्त उनको इशारा करके कहा जाएगा वहां क्यों नहीं जमा होते, फिर उनको जमा किया जाएगा और दोज़ख़ उनको उस वक़्त एक पानी के सराब की तरह दिखाई देगी जिसकी कुछ आग कुछ को ख़ुद ही खाती होगी और उनको उसमें झोंक दिया जाएगा। उनके बाद ईसाइयों को बुलाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा कि तुम किसकी इबादत करते थे? वह कहेंगे कि हम मसीह अलै०, अल्लाह के बेटे की इबादत करते थे। उनको भी यही जवाब दिया जाएगा कि तुम झूठे हो, ख़ुदा बीवी-बच्चे से पाक-साफ़ है और उनसे भी मालूम किया जाएगा कि तुम क्या चाहते हो? यहूद की तरह उनको दोज़ख़ में झोंक दिया जाएगा,

ग़रज़ यह कि ख़ुदा की इबादत करने वालों के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा। उसमें अच्छे और बुरे सब होंगे। उस वक़्त ख़ुदा एक ऐसी सूरत में आएगा जिससे वे उस को देख सकेंगे और उन से कहा जाएगा कि तुमको अब किस का इन्तिज़ार है? सब तो अपने-अपने माबूद के साथ चले गए, वे अर्ज़ करेंगे कि दुनिया में हमने उनसे ताल्लुक़ ख़त्म कर लिया था और उनसे अलग-अलग हो गए थे, अब हमको अपने रब का इन्तिज़ार है, जिस की हम इबादत किया करते थे। उस वक़्त फ़रमाएगा, मैं तुम्हारा रब हूं, तो ये लोग कहेंगे कि हम ख़ुदा के साथ किसी को शरीक नहीं करते, दो तीन बार यही कहेंगे।

१४२०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम क़ुरआन पढ़ो। मैंने अर्ज़ किया कि मैं आप के सामने क्या पढ़ सकता हूं, आप पर तो उतारा गया है। फ़रमाया, मैं तो दूसरों से सुनना अच्छा समझता हूं। मैंने सूरः निसा सुनाई और जब यहां तक पहुंचा—'फ़कै-फ़ इज़ा जिअ्‌ना मिन कुल्लि उम्मतिम बि शहीदिन व जिअ्‌ना बि-क अला हा उला इ शहीदा' तो आपने फ़रमाया, रुक जाओ। उस वक़्त आप की आंखों से आंसू बह रहे थे। अल्लाह तआला फ़रमाता है—'इन्नल्लज़ी-न युवफ़्फ़ाहुमुल माइकतु ज़ालिमी अन फ़ुसहुम।

१४२१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कुछ मुसलमान मुश्रिकों में शामिल होकर उन की जमाअत बढ़ाते लगे थे और उनमें से किसी न किसी के मुसलमानों के तीर लगते थे और वह मर जाता था। उन के बारे में ज़िक्र की हुई आयत नाज़िल हुई। अल्लाह तआला फ़रमाता है—इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना (आख़िर तक)

१४२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने यूनुस बिन मत्ता पर मुझ को फ़ज़ीलत दी, उसने झूठ कहा। अल्लाह तआला फ़रमाता है, या अय्युहर्र सूलु बल्लिग़ (आयत।)

१४२३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जिस शख़्स ने यह कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (इस्लामी हुक्मों में से) कुछ छिपा लिया था, उसने झूठ कहा, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है—

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़ि-ल इलैक मिन रब्बिक ।

१४२४. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हम लोग नबी सल्ल० के साथ किसी जिहाद में थे और औरतें साथ नहीं थीं। हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अगर आप फ़र्माएं, तो हम ख़स्सी हो जाएं। आपने मना कर दिया और यह आयत नाज़िल हुई—या अय्युहल-लज़ी-न ला तुहर्रिमू (आख़िर तक) और फिर आपने हम को सिर्फ़ लिबास देकर किसी औरत से निकाह करने का हुक्म दे दिया था। अल्लाह तआला फ़र्माता है इन्नमल ख़मरु वल मयसिरु वल अंसाबु वल अज़लामु (आयत)

१४२५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हम लोग अंगूरी शराब के अलावा और शराब न पीते थे। एक बार अबूतल्हा रज़ि० वग़ैरह को शराब पिला रहा था, इतने में एक आदमी आया और कहने लगा कि क्या तुम को यह ख़बर नहीं कि शराब हराम हो गयी ? यह सुन कर लोगों ने कहा, अनस रज़ि० ! शराब के मटके बहा दो। न उन्होंने इस की सच्चाई मालूम की न फिर और किसी से पूछा और एक ही शख़्स के कहने से सारे मटके फिंकवा दिए।

१४२६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे तरीक़े पर नसीहत फ़र्मायी कि हमने ऐसी नसीहत करते हुए आप को कभी नहीं देखा था और फ़र्माया कि अगर तुम को वह बातें मालूम हों, जो मुझ को मालूम हैं, तो तुम ज़्यादा रोओगे और हंसोगे। यह सुन कर सहाबा रज़ि० ने अपने मुंह छिपा लिए और रोने की आवाज़ कान में आने लगी, इतने में एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि मेरा बाप कौन है ? आपने फ़र्माया फ़्लां शख़्स है और उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई, ला तसअलू अन अश्या-अ इन तुब्द लकुम तसूअकुम ।

१४२७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि लोग मज़ाक़ के तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सवाल करने लगे कि हमारा बाप कौन है, दूसरा बोला, मेरी ऊंटनी गुम हो गयी वह कहां है ? उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई, ला तस्अलू अन् अश्या-अ इन तुब्द लकुम तसूअकुम (आख़िर तक) अल्लाह तआला फ़र्माता है क़ुल हुवल क़ादिरु अला अंय यब्अ-स अलैकुम अज़ाबन मिन फ़ौक़िकुम (आख़िर तक)

१४२८. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि जब ऊपर ज़िक्र की हुई आयत नाज़िल हुई तो लफ़्ज़ फ़ौक़कुम के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, मैं तुझ से पनाह मांगता हूं और जब औ मिन तह्ति अरजुलि हिम तक पहुंचे तो यहां भी यही फ़र्माया। और जब यह पढ़ा, औ यल बिस कुम शीअ़ा व युज़ीक़ु बाज़ुकुम बास बाज़, तो आपने फ़र्माया कि यह बहुत आसान है यानी उन काफ़िरों पर यह अज़ाब नाज़िल हो जाए (अल्लाह तआला फ़र्माता है) उ ला इ कल्लज़ी न हुदल्लाहि फ़बिहुदा हुमुक़ तदिह।

१४२९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से पूछा गया कि सूरः स्वाद में सज्दा है? फ़र्माया हां है, फिर आयत व व हब्ना लहू फ़बिहुदा हुमुक़ तदिह तक पढ़ी और फ़र्माया कि तुम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इक़्तिदा का हुक्म दिया गया है। अल्लाह तआला फ़र्माता है—वला तक़र-बुल फ़वाहि-श मा ज़ह-र मिन्हा व मा बतन।

१४३०. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा से ज़्यादा हया-दार कोई नहीं है, इस लिए उसने फ़ह्श, जो ज़ाहिर हो और छिपे हुए को, हराम कर दिया और उस से ज़्यादा तारीफ़ को पसन्द करने वाला कोई नहीं। इसी वजह से उसने अपनी तारीफ़ ख़ुद की है। अल्लाह तआला फ़र्माता है—ख़ुज़िल अफ़्व वामुर बिल मारूफि व आरिज़ अनिल जाहिलीन।

१४३१. हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० कहते कि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हुक्म दिया था कि लोगों की आदतों में से अफ़्व (माफ़ करने) की आदत को अख़्तियार करें।

१४३२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से पूछा गया कि 'फ़ित्ने' की लड़ाई के बारे में अपनी राय ज़ाहिर कीजिए। फ़र्माया तुम को मालूम है कि फ़ित्ना क्या है? बात यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुश्रिकों से जिहाद किया और उस वक़्त में मुश्रिकों में दाख़िल होना फ़ित्ना था, उन की जंग तुम्हारे किसी मुल्क और हिस्से पर न थी बल्कि वह सिर्फ़ दीन पर लड़ते थे। अल्लाह तआला फ़र्माता है—व आख़िरूनअ् तरफ़ू बि ज़ुनूबिहि म।

१४३३. हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, मैं सो रहा था, मेरे पास दो शख़्स

भाए और मुझ को उठा कर एक शहर में ले गए। जब वहां पहुंचा, तो लोग हमारे इस्तिक़बाल को आए और वह अजीब शहर था कि सोने-चांदी की ईंटों का बना हुआ था। वहां हम ऐसे कुछ लोगों से मिले कि जिस में कुछ खूबसूरत थे और कुछ बदसूरत थे कि न देखे होंगे। कुछ आदमियों से कहा कि जाओ सब तुम उस नहर में गिर जाओ, वह सब उस में कूद पड़े, फिर जब बाहर आए तो सब के सब बहुत खूबसूरत हो गए। उन दोनों लोगों ने कहा कि यह तुम्हारा जन्नत का मकान अदन है, और वह लोग जिन्होंने कुछ अच्छे काम किए हैं और कुछ बुरे और खुदा ने उन को माफ़ी दे दी है। अल्लाह तआला फ़र्माता है—व का न अधुं हू अलल माअ।

१४३४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है, तू लोगों को दे, मैं तुझ को दूंगा, और फ़र्माया कि खुदा का हाथ भरा हुआ है, उस में कमी नहीं होती, रात-दिन इनाम करता रहता है और फ़र्माया कि मुझ को बताओ कि जब से खुदा ने ज़मीन और आसमान पैदा किए हैं कितना खर्च किया होगा। लेकिन उसके हाथ को चीज़ों में से कुछ भी कम न हुआ और उसका अर्श पानी पर था, उसके हाथ में तराज़ू है, वह उसको झुकाता और उठाता भी है। अल्लाह तआला फ़र्माता है—व कज़ालि-क अ ख ज़ रब्बु-क इज़ा अ-ख-ज़ल क़ुरा।

१४३५. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया ज़ुल्म को खुदा मुहलत देता रहता है, लेकिन जब उसको पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता। आपने यह आयत पढ़ी—व कज़ालि-क अख़ज़ु रब्बु-क इज़ा अख़ज़ल क़ुरा वहि-य ज़ालिमतुन

१४३६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जब खुदा किसी बात के बारे में हुक्म फ़र्माता है तो फ़रिश्ते उस के सामने खुज़ू ज़ाहिर करने के तौर पर मारते हैं और उन के परों की आवाज़ ऐसी होती है, जैसे ज़ंजीर पत्थर पर मारी जाए और उस से आवाज़ पैदा हो। जब उन की यह हालत दूर हो जाती है तो फिर आपस में पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या हुक्म फ़र्माया, तो क़रीबी फ़रिश्ते कहते हैं कि यह फ़र्माया, फिर उस बात को चोरी से सुनने वाले यानी जिन्न, सुनाते हैं उन से दूसरे सुनाते हैं और उन से तीसरे, यह सिलसिला उसी तरह जारी रहता है तो फिर या तो उनके पीछे शिहाब

लग जाता है और उन को अपने साथी के बतलाने से पहले जला देता है या वह ज़मीन वालों तक पहुंचा देते हैं और जादूगर लोग सुन कर और एक को सौ लगाकर लोगों को बताते हैं और लोग कहते हैं कि क्या उसने फ़लां-फ़लां दिन इस वाक़िए की हम को ख़बर नहीं दी थी और वह सच्ची भी हुई, लेकिन इस से मुराद वही आसमानी बात हुआ करती है।

१४३७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम, यों दुआ फ़रमाया करते थे—मैं पनाह मांगता हूं तेरे ज़रिए कंजूसी से, सुस्ती से और अपनी उम्र को पहुंचने से, जिस को अरज़लिल उम्र कहा जाता है, दज्जाल के फ़ित्ने से, क़ब्र के अज़ाब से और ज़िंदगी व मौत के फ़ित्ने से।

१४३८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गोश्त का एक शाना लाया गया, क्योंकि आप को शाने का गोश्त बहुत पसन्द था, आपने उसको दांतों से नोच-नोच कर खाया और इस के बाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन, मैं लोगों का सरदार हूंगा और इस का वाक़िया तुम को मालूम कैसे होगा? ख़ुदा एक चटयल मैदान में कि जहां आवाज़ देने वाले की आवाज़ पहुंच सकेगी और नज़र सब को देख सकेगी। सूरज वहां से नज़दीक होगा, लोगों को जमा करेगा, उस वक़्त लोग बड़ी तक्लीफ़ में होंगे और उस तक्लीफ़ को उठा न सकेंगे, आख़िरकार आपस में कहेंगे कि इस वक़्त इन्तिज़ार का वक़्त नहीं, अपनी हालतों को नहीं देखते, किसी ऐसे शख़्स के पास चलो, जो तुम्हारी सिफ़ारिश अल्लाह तआला से कर दे। सब इकट्ठे होकर हज़रत आदम अलै० के पास आएंगे और कहेंगे कि आप इंसानों के बाप हैं, ख़ुदा ने आप को अपने हाथ से पैदा किया, अपनी रूह आप में फूंकी, फ़रिश्तों को सज्दा करने का हुक्म दिया। आप सिफ़ारिश फ़रमाइए, क्या आप हमारे बेहद रंज व तक्लीफ़ को महसूस नहीं करते? यह सुन कर हज़रत आदम अलै-हिस्सलाम फ़रमाएंगे कि आज मेरा रब बहुत सख़्त ग़ुस्से में है? ऐसा ग़ुस्सा न कभी किया है और न आगे करेगा। मुझ को एक पेड़ के खाने से मना फ़रमाया था, मगर मैंने उसकी नाफ़रमानी की, मुझे ख़ुद अपनी पड़ी है, तुम किसी दूसरे के पास जाओ।

लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और अर्ज़ करेंगे कि ऐ नूह! आप ज़मीन में सब से पहले नबी हुए हैं और ख़ुदा ने आप का नाम

अब्दुश्शकूर रखा था, इस लिए आप मेरी सिफ़ारिश कीजिए, आप को हमारे हाल की जानकारी नहीं। नूह अलै० भी यही कहेंगे कि आज मेरा रब इतने गुस्से में है कि न ऐसा गुस्सा कभी हुआ है और न होगा, मुझ को एक दुआ की इजाज़त थी सो मैं वह अपनी क़ौम के अज़ाब चाहने में मांग चुका, मुझे ख़ुद अपनी पड़ी है, मेरे सिवा तुम और किसी के पास जाओ और अब इब्राहीम अलै० के पास जाओ। तब ये लोग हज़रत इब्राहीम अलै० के पास जाएंगे और कहेंगे कि ऐ इब्राहीम ! आप अल्लाह के नबी और सब ज़मीन वालों में से उसके दोस्त हैं। आप हमारी ख़ुदा से सिफ़ारिश कीजिए, क्या आप हमारे हाल को नहीं देखते ? आप फ़रमाएंगे, आज मेरा रब इतने गुस्से में है कि न इतना कभी हुआ है और न कभी होगा और मैं तीन झूठ[1] बोल चुका हूं। मुझे अपनी पड़ी है, तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ।

ये लोग मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और अर्ज़ करेंगे कि आप ख़ुदा के रसूल हैं, आपको ख़ुदा ने अपनी रिसालत के लिए पसन्द फ़रमाया है, आप को कलीम किया है, इस लिए आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कीजिए। क्या आप हमारी उस तक्लीफ़ को नहीं देखते जो हमारे ऊपर गुज़र रही है ? मूसा अलै० कहेंगे कि आज मेरा रब इतना गुस्से में है कि न कभी ऐसा हुआ है और न होगा और चूंकि मैं एक शख़्स को जिस के क़त्ल करने का हुक्म नहीं था, क़त्ल कर चुका हूं, इस लिए मुझे अपनी पड़ी है, तुम किसी और के पास जाओ और ऐसा करो कि ईसा अलै० के पास जाओ। लोग ईसा अलै० के पास आएंगे और कहेंगे कि ऐ ईसा, आप ख़ुदा के रसूल हैं और वह कलिमा हैं जो ख़ुदा ने हज़रत मरयम अलै० की तरफ़ भेजा था। आप उस की रूह हैं, आपने बचपन में लोगों से बात किया है, आप हमारी हालत नहीं देखते कि क्या हो रही है, ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे, आज मेरा परवरदिगार इतने गुस्से में है कि इतना कभी न हुआ और न अब होगा, मगर किसी गुनाह को न बयान करेंगे, इस लिए तुम किसी और के पास जाओ, मुझे अपनी पड़ी है, तुम लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाओ।

---

१. आप ने हीले के तौर पर तीन मौक़ों पर दो मतलब वाले तीन लफ़्ज़ बोले थे।

तब वे लोग मेरे पास आएंगे और कहेंगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप अल्लाह के रसूल हैं और आख़िरी पैग़म्बर। ख़ुदा ने आप के अगले और पिछले सब गुनाह माफ़ कर दिए हैं। आप ही हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए, क्या आप हमारी मुसीबतों को नहीं देखते? उस वक़्त मैं अर्श के नीचे आकर सज्दे में गिर पड़ूंगा, उस वक़्त अल्लाह तआला मुझ को हम्द व सना की तालीम फ़र्माएगा कि जो इस से पहले किसी को न तालीम की गई होगी, वह मैं अदा करूंगा। फिर हुक्म होगा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! सर उठाओ जो कहोगे, क़ुबूल किया जएगा, जो मांगोगे, मिलेगा, शफ़ाअत करोगे, क़ुबूल होगी। मैं सज्दे से सर उठाऊंगा और अर्ज़ करूंगा, ऐ रब, मेरी उम्मत, ऐ रब मेरी उम्मत, ऐ रब मेरी उम्मत। अल्लाह तआला का फ़र्मान होगा कि अच्छा तुम अपनी उम्मत को जन्नत के दाहिने दरवाज़े से बिला हिसाब के ले जाओ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया उस ख़ुदा की क़सम! जिस की क़ुदरत के क़ब्ज़े में मेरी जान है, जन्नत के दरवाज़े इतने खुले हैं जितनी दूरी मक्का और बसरा के बीच में है।

१४३६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि क़ियामत के दिन लोगों की जमाअतें होंगी और हर जमाअत अपने-अपने नबी के साथ होगी और हर एक से यह कहती फिरेगी कि तुम शफ़ाअत कर दो, तुम शफ़ाअत कर दो, मगर इन्तिहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर होगी और यही दिन होगा कि अल्लाह आप को मक़ामे महमूद में ले जाएगा अल्लाह तआला फ़र्माता है—व ला तज्हर बिसला तिका वला तुखाफ़ित

१४४०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जिस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मक्का में छिपे हुए थे, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई थी, क्योंकि आप की यह आदत थी कि जब आप सहाबा को नमाज़ पढ़ाया करते थे तो क़ुरआन ऊंची आवाज़ से पढ़ा करते थे और मुश्रिक लोग सुन कर क़ुरआन को बुरा-भला कहते थे, तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़र्माया कि क़ुरआन न बहुत ज़ोर से पढ़िए और न बहुत धीरे, बल्कि औसत दर्जा अख़्तियार कीजिए।

१४४१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि क़ियामत के दिन एक बड़े मोटे

शख्स को लाया जाएगा, मगर वह खुदा के नजदीक वजन में एक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा।

१४४२. हजरत अबूसईद खुदरी रजि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि क़ियामत के दिन मौत को एक मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा और एक शख्स पुकारेगा, ऐ जन्नत वालो ! तो जन्नत वाले सर उठा कर झांकेंगे, उन से पूछा जाएगा कि तुम इस को जानते हो, ये कहेंगे कि हां, अच्छी तरह जानते हैं, बल्कि इस को हर शख्स अच्छी तरह जानता है। फिर वह दोजख वालों को आवाज देगा। तो यह सर उठा कर झांकेंगे तो उन से पूछा जाएगा कि तुम इस को जानते हो ? ये कहेंगे कि जानते हैं, यह मौत है और इस को तो हर शख्स जानता है, तो उस को उन के सामने जिब्ह कर दिया जाएगा और फिर उन को आवाज दी जाएगी कि ए जन्नत वालो ! तुम्हारे लिए हमेशा रहना है और मौत नहीं, और ऐ दोजख वालो ! तुम्हारे लिए भी हमेशा रहना है, और मौत नहीं, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी—व अंजिर हुम यौमल हसरति (आखिर तक)

१४४३. हजरत सह्ल बिन साद रजि० कहते हैं कि हजरत उवैमिर आसिम बिन अदी, बनी अजलान के सरदार के पास आकर कहने लगे कि एक शख्स औरत के पास किसी शख्स को देखे, तो तुम्हारी राय में क्या करना चाहिए ? क्या उस को क़त्ल कर दे ? क्या तुम्हारी राय में उस का क़त्ल करना जायज़ है ? (मेहरबानी फ़र्मा कर) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात पूछ लीजिए। यह सुन कर आसिम बिन अदी रजि०, रसूलुल्लाह सल्ल० के पास आए और वाक़िया बयान किया। आपने इस सवाल को सुन कर नागवारी की वजह से मुंह फेर लिया और सवाल को भी ऐबदार समझा। उवैमिर रजि० ने आसिम रजि० से आकर पूछा, तो उन्होंने कहा कि आपने सवाल करने वाले और सवाल दोनों को ऐबदार समझा। हजरत उवैमिर रजि० बोले कि खुदा की क़सम, जब तक हजरत से इस मस्अले को पूछ न लूंगा, तब तक न छोड़ूंगा। यह कह कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिद्मत में हाजिर होकर अर्ज करने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अगर कोई शख्स अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देख ले, तो उस का क्या करना चाहिए ? क्या उस को क़त्ल कर दे या और

कोई सूरत अख़्तियार करे ? फ़र्माया कि तेरे और तेरी बीवी के बारे में ख़ुदा ने यह हुक्म नाज़िल फ़र्माया और आपने लिआन करने का क़ुरआन के मुताबिक़ हुक्म फ़र्माया । उन दोनों ने लिआन किया और उवैमिर रज़ि० ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अब उस का रोकना, उस के लिए ज़ुल्म की वजह है। इस वजह से उन्होंने उस को तलाक़ दे दी । उधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अगर इस औरत के काले रंग, काली आंखों का बड़े सुरीन और मोटी पिंडुलियों का बच्चा पैदा हुआ तो मैं समझ लूंगा कि उवैमिर रज़ि० अपने क़ौल में सच्चा है, और अगर वामनी की तरह सुर्ख़ रंग का बच्चा पैदा हुआ तो मैं समझूंगा कि उवैमिर रज़ि० झूठा था, चुनांचे उस के बच्चा पैदा हुआ ऐसा जो उवैमिर रज़ि० की सच्चाई को साबित करता था इस लिए वह बच्चा अपनी मां की तरफ़ मंसूब हुआ ।

१४४४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हिलाल बिन उमय्या रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर अपनी बीवी पर शरीक बिन सह्मा के ज़िना करने की तोहमत लगायी । आपने फ़र्माया कि तुम गवाह लाओ वरना तुम्हारी पीठ पर कोड़े लगाए जाएंगे । उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! अगर कोई अपनी बीवी के पास किसी ग़ैर शख़्स को देख ले तो क्या वह गवाह भी तलाश करता फिरे ? लेकिन आप यही फ़र्माते रहे गवाह लाओ, वरना हद (कोड़े) मारी जाएगी । उस वक़्त हिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! ख़ुदा की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ नाज़िल किया है, अल्लाह तआला मुझ को बरी कर देगा, क्योंकि मैं बिल्कुल सच्चा हूं, उस वक़्त जिब्रील अलै० यह आयत लेकर उतरे—वल्लज़ी न यर्मू न अज़्वाज हुम । इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को बुलाने भेजा और उस वक़्त तक आप यही फ़र्माते रहे कि उन दोनों में से एक आदमी झूठा है । इतने एक औरत खड़ी हुई और चार गवाहियां अदा करने पायी थी कि पांचवीं के क़रीब लोगों ने रोक दिया और कहा इस से वजूद वाजिब हो जाएगा और वह औरत भी ऐसी चुप हुई कि हम को ख़्याल हुआ कि अब इक़रार कर लेगी, मगर कुछ ठहर कर उसने कहा कि मैं अपनी क़ौम को रुस्वा न करूंगी और पांचवीं शहादत में भी साफ़ कह गयी । उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अगर उस के काली आंखों वाला, बड़े सुरीन वाला और बड़ी पिंडुलियों वाला बच्चा पैदा होगा तो वह शरीक बिन सह्मा का है, चुनांचे ऊपर ज़िक्र की हुई ख़ूबियों का ही बच्चा पैदा हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अगर क़ुरआन में मुलाअना का हुक्म न होता तो देखता मैं उस औरत का क्या हाल करता। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अगर क़ुरआन नाज़िल न हुआ होता तो मैं होता और वह औरत होती।

१४४५. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० को ख़बर पहुंची कि एक शख़्स कुंदा क़बीले में यह हदीस बयान करता है कि क़ियामत के दिन एक धुंवा उठेगा जिस से मुनाफ़िक़ तो अंधे और बहरे हो जाएंगे, लेकिन मोमिनों को सिर्फ़ ज़ुकाम का सा मालूम होगा। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० को इस से बहुत ग़ुस्सा आया और कहने लगे जिस को कोई बात मालूम हो, तो उस को बयान कर दे वरना चुप रहे और यह कह देना चाहिए अल्लाहु आलम क्योंकि यह कहना भी एक इल्म की बात है, ख़ुदा अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यों ख़िताब करता है कि ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! कह दो कि मैं तुम से अपनी तब्लीग़ पर कोई मुआवज़ा नहीं चाहता और न कोई बनावटी बात कहता हूं। इस के बाद कहते हैं कि जब क़ुरैश ने इस्लाम लाने में देर की तो हुज़ूर सल्ल० ने उन के लिए बद-दुआ फ़र्मायी और अर्ज़ किया कि ऐ ख़ुदा ! मेरा और उन का इस हालत से इंसाफ़ कर, जो युसुफ़ अलै० के ज़माने में सात साल तक रही थी, यानी उन पर क़हत नाज़िल कर दे तो उन पर ऐसा सख़्त क़हत आया कि बहुत से आदमी तो मर गए और बहुतों ने मुरदार हड्डियां खायीं और भूख की तेज़ी की वजह से उन को आसमान और ज़मीन के बीच एक धुंवा सा मालूम होता था। उस वक़्त आप सल्ल० के पास अबू सुफ़ियान आया और अर्ज़ करने लगा कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! तुम रिश्ता जोड़ने का हुक्म करते थे अब तुम्हारी क़ौम हलाक हो रही है। ख़ुदा से दुआ फ़र्माइए तो आपने यह आयत पढ़ी फ़र तक़िब यौ-म तातिस्समा (आख़िर तक)

१४४६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, ख़ुदा फ़र्माता है कि मैंने अपने नेक सालिह बंदों के लिए, ऐसी चीज़ें तैयार की हैं जो न उन की आंख ने देखीं, न उन के कान ने सुनीं, न किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा और तुम्हारे देखने

वगैरह की क्या ताक़त है। इस के बाद आपने यह आयत पढ़ी फ़ला नाल्-मु नफ़्सुम मा उख़फ़ि-य लहुम मिन क़ुर्रति अअ्युनिन जज़ाअम बिमा कानू यअ्मलून।

१४४७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मुझ को हुज़ूर सल्ल० की कुछ बीवियों पर रश्क हुआ करता था जो अपने नफ़्स को आप के लिए क़ुर्बान कर दिया करती थीं। मैं कहा करती थी कि क्या यह नफ़्स क़ुर्बान भी कर देती हैं तो उस के बारे में यह आयत नाज़िल हुई—तुर्जी मन तशाउ व तूअ्वी इलैक-मन तशाउ (आख़िर तक) उस वक़्त मैंने दिल से कहा कि अल्लाह तआला आप की ख़्वाहिश के मुताबिक़ करता है।

१४४८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि यह आयत नाज़िल हुई कि तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन-न व तूअ्वी इलैक मन तशाउ तो उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने यह काम अख़्तियार कर लिया था कि एक बीवी की बारी में अगर आप को दूसरी बीवी पसन्द होती तो आप इजाज़त ले लिया करते थे। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर मुझको ऐसा अख़्तियार दे दिया जाता, तो मैं आपके सिवा और किसी को पसन्द न करती। अल्लाह तआला फ़रमाता है—या अय्यि-हुल्लज़ी-न आमनू ला तदख़ुलू बुयूतन्नबी।

१४४६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब पर्दे की आयत नाज़िल हो गयी तो हज़रत सौदा रज़ि० किसी ज़रूरत की वजह से बाहर निकलीं, चूंकि भारी जिस्म की थीं, इस वजह से छिपी हुई नहीं रह सकती थीं, यह जा रही थीं कि हज़रत उमर रज़ि० ने रास्ते में देख कर पहचान लिया और कहने लगे कि ऐ सौदा रज़ि० ! तुम छिप तो सकती नहीं हो अब हम देखें आइंदा तुम कैसे बाहर निकलोगी। हज़रत सौदा रज़ि० यह सुन कर वापस लौट आयीं और उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० शाम का खाना अपने हुज्रे में बैठे हुए खा रहे थे। हज़रत सौदा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि मैं फ़्लां काम को जा रही थी कि हज़रत उमर रज़ि० मिले और मुझसे ऐसे-ऐसे कहा कि हुज़ूर सल्ल० पर फ़ौरन वह्य नाज़िल होना शुरू हो गयी और हड्डी हाथ की हाथ में रही, इस के बाद जब आप की हालत ठीक हुयी तो फ़रमाया कि तुम लोगों के लिए ज़रूरत की वजह से बाहर जाने की इजाज़त हो गयी। अल्लाह तआला फ़रमाता है—इन तुब्दू शैअन औ तुख़्फ़ूहु। (आख़िर तक)

१४५०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हो चुका था तो एक दिन क़ैस के भाई अफ़लह रज़ि० आए और मुझ से अन्दर आने की इजाज़त मांगी, मगर मैंने कहा, जब तक मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसके बारे में इजाज़त न मांगूंगी, उस वक़्त तक इजाज़त न दूंगी, क्योंकि अगर मुझे दूध पिलाया है तो क़ैस की बीवी ने पिलाया है। जब आप तशरीफ़ लाए तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मेरे पास अफ़लह, क़ैस के भाई आए थे और उन्होंने मुझ से अन्दर आने की इजाज़त मांगी थी, मगर मैंने इन को इजाज़त न दी और आप से इजाज़त मांगने का इन्तिज़ार किया। फ़र्माया तुमने अपने चचा को अन्दर आने की इजाज़त क्यों न दी ? मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मुझे क़ैस की बीवी ने दूध पिलाया है। फ़र्माया तुम्हारा बुरा हो, उनके आने की इजाज़त दो क्योंकि वह तुम्हारे चचा हैं।

१४५१. हज़रत काब बिन हजर रज़ि० कहते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम को आप पर सलाम भेजना तो आता है, लेकिन दरूद किस तरह भेजें, फ़र्माया यों पढ़ा करो—अल्ला हुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद। अल्ला हुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राहीम इन्न-क हमीदुम मजीद। अल्लाह तआला फ़र्माता है इन्न ल्ला-ह व मला-इकत हू यसुल्लून अलन्नबी।

१४५२. हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि० कहते हैं, हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! हम को आप पर सलाम भेजना तो आता है, लेकिन आप पर दरूद किस तरह भेजें, फ़र्माया, यों कहो—अल्ला हुम-म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दि-क व रसूलि-क कमा सल्लै त अला आलि इब्राहीम इन्न-क हमीदुम-मजीद अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राही-म अल्लाह तआला फ़र्माता है—लां तकू नू कल्ल ज़ीन आज़ो मूसा।

१४५३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मूसा अलैहिस्सलाम बड़े हया-

दार शख्स थे, अल्लाह तआला फ़र्माता है इन हु-व इल्ला नज़ीरुल्लकुम बैं-न यदै अज़ाबुन शदीद।

१४५४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ा पहाड़ पर चढ़े, आवाज़ दी या सबाहा! (यानी फ़र्याद, फ़र्याद) इस के सुनते ही सारे क़ुरैश जमा हो गए और कहने लगे मुहम्मद (सल्ल०) क्या हुआ? आपने फ़रमाया, अगर मैं तुमसे कहूं कि सुबह या शाम तुम पर दुश्मन चढ़ाई करने वाला है तो तुम मेरी बात का यक़ीन करोगे? उन्होंने कहा, ज़रूर। आपने फ़र्माया कि फ़-इन्नी नज़ी रुल लकुम बैं-नयदै-य अज़ाबुन शदीद, यह सुन कर अबुलहब बोला, तू मारा जाए इस बात के लिए, तूने हम को जमा किया था? उस वक़्त यह सूरः नाज़िल हुई—तब्बत यदा अबी लहबिंव तब्ब।

१४५५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि कुछ मुश्रिकों ने बहुत ज्यादा ख़ून बहाया और ज़िनाकारी की फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर होकर कहने लगे कि अगर तुम हम को कोई ऐसी चीज़ बताओ जो हमारे गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाए तो हम तुम्हारी लायी हुई बातों को अच्छा समझेंगे। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई—वल्लज़ी-न ला यदऊन मअल्लाहि और यह भी नाज़िल हुई क़ुल या अिबादियल्लज़ी-न अ स रफ़ू अला अनफ़ुसिहिम। अल्लाह तआला फ़र्माता है। मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़दरिह।

१४५६. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि यहूदियों के आलिमों में से एक बहुत बड़ा आलिम हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर कहने लगा, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम को तौरात से यह मालूम हुआ है कि अल्लाह तआला सारे आसमान और ज़मीन को उंगली पर और सारे पेड़ों को एक उंगली पर और सभी मिट्टी और पानी को एक उंगली पर और बाक़ी मख़लूक़ को एक उंगली पर रख कर फ़र्माएगा कि मैं बादशाह हूं। यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हंसे, यहां तक कि आप के दांत दिखाई पड़ने लगे, इस लिए यह कहना उस का बिला वजह था। इस के बाद आपने पढ़ा—वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़द्रि ही।

१४५७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला सारे आसमान

व ज़मीन को मुट्ठी में लेकर फ़र्माएगा कि मैं बादशाह हूं। अब दुनिया के बादशाह कहां हैं ? अल्लाह तआला फ़र्माता है—व नुफ़ि ख़ फ़िस्सूरि फ़स-अिक़ मन फ़िस्समावात।

१४५८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि सूर की दोनों फूंकों के बीच में चालीस का फ़र्क़ होगा। लोगों ने पूछा कि चालीस दिन या चालीस साल का या चालीस महीने का, लेकिन उन्होंने सबका इंकार किया और फ़र्माया कि इंसान के जिस्म के सारे हिस्से पुराने हो जाएंगे, लेकिन रीढ़ की हड्डी बाक़ी रहेगी। उसी से मख़लूक़ की तर्तीब होगी।

१४५९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि क़ुरैश का कोई ऐसा क़बीला न था जिस में हुज़ूर सल्ल० की कोई रिश्तेदारी न हो और आप सब से यही फ़र्माया करते थे कि मैं तुम से कोई चीज़ नहीं चाहता, इस के सिवा कि मुझ से जो रिश्ते का ताल्लुक़ है, उस को क़ायम रखो। अल्लाह तआला फ़र्माता है—रब्ब-नक्शिफ़ अन्नलअज़ाब।

१४६०. इस आयत के बारे में एक हदीस इब्ने मसऊद रज़ि० की ओर है, जिस में इतना ज़्यादा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व, सल्लम से कहा गया कि अगर हम उन से अज़ाब दूर कर देंगे, तो फिर ये सरकशी करेंगे, चुनांचे आपने परवरदिगार से दुआ की थी और उन से अज़ाब दूर हो गया, लेकिन उन्होंने फिर वही शुरू कर दिया था तो ख़ुदा ने उस का बदला बद्र की लड़ाई में ले लिया। अल्लाह तआला का इर्शाद है—वमा युह्लिकुना इल्लद्दह्र। दहरियों का यह अक़ीदा है कि हमें कोई चीज़ ख़त्म नहीं करती, मगर ज़माने की रफ़्तार।

१४६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इब्ने आदम मुझ को गाली देता है, इस तौर से कि ज़माने को गाली देता है, क्योंकि ज़माना मैं ही तो हूं। सब कुछ मेरे हाथ में है, रात-दिन का उलट फेर मैं ही करता हूं।

१४६२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तरह कभी हंसते न देखा कि आप का हलक़ खुल जाए, बल्कि आप मुस्कराया करते थे।

१४६३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह तआला ने

मख़लूक़ पैदा की तो रहम ने ख़ुदा से फ़र्याद की। हुक्म हुआ, ठहर जाओ, तू क्या इस से ख़ुश नहीं कि जो तुझ को अलग करे, तो मैं उस को अलग कर दूं। जो तुझे मिला ले, मैं उस को मिलाऊं। उसने अर्ज़ किया हां, इस पर मैं राज़ी हूं। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि जा ऐसा ही होगा। अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अगर चाहो तो यह आयत पढ़ लो—फ़हल असैतुम इन तवल्लैतुम (आख़िर तक)

१४६४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि जब दोज़ख़ी दोज़ख़ में डाले जाएंगे तो दोज़ख़ कहेगी कि और डालो, और डालो। उस वक़्त अल्लाह तआला अपना क़दम रखेगा, तो वह कहेगी कि बस, बस।

१४६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया जन्नत और दोज़ख़ में बात-चीत हुई। जन्नत ने कहा कि मुझ में इंकिसारी मिज़ाज के लोग दाख़िल होंगे। दोज़ख़ ने कहा कि मुझ में तकब्बुर और घमंड करने वाले लोग दाख़िल होंगे। अल्लाह तआला ने जन्नत से फ़र्माया कि तू मेरी रहमत है जिस पर चाहूंगा, करूंगा और दोज़ख़ से फ़र्माया कि तू मेरा ग़ज़ब और क़हर है, जिस पर चाहूंगा, करूंगा और दोनों को पूरे तरीक़े से भर दिया जाएगा। मगर दोज़ख़ में जब तक अपना क़दम अल्लाह तआला नहीं रखेगा, नहीं भरेगी और जब क़दम रख देगा, तो कहेगी, बस, बस और भर जाएगी। ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म ज़रा भी नहीं करेगा और जन्नत में दाख़िल होने के लिए नई मख़्लूक़ पैदा होगी।

१४६६. हज़रत जुबैर बिन मुत्‌इम रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मग़रिब के वक़्त सूरः तूर पढ़ रहे थे। जब आप इस जगह पर पहुंचे—अम ख़लक़ू बिग़ैरि शैइन, तो मेरे हवास क़ायम न रहे। अल्लाह तआला फ़र्माता है—अफ़ र ऐतुमुल्लात वल उज़्ज़ा।

१४६७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिसने किसी काम पर यह क़सम खाई कि लात व उज़्ज़ा की क़सम, तो उस को 'ला-इला ह इल्लल्लाह' कहना चाहिए और जो शख़्स किसी दूसरे को जुआ खेलने के लिए बुलाए तो उस को सद्क़ा देना चाहिए, जुआ न खेलना चाहिए। अल्लाह तआला फ़र्माता है बलिस्साअतु मौअिदुहुम वस्साअतु अदहा व अमर्रु।

१४६८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मेरे बचपन के ज़माने

में जब मैं बच्चों में खेला करती थी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई थी—बलिस्सा अतुमूअि दु हुम वस्सा अतु अदहा व अमर्र ।

१४६९. ख़ुदा का फ़र्मान—मिन दू नि हिमा जन्नतानि (आख़िर तक) अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि० ने अपने वालिद से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़र्माया है कि दो जन्नतें चांदी की हैं और उनके बरतन और सामान सब चांदी के हैं और जन्नतें सोने की हैं, उन के बर्तन व सामान भी सोने के हैं और अदन जन्नत में लोगों को अपने रब का दीदार होगा, इस तरह कि अल्लाह के चेहरे पर जलाल व बड़ाई का पर्दा होगा।

१४७०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जन्नत में एक खेमा खोल-दार मोती का होगा, जिस की लंबाई साठ मील तक होगी, उस के हर कोने में आदमी होंगे। एक कोने वाला दूसरे को न देख सकेगा, लेकिन मोमिन उन सब के पास चले फिरेगा।

१४७१. हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ को और ज़ुबैर रज़ि० को और मिक़्दाद रज़ि० को कहीं भेजा, इस के बाद हातिब रज़ि० की हदीस बयान की और यह कहा कि उन के बारे में यह आयत नाज़िल हुई है—य-अय्यिहुल लज़ी न आमनू ला तत्तख़िज़ू अदूवी व अदू व कुम (आख़िर तक)

१४७२. हज़रत उम्मे अतीया रज़ि० फ़र्माती हैं कि हमने जब रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर बैअत की तो ख़ुदा के फ़र्मान के मुताबिक़ एक तो शिर्क न करने की शर्त ली, दूसरे नौहा करने से मना फ़र्माया। इस को सुन कर एक औरत ने अपना हाथ उठा लिया और कहा कि एक औरत ने मेरे साथ नौहा किया था, मैं उसका बदला उतार दूं और यह कह कर चली गयी, फिर आप से आकर बैअत की। अल्लाह तआला फ़र्माता है—व आख़िरी न मिन हुम लम-मा यल हक़ू बिहिम।

१४७३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक बार हम रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि आप पर सूरः जुमा नाज़िल हुई—व आख़िरीन मिन हुम लम्मा यल हक़ू बिहिम, तो आप से किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! वह

कौन लोग हैं, मगर आप चुप रहे। सवाल करने वाले ने तीन बार यही सवाल किया। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० के ऊपर हाथ रख कर फ़र्माया कि अगर ईमान सुरय्या के पास भी हो तो उस में से कुछ आदमी उस को हासिल कर लेते। अल्लाह तआला फ़र्माता है—इज़ा जाअ कल मुनाफ़िक़ून क़ालू नश हदु।

१४७४. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० कहते हैं कि एक बार हम किसी जिहाद में थे कि अब्दुल्लाह बिन उबई सलूल लोगों से यह कह रहे थे कि जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हैं, अब तक वे उन से अलग न हों उन को खर्च न दो और मदीना पहुंच कर जो हम लोगों में इज़्ज़तदार आदमी हैं वह ज़लील को निकाल देगा। मैंने यह बात अपने चचा से कही, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कह दी। आपने अब्दुल्लाह को बुलाया, उस से पूछा। उसने क़सम खाकर कहा कि मैंने नहीं कहा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ को झूठा बना दिया और उस को सच्चा, लेकिन मुझ को पहले बुला कर आप पूछ चुके थे और मुझ को अपने झूठा बनाए जाने से बड़ा दुख हुआ और इसी दुख में मैं अपने घर में जाकर बैठ गया। मेरे चचा ने कहा तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी बात क्यों कहीं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझ को झूठा समझा और गुस्सा हुए। उस वक़्त ख़ुदा ने यह आयत नाज़िल फ़र्मायी—इ-ज़ जाअ कल मुनाफ़िक़ू न क़ालू नशहदु। इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ को बुलाया और फ़र्माया कि ज़ैद, तुम को ख़ुदा ने सच्चा कर दिया।

१४७५. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० कहते हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुनाफ़िक़ों को तौबा मांगने के लिए बुलाया, तो उन्होंने सर हिला दिया और न आए। अल्लाह तआला फ़र्माता है—या अय्यिहु न्नबीयु लिमा तुहर्रिमु मा अहल्ल ल्लाहु।

१४७६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० के यहां शहद पिया। मैंने और हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने सलाह किया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यहां तशरीफ़ लाएं तो आपसे यह कहना कि आपने

मग़फ़ीर[१] पीया है, इस की बदबू आप के पास से आ रही है, चुनांचे आप से कहा गया। फ़र्माया मैंने ज़ैनब रज़ि० के यहां शहद पिया था, मगर मैंने अब क़सम खायी है कि मैं शहद न पियूंगा। अल्लाह तआला फ़र्माता है—उतुल्लुन बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम।

१४७७. हज़रत हारिसा बिन वहब रज़ि० फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जन्नत में वह शख़्स जाएगा जो नर्म दिल और बुज़ुर्ग हो और अगर किसी काम पर ख़ुदा की क़सम खा ले तो उस को पूरा कर दे और दोज़ख़ी वह शख़्स है जो झगड़ालू और तकब्बुर करने वाला हो।

१४७८. हज़रत अबूसईद रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, हमारा परवरदिगार अपनी पिंडुली ज़ाहिर करेगा तो सब लोग सज्दे में गिर जाएंगे और वे लोग बाक़ी रह जाएंगे, जो दिखावे के तौर पर सज्दा करते थे। वे जब सज्दे का इरादा करेंगे, तो उन की पीठ तख़्त की तरह हो जाएगी।

१४७९. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली को मिला कर फ़र्माया कि मैं और क़ियामत इसी तरह मिला कर भेजे गए हैं।

१४८०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जो शख़्स क़ुरआन का हाफ़िज़ होकर क़ुरआन को पढ़ेगा तो वह किरामन कातिबीन के साथ होगा और जिस शख़्स की ज़ुबान पर क़ुरआन के लफ़्ज़ सख़्ती से अदा होंगे और वह कोशिश से पढ़ना चाहेगा तो उस के लिए दोहरा इनाम है।

१४८१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि जब लोग परवरदिगार आलम के सामने खड़े होंगे तो उन में ऐसे भी होंगे, जो आधे कानों तक डूबे होंगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है फ़सौ फ़ युहासिबु हिसा-बंय-यसीरा।

१४८२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिस शख़्स का हिसाब लिया गया तो समझ लो कि वह हलाक हुआ। यह हदीस 'इल्म के बयान' में आ चुकी

---

१ मग़फ़ीर एक पेड़ का पनीर होता है, शहद की तरह मीठा और पतला, इसमें बू आती है।

है। अल्लाह तआला का फ़र्मान है—ल तर क बु न-न तबक़न अन तबक़।

१४८३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़र्मान है— 'ल तर क बुन-न तबक़न अन तबक़' से एक हाल का दूसरे हाल के बाद आना मुराद है।

१४८४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़मआ रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने वाज़ में ऊंटनी और उस की कोंचें काटने वाले का ज़िक्र फ़र्माया और फ़र्माया कि इज़म ब-अ-स अश-क़ाहा कि कोंचें काटने वाला बड़ा सख़्त ज़ालिम है। अबू ज़मा की तरह अपनी क़ौम में रोक-थाम करने वाला उठा, फिर औरतों का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि कुछ लोग अपनी औरतों को गुलामों की तरह मारते हैं, फिर उसके बाद उसी रात सोहबत करते हैं। फिर बदबूदार हवा निकलने पर हंसने के बारे में लोगों को नसीहत की और फ़र्माया कि जो काम तुम खुद करते हो तो दूसरों पर क्यों हंसते हो! अल्लाह तआला फ़र्माता है— कल-ला लइल्लम यनतहि।

१४८५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि अबूजहल ने कहा था, अगर मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को काबे में नमाज़ पढ़ते देख लिया, तो उसका गला घोंट दूंगा। यह ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल० को पहुंची तो आपने फ़र्माया, अगर वह ऐसा करेगा तो फ़रिश्ते उस की ख़बर लेंगे।

१४८६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जब मैं आसमान पर गया तो एक नहर पर पहुंचा, जिस के आस-पास में मोतियों के ख़ेमे लगे थे। मैंने हज़रत जिब्रील अलै० से पूछा कि ऐ जिब्रील! यह क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि यह हौज़े कौसर है।

१४८७. हज़रत आइशा रज़ि० से इन्ना आतैना कल कौसर की तफ़्सीर पूछी गयी, तो आपने फ़र्माया कि यह तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हौज़ है, जिस के आस-पास खोलदार मोतियों के ख़ेमे हैं और सितारों की तरह अनगिनत उन पर कूज़े हैं।

१४८८. हज़रत उबई बिन काब रज़ि० कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मअव्विज़ात के बारे में पूछा।

फ़र्माया मुझको जिब्रील अलैहिस्सलाम ने पढ़ाई है, इस लिए हम भी इसी तरह पढ़ते हैं, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया।

बाब ५४

निकाह के बयान में

१४८९. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि तीन शख़्स उम्मुलमोमिनीन के पास हुज़ूर सल्ल० की इबादत का हाल पूछने आए और मालूम करके, उस इबादत को थोड़ा ख़्याल करके कहने लगे कि हम में और हुज़ूर सल्ल० में बड़ा फ़र्क़ है। हुज़ूर सल्ल० के तो अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो गए थे, तो हम को चाहिए कि हम आप से ज़्यादा इबादत करें। यह कह कर एक ने दूसरे से कहा कि मैं तो हमेशा सारी रात नमाज़ पढ़ा करूंगा और दूसरे ने कहा कि मैं हमेशा रोज़ेदार रहूंगा, तीसरे ने कहा कि मैं औरतों से अलग रहूंगा और आगे निकाह न करूंगा। इतने में हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि क्या तुम ने फ़्लां-फ़्लां बातें की थीं? ख़ुदा की क़सम, मैं तुम्हारे मुक़ाबले में ख़ुदा से बहुत डरता हूं और बहुत तक़वे वाला हूं। इस के बावजूद रोज़ा भी रखता हूं, और इफ़्तार भी करता हूं, नमाज़ भी पढ़ता हूं, सोता भी हूं, औरतों से निकाह भी करता हूं। अब जो मेरी सुन्नत से हटेगा वह मेरे तरीक़े पर नहीं।

१४९०. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस्मान बिन मज़्ऊन रज़ि० को निकाह न करने से मना फ़रमा दिया था वरना हम सब ख़स्सी हो जाते।

१४९१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, ऐ हज़रत मुहम्मद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं जवान मर्द हूं, मुझ को यह खौफ़ है कि कहीं ज़िना में न फंस जाऊं और मुझ में शादी करने की ताक़त नहीं। यह सुन कर हुज़ूर सल्ल० चुप हो रहे। मैंने फिर यही अर्ज़ किया, लेकिन आप चुप रहे। मैंने फिर कहा तो आप ने फ़रमाया, अबूहुरैरह! जो कुछ तुम्हारे लिए होने वाला है, वह लिखा जा चुका। अब तुम चाहे खस्सी हो जाओ, चाहे न हो।

१४६२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप जंगल में तशरीफ़ ले जाएं और वहां एक पेड़ ऐसा हो कि उसको किसी जानवर ने कुछ खा लिया हो और एक ऐसा हो कि कि जिस को किसी ने छुआ भी नहीं, तो आप अपना ऊंट कौन से पेड़ पर चराएंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस में किसी ने न खाया हो। हज़रत आइशा रज़ि० का मक़सद उस से यह था कि आप ने मेरे अलावा किसी कुंवारी से निकाह नहीं किया है।

१४६३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० ने सिद्दीक़े अकबर रज़ि० से मेरी ख्वाहिश की तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप तो मेरे भाई हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम मेरे दीनी भाई हो और आइशा रज़ि० मेरे लिए हलाल है।

१४६४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अबूहुज़ैफ़ा बिन उत्बा बिन रबीआ बिन अब्दशम्स रज़ि० ने (यह बद्र की लड़ाई में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शरीक हो चुके हैं) सालिम रज़ि० को अपना बेटा बना लिया, जिस को मुंह बोला बेटा कहते हैं और अपनी बेटी हिन्दा बिन्त वलीद बिन उत्बा बिन रबीआ का उनसे निकाह कर दिया। सालिम किसी अंसारी के ग़ुलाम आज़ाद किए हुए थे, जाहिलियत के ज़माने का यह क़ायदा था कि कोई शख्स जब किसी को अपना बेटा बना लेता, तो उस को उसी शख्स की तरफ़ निस्बत करते और मीरास भी उसको मिलती, लेकिन फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल कर दी। इस के नाज़िल होने के बाद सहला बिन सुहैल बिन उमर क़ुरैशी सुम्म अल-आमिरी, अबूहुज़ैफ़ा रज़ि० की बीवी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और

कहने लगीं, सालिम रज़ि० को हम अपना बेटा समझते थे, लेकिन आप को मालूम है कि उनके बारे में जो कुछ नाज़िल हो गया।

१४६५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ियाआ बिन्त ज़ुबैर रज़ि० के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि क्या तुम हज को जाती हो ? उन्होंने कहा कि ऐ हज़रत ! मुझे बीमारी का डर है, फ़रमाया, तो हज को जाओ और यह शर्त कर लो कि जहां ख़ुदा तुम को रोक दे वहीं हलाल हो जाओगी। यह मिक़दाद बिन असवद की बीवी थीं।

१४६६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, औरतों को चार बातों की वजह से निकाह में लाते हैं—मालदार होने की वजह से, नस्ल व ख़ानदान में अच्छी होने की वजह से, ख़ूबसूरत होने की वजह से और दीनदारी की वजह से लेकिन तू दीनदारी को पसंद कर।

१४६७. हज़रत सहल रज़ि० कहते हैं कि एक मालदार आदमी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि के सामने से गुज़रा। आप ने फ़रमाया कि उस शख़्स के बारे में तुम लोग क्या कहते हो ? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि यह शख़्स ऐसा है कि अगर किसी की लड़की से निकाह करना चाहे तो फ़ौरन क़ुबूल की जाए और अगर कोई बात कहे तो वह भी कान लगा कर सुनी जाए। इतने में एक ग़रीब फ़क़ीर का गुज़रना हुआ, तो आप ने फ़रमाया कि अच्छा, इसके बारे में ? सहाबा रज़ि० ने कहा कि यह ऐसा है कि अगर निकाह का पैग़ाम भेजे तो क़ुबूल न हो, किसी की सिफ़ारिश करे तो क़ुबूल न हो। कोई बात कहे तो उससे लापरवाही की जाए, उस वक़्त आप ने फ़रमाया कि यह फ़क़ीर धरती पर तमाम रहने वाले सारे अमीरों से बेहतर है।

१४६८. हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मर्दों को ज़्यादा तक्लीफ़ देने वाली मैंने औरतों के सिवा और कोई चीज़ नहीं छोड़ी।

१४६९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० से किसी ने अर्ज़ किया, आप हम्ज़ा रज़ि० की लड़की से क्यों निकाह नहीं करते ? फ़रमाया, वह मेरी दूध शरीकी भतीजी है।

१५००. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार मैंने सुना कि हज़रत हफ़्सा रज़ि० के यहां कोई मर्द अंदर आने की इजाज़त मांग रहा है। मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया कि आप के घर में कोई शख़्स जाने की इजाज़त मांगता है। फ़रमाया, मेरा ख़्याल ऐसा है कि वह हज़रत हफ़्सा रज़ि० के दूधशरीकी चचा हैं। मैंने अपने दूधशरीकी चचा के बारे पूछा कि अगर वह ज़िन्दा होते तो क्या आ सकते थे? फ़रमाया कि हां, क्योंकि नसब के ज़रिए जो महरम होते हैं वही दूध के शरीक होने से भी महरम होते हैं।

१५०१. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० कहती हैं कि एक बार मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप मेरी बहन से निकाह कर लीजिए, फ़रमाया कि क्या तुम को यह बात पसन्द है? मैंने अर्ज़ किया, जी हां, क्योंकि मैं अकेली तो आप के निकाह में हूं ही नहीं, इसलिए मुझको यही अच्छा मालूम होता है, उस चीज़ में शरीक मेरी बहन भी हो जाए। आपने फ़रमाया वह मेरे ऊपर हराम है। मैंने अर्ज़ किया कि क्या आप ने अबी सलमा रज़ि० से निकाह करने का इरादा नहीं किया है? फ़रमाया कि क्या अबू सलमा की बेटी से? मैंने कहा, जी हां। फ़रमाया कि अगर वह मेरी गोद में पाली हुई न होती और मेरी हिफ़ाज़त में न होती तब भी मेरे लिए हलाल नहीं थी, क्योंकि वह मेरे दूधशरीकी भाई की बेटी है। मुझको और अबू सलमा रज़ि० को सुवैबा ने दूध पिलाया है, इसलिए तुम मुझ पर न अपनी बेटियां पेश करो, न बहनें।

१५०२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार मेरे यहां हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और एक शख़्स को बैठे हुए देखकर मुबारक चेहरे पर नागवारी के आसार ज़ाहिर हुए। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल०! यह मेरा भाई है। फ़रमाया उस दूध के पिलाने का एतबार है जो गिज़ा के तौर पर पिया जाए।

१५०३. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शिग़ार निकाह से मना किया, शिग़ार वह निकाह है कि कोई शख़्स अपनी बेटी का निकाह किसी से इस शर्त पर कर दे कि वह शख़्स अपनी बेटी का निकाह किसी से उसके साथ कर दे और मह्र कुछ न हो।

१५०४. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक औरत ने आकर अपने नफ़्स को हिबा कर दिया। एक शख्स वहां मौजूद था। उसने अर्ज किया, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! उस का निकाह मुझ से कर दीजिए। फ़रमाया कि (मह्र के लिए) तुम्हारे पास क्या है ? उसने कहा, कुछ भी नहीं। फ़रमाया जाओ कुछ तलाश करो चाहे लोहे की अंगूठी ही क्यों न हो। वह गया और फिर वापस आ गया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मुझे न लोहे की अंगूठी मिली और न कुछ मेरे पास है, सिर्फ़ एक चादर है, जो आधी उसकी और आधी मेरी है। आपने फ़रमाया कि अगर उस चादर को तुम इस्तेमाल करोगे, तो उसके हिस्से में कुछ न आएगा। यह सुनकर वह बैठ गया और बहुत देर तक बैठा बातें करता रहा फिर उठ कर चला तो हज़रत ने बुलाया या बुलवाया और फ़रमाया कि तुम को क़ुरआन की कौन-कौन सी सूरः आती है। उसने कहा कि फ़्लां-फ़्लां, फ़रमाया अच्छा जाओ, इस क़ुरआन की तालीम के बदले हम ने इस औरत पर तुझ को क़ाबिज़ कर दिया।

१५०५. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० से एक रिवायत में है कि एक औरत हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर कहने लगी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं हुज़ूर सल्ल० को अपना नफ़्स हिबा करने हाज़िर हुई हूं। आप ने उसकी तरफ़ देखा और फिर सर नीचा कर लिया। रिवायत करने वाले ने हदीस का ज़िक्र किया और उसके आखिर में फ़रमाया कि तू यह-यह सूरः हिफ़्ज़ पढ़ता है ? उसने कहा, जी हां, फ़रमाया, कि जा, इस क़ुरआन के बदले मैंने उस औरत का निकाह तुझ से कर दिया।

१५०६. हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ि० कहते हैं कि मैंने अपनी बहन का निकाह एक शख्स से कर दिया था। उसने उसको तलाक़ दे दी, जब उसकी इद्दत खत्म हो गयी तो वह फिर निकाह का पैग़ाम ले कर आया। मैंने कहा कि हमने एक बार उसका निकाह तुमसे कर दिया था और तुमने तलाक़ दे दी और अब फिर निकाह का पैग़ाम लेकर आए हो। खुदा की क़सम, अब मैं दोबारा तेरे साथ निकाह नहीं करूंगा हालांकि उस शख्स में कोई ऐब न था और मेरी बहन उसके यहां जाना भी चाहती थी,

तो खुदा ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी फ़लहू ताजुलू हुन-न। उस वक़्त मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अब मैं निकाह ज़रूर कर दूंगी और उस शख्स से निकाह कर दिया।

१५०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि बेवा और कुंवारी औरत से बिला इजाज़त निकाह न किया जाए। हमने अर्ज़ किया लड़की की इजाज़त की क्या शक्ल है ? फ़रमाया उसका चुप हो जाना।

१५०८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! कुंआरी औरत तो शरमाती है। आप ने फ़रमाया, उसकी इजाज़त चुप हो जाना है।

१५०९. हज़रत खंसा बिन्त हिज़ाम अंसारिया रज़ि० कहती हैं कि मेरी मां ने मेरा निकाह किसी शख्स से कर दिया, उससे पहले मेरी एक बार शादी हो चुकी थी, कुंवारी न थी और इस निकाह से मैं खुश न थी। हुज़ूर सल्ल० के पास हाज़िर हुई। आपने उस से निकाह को नाजायज़ क़रार दिया और लौटा दिया।

१५१०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरे के मोल पर मोल करने से मंगनी पर मंगनी करने से मना फ़रमाया है, जब तक वह मंगनी न छोड़ दी जाए या इजाज़त न दे दे।

१५११. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया किसी औरत को यह जायज़ नहीं कि किसी अपनी बहन की तलाक़ की ख्वाहिश करे ताकि उस के प्याले की चीज़ खुद उंडेल ले, उसको वही मिलेगा जो उसके मुक़द्दर में है।

१५१२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने एक अंसारी औरत की रुख्सती की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि आइशा रज़ि०, तुम्हारे पास कोई बात खेल-कूद की न थी, हालांकि अंसारिया को यह पसंद है।

१५१३. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो ! अगर लोगों में से कोई शख्स अपनी बीवी के पास जाए और यह पढ़ लिया करे कि बिस्मिल्लाहि अल्ला हुम-म जन्निब नश्शैता-न व जन्निबिश्शैतान मा रज़क़्तना। अगर उस वक़्त में उसकी क़िस्मत में बच्चा हो गया होगा तो खुदा उसको शैतान से हमेशा बचाए रखेगा।

१५१४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने अपनी बीवी पर ऐसा वलीमा नहीं किया जैसा हज़रत ज़ैनब रज़ि० पर किया। बकरी का वलीमा किया था।

१५१५. हज़रत सफ़िया बिन्त शैबा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कुछ बीवियों का वलीमा जौ के सिर्फ़ दो मुद्द (पैमाने) पर किया था।

१५१६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम लोगों में से कोई शख्स वलीमा खाने के लिए बुलाया जाय, तो उसको जाना चाहिए

१५१७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जो शख्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया है, उस को चाहिए कि अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ न दे और औरत के साथ अच्छा मामला रखे, क्योंकि वह पसली से पैदा की गई है, अगर पसली को सीधा करने की कोशिश करेगा तो टूट जाएगी और अगर छोड़ देगा तो वैसी ही रहेगी। औरतों के मामले में अच्छाई करो।

१५१८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार ग्यारह औरतें जमा होकर बैठीं और आपस में यह अह्द व पैमान किया कि कोई अपने शौहर का हाल न छिपाए, उन में से एक बोली कि मेरा शौहर उस कमज़ोर ऊंट की तरह है जिसकी कमज़ोरी की वजह से पहाड़ पर चढ़ना मुश्किल है, यानी बिल्कुल बेफ़ायदा आदमी है। दूसरी बोली कि मैं अपने शौहर का हाल न बयान करूंगी, क्योंकि मुझे डर है कि कहीं उस का भेद खुल न जाए, तो बुरी बात होगी। तीसरी बोली कि मेरा शौहर बद मिज़ाज है, अगर उसके सामने बात करूं तो तलाक़ मेरे लिए तैयार है और अगर चुप रहूं तो मुअल्लक़ कर दी जाऊं। चौथी बोली कि मेरा शौहर तहामा की रात की तरह है. न बहुत गर्म, न बहुत ठंडा, न उससे डर न दुख। पांचवीं ने कहा कि मेरा शौहर जब घर में होता है तो चीता होता है और बाहर जाता है तो शेर, न अपने वायदे का ख्याल रखता है। छठी औरत ने कहा कि मेरा शौहर जिस वक़्त खाने को बैठता है, सब साफ़ कर देता है, कुछ भी नहीं छोड़ता और पानी पीता है तो एक बूंद भी नहीं छोड़ता और जब चादर लपेट लेता है तो फिर मेरी ख़बर नहीं लेता, न हाथ लगाए, न कुछ करे। सातवीं ने कहा कि मेरा शौहर बड़ा

सुस्त और बे-नफ़ा है, सर से लेकर पैर तक मर्ज़ ही मर्ज़ है कि चाहे तो मेरा सरया हड्डी तोड़ने को मौजूद है। आठवीं ने कहा कि मेरे शौहर का गोश्त खरगोश की तरह नर्म है और जिस्म की बू अरनब की तरह। नवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर बड़ा क़द वाला जवान है, मेहमानदार है। दसवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर बड़ा अच्छा मालिक है। उस के ऊंट की इतनी ज्यादती है कि जंगल भर जाते हैं और जब उसके ऊंट अपने चराने वाले की आवाज सुनते हैं तो फ़ौरन मालूम कर लेते हैं कि अब यह जिब्ह होंगे (यह तरीफ़ मेहमानदारी की है)। ग्यारहवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर अबूजरआ था, जिस ने मेरे कान ज़ेवर से भर दिए थे और चर्बी से मेरे कंधे भर दिए थे, मुझे ऐसा आराम दिया कि जिस से मुझको चैन आ गया, पहले मैं बकरी वालों में रहती थी, वह मुझको लाया और ऊंट दिखाए और घोड़े दिखाए, गल्ले के ढेर दिखाए, अगर मैं कोई बात कहती थी उसको बुरी मालूम न होती थी, ठंडा पानी पीती थी और मजे से पड़ी सुबह तक सोती थी और अबूजरआ की मां ऐसी थी जिसकी जड़ मजबूत थी मगर बड़ा था और अबूजरआ की बेटी ऐसी थी कि अपने मां-बाप की फ़रमांबदार और मोटी इतनी कि चादर भर जाती थी, खूबसूरती में इस दर्जे कि साथियों को देखकर हसद होता था और उसकी बांदी ऐसी थी कि राज़ न खोलती थी, खाने को न बेकार करती, घर के कूड़े को साफ़ रखती। एक दिन अबूजरआ मक्खन के कारख़ाने में गया तो उसने वहां एक औरत को देखा कि उसके दो बच्चे कूल्हों के पास बैठे हुए उसकी छातियों से खेल रहे हैं। उसने निकाह कर लिया और मुझको तलाक दे दी मैंने एक शख्स से निकाह कर लिया, यह भी बड़ा बहादुर जवांमर्द है और मेरे लिए हर तरह की नेमतों और हर तरह की दौलत मुहैया की है और यह कहा है कि ऐ उम्मेजरआ! खुद भी खाओ और लोगों को भी खिलाओ, लेकिन मैं उस की दी हुई अगर सारी चीजें इकट्ठी करूं तो अबूजरआ का एक छोटा सा प्याला भी न भरे। हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सुन कर मुझ से फ़रमाया कि ऐ आइशा रज़ि०! मैं भी तुम्हारे लिए ऐसा ही हूं जैसे अबूजरआ उसके लिए था।

१५१९. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी औरत को यह

जायज़ नहीं कि अपने शौहर की बिला इजाज़त रोज़ा रखे या बिला इजा-ज़त किसी दूसरे घर में जाए या बिला इजाज़त किसी को कुछ दे, क्योंकि उसमें आधा हक़ मर्द का भी है।

१५२०. हज़रत उसामा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो मैंने जन्नत में दाख़िल होने वाले अक्सर लोग मिसकीन ही देखे और दोज़ख़ के दरवाज़े पर जब खड़ा हुआ तो वहां भी अक्सर दाख़िल होने वाली औरतें देखीं।

१५२१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्ल० जब किसी सफ़र में तशरीफ़ ले जाते, तो अपनी बीवियों में क़ुर्आ डालते, एक बार हज़रत हफ़्सा रज़ि० का और मेरा नाम क़ुर्आ में निकला (इसलिए हम दोनों साथ हो गयीं) और उस सफ़र में हुज़ूर सल्ल० रात होती, तो मुझसे बातें करते चलते। हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने मुझ से कहा कि आज तुम हमारे ऊंट पर सवार हो और मैं तुम्हारे ऊंट पर और हर एक दूसरे की चाल देखें। मैंने कहा, अच्छा, चुनांचे मैं हज़रत हफ़्सा रज़ि० के ऊंट पर सवार हो गयी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे ऊंट के क़रीब आए जिस में उस वक़्त हज़रत हफ़्सा रज़ि० सवार थीं और सलाम किया, फिर चल दिए। उधर मैंने जब आप को न पाया तो एक पड़ाव अपने दोनों पांव अज़ख़र घास पर रख कर कहा कि ऐ ख़ुदा, मुझ पर सांप या बिच्छू को भेज दे ताकि मुझे काट ले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तो मैं कुछ कह ही नहीं सकती हूं।

१५२२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अगर मैं चाहूं तो यह भी कह सकता हूं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कुंआरी औरत से शादी करे तो सात दिन रहे और अगर बेवा से निकाह करे तो उस के पास तीन दिन रहे।

१५२३. हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं कि एक औरत ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, ऐ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ! मेरी एक सौत है, तो अगर मैं उस के सामने ऐसी चीज़ के मिलने को ज़ाहिर करूं, जो मुझ को शौहर ने नहीं दी है, तो क्या गुनाह होगा ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि ऐसा कहने वाला झूठ के दो कपड़े पहनने वाले की तरह है।

१५२४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ग़ैरत करता है, अल्लाह की ग़ैरत इस बात पर होती है कि कोई मोमिन बंदा उसकी हराम की हुई चीज़ को कर बैठे।

१५२५. हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं कि मेरी शादी हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से हुई और उन के पास कोई चीज़ एक आबकश ऊंट और एक घोड़े के सिवा न थी, मैं उन के घोड़े को दाना देती, मैं उन के घोड़े को घास-दाना दिया करती थी, पानी भर कर लाती थी, उन का डोल खींचती थी, हां मुझे रोटी अच्छे तरीक़े से पकाना नहीं आती थी, तो वह अंसार की नेक नीयत औरतें जो हमारे पड़ोस में रहती थीं, पका दिया करती थीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुबैर रज़ि० को एक ज़मीन दी थी, जो हमारे यहां से दो मील के दूरी पर थी। मैं वहां से जा कर गुठलियां लाद कर लाया करती थी कि एक बार का वाक़िआ है कि मैं वहां से गुठलियां ला रही थी कि मुझ को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ अंसारियों के साथ मिल गये और हुज़ूर सल्ल० ने मुझ को देख कर अपने ऊंट को बिठाने के लिए अख़ अख़ कहा, ताकि मुझ को सवार कर लें, लेकिन मुझ को मर्दों में जाते हुए शर्म आयी और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की ग़ैरत भी याद आयी और इस हालत को हुज़ूर सल्ल० ने भी पहचान लिया कि मुझे शर्म आती है। इस वजह से आप चले गए, उस के बाद मैं हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के पास आयी और सारा वाक़िया बयान किया कि मैं गुठलियां ला रही थी कि मुझ को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ सहाबियों के साथ रास्ते में मिल गए और मुझे सवार करने के लिए अपना ऊंट बिठाने लगे, लेकिन मेरी शर्म को देखा और मुझको तुम्हारी ग़ैरत याद आई यह सुन कर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा कि तुम्हारा गुठलियां लाद कर लाना मुझ को ऊंट पर सवार होने से ज़्यादा नागवार है, अस्मा रज़ि० कहती हैं कि फिर मेरे वालिद ने एक ग़ुलाम घोड़े की ख़िदमत करने को भेज दिया गोया मुझको आज़ाद कर दिया।

१५२६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि०! जब तुम मुझ से ख़ुश या नाख़ुश होती हो, तो मैं तुम को पहचान लेता हूं। मैंने अर्ज़

किया कैसे ? फ़रमाया जब खुश होती हो, तो कहती हो मुहम्मद सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रब की क़सम और जब नाराज़ होती हो, तो कहती हो इब्राहीम अलै० के रब की क़सम। आइशा रज़ि० कहती हैं, मैंने अर्ज़ किया कि ठीक है, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं सिर्फ़ आपका नाम ही छोड़ देती हूं।

१५२७. हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, औरतों के पास जाने से परहेज़ करो। एक अंसारी ने कहा कि देवर के बारे में आप क्या फ़र-माते हैं, फ़रमाया देवर तो मौत है।

१५२८. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक औरत दूसरी औरत से ऐसी बात-चीत न करे कि फिर उसका अपने शौहर से सब हाल उसी तरह बयान करे गोया उस के शौहर ने उस को देख लिया।

१५२९. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब किसी शख़्स को सफ़र में देर हो जाए तो वापस हो कर रात के वक़्त घर में न जाए।

१५३०. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि अगर कोई शख़्स रात के वक़्त घर वापस आए तो घर में न जाए, जब तक औरत इस्लाह न कर ले और अपने बिखरे हुए बालों को न सम्भाल ले, उन में कंघी न कर ले।

बाब ५५

तलाक़ के हुक्म के बयान में

१५३१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अपनी बीवी को हैज़ की हालत से तलाक़ दी। हज़रत उमर रज़ि० ने इसका ज़िक्र हज़रत मुहम्मद रसूलु-

ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया, फ़रमाया उससे कहो। इस वक़्त रुजूअ कर ले और निकाह में रोके रखे। जब हैज़ आकर पाक हो जाए तो फिर अख़्तियार है चाहे सोहबत करने से पहले छोड़ दे, (और इस इद्दत से जिस में अल्लाह तआला ने तलाक़ देने का हुक्म दिया है: यही मुराद है,) चाहे रहने दे।

१५३२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि यह तलाक़ भी मेरे हिसाब में गिनती ली गई थी।

१५३३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब जवान लड़की को लाया गया, तो उसने कहा कि मैं ख़ुदा के साथ तुम से पनाह मांगती हूं। आपने फ़रमाया कि तूने बड़ी ज़ात के साथ पनाह मांगी है, जा, अपने घर वालों से मिल जा।

१५३४. हज़रत अबू उसैद रज़ि० एक रिवायत में कहते हैं कि जब वह आप के पास लायी गयी तो उस की ख़िदमत के लिए एक दाई भी उसके साथ थी। आपने उस से फ़रमाया कि तू अपने नफ़्स को मेरे लिए हिबा कर दे। उसने जवाब दिया कि क्या एक शहज़ादी अपनी रियाया को अपना नफ़्स हिबा कर सकती है। रिवायत करने वाले ने कहा कि आपने अपना मुबारक हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाया ताकि उसके दिल को इत्मीनान हो जाए, लेकिन उसने कहा कि मैं ख़ुदा के साथ तुम से पनाह मांगती हूं। आपने फ़रमाया कि तूने बड़ी ज़ात के साथ पनाह मांगी है और वह इस क़ाबिल है, फिर आप वहां से हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया अबू उसैद उस को दो थान सफ़ेद कत्तान के देकर उसके घर वालों में पहुंचा दे।

१५३५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रिफ़ाआ क़ुर्ज़ी की औरत हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हाज़िर हुई और कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! रिफ़ाआ ने मुझ को मुग़ल्लज़ा तलाक़ दे दी थी, इसके बाद मैंने अब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर रज़ि० से शादी कर ली, लेकिन वह बिल्कुल नामर्द है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि शायद तू फिर रिफ़ाआ के पास जाना चाहती है, लेकिन जब तक वह तेरा और तू उसका मज़ा न चख ले, उस वक़्त तक तू रिफ़ाआ के पास नहीं जा सकती।

१५३६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु सल्ल० को शहद और हलवा वग़ैरह बहुत अच्छा मालूम होता था और आपकी यह आदत थी कि आप भी नमाज़ पढ़कर अपनी बीवियों के पास तशरीफ़ ले जाते, कभी-कभी बोसा व कनार भी हो जाता। एक बार का वाक़िआ है कि आप हज़रत हफ़्सा रज़ि० बिन्त उमर फ़ारूक़ रज़ि० के यहां तशरीफ़ ले गए और मामूल से ज़्यादा आपको देर लगी, जब आप तशरीफ़ लाए, तो मैंने इसकी वजह पूछी फ़रमाया कि हफ़्सा रज़ि० के मैके से किसी औरत ने एक चमड़े के बर्तन में कुछ शहद भेजा था जिस में से कुछ उन्होंने मुझे पिलाया। मैंने यह सुन कर कहा ख़ुदा की क़सम हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ न कुछ चाल ज़रूर करेंगे, इसलिए मैंने सौदा बिन्त ज़मआ रज़ि० से कहा कि जब हज़रत तुम्हारे पास तशरीफ़ लायें, तो तुम कहना कि आपने अरफ़ज पेड़ का गोंद खाया है, तो आप यही कहेंगे कि नहीं, तो तुम कहना कि फिर यह कैसी बू आती है, तो आप यही कहेंगे कि मुझे हफ़्सा रज़ि० ने शहद पिलाया था। तुम कहना कि शायद उसने उस पेड़ का रस चूस लिया होगा। मैं भी यही कहूंगी और सफ़ीया रज़ि० ! तुम भी यही कहना। आइशा रज़ि० कहती हैं कि सौदा रज़ि० ने बयान किया कि उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले आए और मैंने चाहा कि तुम्हारी बताई हुई बात आप से कह दूं, लेकिन डर की वजह से न कहा। जब आप ने मुझ से क़ुर्बत की, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप ने गंदना खाया है ? आपने फ़रमाया नहीं। हफ़्सा रज़ि० ने शहद बेशक पिलाया है। मैंने कहा कि शायद मक्खी ने उस पेड़ का अर्क़ चूसा होगा फिर जब आप मेरे यहां तशरीफ़ लाए तो मैंने भी यही कहा। सफ़ीया रज़ि० की तरफ़ गए, तो उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! क्या शहद पिलाऊं फ़रमाया मुझ को ज़रूरत नहीं। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि सौदा रज़ि० बोलीं कि ख़ुदा की क़सम हमने आप को शहद से महरूम कर दिया, मैंने उन से कहा कि चुप रहो।

१५३७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि साबित बिन क़ैस की बीवी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहने लगीं कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मुझको क़ैस की न तो आदत की शिकायत है, न दीन की, सिर्फ़ इतनी बात है

कि मुझ को इस्लाम में होकर कुफ़्र बुरा मालूम होता है। आप ने फ़रमाया अच्छा उसका दिया हुआ बाग़ वापस कर सकती हो या नहीं ? उसने कहा कि जी हां, तो आपने साबित को बुला कर फ़रमाया कि साबित, तुम वह बाग़ ले लो और उनको तलाक़ दे दो।

१५३८. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत बरीरा रज़ि० के शौहर ग़ुलाम थे जिनका नाम मुग़ीस गोया मैं उन को देख रहा हूं कि वह बरीरा की जुदाई में उन के पीछे रोते चले जा रहे हैं और उनके आंसू जारी हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया, देखो मुग़ीस का बरीरा से इतनी मुहब्बत करना और उस का इतना बुग़्ज़ रखना कितनी ज्यादा ताज्जुब की बात है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरीरा रज़ि० से फ़रमाया कि काश ! बरीरा, तुम मुग़ीस के पास फिर आ जातीं। बरीरा ने अर्ज़ किया कि क्या आप मुझ से हुक्म के तौर पर फ़रमाते हैं ? फ़रमाया नहीं, बल्कि सिफ़ारिश के तरीक़े पर कहता हूं। बरीरा रज़ि० ने कहा, तो अब मुझ को ज़रूरत नहीं।

१५३९. हज़रत साद बिन सह्ल रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यार ने फ़रमाया कि यतीम का परवरिश करने वाला और मैं, जन्नत में उन दो उंगलियों की तरह होंगे और शहादत की उंगली और बीच की उंगली से आपने इशारा किया, कुछ दूरी भी रखी।

१५४०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और अर्ज़ किया कि मेरे एक काला लड़का पैदा हुआ है। आपने फ़रमाया तेरे पास ऊंट भी हैं। उसने कहा कि हैं। आपने पूछा किस रंग के हैं ? उसने कहा कि सुर्ख़ रंग के हैं। आपने पूछा कि क्या उन में कालापन लिए हुए सफ़ेद रंग के भी हैं। उसने कहा ऐसे भी हैं, आपने फ़रमाया कि वह कहां से आए ? उसने कहा कि रग ने कर दिया होगा। आपने फ़रमाया कि बस इसी तरह तेरे लड़के को पुरखों की किसी रग ने अपनी तरफ़ खींच लिया होगा।

१५४१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लिआन करने वालों से फ़रमाया कि तुम दोनों का हिसाब ख़ुदा लेगा, चूंकि तुम में से एक ज़रूर झूठा है।

शौहर से फ़रमाया कि अब तेरी बीवी पर कोई हक़ न रहा। उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मेरा माल दिलवा दीजिए। फ़रमाया अगर तू सच्चा है तो वह माल उस की शर्मगाह का बदला हो गया, जिस से तुमने फ़ायदा उठाया है और तुमने झूठ कहा है तो और भी ग़लत हो गया।

१५४२. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि एक औरत का शौहर मर गया, लोगों को यह खौफ़ हुआ कि कहीं उस की औरत की आंखें न दुख आयी हों। हुज़ूर सल्ल० से सुर्मा लगाने की इजाज़त मांगी। आपने फ़रमाया, नहीं, सुर्मा न लगाए, फिर औरतों से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि जाहिलियत के ज़माने में जब कोई औरत इद्दत में होती तो एक साल तक बड़े सड़े कपड़ों में बिल्कुल ख़राब मकान में रहती और अगर कोई कुत्ता निकल जाता तो उस पर मेंगनी फेंकती, उस वक़्त इद्दत ख़त्म होती। अब जब तक चार महीने दस दिन न गुज़र जाएं, उस वक़्त तक सुर्मा लगाने की इजाज़त नहीं।

१५४३. हज़रत अबू मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई मुसल-मान अज्र समझ कर अपने घर वालों पर ख़र्च करता है, तो वह उस के लिए सदक़े की तरह होता है।

१५४४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बेवा या यतीम के लिए किसी मामले में कोशिश करे, तो ऐसा है जैसे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला या ऐसा जैसा दिन व रात इबादत करने वाला।

१५४५. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुह-म्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू नज़ीर का बाग़ बेचा करते थे और अपने घर के लिए एक साल का ख़र्च रोक लेते थे।

बाब ५६

खाने-पीने के बयान में

१५४६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक बार (भूख की वजह से) मुझको बड़ी तक्लीफ़ पहुंची और इसी हालत में मेरी मुलाक़ात हज़रत उमर रज़ि० से हुई। मैंने उन से एक क़ुरआन की आयत पढ़ने की फ़रमाइश की, तो उन्होंने अपने घर का दरवाज़ा खोल कर और उसमें जाकर वह आयत पढ़ी और मुझ को भी बुलाया, लेकिन मैं कुछ दूर चला हूंगा कि उस तक्लीफ़ और भूख की वजह से औंधा गिर पड़ा, इतने में क्या देखता हूं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे सिरहाने तशरीफ़ रखते हैं। मुझ को उठा कर फ़र्माया, अबूहुरैरह रज़ि० ! मैंने अर्ज़ किया, जी। आपने मेरी हालत को देख कर ताड़ लिया और मुझ को अपने साथ अपने मकान में ले गए और एक दूध का प्याला, मेरे लिए मंगाया और मुझ से फ़र्माया कि पियो। मैंने कुछ पिया आपने फ़र्माया कि और पियो, मैंने और पिया। आपने फ़र्माया कि और—मैंने खूब पेट भर कर पिया और मेरा पेट तीर की तरह तन गया। अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं—इस के बाद मेरी मुलाक़ात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई, तो मैंने कहा कि मैंने आप से जो सूर: पढ़ने की फ़रमाइश की थी, हक़ीक़त में वह खाने की फ़र्माइश थी वरना वह आयत तो मैं आप से अच्छी तरह पढ़ सकता हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़र्माया, खुदा की क़सम ! अगर मैं समझ लेता, तो इतनी खुशी सुर्ख़ ऊंटों के मिलने से न होती, जितनी तुम्हारे खाना खिलाने से होती।

१५४७. हज़रत उमर बिन अबू सलमा रज़ि० कहते हैं कि मैं खाने के वक़्त हुज़ूर सल्ल० की बग़ल में बैठा हुआ था, उस वक़्त तक मैं ना-बालिग़ था, तो मैं रिकाबी में चारों तरफ़ खाता था। आपने फ़र्माया

लड़के ! खाने के वक़्त बिस्मिल्लाह् पढ़ लिया करो और दाहिने हाथ से अपने सामने खाया करो, चुनांचे उस दिन से मेरा यही तरीक़ा हो गया।

१५४८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब अल्लाह् के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो उस वक़्त से हम को खजूर और पानी पेट भर कर मिलने लगा था।

१५४९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह् के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त तक कभी पतली रोटी और भुनी हुई बकरी न खायी।

१५५०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने छोटी-छोटी रिकाबियों में नहीं खाया और न दस्तरख़्वान पर और न कभी आप के लिए चपाती पकाई गयी। क़तादा रज़ि० से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल० किस चीज़ पर खाते थे, कहा सफ़रा पर। (यानी चमड़े के दस्तर-ख़्वान पर)

१५५१. हज़रत अबूहुरैरह् रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जो खाना दो आदमियों के लिए तैयार किया जाए वह तीन को काफ़ी होता है और जो तीन के लिए तैयार किया जाए वह चार के लिए काफ़ी होता है।

१५५२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की यह आदत थी कि जब तक कोई ग़रीब दस्तरख़्वान पर न होता तो आप खाना न खाते, एक दिन एक शख़्स को आपके दस्तरख़्वान पर खाना खाने के लिए लाया गया, तो उसने बहुत खाया। आपने फ़र्माया कि ऐसे शख़्स को मेरे यहां कभी न लाना, क्योंकि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह् सल्ल० ने फ़र्माया है कि मुसलमान एक आंत में खाता है और काफ़िर सात आंतों में।

१५५३. हज़रत अबूहुजैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैठा हुआ था। इर्शाद फ़र्माया मैं तकिया लगा कर नहीं खाता हूं।

१५५४. हज़रत अबूहुरैरह् रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने कभी खाने को बुरा न कहा। अगर अच्छा मालूम हुआ, खा लिया वरना छोड़ दिया।

१५५५. हज़रत सह्ल रज़ि० से किसी ने पूछा कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मैदा भी आपने

देखा ? फ़र्माया नहीं, फिर उसने कहा कि अच्छा जौ के आटे को छान भी लिया करते थे? जवाब दिया नहीं, बल्कि फूंक लिया करते थे।

१५५६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० को खजूरें बांटीं और हर एक शख्स को सात-सात खजूरें दीं। मेरे हिस्से में भी सात आयीं, लेकिन उसमें एक सख्त थी, यानी रद्दी थी, लेकिन खाने में बहुत मज़ेदार थी बल्कि ऐसी कोई खजूर न निकली।

१५५७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक बार मेरा गुज़रना एक क़ौम के पास से हुआ, जिन के सामने भुनी हुई बकरी रखी थी, उन लोगों ने मुझे खाने के लिए बुलाया। मैंने इंकार कर दिया और कह दिया कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से चले गए, लेकिन जौ की रोटी पेट भर कर न खायी।

१५५८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब से मदीना तशरीफ़ लाए, कभी तीन दिन लगातार गेहूं की रोटी नहीं खायी और ऐसी हालत में आप का इंतिक़ाल हो गया।

१५५९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि जब हमारे घर वालों में से किसी का इन्तिक़ाल हो जाता था, तो औरतें जमा होतीं (फ़ारिग़ होने के बाद) जब चली जातीं और घर वाली या कुछ खास औरतें रह जातीं तो उस वक़्त तलबीना की हांडी चढ़ाई जाती और फिर उस का सरीद बना कर सब आपस में मिल कर खाती थीं, फिर फ़र्माया कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि तलबीना ऐसा खाना है कि उस के ज़रिए से मरीज़ का मर्ज़ अच्छा होता है और उस का ग़म व दुख दूर होता है।

१५६०. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि न रेशम का इस्तेमाल करो, न सोने-चांदी का, न सोने चांदी के बर्तनों में खाओ, क्योंकि दुनिया में यह कुफ़्फ़ार का हिस्सा है और आख़िरत में हमारा।

१५६१ हज़रत अबू मसऊद रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स अबू शुएब नामी अंसारी था। उस का एक ग़ुलाम क़साई था। एक दिन उसने अपने ग़ुलाम से कहा कि तुम खाना तैयार करो। मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मय पांच सहाबियों के, खाने के लिए

बुलाऊंगा, चुनांचे जब खाना तैयार हो गया तो उसने आप को मय पांच सहाबियों के बुलाया और हुजूर सल्ल० पांच आदमियों के साथ तशरीफ़ ले गए और आप के पीछे एक छठा आदमी भी हो गया। जब आप उस के मकान पर पहुंचे, तो उस शख्स से कहा कि आए तो हम पांच आदमी थे, लेकिन यह आदमी हमारे पीछे हो गया अगर तुम्हारी खुशी हो, तो उसको भी बुला लो वरना छोड़ दो। उन्होंने कहा कि उसकी भी इजाज़त है (यह भी चला आए)

१५६२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ककड़ी, खजूरें मिला कर खा रहे थे।

१५६३. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मदीना में एक यहूदी रहा करता था, वह मेरी खजूरें कटने से एक साल पहले ले लिया करता था। एक बार ऐसा वाक़िया हुआ कि मेरे पास खजूरें लेने आया, लेकिन मैंने अब तक उन को छूआ भी नहीं था। मैंने उस से एक साल का मौक़ा मांगा, उसने ना मंज़ूर किया। यह खबर हज़रत सल्ल० को पहुंची। आपने सहाबा रज़ि० से फ़र्माया कि चलो यहूदी से मौक़ा मांगने में जाबिर रज़ि० की मदद करें, इस लिए आप तशरीफ़ लाए और यहूदी से बातें करने लगे। उसने बात-चीत के बीच में कहा, अबुल-क़ासिम! मैं इसको मुहलत न दूंगा, आपने जब यह हालत देखी, तो बाग़ में टहलने चले गए और एक चक्कर लगा कर तशरीफ़ ले आए और फ़र-माने लगे कि अब भी मुहलत दे दे। उसने फिर इंकार कर दिया। उस वक़्त आपने फ़र्माया कि जाबिर रज़ि० तुम्हारी झोंपड़ी कहां है? जाओ उस में बिस्तर कर दो। मैंने जाकर उस को तैयार कर दिया। आप वहां तशरीफ़ ले गए और जाकर आराम फ़र्माया। इस के बाद जब आप जगे तो उस से मोहलत के लिए फिर कहा, लेकिन उसने फिर भी इंकार कर दिया, तो आपने फ़र्माया, अच्छा, जाबिर रज़ि०! खजूरें काटो और कई बार मैंने आप के सामने खजूरें पेश भी की थीं और आपने खायी थीं। क़िस्सा यह कि मैंने काटना शुरू किया और काट कर यहूदी को खजूरें अदा कर दीं फिर बाक़ी रहीं और मैंने हुजूर सल्ल० को आकर इस की खबर दी। फ़र्माया मैं गवाही देता हूं कि मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूं।

१५६४. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं, हज़रत

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जो शख्स सुबह के वक्त हर दिन सात अजवा खजूरें खा लिया करे, वह उस दिन जादू और ज़हर से बचा रहेगा।

१५६५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जो शख्स कुछ खाए तो आखिर से उंगलियां चाट ले और बाद को किसी चीज़ से साफ़ कर ले।

१५६६. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हमारे पास हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सिवा हाथ-पांव के, रूमाल न थे।

१५६७. हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं कि जब हज़रत मुहम्मद सल्ल० खाने से फ़ारिग़ हो जाते थे, तो यह दुआ पढ़ते थे—अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कफ़ाना वारिदाना ग़ैर मुक्फ़ी वला मक्फ़ूर।

१५६८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि पर्दे के बारे में मुझ को बहुत जानकारी थी। इसी वजह से हज़रत उबई बिन काब रज़ि० मुझ से पूछा करते थे। जब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने में ज़ैनब बिन्त जहश से शादी की और ज़फ़ाफ़ के रात की सुबह हुई, तो आपने लोगों की दावत की। लोग हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० के साथ दस्तरख्वान पर खाना शुरू किया, जब सब फ़ारिग़ हो गए और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० भी फ़ारिग़ होकर उठ कर चले तो मैं भी हुज़ूर सल्ल० के साथ हो लिया, यहां तक कि हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे के पास पहुंचे, वहां यह ख्याल कर के कि अब वे लोग चले गए, फिर वापस हुए लेकिन जब वहां पहुंचे तो सब मौजूद थे। आप फिर वापस आ गए। मैं भी आप के साथ लौट आया, फिर आप वहां से वापस लौटे यही ख्याल कर के कि लोग अब चले गए होंगे, लेकिन अब सब चले गए थे। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे और अपने बीच पर्दा छोड़ दिया और पर्दे का हुक्म नाज़िल हो गया।

बाब ५७

अक़ीक़े और क़ुर्बानी का बयान

१५६९. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं, मेरे यहां लड़का पैदा हुआ, मैं उस को हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में लेकर हाज़िर हुआ। आपने उस को एक छूहारे से तहनीक[1] की और बरकत की दुआ की और फिर मुझ को दे दिया।

१५७०. हज़रत अस्मा रज़ि० की हदीस है कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० क़बा के मक़ाम में पैदा हुए। यह हदीस हिजरत के बयान में आ भी चुकी है, लेकिन यहां इतना ज़्यादा है कि अब्दुल्लाह की पैदाइश से लोग बहुत ख़ुश हुए थे, क्योंकि यह क़ौल मशहूर था कि मुसलमानों पर, यहूदियों ने जादू कर दिया है, उन की औलाद न पैदा होगी।

१५७१. हज़रत सलमान बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि लड़के का अक़ीक़ा ज़रूरी है, इस लिए तुम को चाहिए कि उस की तरफ़ से क़ुर्बानी करो और उस के सर से तक्लीफ़ दूर कर दो।

१५७२. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, अगर किसी शख़्स ने लकड़ी से शिकार किया हो तो तुम को इस का क्या हुक्म है? फ़र्माया कि अगर लकड़ी की धार से शिकार किया हो, तो तुम को उस का खाना जायज़ है और अगर चोट से मुराद है तो न खाना चाहिए, फिर मैंने कुत्ते के शिकार के बारे में पूछा। फ़र्माया, अगर तुम्हारा कुत्ता, तुम्हारे लिए शिकार रोक ले, तो खा लेना, क्योंकि ऐसा कुत्ता मुअल्लम होता है,

---

१. मुंह में छुहारा चबा कर बच्चों के मुंह पर तालू पर चिपका देने को तह-नीक कहते हैं।

अगर तुम्हारे कुत्ते के साथ दूसरा कुत्ता शिकार करने में शामिल हो जाए और तुम को उस का शक हो कि कौन से कुत्ते ने शिकार किया है, तो न खाओ, क्योंकि तुमने बिस्मिल्लाह अपने कुत्ते पर पढ़ी है, न कि दूसरे कुत्ते पर।

१५७३. हज़रत अबू सालबा खिशनी रज़ि० कहते हैं कि एक बार मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कभी-कभी ऐसा होता है कि हम लोग किताब वालों के साथ होते हैं, तो हमारे लिए उनके बर्तनों में खाना जायज़ है या नहीं और इसी तरह हम कभी तीर से या शिकारी और ग़ैर शिकारी कुत्ते से शिकार कर लेते हैं, तो अब हम को कौन सा शिकार खाना चाहिए ? फ़रमाया सुनो, तीर का शिकार अगर तुमने बिस्मिल्लाह पढ़ कर किया है तो उस का खाना जायज़ है और कुत्ते का शिकार जो तुम्हारा सिखाया हुआ है, अगर बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा हो, तो उस का खाना भी जायज़ है और जो शिकार उस कुत्ते से किया हो जो सिखाया हुआ नहीं है, तो अगर तुमने बिस्मिल्लाह कह कर उस को ज़िब्ह कर लिया हो, तो उस को खा लो वरना नहीं और बर्तनों के बारे में यह है कि अगर तुम को अहले किताब के अलावा बर्तन मिलते हों, तो उन बर्तनों में न खाओ, वरना खा लो।

१५७४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि० कहते हैं कि मैंने एक शख्स को कंकरी फेंकते हुए देखा, तो उसने कहा कि (भाई) कंकरी न फेंक, इस से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना किया है। आपने फ़रमाया है कि न तो इस से शिकार मरता है, न कोई दुश्मन ज़ख्मी हो सकता है। हां, इतनी बात ज़रूर है कि अगर किसी के लग जाए, तो या इससे उस का दांत टूट जाएगा या आंख फूट जाएगी। कुछ दिन के बाद मैंने फिर उस को ईंट मारते हुए देखा तो कहा कि मैंने तुझ से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस नहीं बयान की थी, तू फिर ईंटें मारता है, जा, मैं तुझ से इतने दिन तक बात नहीं करूंगा।

१५७५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसने शिकारी कुत्ते के अलावा कोई कुत्ता पाला तो उस के अमल में से दो क़ीरात सवाब हर दिन कम होंगे।

१५७६. हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० की हदीस ऊपर गुज़र

गई। इस में इतना और ज़्यादा है कि अगर तुम शिकार के तीर मारो और वह दो या तीन दिन के बाद ज़ख़्मी मिले और तुम्हारे तीर के सिवा और कोई निशान उसमें न हो, तो उस का खाना भी जायज़ है और अगर वह शिकार पानी में गिर पड़े तो मत खाओ।

१५७७. हज़रत इब्ने अबी ऊफ़ी रज़ि० कहते हैं कि हमने हुज़ूर सल्ल० के साथ छः या सात जिहादों में टिड्डियां ही खाई थीं।

१५७८. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० कहती हैं कि मदीना में हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में हमने घोड़ा ज़िब्ह कर के खाया था।

१५७९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि मेरा गुज़रना कुछ आदमियों के पास से हुआ, मैंने देखा कि उन्होंने एक मुर्ग़ी को बांध रखा है और उस पर तीर मार रहे हैं। मुझको देख कर सब इधर-उधर चले गए। मैंने पूछा कि यह काम किसने किया है। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा काम करने वालों पर लानत की है।

१५८०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० दूसरी रिवायत में कहते हैं कि जानवरों को जो लोग तीर का निशाना बनाते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने उन पर लानत की है।

१५८१. हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० को मुर्ग़ी खाते हुए देखा है।

१५८२. हज़रत अबू सअलबा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुकीले दांत वाले दरिंदे का गोश्त खाने से मना फ़र्माया है।

१५८३. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अच्छे और बुरे साथ बैठने वाले की मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क की गठरी उठाने वाला और भट्ठी का फूंकने वाला जो मुश्क की गठरी उठाए हुए है, या तो उस से ख़रीद लेगा या वह ख़ुश्बू दे देगा, वरना कम से कम ख़ुश्बू तो तुझ को आ ही जाएगी और भट्ठी फूंकने वाला तेरे कपड़े जला देगा या कम से कम तुझ को बदबू तो उस की आ ही जाएगी।

१५८४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुंह पर मारने से मना फ़र्माया है।

१५८५. हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, अगर कोई शख़्स क़ुर्बानी करे, तो उस का गोश्त तीन दिन से ज़्यादा न रखे, फिर दूसरा साल आया, तो हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस साल भी पिछले साल की तरह अमल करें ? फ़र्माया नहीं, खाओ खिलाओ। पहले साल तो मैंने इस लिए कहा था कि लोगों को ज़रूरत ज़्यादा थी और तुम को उन की मदद करनी चाहिए थी।

१५८६. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० ने बक़रीद के दिन खुत्बा से पहले नमाज़ पढ़ी, फिर खुत्बा पढ़ा और फ़र्माया कि लोगो ! तुम को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन दोनों दिन में रोज़ा रखने से मना किया है, क्योंकि एक दिन ऐसा है जिस में रोज़ों की इफ़्तार होती है और दूसरा क़ुर्बानियों का गोश्त खाने का है।

१५८७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिसने दुनिया में शराब का इस्तेमाल किया और बग़ैर तौबा (मर गया) उस को आख़िरत में शराब नहीं मिलेगी।

१५८८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ज़िना करने वाला ईमानदारी की हालत में नहीं करता, शराब पीने वाला ईमानदारी की हालत में शराब नहीं पीता है और चोर ईमानदारी की हालत में चोरी नहीं करता है।

१५८९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ईमानदारी की हालत में कोई शख़्स किसी की क़ीमती चीज़ इसी तरह से नहीं उचकता कि वह लेकर चलता हो और लोग देखते ही रहें।

१५९०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने ऐसी शराब के बारे में पूछा, जो उस वक़्त यमन वाले पीते थे, फ़र्माया जो चीज़ नशे वाली है, हराम है।

१५९१. हज़रत अबू आमिर अश्अरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग ज़रूर आएंगे जो शराब को हलाल समझ कर पिएंगे और रेशम वग़ैरह को भी हलाल समझेंगे, उन में से कुछ गिरोह ज़रूर ऐसे होंगे

कि उन को चरवाहा जब उन के चौपाए लेकर शाम को वापस आएगा, फिर कोई सवाल करने वाला अगर सवाल करेगा तो वह कहेंगे, कल आना बाद को जो लोग बाक़ी रह जाएंगे, उन को ख़ुदा सुअरों और बन्दरों की शक्ल में बदल देगा।

१५९२. हज़रत अबू उसैद साइदी रज़ि० ने अपने वलीमे में हज़रत को बुलाया और उनकी दुल्हन ही उस वक़्त ख़ादिमा थीं, तो वह कहती हैं—तुम को मालूम है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को क्या खिलाया। मैंने आप के लिए रात को खजूरें भिगो दी थीं, उन का पानी आप को पिलाया था।

१५९३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बर्तनों में खजूर का शीरा रखने से मना फ़र्मा दिया। किसी ने आप से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हर शख़्स के पास मशकीज़ा तो है नहीं, तो आपने ग़ैर रोग़न-दार घड़िया की इजाज़त दे दी।

१५९४. हज़रत अबूक़तादा रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने खजूर और अंगूर व किशमिश सब को मिला कर शीरा बनाने से मना किया, बल्कि हर एक का शीरा अलग-अलग बनाने की इजाज़त दी है।

१५९५. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० नक़ीअ नामी जगह से एक दूध का भरा हुआ प्याला लाए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुमने उस को ढांक क्यों न लिया, कम से कम उस की चौड़ाई में लकड़ी रख देते तो अच्छा था।

१५९६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि बहुत दूध देने वाली ऊंटनी पूरे दिनों की हमल वाली हो उस का सद्क़ा बड़ा अच्छा है। इसी तरह ज़्यादा दूध देने वाली बकरी, जिसके दूध से एक बर्तन सुबह भर जाए और एक शाम को, उस का सद्क़ा भी अच्छा है।

१५९७. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने एक साथी (अबूबक्र रज़ि०) के साथ एक अंसारी के यहां तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया कि अगर तुम्हारे यहां बासी पानी किसी छोटे मश्कीज़े में हो तो लाओ वरना हम मुंह से ही पी लेंगे। उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के

रसूल सल्ल० ! बासी पानी मेरी झरिपया में है, तो वहां तशरीफ़ ले चलिए। आप उस के साथ तशरीफ़ ले गए, वह आप के लिए पानी लाया और उस के बाद अपनी बकरी का दूध मिला कर पिलाया, आपने पिया, फिर आप के साथ वाले साथी ने पिया।

१५९८. हज़रत अली रज़ि० कूफ़ा की मस्जिद के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए और वहां खड़े होकर पानी पिया, फिर फ़र्माया कि तुम में से कुछ लोग खड़े होकर पीना मकरूह समझते हो, हालांकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने इसी तरह पीते देखा है, जिस तरह तुम लोगों ने मुझ को देखा।

१५९९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि ज़मज़म का पानी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े होकर पिया था।

१६००. हज़रत अबूसईद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मश्कीज़े से मुंह लगा कर पानी पीने को मना किया है।

१६०१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने दो बातों से मना फ़र्माया, एक तो मश्कीज़े से मुंह लगा कर पानी पीने से, दूसरे अगर पड़ोसी अपने घर में लकड़ी गाड़ता हो, तो उस को मना करने से।

१६०२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी पीने में तीन बार सांस लेते थे।

१६०३. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया जो शख़्स चांदी के बर्तन से पानी पीता है, गोया अपने पेट में दोज़ख़ की आग ग़टाग़ट डालता है।

१६०४. हज़रत सहल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सक़ीफ़ा बनी साइदा में तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि सहल, हम को पानी पिलाओ। मैंने आप को पानी पिलाया, फिर हम को सहल रज़ि० ने वह प्याला निकाल कर दिखाया, जिस में हुज़ूर सल्ल० को पानी पिलाया था, उस को देख कर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० ने मांगा, उन्होंने उन को दे दिया।

१६०५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि उन के पास

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्याला था जिस के बारे में फ़र्माया करते थे कि उसमें मैंने अक्सर बार हुज़ूर सल्ल० को पानी पिलाया है, उस प्याले में लोहे के पत्तर लगे हुए थे। उन्होंने इरादा किया कि इस के बजाए सोने या चांदी के लगा दें, लेकिन अबूतल्हा रज़ि० ने मना किया और कहा कि जिस चीज़ को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनाया हो उस में तब्दीली न करना चाहिए, चुनांचे उन्होंने उस को वैसे ही रहने दिया।

बाब ५८

मरीज़ों के बयान में

१६०६. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मुसलमान को जब कोई मुसीबत या ग़म या तक्लीफ़ पहुंचती है, यहां तक कि उस के कांटा भी लग जाता है, तो अल्लाह तआला उस के ज़रिए से उस के गुनाह माफ़ करता है।

१६०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, मुसलमान की मिसाल खेती के पेड़ों की शाख़ की सी है कि उस को तरह-तरह की हवाएं इधर उधर झकोले देती हैं और जब सीधा होने के क़रीब होता है, तो फिर उस पर कोई मुसीबत आ जाती है और फ़ाजिर की मिसाल सनूबर के पेड़ की सी है जो बिल्कुल ठोस और सीधा होता है।

१६०८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जब किसी मुसलमान के साथ ख़ुदा भलाई चाहता है, तो उस को मुसीबत में मुब्तला फ़र्मा कर आज़माइश करता है।

१६०९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा दर्द की तक्लीफ़ वाला मैंने

किसी को नहीं देखा।

१६१०. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी की हालत में, जिस वक़्त आप को बहुत सख़्त बुख़ार था, ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और (आप को देख कर) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप को इस वक़्त सख़्त बुख़ार है। आपने इस का कुछ जवाब दिया, फिर मैंने अर्ज़ किया कि यह इस लिए है कि आप को दोहरा अज्र मिले। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि हां, जब कोई मुसलमान किसी बीमारी में मुब्तला होता है, तो अल्लाह तआला उस के गुनाह ऐसे गिराता है जैसे पेड़ से पत्ते झड़ते हैं।

१६११. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने एक दिन अपने सहाबियों से कहा कि अगर तुम चाहो तो तुम को जन्नती औरत को दिखाऊं। उन सब ने कहा कि हां, ज़रूर। आपने कहा कि देखो, यह काली औरत हुज़ूर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं बेहोश होकर नंगी हो जाती हूं। आप मेरे लिए दुआ फ़रमाइए। आपने फ़र्माया कि अगर तू सब्र करे, तो तेरे लिए जन्नत है वरना मैं दुआ करता हूं। उसने कहा, अच्छा मैं सब्र कर लेती हूं, लेकिन नंगी न होने के लिए तो दुआ फ़रमा दीजिए, इस लिए आपने उस के लिए दुआ की।

१६१२. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है, जब मैं किसी बंदे को आंखों की बीमारी में मुब्तला करता हूं और वह इस पर सब्र करता है, तो मैं उस के बदले में जन्नत अता करता हूं।

१६१३. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मेरी इयादत को तशरीफ़ लाए, उस वक़्त आप न ख़च्चर पर सवार थे, न घोड़े पर।

१६१४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार मैंने हुज़ूर सल्ल० के सामने कहा कि हाय, मेरा सर फटा जाता है। फ़र्माया, घबराती क्यों हो ? अगर तुम मेरे सामने मर गयीं, तो मैं तुम्हारे लिए दुआ और इस्तिग़फ़ार करूंगा। मैंने अर्ज़ किया, ख़ुदा की क़सम आप मेरे मरने

की ख्वाहिश करते हैं ताकि मेरे मरने के बाद किसी बीवी को आखिरी उम्र तक दुल्हन बनाए रखें। फ़र्माया, यह बात हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं सर के दर्द में खुद मुब्तला हूं। मैंने इरादा किया था कि अबूबक्र रज़ि० को बुला कर खिलाफ़त की वसीयत कर दूं, क्योंकि लोग तो अपनी-अपनी कहेंगे और ख्वाहिश करने वाले ख्वाहिश ही करके रह जाएंगे, लेकिन फिर मैंने ख्याल किया कि अल्लाह तआला अबूबक्र रज़ि० के अलावा किसी को खलीफ़ा पसन्द नहीं करता, इस लिए लोगों को खुद ब खुद रोक देगा और ईमानदार लोग औरों को दूर कर देंगे।

१६१५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया मुसीबत की वजह से कोई शख्स मौत को न चाहे और खामोश रहे और अगर उस को सब्र होता ही नहीं, तो इस तरह कहे, ऐ अल्लाह ! अगर मेरे लिए ज़िंदगी बेहतर है, तो वह इनायत फ़र्मा दे और अगर मौत बेहतर हो तो मौत अता फ़र्मा दे।

१६१६. हज़रत खब्बाब रज़ि० ने अपने जिस्म पर सात दाग़ लगवा कर फ़र्माया कि हमारे जितने ग़रीब साथी थे, वह दुनिया से चले गए और दुनिया ने उन को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न पहुंचायी और आज-कल हमारे पास इतना माल आ रहा है कि हम को उस के रखने की जगह तक नहीं मिलती, इस के सिवा कि हम इमारतें बनाएं। अगर मुझ को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मना करने का खौफ़ न होता कि आपने मुसीबत की वजह से मौत की ख्वाहिश करने से मना फ़र्माया है, तो मैं मौत को मांगता।

१६१७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, हरगिज़ किसी को उस का अमल जन्नत में नहीं ले जाएगा। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप को भी नहीं ? फ़र्माया कि मुझे भी नहीं ! हां, इतनी बात है कि अल्लाह मुझ को अपने फ़ज़्ल और रहमत में छिपा ले और किसी शख्स को यह भी न चाहिए कि मौत मांगे, क्योंकि अगर वह नेक है तो भलाई की ज़्यादती की उम्मीद है और अगर शरीर है, तो तौबा की उम्मीद है।

१६१८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जब किसी मरीज़ को देखने जाते तो यह दुआ फ़र्माते कि ऐ लोगों के परवरदिगार, इस बीमारी को ख़त्म कर और अच्छा कर, तू ही अच्छा करने वाला है। तेरे सिवा कोई नहीं और तेरी शिफ़ा वह शिफ़ा है कि जो बीमारी को छोड़ती ही नहीं—दुआ, अज़हबिल्बा-स रब्ब न्नासि वश्फ़ि अन-त शाफ़ी ला शिफ़ा अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाउल्ला युग़ादी सक़मन

१६१६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जितनी बीमारियां, अल्लाह तआला ने पैदा की हैं, उन सब की दवा भी पैदा की है।

१६२०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया तीन चीज़ें शिफ़ा से ख़ाली नहीं। शहद और सींगी और दाग़ लगाना, लेकिन मैं अपनी उम्मत के लोगों को दाग़ लगाने से मना करता हूं।

१६२१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में एक शख़्स आया और अर्ज़ किया कि मेरे भाई को कुछ पेट की शिकायत हो गयी है। फ़र्माया कि शहद पिलाओ, फिर वह आप के पास दोबारा आया और वही कहा तो आपने फिर भी शहद पिलाने को कहा। वह तीसरी बार हाज़िर हुआ, तो आपने फिर शहद ही का हुक्म दिया फिर वह चौथी बार आया और वही कहा, तो आपने फिर भी शहद पिलाना बताया, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि ख़ुदा सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है, जा शहद ही पिला। उसने आकर शहद पिलाया, तो वह अच्छा हो गया।

१६२२. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि यह काला दाना हर मर्ज़ की दवा है, मौत के अलावा (यानी हब्बतुस्सौदा)

१६२३. हज़रत उम्मे क़ैस रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया ऊदे हिन्दी को मुख़्तलिफ़ तरीक़े से इस्तेमाल करो। उस में सात शिफ़ाएं हैं। अज़रह[1] मर्ज़ के लिए नाक में डाला जाए

१. अज़रह, बीमारी का नाम है। अक्सर बच्चों को हो जाती है। कुछ कहते हैं हलक़ और तालू में दर्द होता है। कुछ कहते हैं कि कानों और हलक़ के बीच ज़ख़्म होता है।

और जातुल जंब के लिए मुंह में टपकाई जाए, बाक़ी हदीस ज़िक्र हो चुकी है।

१६२४. हज़रत अनस रज़ि० की यह हदीस कि अबू तय्यिबा ने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पछने लगाए, गुज़र चुकी, लेकिन इस हदीस में इतना ज़्यादा है कि तुम्हारी सब दवाओं से बेहतर पछने लगाना और क़िस्त-बहरी है और फ़र्माया कि गला आ जाने की वजह से बच्चों के गले दबा कर उन को तक्लीफ़ न दो, बल्कि क़िस्त-बहरी का इस्तेमाल करो।

१६२५. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इर्शाद फ़र्माया कि मेरे सामने सारी उम्मतों को पेश किया गया और उन के पैग़म्बर उनके साथ थे, तो उन में कोई नबी तो ऐसा गुज़रा कि जिस के साथ कुछ ही लोग थे और कोई ऐसा कि उस के साथ कोई भी नहीं था। आख़िरकार मुझको फिर एक बहुत बड़ी जमाअत नज़र आयी। मैंने कहा, क्या यह मेरी उम्मत है? जवाब दिया गया, मूसा अलै० की है, फिर आवाज़ आई कि ऊपर सर उठाओ, तो मैंने देखा कि एक गिरोह इतना बड़ा है कि जिसने उफ़क़े आसमान को घेर लिया है, फिर और तरफ़ भी देखने को कहा गया। उधर भी मैंने देखा कि हर तरफ़ उफ़क़े आसमान उन से भरा है। इस के बाद मुझ से कहा गया कि यह तुम्हारी उम्मत है और उन में सत्तर हज़ार आदमी बिला हिसाब के जन्नत में जाएंगे। उस के बाद हुज़ूर सल्ल० हुजरे में तशरीफ़ ले गए और और उन लोगों को न बताया कि जन्नत में बे-हिसाब दाख़िल होने वाले कौन लोग होंगे? हमने आपस में ही कहना शुरू किया कि वे लोग शायद हम ही हैं, क्योंकि हम ही ख़ुदा और रसूल सल्ल० पर ईमान लाए हैं या शायद हमारी औलाद होगी, जो इस्लाम ही में पैदा होगी। इन बातों की ख़बर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंची। आप बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि वे तो वह लोग हैं जो मंत्र नहीं पढ़ते और बदफ़ाली के क़ायल नहीं और न दाग़ देते हैं, बल्कि सिर्फ़ अपने परवरदिगार पर भरोसा करते हैं। हज़रत उकाशा ने खड़े होकर अर्ज़ किया कि क्या मैं भी उन ही लोगों में हूं। फ़र्माया हां, इतने में एक और शख़्स कहने लगा, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया उकाशा तुझ से आगे बढ़ गया।

१६२६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-

लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि बीमारी का उड़ कर लगना कोई चीज़ नहीं, न बदफ़ाली कोई चीज़ है, न हामा कोई चीज़ है न सफ़र का महीना मनहूस है। हां, कोढ़ वाले शख्स से उसी तरह भागो जिस तरह शेर से भागते हो।

१६२७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं क्या करूं ! मेरे ऊंट रेत के जंगल में जहां हिरन होते हैं, चरने लगते हैं, वहां कोई ख़ारिशी ऊंट पहुंच जाता है और सब को ख़ारिशी कर देता है। फ़र्माया कि अच्छा उस को किसने ख़ारिश लगायी ?

१६२८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ अंसारियों को ज़हरीले जानवर का असर और कान का दर्द ख़त्म करने के मंत्र पढ़ने की इजाज़त दी थी, फिर हज़रत अनस रज़ि० ने कहा कि मुझ को ज़ातुल जंब की बीमारी हो गयी थी। उस में मेरे दाग़ लगाए गए, हालांकि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ज़िंदा थे और अबू तल्हा रज़ि० और अनस बिन नज़र व ज़ैद बिन साबित दाग़ लगाने के वक़्त मेरे पास मौजूद थे।

१६२९. हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० के पास जब कोई बुख़ार वाली औरत लाते, तो आप उस के लिए दुआ करती थीं और पानी लेकर उस के मुंह पर डालती थीं और फ़र्माती कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि बुख़ार को पानी से ठंडा करो।

१६३०. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, ताऊन से मर जाना, मुसलमान के लिए शहादत है।

१६३१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि अगर नज़र हो जाए तो मंत्र पढ़ना जायज़ है।

१६३२. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे घर में एक बांदी देखी जिस

के एक काला धब्बा था। आपने फ़र्माया कि उस के लिए कुछ दुआ पढ़वा लो, उस को नज़र हो गयी।

१६३३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़हरीले जानवरों के लिए मंत्र पढ़ने की इजाज़त दी है।

१६३४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, बदफ़ाली तो बिल्कुल बेहूदा ख्याल है और नेक फ़ाली एक अच्छी चीज़ है, लोगों ने अर्ज़ किया कि अच्छा हुक्म सुन कर अच्छाई के बारे में सोचो।

१६३५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में क़बीला हुज़ैल की दो औरतें लड़ीं, उन में से एक ने दूसरी के पत्थर फेंक मारा, दूसरी के पेट में लग गया। वह हमल से थी। उस के पेट का बच्चा मर गया। ये लोग हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और उस मुक़दमे को पेश किया। आपने फ़र्माया इस का फ़ैसला यह है कि उस के बदले एक गुलाम या बांदी दी जाएं हर्जाना देने वाली औरत के दिल ने कहा कि ऐसे बच्चे का हर्जाना हम कैसे दें? जो न बोला, न उसने खाया, न पिया, ऐसा ख़ून तो झूठा हुआ करता है। आपने फ़र्माया यह शख़्स काहिनों का भाई है।

१६३६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि दो शख़्स मश्रिक़ के रहने वाले आए और उन्होंने वाज़ कहा, लोगों को उन का बयान अच्छा मालूम हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि कुछ बयान जादू होते हैं।

१६३७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया जिस शख़्स ने पहाड़ पर से गिर कर अपनी जान दी, तो वह दोज़ख़ की आग में गिरता रहेगा और जिसने ज़हर पीकर अपनी जान ख़त्म कर दी, तो जहन्नम की आग में हमेशा-हमेशा हाथ में ज़हर लिए इस को पीता रहेगा और जिसने लोहे की चीज़ से अपने नफ़्स को क़त्ल किया, तो वह दोज़ख़ में हमेशा अपने को क़त्ल करता रहेगा।

१६३८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अगर खाने में मक्खी

गिर जाए, तो उस को डुबो कर फेंक दो, क्योंकि उसके एक पर में बीमारी है और दूसरे में उस की दवा है।

बाब ५९

पहनने के कपड़े के बयान में

१६३९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि फ़र्माया हुज़ूर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस का तहबंद टख़नों से नीचा हो, वह आग में जाएगा।

१६४०. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यमनी कपड़ों का इस्तेमाल ज़्यादा पसन्द था।

१६४१. हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त सफ़ेद कपड़े पहने हुए सो रहे थे। (मैं लौट गया) फिर आया तो आप जाग चुके थे। फ़र्माया कि जो ख़ुदा का बंदा ला इला ह इल्लल्लाहु कह कर उसी पर मर गया, तो वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। मैंने अर्ज़ किया कि अगर उसने चोरी या ज़िना किया हो तब भी जाएगा? फ़र्माया कि हां, अगरचे ज़िना, चोरी की हो तब भी जाएगा? मैंने फिर यही कहा कि अगर उसने ज़िना या चोरी की हो तब भी? फ़र्माया अगरचे उसने ज़िना किया हो या चोरी की हो अब भी जाएगा, चाहे अबूज़र की मर्ज़ी न हो। जब यह हदीस अबूज़र रज़ि० बयान करते थे, तो यह भी कहते थे कि अगरचे अबूज़र रज़ि० की मर्ज़ी न हो।

१६४२. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रेशम के इस्तेमाल करने से मना

फ़र्माया। दो उंगलियां यानी अंगूठे और शहादत की उंगली से इशारा किया, यानी दो अंगुल चौड़ाई जायज़ है।

१६४३. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि जिसने दुनिया में रेशम का इस्तेमाल किया, उस को आखिरत में रेशम पहनने को नहीं मिलेगा।

१६४४. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सोने और चांदी के बर्तनों में खाने और पीने से मना फ़र्माया है और रेशम के पहनने और उस पर बैठने से भी मना फ़र्माया है।

१६४५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्द को ज़ाफ़रानी रंग का कपड़ा पहनने से मना फ़र्माया है।

१६४६. हज़रत अनस रज़ि० से किसी ने पूछा कि क्या हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जूतों समेत नमाज़ पढ़ लिया करते थे। फ़र्माया हां।

१६४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कोई शख्स एक जूता पहन कर न चले या दोनों पहन ले या दोनों उतार दे।

१६४८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया जब कोई शख्स जूते पहने, तो दाहिनी तरफ़ से पहने और उतारने के वक़्त पहले बायां पांव निकाले, जूती पहनने में पहले दाहिना पैर हो और उतारने में पहले बायां पैर हो।

१६४९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चांदी की अंगूठी बनवाई और उस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० खुदवाया और फ़र्माया कि यह अंगूठी जो मैंने बनवाई है इस नक़्श के मुताबिक़ कोई दूसरा नक़्श न खुदवाए।

१६५०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जो मर्द औरतों की शक्ल अख्तियार करे या औरत मर्दों की सूरत अपनाए, तो उस को अपने

घर से निकाल दो, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़्लां को और हज़रत उमर रज़ि० ने फ़्लां को निकाल दिया था।

१६५१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया मुश्रिकों की मुख़ालफ़त के लिए दाढ़ियां बढ़ाओ और मूछें कतरवाओ।

१६५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया मुश्रिक तो ख़िज़ाब करते नहीं, इस लिए तुम उन के ख़िलाफ़ करो।

१६५३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के बाल दोनों कंधों के बीच पड़े रहते थे, न बिल्कुल सीधे थे, न बिल्कुल पेचदार।

१६५४. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों हाथ और दोनों क़दम मुलायम थे, आप की हथेलियां चौड़ी थीं। ऐसा न कभी देखा न बाद में उम्मीद है।

१६५५. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सर के कुछ बाल मुंडवाने और कुछ बाक़ी रहने से मना फ़र्माया।

१६५६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि ख़ुश्बू मुझ को अच्छी मिलती, मैं वही आप के लगाती, यहां तक कि ख़ुश्बू की महक आप के बालों से पैदा होने लगती।

१६५७. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुश्बू कभी वापस नहीं फ़रमाया करते थे।

१६५८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एहराम की हालत में और हलाल होने की सूरत में ख़ुश्बू लगाई है। यह ख़ुश्बू बनी हुई थी।

१६५९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तस्वीरें बनाने वालों से क़ियामत के दिन कहा जाएगा कि अपनी बनाई हुई चीज़ों में जान डालो और उन को अज़ाब दिया जाएगा।

१६६०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है—उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन शख़्स होगा जो मेरी तरह चीज़ें बनाए, मुझ को वह एक दाना या चूंटी ही बना कर दिखाए। दूसरी रिवायत में है कि एक जूं ही पैदा कर के दिखाए।

बाब ६०

अदब के बयान में

१६६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर होकर कहने लगा कि मुझे किस के साथ अच्छा मामला और मुहब्बत करना बेहतर है? फ़रमाया मां के साथ। उसने कहा कि फिर किस के साथ? फ़रमाया कि मां के साथ। उसने कहा फिर किस के साथ? फ़रमाया, मां के साथ। उसने कहा फिर किस के साथ? फ़रमाया, बाप के साथ।

१६६२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सारे गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह यह है कि कोई शख़्स अपने मां-बाप पर लानत करे। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अपने मां-बाप पर कैसे लानत कर सकता है! फ़रमाया कि इस तरीक़े पर कि किसी दूसरे के बाप को गाली दे और वह उस के बाप पर लौट पड़े या किसी की मां को गाली दे, वही गाली उस की मां के पड़े या यों कि यह उस के मां-बाप को गाली दे और वह उस के मां-बाप को कहे।

१६६३. हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम रज़ि० कहते हैं कि जन्नत में रिश्ते-नाते को तोड़ने वाला दाख़िल न होगा।

१६६४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि रहम (नाता-रिश्ता,)

रहमान की सिफ़त से निकलता है। अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि जो तुझे मिलाएगा, मैं उस को मिलाऊंगा, जो तुझे तोड़ेगा, मैं उससे ताल्लुक तोड़ लूंगा।

१६६५. हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुल्लमखुल्ला यह फ़र्माया कि फ़्लां खानदान मेरे वली नहीं, मेरा वली खुदा और नेक मोमिन हैं, हां, मेरे साथ उन का रिश्ता ज़रूर है, मैं उस के मुवाफ़िक़ सुलूक करता रहूंगा।

१६६६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माते हैं कि रिश्तेदारी क़ायम रखने वाला वह शख्स नहीं होता जो बदला करे, बल्कि वह शख्स होता है कि जब रिश्तेदारी तोड़ने लगे तो वह उस को तोड़ने न दे।

१६६७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक देहाती आया और कहने लगा कि तुम लोग बच्चों का बोसा लेते हो, लेकिन हम लोग तो लेते नहीं, फ़र्माया मैं इस का क्या इलाज करूं कि तेरे दिल से रहम उठा लिया गया है।

१६६८. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ क़ैदी लाए गए। उनमें एक औरत भी थी, जब उस औरत को कोई बच्चा किसी क़ैदी का मिल जाता, तो वह फ़ौरन उस को सीने से लगा लेती और उस को दूध पिलाती थी। हुज़ूर सल्ल० ने यह फ़र्माया कि क्या यह अपना बच्चा आग में डाल सकती है? हमने अर्ज़ किया, कभी नहीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला अपने बंदों पर इस औरत से ज़्यादा रहम खाता है, हक़ीक़त में जो अपने बच्चे पर मां रहम खाती है।

१६६९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने पहले दिन में रहमत के सौ हिस्से किये निन्नानवे अपने पास रखे और एक हिस्सा मखलूक़ के हिस्से में आया, जिस की वजह से एक दूसरे पर रहम करते हैं, यहां तक कि घोड़ी भी अपने बच्चे से पूंछ बचा कर रखती है, ताकि उसको तक्लीफ़ न हो।

१६७०. हजरत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ को एक जानू पर और हज़रत हसन रज़ि० को दूसरे जानू पर बिठा लेते और चिमटा कर फ़र्माते थे कि ऐ अल्लाह ! इन दोनों पर रहम फ़र्मा, जिस तरह मैं इन पर मेहरबानी करता हूं।

१६७१. हजरत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, किसी वक्त की नमाज पढ़ने के लिए खड़े हुए, हम भी आप के साथ थे। नमाज़ में एक देहाती बोला कि ऐ अल्लाह ! मुझ पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहम कर और इस के अलावा किसी पर नहीं, जब हुजूर सल्ल० ने सलाम फेरा, तो उस देहाती से फ़र्माया कि तूने एक फैली हुई चीज को तंग कर दिया।

१६७२. हजरत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मुसलमानों को आपस में रहम व न नवाज़िश व मेहरबानी करने में ऐसा पाओगे जैसे इंसानी जिस्म के हिस्से को, जब उन में से किसी को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो एक दूसरे की तड़पन और बुखार में शरीक होते हैं।

१६७३. हजरत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख्स पेड़ लगाए और उस से कोई इंसान फल खाये या कोई जानवर उस से चरे, तो उस को सदक़े का सवाब मिलता है।

१६७४. हजरत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि जो शख्स रहम नहीं करता है, उस पर रहम नहीं किया जाता।

१६७५. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि हज़रत जिब्रील अलै० ने मुझ को हमेशा पड़ोसी के साथ भलाई करने की इतनी वसीयत की कि मुझ को यह ख्याल पैदा होने लगा कि शायद उस को वारिस क़रार देंगे।

१६७६. हज़रत अबू शुरैह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया "खुदा की क़सम, उसका ईमान नहीं, खुदा की क़सम उसका ईमान नहीं। हमने अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! किस का ? फ़र्माया कि जिस का पड़ोसी, उस

की शरारतों से बे-ख़ौफ़ न हो।

१६७७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो, उस को चाहिए कि अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ न पहुंचाए। जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो, उस को मुनासिब है कि मेहमान की ख़ातिर और इज़्ज़त करे। जो शख़्स ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाया हो, उस को चाहिए कि अगर बात कहे, तो नेक कहे वरना चुप हो जाए।

१६७८. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि हर नेकी सद्क़ा है।

१६७९. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि ख़ुदा हर काम में नर्मी को पसन्द करता है।

१६८०. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि मोमिन दूसरे के लिए इमारत की तरह है कि कुछ हिस्से की वजह से कुछ मज़बूत हो जाते हैं, फिर आपने अपनी उंगलियों में पंजा डाला। इतने में एक सवाल करने वाला या ज़रूरतमंद आप के पास आया। आपने मुतवज्जह होकर फ़र्माया कि तुम इसके लिए मुझ से सिफ़ारिश करो, तुम को अज्र मिलेगा और अल्लाह तआला अपने रसूल सल्ल० की ज़ुबान से जो फ़ैसला चाहता है, करा देता है।

१६८१. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० न तो बे-हया थे, न गाली बकने वाले, न किसी पर लानत करने वाले, बल्कि अगर आप को किसी पर ग़ुस्सा आ जाता, तो यों फ़र्माते कि ए क्या हो गया! उस के सर पर ख़ाक!

१६८२. हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने कभी किसी सवाल करने वाले के जवाब में नहीं, नहीं फ़र्माया।

१६८३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की दस साल तक ख़िद्मत की, लेकिन आपने मुझको कभी तक्लीफ़ देने वाली बात न कही और न यह फ़र्माया कि तूने यह क्यों किया, यह क्यों न किया।

१६८४. हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया

कि जो कोई शख्स किसी को फ़ासिक़ या काफ़िर कहता है, तो अगर उसके मुक़ाबले वाला ऐसा न हो तो यह कहना उसी पर पड़ जाता है।

१६८५. हज़रत ज़ह्हाक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जिसने इस्लाम-दीन के सिवा और किसी दीन की क़सम खायी, तो वह उस दीन में गिना जाएगा और ग़ैर मम्लूका चीज़ पर नज़्र नहीं होती और जिस शख्स ने दुनिया में अपने नफ़्स को किसी चीज़ से हलाक किया, तो क़ियामत में उसी से उस को अज़ाब दिया जाएगा और जिसने किसी मोमिन पर लानत की, तो वह उसके क़त्ल करने की तरह है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोहमत लगाई, तो वह उस के क़त्ल करने की तरह है।

१६८६. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जन्नत में चुग़ली खाने वाला न दाखिल होगा।

१६८७. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की मज्लिस में किसी शख्स का ज़िक्र आ गया, दूसरे शख्स ने उस की तारीफ़ की, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, तुझ पर अफ़सोस ! तूने अपने उस शख्स की गर्दन काट दी जिस की तारीफ़ की थी। अगर किसी की तारीफ़ करना ज़रूरी हो, तो यों कहे कि मेरे ख्याल में ऐसा है, शर्त यह कि वह उस को ऐसा समझता भी हो, क्योंकि उस का हिसाब लेने वाला ख़ुदा है। किसी को आज़माए नहीं, सिर्फ़ अपना मतलब बयान कर दे।

१६८८. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि आपस में बुग्ज़ व हसद न करो, न एक दूसरे की तरफ़ पीठ करके बैठो, तो तुम सब अल्लाह के बंदे, भाई-भाई बन जाओ, और किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि नाराज़ होकर, दूसरे से बात न करे।

१६८९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अपने नफ़्सों को, बदगुमानी करने से बचाओ, क्योंकि बदगुमानी सब से ज़्यादा झूठी बात होती है और न किसी की कनसूइयां लो और न किसी के ऐब टटोलो और ख़रीदार को धोखे से ख़रीदने की तरफ़ झुकाव न पैदा कराओ और आपस

में हसद व बुग्ज़ न करो, न आपस में एक दूसरे की तरफ़ पीठ फेरकर बैठो बल्कि अल्लाह के बंदे भाई-भाई बन जाओ।

१६६०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि फ़्लां-फ़्लां दो शख़्स मेरे दीन को कुछ समझते हों, मैं इस का गुमान नहीं करता और एक रिवायत में यह है कि इस लिए हमारे दीन को जिस पर हम क़ायम हैं, कुछ भी जानते हों। (रिवायत करने वाले का बयान है कि ये दोनों मुनाफ़िक़ थे।)

१६६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मेरी सारी उम्मत के गुनाह माफ़ हो जाते हैं, मगर उन लोगों के नहीं होते, जो सब के सामने खुल्लम-खुल्ला गुनाह करते हैं और सब से ज़्यादा वबाल वाली यह बात है कि रात को कोई बंदा गुनाह करे और सुबह तक उसी हालत में रहे और ख़ुदा उस पर पर्दा डाल दे, लेकिन वह सुबह होते ही किसी से कहे कि रात मैंने फ़्लां-फ़्लां बात की है, क्योंकि रात उस की जो गुज़र गई, अल्लाह तआला ने उस के गुनाह पर पर्दा डाल दिया था, लेकिन उसने ख़ुद उसको ज़ाहिर कर दिया।

१६६२. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया किसी मुसलमान को यह जायज़ नहीं कि दूसरे से नाराज़ होकर तीन दिन तक बात-चीत न करे, अगर कहीं वह पास से गुज़र जाए, तो यह उस से हट जाए और वह उस से, बल्कि उन में बेहतर वह है जो पहले सलाम करे।

१६६३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, अगर मुसलमान किसी का हराम ख़ून न बहाए, उस वक़्त तक उस के दीन में फैलाव और ज़्यादती ही होती रहेगी।

१६६४. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिक़दाद से फ़र्माया कि अगर कोई शख़्स काफ़िरों में रह कर अपना ईमान छिपाए रखे और फिर ज़ाहिर करे तो उस को क़त्ल न कर, क्योंकि पहले तू भी मक्का में अपना ईमान छिपाता था।

१६६५. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, जो हम में से हथियार

उठाए, वह हम लोगों में से नहीं है।

१६९६. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, किसी मुसलमान कलिमा कहने वाले का खून करना हलाल नहीं, मगर इस सूरत में कि नफ़्स के बदले में हो या शादी शुदा जिना करने वाला हो या कोई इस्लाम की जमाअत को छोड़ कर अलग हो जाए।

१६९७. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया सभी जानदारों में अल्लाह तआला को तीन शख्स बुरे मालूम होते हैं—मुल्के हरम में जुल्म करने वाला, दूसरा इस्लाम में जाहिलियत का तरीक़ा अख्तियार करने वाला, तीसरे नाहक़ खून का चाहने वाला।

१६९८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अगर तेरे घर में कोई तेरी इजाज़त के बग़ैर झांके, तो उस के कंकरी मार कर उस की आंख फोड़ दे और उसका तुझ पर कोई गुनाह नहीं।

१६९९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि यह और यानी अंगूठा और छंगुलिया बराबर हैं।

१७००. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम से हमारे उन आमाल का बदला होगा जो जाहिलियत के ज़माने में हमने किए हैं? फ़र्माया, अगर तुमने इस्लाम के वक़्त में अच्छे काम किए तो उन का बदला न होगा और अगर बुरे काम किए तो अगले-पिछले सब का बदला होगा।

बाब ६१

ख्वाब की ताबीर के बयान में

१७०१. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, नेक आदमी

का ख्वाब नुबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।

१७०२. हज़रत अबूसईद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जब कोई अच्छा ख्वाब देखे, समझ ले कि यह खुदा की तरफ़ से है और उस को बयान न करे और खुदा की उस पर तारीफ़ बयान करे और अगर बुरा ख्वाब देखे, तो समझ ले कि वह शैतान की तरफ़ से है। उस को किसी से बयान न करे और उस की बुराई से पनाह मांगे। किसी से ज़िक्र भी न करे, उसको तक्लीफ़ न देगा।

१७०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि नुबूवत तो बाक़ी रही नहीं, हां, खुशख़बरी देने वाली चीज़ें बाक़ी हैं। हमने अर्ज़ किया ये क्या हैं ? आपने फ़र्माया, अच्छे ख्वाब।

१७०४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने मुझे ख्वाब में देखा, उसने गोया मुझको जागते में देखा, क्योंकि शैतान मेरी शक्ल में नहीं हो सकता।

१७०५. हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने मुझे ख्वाब में देखा, उसने मुझे ही देखा, क्योंकि शैतान मेरी सूरत में नहीं हो सकता।

१७०६. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० अक्सर उम्मे हराम रज़ि० के यहां तश्रीफ़ लाया करते थे। यह उम्मे हराम बिन्त मिल्हान और उबादा बिन सामित की बीवी थीं। एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० तश्रीफ़ ले गये। उम्मे हराम रज़ि० ने आप को खाना खिलाया और सर में जूएं देखने लगीं। हज़रत सल्ल० की आंख लग गयी, लेकिन थोड़ी देर के बाद आप हंसते हुए उठे। उम्मे हराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हंसते क्यों हैं ? फ़रमाया, ख्वाब में मेरे सामने उम्मत पेश की गई, जो जिहाद की हालत में थी और समुद्र के अंदर तख्त पर बादशाहों की तरह सवार थी। उम्मे हराम रज़ि० कहती हैं—मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए दुआ फ़रमा दीजिए कि मैं उन लोगों में हो जाऊं। हुज़ूर सल्ल० ने मेरे लिए दुआ की, फिर आप सो गए। इसके बाद फिर आप उठे और हंसते हुए। उम्मे हराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप क्यों हंस रहे हैं ? फ़रमाया कि मेरी उम्मत खुदा के रास्ते में जिहाद करती हुई पेश की गयी, जिस तरह आपने पहले फ़र-

माया था। उम्मे हराम रज़ि० कहती हैं कि मैंने फिर आपसे दुआ की चाहत की। आप ने फ़रमाया कि पहले लोगों में से हो चुकीं, चुनांचे उम्मे हराम रज़ि० मुआविया बिन सुफ़ियान रज़ि० के ज़माने में दरियाई सफ़र के लिए गयीं और सवारी से गिर कर शहीद हो गयीं।

१७०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया जब क़ियामत क़रीब होगी, तो किसी मोमिन का ख़्वाब झूठा नहीं होगा। ख़्वाब नबूवत के छियालीस हिस्सों में से एक है और जो चीज़ नबूवत के हिस्सों में एक हिस्सा हो वह झूठी नहीं हो सकती।

१७०८. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैंने ख़्वाब में देखा कि एक काली औरत बिखरे हुए बालों की, मदीना से निकल कर हुज्फ़ा के मक़ाम में से गई। मैंने इस ख़्वाब की ताबीर दी कि वबा मदीना से निकल गई।

१७०९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने बिला किसी ख़्वाब के देखे बयान किया, उस को हुक्म होगा कि दो जौ के दानों में गिरह लगाए, लेकिन वह न लगा सकेगा और जो शख़्स किसी की ख़ुफ़िया बात सुने तो क़ियामत के दिन, उसके कानों में रांग पिघला कर डाला जाएगा और जो कोई तस्वीर बनाएगा उसको अज़ाब दिया जाएगा और कहा जाएगा, इसमें रूह फूंक, लेकिन वह फूंक न सकेगा।

१७१०. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, झूठों में एक झूठ यह भी है कि आदमी ऐसे ख़्वाब देखना बयान करे, जो उसने नहीं देखे।

१७११. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाहु सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! रात मैंने एक ख़्वाब देखा है कि आसमान पर बादल छाया हुआ है और उसमें से घी और शहद बरस रहा है, लोग उसमें से लप भर कर ले रहे हैं कुछ कम और कुछ ज़्यादा और एक रस्सी आसमान से लेकर ज़मीन तक लटक रही है, उसको पकड़ कर आप चढ़ गए हैं, फिर इसके बाद एक शख़्स, इसके बाद एक और शख़्स, इसके बाद एक और शख़्स ने पकड़ कर चढ़ने का इरादा किया है कि वह रस्सी टूट गयी, लेकिन फिर मिल गयी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुन कर अर्ज़

किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इसकी ताबीर आप मुझे बयान करने दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि बयान करो। अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि यह बादल जो दिखाई दिया है……तो वह इस्लाम है और उससे घी शहद जो बरस रहा है वह कुरआन और कुछ मिठास है, कुछ इसमें से ज़्यादा ले रहे हैं और कुछ कम और वह रस्सी जो आसमान से ज़मीन तक लटक रही है, वह हक़ है जिस पर आप हैं, उसको पकड़ कर आप हक़ की बुलंदी पर पहुंच जाएंगे और अल्लाह तआला आप को ऊपर चढ़ाएगा, आपके बाद एक और शख्स पकड़ कर चढ़ जाएगा, इसके बाद दूसरा चढ़ जाएगा, इसके बाद तीसरा चढ़ने का इरादा करेगा कि वह टूट जाएगा, लेकिन फिर वह हक़ मिल जाएगा और वह ऊपर चला जाएगा, अब हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने ग़लत बयान किया या सही बयान किया। फ़रमाया कुछ ठीक हैं और कुछ ग़लत। अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम जो ग़लती हो, मुझ को ज़रूर बताइए। आपने फ़रमाया क़सम न दो।

१७१२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया, जिस शख्स को अपने अमीर के ज़रिए से तक्लीफ़ पहुंचे तो उसको मुनासिब है कि सब्र अख्तियार करे, क्योंकि जो शख्स बादशाह के हुक्म से एक बालिश्त बाहर होगा, उसकी मौत जाहिलियत की सी होगी, दूसरी रिवायत में है कि जो शख्स अपने हाकिम से कोई ऐसी बात महसूस करे, जो उसको अच्छी मालूम न हो, तो उनको सब्र करना मुनासिब है, क्योंकि जो शख्स जमाअत से एक बालिश्त भी दूर हो और इसी हालत में मर गया, तो उसकी मौत जाहिलियत की सी होगी।

१७१३. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको बुलाया और हमने बैअत की। आपने हम से बैअत में जिन बातों पर अह्द लिया, उनमें से कुछ यह भी हैं कि हम जिस काम पर ख़ुश हों या नाराज़ या हम पर सख्ती हो या कुशादगी, हर हालत में हाकिम की इताअत करें, हाकिम अगरचे हमको छोड़कर अपने लिए कुछ हुक़ूक़ ख़ास कर ले। हां, इस सूरत में कि जब हम उससे ज़ाहिर कुफ़्र की बात देख लें और उसके कुफ़्र पर कोई दलील क़तई हो (तो इताअत न मानना जायज़ है)।

१७१४. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिन लोगों की ज़िंदगी में क़ियामत आ जाए वह सबसे बुरे लोग गिने जाएंगे।

१७१५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से लोगों ने हज्जाज के ज़ुल्मों की शिकायत की। फ़रमाया सब्र करो, क्योंकि तुम पर जो ज़माना गुज़रेगा, वह पहले ज़माने से बुरा होगा, इसलिए तुम सब्र ही की हालत में ख़ुदा से मिल जाओ और मैंने यह बात नबी सल्ल० से सुनी है।

१७१६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई शख़्स अपने भाई मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, क्योंकि शैतान उसके हाथ से दूसरे के हाथ तक पहुंचा दे और यह शख़्स आग के गढ़े में गिर पड़े।

१७१७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जल्द ही फ़ित्ने होने वाले हैं और ऐसे वक़्त में बैठने वाला, खड़े होने वाले से और खड़ा होने वाला, पैदल चलने वाले से और पैदल, सवार से बेहतर होगा। जो शख़्स इन फ़ित्नों में पड़ेगा, उस को ये हलाक कर देंगे, जो शख़्स इन फ़ित्नों में जाए, तो ख़ुदा से पनाह मांगे।

१७१८. हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० हज्जाज के यहां तशरीफ़ ले गये। हज्जाज ने कहा, ऐ सलमा रज़ि० ! तुम अपनी एड़ियों पर लौट पड़े कि मदीना छोड़ कर गांव में बस गये। आप ने जवाब दिया कि नहीं, बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझ को इजाज़त दे दी थी।

१७१९. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब किसी क़ौम पर अज़ाब नाज़िल होता है, तो उस क़ौम के हर शख़्स (नेक और बुरे पर) पहुंचता है, लेकिन क़ियामत के दिन अपने आमाल पर उठाए जायेंगे।

१७२०. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि निफ़ाक़ तो हुज़ूर सल्ल० ही के ज़माने में था, लेकिन अब ईमान के बाद कुफ़्र है।

१७२१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत से पहले एक आग ज़रूर आएगी, जो हज्जाज की ज़मीन से पैदा होगी और बसरा के ऊंटों की गर्दन से भड़क उठेगी।

१७२२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जल्द ही फ़रात नहर

से खजाना निकलेगा, इसलिए जो उस वक़्त मौजूद हो, वह उसमें से कुछ न ले।

१७२३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत, उस दिन ही क़ायम होगी कि जब दो जमाअतें आपस में जंग करेंगी और आपस में बहुत ख़ून बहेगा, लेकिन सब का मक़सद एक ही होगा, यहां तक कि लगभग तीस झूठे दज्जाल निकलेंगे और हर एक का यही दावा होगा कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं, उस वक़्त इल्म उठा लिया जाएगा, ज़लज़ले ज़्यादा आयेंगे, ज़माना ऐसा मालूम होगा कि बहुत जल्द गुज़र रहा है। क़त्ल व ख़ून ज़्यादा होंगे और माल इतना ज़्यादा होगा कि बहता फिरेगा। अगर कोई शख़्स देने के लिए माल लेकर सदक़ा लेने वाले की तलाश करेगा, तो वह कहेगा कि मुझ को उस की ज़रूरत नहीं है, लोग बड़ी-बड़ी इमा[illegible] बनवाएंगे और आदमी किसी क़ब्र पर गुज़रेगा और कहेगा कि काश [illegible] इस जगह होता, इसी हालत में सूरज पच्छिम से निकलेगा और उस [illegible] लोग ईमान की तरफ़ झुकेंगे, लेकिन यह ईमान जिस से उस [illegible] नफ़ा नहीं उठाया, उस वक़्त कुछ फ़ायदामंद नहीं होगा और [illegible] उस दिन क़ायम होगी, जब कि दो शख़्स अपना मिला-जुला कप[illegible] फिरेंगे, न उस को बेच ही सकेंगे, न लपेट सकेंगे और ऐसे वक़्त में [illegible] होगी कि इंसान अपनी दूध देने वाली ऊंटनी का दूध, तमाम [illegible] फिरेगा और पी न सकेगा और उस वक़्त क़ायम होगी कि इंसान अप[illegible] हौज़ ठीक करता होगा, लेकिन उस में पानी न भर सकेगा और लुक़्मा उठाएगा, लेकिन खाने की नौबत न आएगी।

बाब ६२

हुक्मों के बयान में

१७२४. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई हब्शी गुलाम जिस का

सर किशमिश की तरह हो, तुम पर हाकिम हो, तो उसको भी फरमांबरदारी करो।

१७२५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जल्द ही तुम को अमारत की लालच होगी, लेकिन वह क़ियामत के दिन पछताने का ज़रिया होगा, उसको शुरूआत तो अच्छी मालूम होगी, लेकिन अंजाम बुरा होगा।

१७२६. हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस बंदे को अल्लाह तआला अपनी रियाया पर हाकिम बनाए और वह उनकी खैरख्वाही की तरफ़ ध्यान न दे, तो उसको जन्नत की बू तक नहीं पहुंचेगी।

१७२७. हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो हाकिम अपनी रियाया बुरा का चाहने वाला होकर मर जाएगा, तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देगा।

१७२८. हज़रत जुन्दुब रज़ि० कहते है, नबी सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख्स दिखावे के लिए कोई काम करेगा, अल्लाह तआला भी उसका साथ वैसे ही करेगा और जो शख्स लोगों पर मशक़्क़त डालेगा, खुदा क़ियामत के दिन उस पर मशक़्क़त डालेगा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हम को नसीहत फ़रमाइए। फ़रमाया, सबसे पहले जो चीज़ इंसान की सड़ती है वह पेट है, इसलिए जो शख्स अच्छी चीज़ खाने की ताक़त रखता है, वह यों ही करे और जो शख्स यह चाहता है कि जन्नत और उसके बीच में चुल्लू भर खून जो उसने नाहक़ बहाया हो, रुकावट न हो, तो वह ऐसा न करे।

१७२९. हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हाकिम को चाहिए कि गुस्से की हालत में किसी का फ़ैसला न करे।

१७३०. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा बुरा हमेशा लड़ने-झगड़ने वाला आदमी है।

१७३१. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की हदीस है कि हमने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इताअत पर

बंग्रत की, जो गुजर चुकी और इस रिवायत में यह ज्यादा है कि हम जहां हों, सच बात कहने पर, खुदा के सिवा किसी से न डरें।

१७३२. हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि मैंने अबूहुरैरह रजि० की बात से सच जैसी कोई बात न देखी, उन्होंने कहा था कि अल्लाह तआला ने इब्ने आदम अलै० के लिए जो हिस्सा ज़िना का लिख दिया है, वह उसको जरूर करेगा, आंख का जिना यही है कि गैर महरम पर नजर करे, जुबान का ज़िना, ज़िना की बात करना और नफ्स का ज़िना उसकी ख्वाहिश करना और शर्मगाह, उस की ख्वाहिश पूरी करते हैं या नहीं।

१७३३. हजरत अनस रजि० का गुज़र बच्चों के पास से हुआ, तो आप ने उन को सलाम किया और फ़रमाया कि आंहजरत सल्ल० भी यही किया करते थे।

१७३४. हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजि० कहते हैं कि मेरे वालिद पर क़र्ज़ा था, मैं उस के बारे में हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और दरवाज़ा खट-खटाया। फ़रमाया कौन है ? मैंने अर्ज़ किया, मैं हूं। फ़रमाया मैं, मैं करता है गोया आपने उस लफ़्ज़ को मकरूह समझा।

१७३५. हजरत इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कोई शख्स दूसरे को उठा कर खुद न बैठे, बल्कि खुलकर और फैलकर बैठें।

१७३६. हज़रत इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि नबी सल्ल० को मैंने काबा में उकड़ूं बैठे हुए देखा।

१७३७. हजरत अब्दुल्लाह रजि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम तीन आदमी हो, तो दो आदमी आपस में कानाफूसी न करें, जब तक (एक) जमाअत न हो जाए, क्योंकि यह कानाफूसी तीसरे को दुखी बनाती है।

१७३८. हजरत अबूमूसा रजि० कहते हैं कि रात के वक्त मदीना में एक घर मय सामान और घरवालों के जल गया। हुजूर सल्ल० ने फ़र-माया कि आग, तुम्हारी दुश्मन है, उस को बुझा दिया करो।

१७३९. हजरत इब्ने उमर रजि० कहते हैं कि मुझे याद है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक घर धूप से और बारिश

से बचाने के लिए बना रहा था. लेकिन खुदा की मख़लूक़ में किसी ने मुझ को मदद न दी।

बाब ६३

दुआओं के बयान में

१७४०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि हर नबी की एक दुआ मक़बूल होती है और मेरा इरादा है कि मैं अपनी दुआ बचाए रखूं, ताकि क़ियामत में उस के ज़रिए से अपनी उम्मत को बख़्शवाऊं।

१७४१. हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह दुआ सैयदुल अस्तग़फ़ार है—अल्ला हुम-म अन-त रब्बी ला इला ह इल्ला अन-त (आख़िर तक) ऐ खुदा, तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने ही मुझ को पैदा किया है। मैं तेरा बंदा हूं और मैं तेरे अह्द व पैमान पर क़ायम रहूंगा, जब तक मुझ में ताक़त होगी। मैं तेरे ज़रिए से अपने कामों की बुराई से पनाह मांगता हूं और मुझ पर जो नेमतें तूने की हैं, उन का इक़रार करता हूं और मैं अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूं तू उन को बख़्श दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई बख़्शने वाला नहीं, आप ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने सच्चे दिल से यह कहा और उसी दिन मर गया, तो वह जन्नत वालों में से है और जिसने शाम को पढ़ा और सुबह होने से पहले मर गया, तो जन्नती है।

१७४२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि खुदा की क़सम, नबी सल्ल० ने फ़रमाया मैं रोज़ाना खुदा से सत्तर बार से ज़्यादा दिन में तौबा करता हूं।

१७४३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने दो हदीसें बयान

कीं, एक अपनी तरफ़ से और दूसरी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से, कहते हैं मोमिन अपने गुनाहों को ऐसे ख्याल करता है कि जैसे एक पहाड़ के नीचे बैठा हो और उस को अपने ऊपर गिर जाने का ख्याल हो और फ़ाजिर अपने गुनाहों को एक मक्खी की तरह ख्याल करता है और इस तरह इशारा कर देता है, फिर फ़रमाया कि खुदा अपने तौबा करने वाले बंदे से उस से ज्यादा खुश होता है कि जितना वह शख्स हो, जो कि किसी डरावनी जगह पर नाज़िल हो और उसकी ऊंटनी, जिस पर उसका खाना-पीना लदा हुआ है उस के साथ हो और वह सो जाए, फिर जब आंख खुले, तो ऊंटनी न देखे और भूख-प्यास की बहुत तेज़ी हो, वह मजबूर हो कर कहे कि अच्छा, जहां से उठा था, फिर वहीं सो जाता हूं और जाकर सो जाए, इस के बाद जब उठे तो उसकी ऊंटनी उस के सिर-हाने मौजूद हो।

१७४४. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम, जब सोने के लिए लेटते तो चेहरे के नीचे हाथ रख कर फ़रमाते कि ऐ खुदा, तेरे नाम से मरता और ज़िन्दा होता हूं और जब जागते तो फ़रमाते, सब तारीफ़ उस खुदा के लिए है, जिसने मारने के बाद हम को ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ उठ कर जाना है।

१७४५. हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम, जब सोने लगते, तो दाहिनी करवट पर लेट कर फ़रमाते कि ऐ अल्लाह, मैं अपने को तेरे सुपुर्द करता हूं और अपना रुख तेरी तरफ़ करता हूं, अपने काम तेरे सुपुर्द करता हूं और अपनी पीठ सहारा तुझ से करता हूं, खौफ़ ख्वाहिश सब तेरे ही ज़ात से हैं, मेरी पनाह की जगह और मुहब्बत का ज़रिया तेरी ही तरफ़ से है, मैं तेरी किताब और तेरे भेजे हुए रसूलों पर ईमान लाया। यह कलिमे पढ़ने के बाद मर जाए तो इस्लाम की हालत में मरेगा।

१७४६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक रात, मैं हज़-रत मैमूना रज़ि० के यहां रहा। इस हदीस का पहले ज़िक्र हो चुका है और फ़रमाया कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ की थी कि ऐ अल्लाह, मेरे दिल और मेरी आंखों में रोशनी और मेरे कान में नूर अता फ़रमा और मेरी दाहिनी तरफ़ और बायें तरफ़ नूर और मेरे ऊपर नूर, मेरे नीचे नूर, मेरे सामने नूर, मेरे पीछे

नूर नाज़िल फ़रमा और मुझे मुकम्मल नूर बना दे।

१७४७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख़्स अपने बिस्तर पर लेटने का इरादा करे, तो पहले उस को कपड़े से झाड़े, क्योंकि वह नहीं समझ सकता कि उस बिस्तर पर उसका जानशीन कौन हुआ है और यह दुआ पढ़े कि ऐ ख़ुदा! मैं तेरा नाम लेकर अपना पहलू रखता हूं और तेरे ही नाम से उठाऊंगा, अगर तू मेरी जान रोक ले, तो उस पर रहम फ़रमाना, अगर उसको छोड़े तो उसकी हिफ़ाज़त उस चीज से करना कि जिस के ज़रिए से अपने बंदों की किया करता है।

१७४८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि किसी शख़्स को यह न कहना चाहिए कि अगर तू चाहे, बख़्श दे और तू चाहे तो रहम करे, बल्कि यक़ीनी लफ़्ज़ से दुआ करे, क्योंकि ख़ुदा से बढ़ कर ज़बर्दस्त कोई नहीं, (जो चाहेगा वही करेगा)।

१७४९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि तुम्हारी दुआ क़ुबूल होती है, शर्त यह है कि जल्दी न करो और यह न कहो कि वह क़ुबूल न हुई।

१७५०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सख़्ती के वक़्त यह फ़रमाया करते थे, ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा और हलीम है, कोई माबूद ख़ुदा के सिवा नहीं, वह बड़े अर्श का मालिक है, कोई माबूद अल्लाह के सिवा नहीं, वह ज़मीन और आसमान और बड़े अर्श का रब है।

१७५१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, तक्लीफ़ देने वाली मुसीबतों से, मारने वाली चीज़ों से, हुक्म की बुराई से और दुश्मनों के सख़्त दिल होने से पनाह मांगते थे। सुफ़ियान जो इस हदीस की रिवायत करने वालों में से एक रिवायत करने वाले हैं, कहते हैं कि हदीस में तीन बातें थीं, एक मैंने ख़ुद बढ़ा दी है, मुझे यह याद नहीं कि वह कौन सी थी।

१७५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे कि ऐ ख़ुदा! जब मैं किसी मोमिन को बुरा-भला कहूं तो उस को तू अपने क़रीब होने की

वजह बना ले।

१७५३. हज़रत साद बिन अबीवक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हम को यह कलिमे पढ़ने का हुक्म फ़रमाया करते थे। ऐ अल्लाह ! मैं तेरे ज़रिए से तजल्ली से पनाह मांगता हूं और बुज़दिली से पनाह मांगता हूं और ज़्यादा लम्बी उम्र से पनाह मांगता हूं और दुनिया के फ़ित्ने यानी दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगता हूं और क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगता हूं।

१७५४. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़र्माया करते थे कि ऐ ख़ुदा ! मैं तेरे ज़रिए से बुढ़ापे और सुस्ती और गुनाह और तावान और क़ब्र के अज़ाब और दोज़ख के फ़ित्ने और आग के अज़ाब और मालदारी के बुरे फ़ित्ने से पनाह चाहता हूं और मसीह-दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगता हूं। ऐ ख़ुदा ! मेरी ग़लतियां सर्द पानी से धो डाल और मेरा दिल ग़लतियों से पाक व साफ़ कर दे, जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ हो जाता है और मेरी ग़लतियों के बीच इतनी दूरी कर दे जितनी पूरब और पच्छिम में है।

१७५५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० यह दुआ करते थे कि ऐ ख़ुदा ! मुझको दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी और हम को दोज़ख के अज़ाब से बचा।

१७५६. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ करते थे कि ऐ ख़ुदा ! मेरी ग़लतियों और जिहालत और ज़्यादती और जिन बातों को तू बुरा जानता है माफ़ फ़र्मा दे और ऐ मेरे ख़ुदा ! मेरी बेहूदगी, मेरा (गंदा) इरादा और मेरी जानकारी में हुआ क़ुसूर और अनजाने के क़ुसूर को माफ़ कर दे।

१७५७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिसने एक दिन में सौ बार ला इला ह इल्ल-ल्लाहु वह्दहू पढ़ा, तो उसको सौ गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा, उस के लिए सौ नेकियां लिखी जाएंगी और सौ गुनाह माफ़ किए जाएंगे और सारे दिन शैतान से बचा रहेगा और जो कुछ उसने किया है, उस से ज़्यादा कोई न करेगा, मगर वह शख़्स जिसने उस से ज़्यादा पर अमल किया हो।

१७५८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़ुबान पर हल्के और तराज़ू (इंसाफ़) में भारी (और) रहमान को पसन्द हैं—सुब्हानल्लाहिल अज़ीम व सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही।

१७५९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि जिसने 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' एक दिन में सौ बार पढ़ा, तो अगर उस के गुनाह समुद्र के झाग की तरह हों तो वह सब मिटा दिए जाएंगे।

१७६०. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, जो शख्स अपने परवरदिगार का ज़िक्र करता है, उस की मिसाल और वह शख्स जो ज़िक्र नहीं करता, उस की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की सी है।

१७६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि ख़ुदा के कुछ फ़रिश्ते रास्तों में घूम कर ख़ुदा का ज़िक्र करने वालों की तलाश करते हैं, जब कोई क़ौम उन को इबादत करने वाली मिल जाती है, तो एक दूसरे को आवाज़ देता है कि चले आओ तुम्हारा मक़सद यह है, फिर वह सब उस पर अपने परों से साया दुनिया के आसमान तक किए रहते हैं, जब उन से पूछा जाता है कि तुमने मेरे बंदों को किस हालत में पाया, तो वह कहते हैं कि तस्बीह व तक्बीर और हम्द व मज्द में पाया, अगरचे ख़ुदा, उन बंदों का हाल अच्छी तरह जानता है कि क्या कह रहे हैं फिर इर्शाद होता है कि क्या उन्होंने मुझे देख लिया ? फ़रिश्ते कहते हैं, नहीं, ख़ुदा की क़सम, नहीं देखा। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि अगर वह मुझ को देख लेते, तो क्या हाल होता ? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर तुझ को देख लेते, तो तेरी तस्बीह और तह्मीद और तम्जीद में बहुत लगे रहते, फिर ख़ुदा तआला फ़र्माता है कि वे मुझसे क्या मांगते हैं ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि जन्नत। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि क्या उन्होंने जन्नत देख ली है ? यह अर्ज़ करते हैं कि नहीं, ख़ुदा की क़सम उन्होंने नहीं देखी, उस वक़्त फ़र्मान होता है कि अगर वह देख लेते तो उन का क्या हाल होता ? यह अर्ज़ करते हैं कि मांगने में और ज़्यादती करते ? अल्लाह तआला फ़र्माता है वह किस चीज़ से पनाह चाहते हैं ? फ़रिश्ते कहते हैं. दोज़ख से, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि क्या उन्होंने देख ली है ? यह कहते हैं कि देखी तो नहीं। अल्लाह तआला फ़र्माता है

कि अगर देख लेते तो क्या हाल होता? यह कहते हैं कि पनाह मांगने में और ज़्यादती करते। आपने फ़र्माया कि उस वक़्त ख़ुदा फ़र्माता है कि तुम गवाह रहो कि मैंने उन्हें बख़्श दिया, इस में से एक फ़रिश्ता कहता है कि एक शख़्स उन लोगों में से नहीं, बल्कि वह किसी काम के लिए आया था। ख़ुदा फ़र्माता है कि वह ऐसे लोग हैं कि उन का हमनशीन भी महरूम नहीं रहता।

बाब ६४

नर्म दिल बनाने वाली हदीसों का ज़िक्र

१७६२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, दो नेमतें ऐसी हैं कि जिन की वजह से लोग नुक़सान में हैं—तन्दुरुस्ती और फ़राग़वस्ती।

१७६३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे दोनों कंधे पकड़ कर फ़र्माया कि दुनिया में एक राहगीर मुसाफ़िर की तरह रहो और शाम हो जाए, तो सुबह का इन्तिज़ार न करो, सुबह हो जाए, तो शाम का इन्तिज़ार न करो, तन्दुरुस्ती में बीमारी का सामान कर लो और ज़िन्दगी में मौत का।

१७६४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुरब्बा लाइन खींचा और एक लाइन उस के बीच में खींचा और कुछ छोटे-छोटे लाइन बीच के लाइन के किनारों में बनाए और फ़र्माया कि यह बीच की लाइन इंसान है और यह लाइन जो घेरे हुए है, यह उस की मौत है और यह लाइन जो बाहर निकली हुई है, यह उस की उम्मीद है और यह छोटी लाइनें, हादिसे हैं। अगर एक से बच गया, तो दूसरे ने ख़बर ली और अगर दूसरे से बच गया, तो तीसरे ने ख़बर ली।

१७६५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि जब हम इताअत और ताबेदारी पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत करते, तो आप यह फ़र्मा दिया करते कि जहां तक ताक़त हो।

१७६६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० से कहा गया कि आप अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर जाइए, फ़र्माया कि अगर मैं अपना ख़लीफ़ा बनाऊं, तब कोई नुक़्सान, नहीं क्योंकि मुझसे अफ़्ज़ल हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपना ख़लीफ़ा बना गए और न बनाऊं तो कोई हरज नहीं, क्योंकि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़िलाफ़त का मामला यों ही छोड़ गए, किसी को ख़लीफ़ा न बनाया।

१७६७. हज़रत जाबिर बिन हुमरा रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि बारह अमीर होंगे, इस के बाद कोई कलिमा फ़र्माया, जिस को मैंने नहीं सुना, लेकिन मेरे वालिद ने कहा कि यह फ़र्माया था कि सब क़ुरैश में से होंगे।

१७६८. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि अगर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत की ख़्वाहिश करने से मना न फ़र्माया होता, तो मैं मौत की ज़रूर ख़्वाहिश करता।

१७६९. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि ऐ ख़ुदा, मदीना वालों के लिए पैमाने और साअ व मुद्द में बरकत अता फ़र्मा।

१७७०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि वारिसों को उन की विरासत अदा करने के बाद कुछ बाक़ी रहे, तो वह क़रीबी रिश्तेदार मर्द का है।

१७७१. हज़रत अबूमूसा रज़ि० से एक बेटी और एक पोती और एक बहन का हिस्सा पूछा गया। फ़र्माया आधा बेटी का और आधा बहन का। तुम हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० के पास भी जाओ, शायद वह भी मेरा साथ दें चुनांचे अबू मसऊद रज़ि० से पूछा गया और मूसा का क़ौल भी बयान किया, तो आपने फ़र्माया कि अगर मैं इन के मुवाफ़िक़ कहूंगा, तो गुमराह हो जाऊंगा। मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के फ़ैसले के मुताबिक़ काम करूंगा। बेटी को आधा और पोती को दो तिहाई पूरे करने के लिए आधा हिस्सा और बाक़ी बहन का। यह ख़बर हज़रत अबूमूसा

रज़ि० को हुई, तो उन्हों ने कहा कि जब तक ये इल्म के माहिर तुम लोगों में मौजूद हैं, उस वक़्त तक मुझ से न पूछो।

१७७२. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि किसी क़ौम का आज़ाद किया हुआ उसी में गिना जाएगा।

१७७३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया किसी क़ौम का भांजा, उसी क़ौम में से है।

१७७४. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिस ने किसी ग़ैर को अपना जानते-बूझते बाप बनाया और उस की तरफ़ बेटा होने का ताल्लुक़ जोड़ा और वह उसके बाप न होने को जानता है, तो जन्नत उस पर हराम है। यह हदीस हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बयान की गयी। आपने फ़रमाया कि इस हदीस को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से मेरे कानों ने सुना और मेरे दिल ने इस को याद रखा है।

१७७५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि तुम अपने बापों से एराज़ न करो, जिसने अपने बाप से एराज़ किया वह काफ़िर हुआ।

१७७६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शराबी को जो शराब पिए हुए था, हुज़ूर सल्ल० की खिद्मत में लाए। आपने फ़रमाया कि इस को मारो, हुक्म के मुताबिक़ हम लोगों में से कुछ ने तो हाथों से मारा और कुछ ने जूतों से, कुछ लोगों ने कपड़े का कोड़ा बना कर उसे मारा, फिर जब वह चला गया, तो किसी ने कहा खुदा तुझे रुसवा करे। आपने फ़रमाया, उस को शैतान के हवाले न करो, और ऐसा मत कहो।

१७७७. हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० कहते हैं कि अगर मैं किसी के हद मारूं और वह मर जाए तो मुझ को बिल्कुल अफ़सोस न होगा, मगर शराब पीने वालों के लिए मुझ को जुर्माना देना पड़ेगा, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने उस के लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं फ़रमायी।

१७७८. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में एक शख़्स था, जिस का नाम अब्दुल्लाह था और लक़ब हम्मार था, वह हुज़ूर सल्ल० को हंसाया करता था, लेकिन शराबख़ोर था, इस की वजह से उस को कोड़े लगाया करते थे। एक बार उस को लाए, तो हुज़ूर सल्ल० ने कोड़े मारने का हुक्म दिया। एक शख़्स कहने लगा कि खुदा इस पर लानत करे, कितनी बार इस पर

कोड़े लग चुके हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया कि इस पर लानत न करो। मुझ को अच्छी तरह मालूम है कि यह ख़ुदा और उस के रसूल से मुहब्बत रखता है।

१७७९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया ख़ुदा चोर पर लानत करे कि बैज़ा[1] चुराए जब हाथ काटा जाए, रस्सी चुराए जब हाथ काटा जाए।

१७८०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि दीनार की चौथाई या उस से ज़्यादा चुराने से हाथ काटा जाए।

१७८१. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में एक ढाल की क़ीमत की चोरी में हाथ काटा जाता था।

१७८२. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक ढाल की क़ीमत के बराबर चुराने से हाथ काटा, जिस की क़ीमत तीन दिरहम होती थी।

१७८३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा की हदों के अलावा किसी पर दस कोड़ों से ज़्यादा हद न मारना चाहिए।

१७८४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने ग़ुलाम को तोहमत लगाए और वह ग़ुलाम उस से बरी हो, तो क़ियामत के दिन उस के कोड़े लगाए जाएंगे। हां, इस सूरत से बच सकता है कि उस का क़ौल सही हो।

१७८५. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सच्चाई से भलाई हासिल होती है और भलाई से जन्नत। जो शख़्स सच बोलता रहेगा, वह आख़िर को सच्चा हो जाएगा और झूठ बुरे कामों की तरफ़ इंसान को ले जाता है और बुरा काम दोज़ख की तरफ़, जो झूठ बोलता रहता है, आख़िर वह ख़ुदा के नज़दीक झूठा हो जाता है।

१७८६. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि ख़ुदा से ज़्यादा

१. बैज़ा हदीस कहने वालों के नज़दीक वह टोप है जो लड़ाई में सर पर रखा जाता है।

तक्लीफ़ पर सब्र करने वाला न किसी आदमी को देखा, न किसी चीज़ को, क्योंकि कुफ़्फ़ार उस के लिए औलाद बताते हैं, लेकिन वह फिर भी उनको नज़रन्दाज़ करता रहता है और उन को रोज़ी देता है (बुखारी) यद ऊ न लहुल वलद सुम-म ल आफ़ीहिम व यर्ज़ुक़ुहुम—

१७८७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि पहलवान, सख्त आदमी को नहीं कहते हैं, बल्कि पहलवान वह है कि गुस्से के वक़्त उस का नफ़्स उस के क़ब्ज़े में हो।

१७८८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० से वसीयत फ़रमाने की दरख्वास्त की। आपने फ़रमाया कि गुस्सा न किया करो। उसने कई बार यही पूछा। आपने जवाब दिया कि गुस्सा न किया करो।

१७८९. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हया से हमेशा भलाई ही हासिल होती है।

१७९०. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पहली नुबूवतों के कलाम में से जो लोगों के पास है सिर्फ़ इतनी बात है कि अगर तुझमें हया नहीं, तो जो जी चाहे कर।

१७९१. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत हम से इतनी बे-तकल्लुफ़ी रखते थे कि मेरे छोटे भाई से फ़रमाया करते थे कि ऐ अबू उमैर नग़ीर क्या हुआ? (नग़ीर एक लाल परिंदे का नाम था) हज़रत अनस रज़ि० के छोटे भाई ने उस को पाला था, लेकिन मर गया।

१७९२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, मोमिन आदमी एक सूराख़ से दो बार नहीं कटवाता है।

१७९३. हज़रत उबई बिन काब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कुछ शेर में हिक-मत होती है।

१७९४. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोगों में से किसी का पेट पीप से भर जाय, यह अच्छा है कि शेर से भरे।

१७६५. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिद्मत में एक गांव वाला शख्स आया और पूछने लगा कि क़ियामत कब होगी ? इस हदीस का ज़िक्र भी हो चुका है, लेकिन इस रिवायत में इतना ज़्यादा बयान किया, आपने फ़र्माया तू उस शख्स के साथ होगा, जिस से तुझ को मुहब्बत हो। हमने अर्ज़ किया कि हम भी आप के साथ होंगे ? फ़र्माया, हां।

१७६६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि ग़द्दार शख्स के लिए क़ियामत के दिन निशान क़ायम किया जाएगा और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि फिर आवाज़ दी जाएगी, फ़्लां बिन फ़्लां की ग़द्दारी का निशान है।

१७६७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अंगूर को गर्म न कहो, क्योंकि गर्म मोमिन का दिल होता है।

१७६८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत ज़ैनब का नाम बिर्रा यानी सालिहा था, तो किसी ने कहा कि यह अपने आप को सालिहा कहलाती है, इस वजह से हुज़ूर सल्ल० ने सिर्फ़ ज़ैनब नाम रख दिया।

१७६९. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० बूढ़ी औरतों के साथ जा रही थीं और हज़रत का ग़ुलाम अन्ज़शा लिए जा रहा था। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अन्ज़शा देख, शीशे टूट न जाएं।

१८००. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि दो शख्स हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की मज्लिस में मौजूद थे और दोनों को छींक आयी। आपने एक का जवाब तो दे दिया और दूसरे का जवाब नहीं दिया। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, यह क्या बात है, कि हुज़ूर सल्ल० ने एक छींक का जवाब तो दिया और दूसरी का नहीं। फ़रमाया, एक ने अल-हम्दु लिल्लाहि कह लिया था और दूसरे ने नहीं, इसलिए जवाब भी नहीं दिया गया।

१८०१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को छींक पसन्द है, जब कोई छींक ले, तो अलहम्दु लिल्लाह कहे और दूसरे सुनने वाले को यरहमु कल्लाहि कहना

चाहिए। रही जुम्हाई तो वह शैतानी हरकत है, अगर किसी को जुम्हाई आ जाए तो जहां तक मुमकिन हो, उस को रोको, क्योंकि जुम्हाई लेने के वक़्त शैतान तुम पर हंसता है।

बाब ६५

इजाज़त लेने के बयान में

१८०२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स उम्र में छोटा हो, वह बड़े को सलाम कर ले और जो जा रहा हो, वह बैठे को सलाम कर ले। इसी तरह सवार पैदल चलने वाले को और थोड़े आदमी बहुत सी जमाअत को।

१८०३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० एक रिवायत में कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि सवार, पैदल वाले को और पैदल वाला बैठे हुए शख़्स को और थोड़े आदमी, बहुत से आदमियों को सलाम करें।

१८०४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि कौन इस्लाम[1] बेहतर है ? फ़रमाया, लोगों को खाना खिलाना और जान-पहचान और ग़ैर जान-पहचान, दोनों को सलाम करना।

१८०५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुजरे में झांकने लगा, तो देखता है कि आप लोहे की कंघी अपने मुबारक सर में कर रहे हैं। इस के बाद जब हुज़ूर सल्ल० को मालूम हुआ, तो आपने फ़रमाया कि मुझे मालूम होता, तू झांक रहा है, तो मैं तेरी आंख में फेंक मारता।

१. यानी मुस्लिम की कौन-सी इस्लामी सिफ़त बेहतर है।

ऐ भाई ! इजाज़त लेना तो इसीलिए रखा गया है कि कोई किसी को छिप कर न देख ले।

१८०६. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि दो नेमतें ऐसी हैं कि जिन की वजह से लोग बड़े नुक़सान में रहते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यही फ़रमाया है कि एक उन में से तंदुरुस्ती, दूसरे फ़राखदस्ती।

१८०७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि जिस शख्स को अल्लाह तआला ने साठ साल की उम्र तक पहुंचा दिया हो, तो अल्लाह उस को पकड़ करने में मजबूर रखता है।

१८०८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि दो बातों में बूढ़े का दिल जवान होता है, एक दुनिया की मुहब्बत, दूसरे बड़ी-बड़ी उम्मीदें।

१८०९. हज़रत उत्बान बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि जिस शख्स ने खास खुदा की खुशी के लिए दुनिया में कलिमा 'ला इला ह इल्लल्लाह' पढ़ा होगा, उस पर खुदा दोज़ख हराम कर देगा।

१८१०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि खुदा फ़रमाता है कि जब मैं किसी मोमिन बंदे के किसी दोस्त को मारता हूं और वह उस पर सब्र किए रहता है, तो उस के बदले के लिए मेरे पास जन्नत के सिवा कुछ नहीं।

१८११. हज़रत मिरदास असलमी रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि सालेह लोग तो गुज़रते-गुज़रते आगे-पीछे गुज़र जाएंगे और फ़ुज्ला बाक़ी रह जाएगा, जिस तरह जौ का फ़ुज्ला बाक़ी रह जाता है और उस फ़ुज्ले को खुदा दोस्त नहीं रखेगा।

१८१२. हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर आदमी के लिए माल के दो जंगल भी भरे हुए हों, तो वह तीसरा तलाश करेगा और इंसान का पेट तो सिर्फ़ मिट्टी ही भरती है, अगर इंसान उस से तौबा कर ले, तो खुदा भी क़ुबूल करता है।

१८१३. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम में से ऐसा शख्स कौन है, जिस को अपने माल से ज़्यादा पसन्द वह माल है, जो रिश्तेदारों के क़ब्ज़े में पहुंच जाए। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! हम सब को अपना ही माल पसन्द है और ऐसा कोई नहीं, जिस को अपने वारिस का माल पसन्द हो। आपने फ़र्माया कि अच्छा, तुम्हारा माल तो वह है कि जो तुमने आगे रवाना कर दिया और जो पीछे रह गया, वह वारिस का माल है।

१८१४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि उस ख़ुदा की क़सम, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं कि एक वक़्त मेरी यह हालत थी कि भूख की वजह से अपना जिगर ज़मीन पर टेक कर चलता था और इसी की वजह से पेट पर पत्थर बांध लिया करता था। एक बार मैं सहाबा रज़ि० के गुज़रने के रास्ते पर बैठ गया, इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० उधर से गुज़रे, मैंने उन से एक क़ुरआन की आयत पूछी, लेकिन मेरा मतलब यह था कि मेरा पेट भर दें, लेकिन वह न समझे और चले गए, फिर हज़रत उमर रज़ि० गुज़रे, उन से भी क़ुरआन शरीफ़ की आयत पूछी और मेरा उन से भी वही मतलब था, लेकिन वह भी चले गए। इस के बाद हुज़ूरे अक़्दस का गुज़रना हुआ। आपने मेरी अन्दर की और बाहरी हालत देख कर पहचान लिया और मुझ को आवाज़ दी, अबूहुरैरह रज़ि० ! मैंने अर्ज़ किया, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप उस वक़्त मुस्करा रहे थे। फ़र्माया आओ, यह कह कर आप तशरीफ़ ले चले। मैं आप के पीछे रवाना हुआ, यहां तक कि आप मकान पर पहुंच गए और मुझ को अन्दर आने की इजाज़त दी। मैं भी अन्दर गया तो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां एक दूध का प्याला भरा रखा देखा। आपने पूछा यह कहां से आया ? अर्ज़ किया गया कि एक औरत ने आप के लिए हदिया भेजा है। यह सुन कर आपने मुझसे कहा, अबूहुरैरह रज़ि० ! मैंने अर्ज़ किया जी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़र्माया कि जाओ सुफ़्फ़ा सहाबियों को बुला लाओ और सुफ़्फ़ा सहाबी वे लोग थे जो मुसलमानों के मेहमान थे, न उन का कोई घर-बार, न खाने-पीने का सामान, जब हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ सदक़ा आता, आप उन को भेज देते थे और अगर हदिया आता, तो कुछ हिस्सा ख़ुद ले लेते और कुछ हिस्सा उन को भेज देते। मतलब यह है, उस वक़्त मुझ को उन का बुलाना नागवार गुज़रा और मैंने दिल में कहा कि उन के लिए यह दूध कितना सा है, उस दूध का हक़दार तो मैं ही था, सब को पीकर ताक़त हासिल कर लेता, ख़ैर हुज़ूर ने यह हुक्म मुझको दिया था कि जब वह लोग

आ जाएं, तो तुम उन को दूध पिलाना, हालांकि मुझ को उस दूध में से इस सूरत में कुछ भी नहीं मिलता, लेकिन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के हुक्म से क्या चारा था, मजबूरन गया और उन को बुला कर लाया वह लोग सब हाज़िर हो गए और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम से अन्दर आने की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त अता फ़र्मायी। वह लोग सब अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गए, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अबूहुरैरह ! मैंने अर्ज़ किया हाज़िर हूं। फ़र्माया कि उनको देना शुरू करो, इसलिए मैंने एक के बाद दूसरे कोदेना शुरू किया, यहां तक कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक नौबत पहुंच गयी। सबने अच्छी तरह पेट भर कर पी लिया। हज़रत सल्ल० ने प्याला लेकर उस पर अपना हाथ रखा और मेरी तरफ़ मुस्करा कर देखा और फ़र्माया कि अबूहुरैरह रज़ि० ! अब मैं और तुम बाक़ी रह गए हैं, मैंने अर्ज़ किया, जी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़र्माया कि अच्छा बैठो, इस को पियो, मैंने लेकर पिया, आपने फ़र्माया और पीयो, मैंने और पिया। आपने फ़र्माया कि और पियो, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! उस ज़ात की क़सम, जिसने आप को हक़ के साथ नाज़िल किया, अब मेरे पेट में गुंजाइश नहीं, तब आपने फ़र्माया कि अच्छा मुझे दिखाओ। मैंने आप को वह प्याला दिया। आपने खुदा की तारीफ़ की और जो कुछ बचा हुआ था, बिस्मिल्लाह कह के पी लिया।

१८१५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया किसी को उसके अमल न बख़्शवाएंगे। लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको भी नहीं ? फ़र्माया कि मुझ को भी नहीं, हां मगर खुदा अपनी रहमत में छिपा ले। तुम लोगों को चाहिए कि सही रास्ता अख़्तियार करो, सुबह-शाम बहुत सवेरे धीरे से चलते रहो, औसत तरीक़ा अख़्तियार करो, मक़सद को पहुंच जाओगे।

१८१६. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया, खुदा को कौन सा अमल पसन्द है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया जो हमेशा किया जाए, चाहे थोड़ा ही हो।

१८१७. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, अगर काफ़िर को ख़ुदा की रहमत की इन्तिहा मालूम हो जाए, तो वह जन्नत से ना-उम्मीद न हो और मोमिन को ख़ुदा के अज़ाब की हालत मालूम हो जाए, तो वह दोज़ख़ की आग से बे-ख़ौफ़ न हो।

१८१८. हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जो शख़्स अपनी ज़ुबान और शर्मगाह की मुझ को, ज़मानत दे, तो मैं उस के लिए जन्नत की ज़मानत देता हूं।

१८१९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कभी-कभी इन्सान, कोई ऐसा कलिमा बोल देता है, जिस में ख़ुदा की रज़ामंदी होती है और उस को, इस का ख़्याल भी नहीं होता, लेकिन अल्लाह तआला इस की वजह से बदला देता है, इसी तरह कोई इन्सान बे समझे बुरी बात कह देता है, जिस की वजह से ख़ुदा उस को दोज़ख़ में डाल देता है।

१८२०. हज़रत अबूमूसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि मैं जो चीज़ें लेकर आया हूं, उन की मिसाल यह है कि कोई शख़्स अपनी क़ौम से कहता है कि मैंने एक लश्कर अपनी आंख से देखा है, जो तुम पर हमला करेगा, मैं तुम को उस से खुल्लमखुल्ला ख़ौफ़ दिलाता हूं, तो उस में से एक जमाअत ने उस की बात मान ली और वह फ़ौरन ही रात में चल दी, इस लिए वह तो बच गई और एक जमाअत ने उस की बात बिल्कुल बेहूदी ख़्याल की, तो उन पर सुबह के वक़्त लश्कर ने आकर चढ़ाई की और सब को हलाक कर दिया।

१८२१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया जन्नत पर तक्लीफ़ के पर्दे हैं और दोज़ख़ पर ख़्वाहिशों के।

१८२२. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, जन्नत जूतियों के फ़ीते से भी ज़्यादा तुम से क़रीब है, इसी तरह दोज़ख़।

१८२३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं, नबी सल्ल० ने फ़र्माया

कि जब किसी शख्स की नजर ऐसे शख्स पर पड़े, जो उस से जिस्म की ताक़त और मालदारी में ज्यादा है, तो चाहिए कि अपने कम मर्तबे वाले को भी देख ले।

१८२४. हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुदा के कलाम की नकल फ़रमायी कि अल्लाह तआला ने नेकियां और बुराइयां, सब लिख कर बंदों के सामने पेश कर दीं। अब उसमें से कोई बंदा अगर नेक काम का इरादा करे और फिर उस पर अमल न करे, तो खुदा के यहां उस को एक पूरी नेकी लिखी जाती है। अगर उसने उस को कर भी लिया, तो दस हिस्से से लेकर सात सौ तक, बल्कि इस से भी ज्यादा का सवाब मिलता है और लिखा जाता है और अगर किसी ने बुराई का इरादा किया, लेकिन उस पर अमल नहीं किया, तो उसके लिए एक पूरी नेकी लिखी जाती है और अगर उसने इस बुरे काम को कर भी लिया, तो एक बुराई की एक ही लिखी जाती है।

१८२५. हजरत हुजैफ़ा रजि० कहते हैं कि हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने हम से दो हदीसें बयान की थीं, उन में एक तो मेरे सामने जाहिर हो चुकी और दूसरी बाक़ी रह गयी है, आपने फ़र्माया था कि अमानत लोगों के दिलों की जड़ में होगी, वह क़ुरआन और हदीसों की तालीम हासिल करेंगे, फिर आपने अमानत के उठ जाने के बारे में फ़र्माया था कि इस के बाद ऐसे लोग आएंगे कि आदमी अपनी नींद में बेहोश पड़े सोते होंगे और उन के दिलों से अमानत उठ जाएगी और उस का निशान रह जाएगा, जिस तरह फोड़े का निशान अच्छा हो जाने के बाद रह जाता है, इसके बाद दूसरी बार सोता रहेगा तो अमानत बिल्कुल ही ले ली जाएगी और उसका निशान इस तरह रह जाएगा कि जिस तरह छाला अच्छा होने के बाद। मिसाल के लिए तू अपने पांव पर चिंगारी डाल ले और इस से तेरे फफोला पड़ जाए और इस से खाल उठी होना तो दिखाई दे, लेकिन अन्दर कुछ भी न हो। इसी तरह लोगों की यह हालत हो जाएगी कि लोग सुबह के वक़्त खरीद व फ़रोख्त के लिए निकलेंगे, लेकिन इसमें अमानत को अदा करने के क़रीब भी कोई न होगा और कहा जाएगा, यह क़बीला में अमानत वाला है या यह आदमी कितना अक़्लमंद, अच्छे मिज़ाज वाला, चुस्त व चालाक है, लेकिन वह ईमान से बिल्कुल

अनजान होगा और मुझ पर एक ज़माना ऐसा आ चुका है कि मैं किसी से खरीद व फ़रोख्त करने में न घबराता था और यह ख्याल करता था कि अगर मुसलमान होगा, तो इस्लाम मुझ पर लौट आएगा और अगर ईसाई होगा, तब भी कोई हरज नहीं है, लेकिन अब मैं फ़्लां और फ़्लां के अलावा किसी से खरीद व फ़रोख्त नहीं करता।

१८२६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, लोग उन सौ ऊंटों की तरह है जिन में सवारी के क़ाबिल कोई नहीं है।

१८२७. हज़रत इब्ने जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जो शख्स सुनाने के लिए कोई काम करेगा, अल्लाह भी उस के साथ ऐसा ही करेगा और जो शख्स दिखावे के लिए करेगा, तो अल्लाह तआला भी वैसा ही करेगा।

१८२८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जिसने मेरे दोस्त से दुश्मनी पर कमर बांधी उससे मैं जंग का ऐलान करता हूं और खुदा जितने मेरे फ़र्ज़ अदा करने से मुझ से क़ुर्बत हासिल कर लेता है, इतना किसी चीज़ से नहीं कर सकता। मेरा बंदा, मेरा क़ुर्ब, नफ़्ल के ज़रिए हासिल करता है और उस को पढ़ता रहता है, यहां तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं और जब मैं उस को प्यारा बना लेता हूं, तो मैं उस के कान हो जाता हूं, जिस से वह सुनता है और मैं उस के हाथ हो जाता हूं, जिस से वह पकड़ता है, मैं उसके पांव हो जाता हूं, जिस से वह चलता है और क़सम से, अगर वह मुझ से मांगे, तो मैं ज़रूर दूं। अगर वह मुझ से मांगे तो मैं उस को पनाह दूं और मुझ को अपने काम से किसी काम पर तरद्दुद नहीं होता। इस के अलावा मोमिन की तबियत, मौत को बुरा नहीं जानती है और मैं उसको तक्लीफ़ देना नहीं चाहता।

१८२९. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जो शख्स खुदा के दीदार को महबूब रखता है, खुदा भी उस के दीदार को महबूब रखता है और जो शख्स खुदा की मुलाक़ात को बुरा जानता है, उस की मुलाकात को खुदा भी बुरा जानता है। हज़रत आइशा रज़ि० या कोई दूसरी बीवी फ़र्माती हैं। मैंने अर्ज़ किया कि मौत को तो हम भी बुरा समझते हैं। फ़र्माया, यह मतलब

नहीं है, बल्कि मोमिन का जब इन्तिक़ाल का वक़्त आता है, तो उस को अल्लाह तआला की ख़ुशी और इज़्ज़त बढ़ाने की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है, वह सुन कर ख़ुश होता है और ख़ुदा से मुलाक़ात करने को बेहतर समझता है और काफ़िर को जब मौत आती है, तो उस को अज़ाब की ख़बर दी जाती है, वह सुन कर मौत को बुरा ख़्याल करता है और ख़ुदा की मुलाक़ात को अच्छा नहीं समझता, तो अल्लाह तआला भी उस की मुलाक़ात को मकरूह समझता है।

१८३०. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि कुछ देहाती नंगे पैरों वाले हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर यह पूछा करते थे कि क़ियामत कब होगी। आप एक छोटी उम्र वाले की तरफ़ देख कर फ़र्माते कि अगर यह ज़िंदा रहा तो उस के बूढ़ा होने से पहले तुम्हारी क़ियामत, तुम्हारे लिए क़ायम हो जाएगी।

१८३१. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि क़ियामत का दिन एक रोटी की तरह होगा। अल्लाह तआला इस को इधर-उधर उलट फेर करेगा, जिस तरह अपने दस्तरख़्वान पर तुम लोग करते हो और यह जन्नत वालों की मेहमानी के लिए होगी, इतने में एक देहाती आया और कहने लगा, अबुल क़ासिम! ख़ुदा तुम पर बरकत नाज़िल करे, क्या मैं जन्नत वालों की मेहमानी की चीज़ बता दूं। फ़र्माया कहो उसने कहा कि ज़मीन रोटी की तरह होगी, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया था, यह सुन कर हुज़ूर सल्ल० बहुत हंसे यहां तक कि आप की कचलियां भी दिखाई देने लगीं, फिर उसने कहा कि सालन भी बताऊं आपने फ़र्माया बता। कहा, बालाम और नून (मछली।) लोगों ने कहा, बालाम क्या चीज़ है? आपने फ़र्माया कि बैल और मछली जिन की सिर्फ़ कलेजी सत्तर हज़ार आदमी खा सकेंगे।

१८३२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि क़िया में, क़ियामत के क़रीब, लोग तीन हालतों में होंगे, कुछ तो ख़्वाहिश रखने वाले, कुछ डरने वाले, कुछ ऐसे कि कोई एक ऊंटपर सवार होगा किसी ऊंट पर दो, किसी पर चार, किसी पर दस और कुछ को आग जमा कर लेगी, जहां दोपहर को ठहरेंगे, वहां वह भी ठहर जाएगी, जहां शाम को ठहरेंगे वह भी ठहर जाएगी, जहां

सुबह को गुज़ारेंगे, वहां यह भी गुज़ारेंगे।

१८३३. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया कि लोग क़ियामत में नंगे पांव, नंगे बदन, बग़ैर, खत्ना किए उठाए जाएंगे। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम औरत, मर्द सब एक दूसरे को देखेंगे। आपने फ़र्माया कि ऐसी सख़्ती के वक़्त एक दूसरे को कोई नहीं देखेगा।

१८३४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि क़ियामत के दिन लोग पसीने में इतना डूबे होंगे कि उन का पसीना, ज़मीन में सत्तर गज़ तक फैल जाएगा और लगाम की तरह मुंह और कानों तक होगा।

१८३५. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया क़ियामत के दिन सब से पहले हिसाब, ख़ून के बारे में किया जाएगा।

१८३६. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जब जन्नती, जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे और दोज़खी, दोज़ख में तो मौत को एक बकरे की शक्ल में जन्नत और दोज़ख के बीच लाकर ज़िब्ह किया जाएगा और फिर यह आवाज़ दी जाएगी कि ऐ जन्नत वालो! खुश हो कि अब कभी मौत नहीं और ऐ दोज़ख वालो! अब सिवाए हमेशा रहने के मौत नहीं, तो जन्नत वालों की ख़ुशी दुगनी हो जाएगी और दोज़ख वालों का ग़म दुगना।

१८३७. हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया अल्लाह तआला जन्नत वालों से फ़र्माएगा, ऐ जन्नत के लोगो! यह अर्ज़ करेंगे, ऐ रब, नाराज़गी की क्या वजह। तूने हम को ऐसी-ऐसी नेमतें अता फ़र्मायी हैं कि अपनी मख़लूक़ में से शायद ही किसी को दी हों, उस वक़्त अल्लाह तआला का फ़र्मान होगा कि हम, तुम को उस से भी ज़्यादा नेमत अता फ़र्माते हैं। यह अर्ज़ करेंगे कि उस से ज़्यादा नेमत कौन सी है, फ़र्मान होगा कि हमारी ख़ुशी, अब हम तुम से राज़ी हैं, कभी नाराज़ न होंगे।

१८३८. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि काफ़िर के दोनों मूंढों के बीच इतनी दूरी होगी, जितनी तेज़ रफ़्तार सवार के लिए तीन दिन का रास्ता।

१८३९. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, कुछ लोग दोज़ख से निकाले जाएंगे उन के रंग काले हो गए होंगे। जन्नत के लोग उन को जहन्नमी कह कर पुकारेंगे।

१८४०. हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि क़ियामत के दिन दोज़ख वालों पर सब से हल्का अज़ाब यह होगा कि उन के दोनों पांवों के तलुवों पर दो चिंगारियां होंगी जिन की वजह से उन का दिमाग़ ऐसा जोश खायेगा, जिस तरह हांडी या तांबे का बरतन।

१८४१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, जन्नत में उस वक्त आदमी दाखिल होगा, जब कि उस को दोज़ख में वह जगह दिखा दी जाएगी जो बुरे कामों की सज़ा में उस के लिए मुक़र्रर किया गया होगा, ताकि इस से बचा रहने का शुक्र अच्छी तरह अदा करे और दोज़ख में उस वक्त जाएगा कि पहले जन्नत की वह जगह दिखा दी जाएगी जो नेक काम के बदले में उस को मिलता, ताकि न मिलने की हसरत ज़्यादा हो।

बाब ६६

हौज़ के बयान में

१८४२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि मेरा हौज़, एक माह की दूरी रखता है, उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है, उस की खुश्बू मुश्क की सी है, जो उस को एक बार पी लेगा, कभी प्यासा न होगा और उस के आबखोरे आसमान के सितारों की तरह अनगिनत होंगे।

१८४३. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने

फ़र्माया कि मेरा हौज़ तुम्हारे सामने इतनी दूरी पर होगा कि जितना जरबा[1] और उजरह के बीच में है (बुखारी ६७४)

१८४४. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया मेरे हौज़ की लंबाई इतनी है जितनी एला[2] और सफ़ार यमन के बीच है, उसके आफ़ताबे आसमान के सितारों की तायदाद में है।

१८४५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, क़ियामत के दिन मैं खड़ा हूंगा कि मेरी नज़र एक गिरोह पर पड़ेगी, मैं उन को पहचान लूंगा, तो एक शख्स मेरे और उस गिरोह के दर्मियान में ज़ाहिर होगा और उस गिरोह से कहेगा कि आओ मैं पूछूंगा, कहां को बुलाता है, वह कहेगा, दोज़ख की तरफ़। मैं कहूंगा कि यह क्या बात है? वह कहेगा कि यह लोग आप के बाद मुकर गये थे, इस लिए मुझको यही ख्याल होता है कि उन में से कुछ थोड़े ही से छुटकारा पाएंगे।

१८४६. हज़रत हारिसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने जब हौज़ का ज़िक्र किया था, तो फ़र्माया था कि वह इतना है जितना सफ़ा व यमन और मदीने के दर्मियान में रास्ता है।

१८४७. हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि एक शख्स ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, क्या दोज़खी जन्नतियों से पहचाने जाएंगे? आपने फ़र्माया कि हां, उसने कहा कि फिर किसी को अमल करने की क्या ज़रूरत है? फ़र्माया कि हर शख्स जिस बात के लिए पैदा किया गया है, वही अमल वह ज़रूर करेगा, जो उस के लिए आसान कर दिया गया।

१८४८. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने खुत्बा पढ़ा, तो क़ियामत तक का सब हाल बयान कर दिया और कुछ न छोड़ा, जो समझ गया, वह समझ गया और जो न समझा वह नहीं समझा। मैं कुछ बातें भूल गया था, लेकिन अब मुझ को याद आती हैं, जैसे आदमी से कोई चीज़ गुम हो जाए, लेकिन फिर देखने के बाद उस के

---

१. ये दोनों जगहें शाम नाम के मुल्क में है जिन के बीच तीन रात की दूरी है।

२. शाम के बाहर क़लज़म के किनारे एक शहर है, अब यह शहर वीरान है।

पहचान में आ जाए।

१८४९. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, आदमी का नज़्र मानना कोई ऐसी बात नहीं पैदा करता, जिस को मैंने तक़दीर में न लिख दिया हो, बल्कि जिस बात को लिख दिया है, तक़दीर उस को ज़रूर लाएगी। हां, इतनी बात ज़रूर है कि उस की वजह से कंजूस का माल ज़रूर खर्च कराओ।

१८५०. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी इस तरह क़सम खाते, व मुक़ल्लिब ल क़ुलूबि (यानी ज़माने को गर्दिश देने वाले की क़सम।)

१८५१. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा रज़ि० फ़र्माते हैं, मुझ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अब्दुर्रहमान बिन समुरा, तुम सरदारी और अमीर की चाहने वाले न बनना, क्योंकि जो शख्स खुद उस को चाहता है, उस को उसके नफ़्स के सुपुर्द कर दिया जाता है, अगर ज़बर्दस्ती उस को अमीर बनाया जाए, तो उस की खुदा मदद फ़र्माता है, दूसरे जिस काम पर तुम क़सम खाओ अगर उस के मुख़ालिफ़ को बेहतर समझो तो अपनी क़सम से हलाल हो जाना बेहतर है यानी क़सम का कफ़्फ़ारा दे देना और उस को तोड़ देना बेहतर है।

१८५२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया कि (यहां) तो हम पीछे हैं, लेकिन क़ियामत के दिन सब से पहले होंगे और खुदा की क़सम, अगर तुम लोगों में कोई शख्स अपने लोगों में किसी बात पर क़सम खाए और फिर उस पर क़ायम रहे, तो खुदा के नज़दीक उस के तोड़ने से उस पर क़ायम रहना ज़्यादा गुनाह है।

१८५३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम रज़ि० कहते हैं कि एक बार हम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे। आप उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० का हाथ पकड़े हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मुझ को हर चीज़ से ज़्यादा प्यारे हैं, मगर अपनी जान से ज़्यादा नहीं। फ़र्माया उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, जब तक मैं तुम को अपनी जान से प्यारा न हूंगा, उस वक़्त तक तुम कामयाब नहीं हो सकते, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि०

ने कहा खुदा की क़सम ! अब मुझ को आप अपनी जान से भी ज्यादा महबूब और अज़ीज हैं। आपने फ़र्माया कि ऐ उमर रज़ि० ! अब तुम कामियाब हो गए।

१८५४. हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया और आप उस वक्त काबा के साए में तशरीफ़ रखते थे कि खुदा की क़सम बड़े नुक्सान में हैं। मैंने ख्याल किया कि शायद मुझ में आपने कोई बात देख ली, इसलिए मैं आप के क़रीब बैठ गया और हुज़ूर सल्ल० यह फ़र्माते रहे, तो मुझ से बर्दाश्त न हो सका और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप पर मेरे मां-बाप क़ुर्बान कौन लोग नुक्सान में हैं ? आपने कुछ आदमियों को छोड़ कर फ़र्माया कि इन के अलावा, जो लोग अपना माल ज्यादती से लुटाते हैं (वह नुक्सान में हैं।)

१८५५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, जिस के तीन बच्चे मर जाएं और उस पर सब्र करे, उस को आग मस न करेगी मगर ज़रा सा।

१८५६. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़र्माते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला मेरी उम्मत को दिल की बात पर मुआखज़ा नहीं करेगा, जब तक वह अमल में न लाए।

१८५७. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जो शख्स खुदा की फ़र्माबरदारी की नज़्र माने उस का करना ज़रूरी है और अगर खुदा की नाफ़र्मानी की नज़्र माने, तो उस को न करे।

१८५८. हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० ने अपनी मां की नज़्र का फ़त्वा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, क्योंकि उनकी मां ने नज़्र मानी थी और बग़ैर पूरा किए इन्तिक़ाल हो गया था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि तुम पूरा करो।

१८५९. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़र्माते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्ल० खुत्बा फ़र्मा रहे थे कि एक शख्स को खड़ा हुआ देख कर पूछा, यह कौन है ? क्यों खड़ा है ? लोगों ने अर्ज़ किया, इस का नाम अबू इस्राइल है, इसने नज़्र मानी थी कि खड़ा ही रहेगा, बैठेगा कभी नहीं, न साए में रहेगा, न किसी से बात करेगा और रोज़ा रखेगा। आपने फ़र्माया कि जाओ, उस से कहो कि बैठ जाओ और साए में भी रहो, बात भी करे मगर

रोज़ा ज़रूर रखे।

१८६०. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि तुम में से कोई मौत की ख़्वाहिश न करे, क्योंकि अगर उसने नेकियां कीं, तो और ज़्यादा करेगा और अगर बुरा है, तो तौबा की उम्मीद है।

बाब ६७

क़ुरआन और हदीस पर अमल करने के बयान में

१८६१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, इंकार करने वालों के अलावा, मेरी सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इंकार करने वाले कौन लोग हैं ? फ़र्माया, जिसने मेरी इताअत की जन्नत में जाएगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसी ने इन्कार किया।

१८६२. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि ख़्वाब में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ फ़रिश्ते आए, उन में से किसी फ़रिश्ते ने कहा, सो रहा है, दूसरे ने कहा कि आंखें सो रही हैं, लेकिन दिल जाग रहा है, फिर आपस में बोले कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई मिसाल बयान करो, तो किसी ने कहा कि यह तो सो रहे हैं। दूसरे ने कहा कि नहीं, आंखें सो रही हैं दिल जाग रहा है और उन की मिसाल उस शख़्स की सी है जिसने खाना तैयार कर के एक शख़्स को लोगों को बुलाने के लिए रवाना किया और दस्तरख़्वान बिछा दिया, इसलिए जिस शख़्स ने बुलाने वाले की बात

मानी, तो वह घर में आकर खा गया और जिसने उस के नहीं सुनी, तो वह महरूम ही रहा, फिर उन्होंने कहा, कि इस की तफ़सीर करो, तो किसी ने कहा कि यह सो रहे हैं और किसी ने कहा कि जाग रहे हैं और किसी ने कहा कि आंखें सो रही हैं, लेकिन दिल जाग रहा है, फिर उन्होंने तफ़सीर की कि मकान जन्नत है और बुलाने वाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, सो जिस ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत की, उसने ख़ुदा की इताअत की और जिसने नाफ़र्मानी की उसने ख़ुदा की नाफ़र्मानी की, उसने ख़ुदा की नाफ़र्मानी की और मुहम्मद सल्ल० ने लोगों को आपस में अलग-अलग कर दिया है, एक इताअत करने वाले मोमिन, दूसरे न इताअत करने वाले काफ़िर।

१८६३. हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि लोग बड़ी कुरेद करते रहेंगे, यहां तक किकहेंगे कि हर चीज़ ख़ुदा ने पैदा की और आख़िर में कहेंगे कि ख़ुदा को किसने पैदा किया।

१८६४. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआला लोगों को इल्म दे चुका, तो उन से छीनेगा नहीं, बल्कि छीनने का मतलब यह है कि आलिमों को इल्म के साथ उठा लेगा, जाहिल रह जाएंगे, उनसे लोग फ़त्वा मांगेंगे, तो वह अपनी अक़्ल से फ़त्वा देंगे, ख़ुद भी गुमराह होंगे और लोगों को भी गुमराह करेंगे।

१८६५. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि क़ियामत उसी वक़्त क़ायम होगी, जब मेरी उम्मत पहले लोगों का बिल्कुल तरीक़ा अख़्तियार करेगी। बालिश्त-बालिश्त भर और हाथ-हाथ भर का फ़र्क़ न रहेगा। लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०, क्या फ़ारस और रूम वालों का तरीक़ा? आपने फ़र्माया कि इन के सिवा और कौन है?

१०६६. हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ के लिए भेजा और उन पर किताब उतारी, उस में पत्थर मारने की आयत मौजूद है।

१८६७. हज़रत उमर बिन आस़ी रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, जब हाकिम कोई हुक्म, इज्तिहाद के ज़रिए से करे और उसका

इज्तिहाद सही हो, तो उस को दोहरा सवाब मिलेगा और अगर उसने इज्तिहाद में गलती खायी है तो भी एक सवाब मिलेगा।

१८६८. हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शख्स को अपने लश्कर का सरदार बना कर कहीं भेजा। वह शख्स जब अपने मातहतों को नमाज़ पढ़ाता तो क़ुल हु वल्लाहु सब में पढ़ता, जब लोग वापस आए तो उन्होंने उस के बारे में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, आपने फ़र्माया कि उस से पूछो कि ऐसा क्यों करता है ? लोगों ने पूछा, तो उसने कहा कि उसमें रहमान की सिफ़त है और यह मुझ को अच्छी मालूम होती है, इस वजह से मैं उस को पढ़ता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया, उस शख्स से कह दो कि खुदा तुझ को दोस्त रखता है।

१८६९. हज़रत अबूमूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़र्माया, खुदा से ज़्यादा कोई तक्लीफ़ और अज़ीयत की बात सुन कर सब्र करने वाला नहीं, लोग उस की औलाद साबित करते हैं और खुदा उन को रिज़्क़ देता है और आफ़ियत से रखता है।

१८७०. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्ल० यह कहा करते थे कि मैं तेरी इज़्ज़त की पनाह मांगता हूं, तू वह ज़ात है कि तुझ को कभी फ़ना नहीं और सब जिन्न व इन्सान को फ़ना है।

१८७१. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, खुदा ने जब मख्लूक़ पैदा कर दी, तो अपनी किताब में जो अर्श पर है, लिख दिया कि मेरी रहमत, मेरी ग़ज़ब पर सबक़त ले गयी है।

१८७२. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़र्माया, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मैं अपने बंदे के गुमान के मुवाफ़िक़ हूं, जिस तरह वह मुझे समझे और मैं उस के साथ हूं, जिस वक़्त वह मुझ को याद करे, अगर दिल में याद करेगा तो मैं भी उस का ज़िक्र करूंगा और अगर वह मेरी याद मज्लिस में करेगा, तो मैं उस की याद उस से बेहतर मज्लिस में करूंगा, अगर वह मेरे क़रीब एक बालिश्त होता है, तो मैं उस के क़रीब एक हाथ हो जाता हूं। अगर वह एक हाथ होता है, तो मैं उस से मिल जाता हूं। अगर वह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस के पास दौड़ कर जाता हूं।

१८७३. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० फ़र्माते हैं, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब मेरा बंदा गुनाह करने का इरादा कर ले तो (ऐ फ़रिश्तो!) तुम उस को न लिखो, जब तक इस काम को कर न ले, जब करे तो उस को, उसी के बराबर लिखो और अगर मेरे खौफ़ से उस को छोड़ दे, तो उस के बदले में एक नेकी लिखो और अगर वह नेकी का इरादा करे, तो उसके आमालनामे में एक नेकी लिखो और अगर वह करे, तो दस गुने से सात सौ तक नेकियां लिखो।

१८७४. हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि जब बंदा कोई गुनाह कर के कहता है कि ऐ खुदा, मैंने गुनाह किया है उस को बख्श दे, तो अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उस बंदे ने यह समझा कि उस का कोई बख्शने वाला है। मैंने अपने बंदे को बख्श दिया, फिर अगर वह कुछ ज़माने तक, जब तक खुदा चाहता है, ठहरा रहता है और फिर कोई गुनाह करता है और कहता है कि ऐ खुदा, मैंने गुनाह किया है, उस को बख्श दे तो अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उस बंदे ने यह समझ लिया कि मेरे गुनाह बख्शने वाला कोई है और मुवाखज़ा करने वाला कोई है, इसलिए मैंने बख्श दिया। इस के बाद थोड़े दिनों ठहर कर फिर गुनाह करता है और कहता है कि ऐ खुदा, मैंने गुनाह किया, तू उस को बख्श दे। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि उसने जान लिया कि कोई गुनाह का बख्शने वाला है और वह मुवाखज़ा भी कर सकता है, इसलिए मैंने अपने बंदे को बख्श दिया, तीन बार फ़र्माया।

१८७५. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, क़ियामत के दिन जब मैं शफ़ाअत करूंगा, तो कहूंगा कि ऐ खुदा जिस के दिल में राई के दाना बराबर ईमान हो, उस को भी जन्नत में दाखिल कर, चुनांचे लोग दाखिल होना शुरू होंगे, फिर मैं अर्ज़ करूंगा कि जिसके दिल में (उंगली से इशारा कर के फ़र्माया) ज़र्रा भर ईमान हो, उस को भी दाखिल कर हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि गोया मैं हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को इस हदीस के बयान करने के वक़्त देख रहा हूं कि आप अपनी उंगली के इशारे से बतला रहे हैं।

१८७६. हज़रत अनस रज़ि० इस हदीस को इस तरह बयान करते

हैं जो अबूहुरैरह रजि० से गुजर गयी है और इस में इतना ज्यादा किया है कि लोग ईसा अलैहिस्सलाम के पास जाकर कहेंगे तो वह जवाब देंगे कि मैं शफ़ाअत के क़ाबिल नहीं हूं। तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ। वह लोग सब मेरे पास आएंगे। मैं कहूंगा कि शफ़ाअत मेरा काम है, इसलिए मैं इजाजत चाहूंगा, मुझ को इजाज़त दी जाएगी, उस वक़्त अल्लाह तआला ऐसे हम्द के कलिमे का इलहाम फ़र्माएगा कि उस वक़्त मेरे जेहन में हाज़िर नहीं तो मैं उन कलिमों से उसकी तारीफ़ करूंगा और सज्दे में गिर जाऊंगा, उस वक़्त हुक्म होगा कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! अपना सर उठाओ, जो कहोगे, सुना जाएगा और सवाल करोगे, दिया जाएगा, शफ़ाअत करोगे, क़ुबूल की जाएगी। मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब, उम्मती ! उम्मती !! फ़र्मान होगा कि जाओ दोज़ख से जिस के दिल में जौ बराबर ईमान हो उस को निकाल लाओ, सो मैं जाऊंगा और ऐसा ही करूंगा, फिर लौट कर उस की हम्द करता हुआ सज्दे में गिर पड़ूंगा। हुक्म होगा कि ऐ मुहम्मद सल्ल० ! सर उठाओ, जो बात कहोगे सुनी जाएगी, जो मांगोगे दिया जाएगा, शफ़ाअत करोगे क़ुबूल होगी, मैं अर्ज़ करूंगा परवरदिगार, उम्मती ! उम्मती !! हुक्म होगा कि जिस के दिल में एक चूंटी या राई के दाने के बराबर ईमान हो, उस को निकाल लाओ। मैं ऐसा ही करूंगा, फिर मैं इन ही कलिमों से तारीफ़ करता हुआ सज्दे में गिर पड़ूंगा। हुक्म होगा कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! सर उठाओ, जो कहोगे सुना जाएगा और जो मांगोगे, दिया जाएगा, शफ़ाअत करोगे क़ुबूल होगी। मैं कहूंगा, ऐ रब, उम्मती ! उम्मती !! हुक्म होगा कि जाओ, जिस के दिल में राई के दाने का तीसरा हिस्सा भी ईमान हो, उस को निकाल लाओ, इसलिए मैं जाकर निकाल लाओ, इसलिए मैं जाकर निकाल लाऊंगा।

१८७७. हजरत अबूहुरैरह रजि० कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया, दो कलिमे ऐसे हैं कि जो रहमान को बहुत प्यारे हैं और जुबान पर हल्के हैं। मीज़ान में सवाब के एतबार से भारी हैं वह यह हैं—

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही—सुब्हानल्लाहिल अज़ीमि० तम्मत बिऔनिल्लाहि तआला व लहूल्हम्दु अला मा वफ़्फ़ क-नाबिही।